ज्ञानमण्डल ग्रन्थमालाका उन्नीसवाँ ग्रन्थ।

अंग्रेज जातिका इतिहास।

लेखक—

श्री गंगाप्रसाद एम० ए०, हेडमास्टर

डी० ए० वी०, हाई स्कूल, प्रयाग।

प्रकाशक—

श्रीकाशी-विद्यापीठ, काशी।

प्राप्तिस्थान—

ज्ञानमण्डल पुस्तकभण्डार, काशी।

द्वितीय संस्करण १५००]   १९८५   [मूल्य सजिल्द २॥)

प्रकाशक—
मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव
काशी विद्यापीठ,
काशी।

निवेदन।

यद्यपि हमारी इच्छा लेखकसे ही इस पुस्तकका संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण तैयार करानेकी थी, किन्तु कई कारणोंसे हम ऐसा नहीं करा सके। फिर भी, हमें हर्ष है कि काशी विद्यापीठके यूरोपीय इतिहासके सुयोग्य अध्यापक श्रीबीरबलसिंहजीके परिश्रम से इसमें आवश्यक संशोधन और सवत् १९८४ तककी घटनाओंका समावेश कर दिया गया है। उत्तरार्द्धके द्वितीय तथा तृतीय खण्डोंमें विशेष परिवर्त्तन किया गया है, जिनमें क्रमश कोई १२ तथा २५ पृष्ठोंकी नयी सामग्री बढ़ायी गयी है। अन्तके छ अध्यायोंका क्रम बदल दिया गया है और महायुद्धके बादकी घटनाओंके सम्बन्धमें एक नया अध्याय भी जोड़ा गया है। अनुक्रमणिका भी नये सिरेसे, अधिक विस्तृत रूपमें, तैयार की गयी है। आशा है, इन परिवर्त्तनों-के कारण यह पुस्तक पाठकोंको और भी अधिक पसन्द आयगी और वे इससे विशेष लाभ उठा सकेंगे।

काशी,
१ श्रावण १९८५

मुकुन्दीलाल।

मुद्रक—
माधव विष्णु पराड़कर,
ज्ञानमण्डल यन्त्रालय,
काशी।

ओ३म्

प्रथम संस्करणकी भूमिका।

ग्रेटब्रिटनका इतिहास प्रत्येक भारतीयके लिए उपयोगी है, क्योंकि प्रथम तो, भारतवर्षके सम्राट् इंग्लैण्ड-निवासी हैं और जिन पुरुषोंके द्वारा वह शासन करते हैं उनमें अधिकतर संख्या ब्रिटिश लोगोंकी ही होती है। जब तक राजा और प्रजा एक दूसरेकी अवस्था, आचार-व्यवहार तथा विचारोंसे अभिज्ञ न हो तब तक यथेष्ट उन्नति होना दुस्तर है। दूसरे, ग्रेटब्रिटनका इतिहास उन्नत जातिका इतिहास है। गत दो सहस्र वर्षोंमें एक छोटेसे टापूने किन किन साधनोंसे इतनी उन्नति की है, इस बातका जानना प्रत्येक उन्नति चाहनेवाले पुरुष तथा जातिके लिए आवश्यक है। इस इतिहासमें राजाओंकी जीवनीकी अपेक्षा सर्वसाधारणके आचार-व्यवहार तथा जातीय घटनाओंका अधिक वर्णन है, क्योंकि पाठकवर्ग इसीसे अधिक शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

सम्भव है कि बहुतसे उच्च कक्षास्थ भारतवर्षियोंको अंग्रेजोंकी बहुतसी वर्त्तमान बातें भी अपनी प्राचीन तथा वर्त्तमान बातोंकी अपेक्षा अधम प्रतीत होती हों, परन्तु इस विषयमें एक बात स्मरण रखनी चाहिये, वह यह कि जहाँ भारतवर्ष बहुत दिनोंसे शनै शनै अवनति करता आ रहा है वहाँ ग्रेटब्रिटनका मुख उन्नतिकी ओर रहा है। जिस समय भारतवर्ष उन्नतिके पर्वत-शिखरपर था उस समय इंग्लैण्ड भूमिपर खड़ा हुआ था, दोनोंने अवस्थाकी

सीढीको पार करना आरम्भ किया। भारत उतरने और इंग्लैण्ड चढने लगा। सम्भव है कि बहुतसे विषयोंमें भारतवर्ष अब भी इंग्लैण्डकी अपेक्षा सीढीके ऊँचे डण्डेपर हो—विशेषकर धर्म, तथा दर्शनशास्त्रमें, परन्तु जब तक भारतवर्ष अधोमुख है उसका अपने भूतकालके इतिहासपर अभिमान करना व्यर्थ ही नहीं अपितु हानिकारक भी है। भारतवर्षकी उन्नतिके अनेक साधनों-मेंसे एक साधन इंग्लैण्ड जैसे उन्नतिशील देशोंके इतिहासका गम्भीर दृष्टिसे अवलोकन भी है।

ग्रेटब्रिटनके इतिहासके समझनेमें दो आपत्तियाँ हैं, जिनका स्पष्टीकरण अत्यावश्यक प्रतीत होता है। पहली आपत्ति नामोंकी है, एक ही नाम बार बार आते हैं और साधारण पाठक झमेलेमें पड जाते हैं। यह स्मरण रखना चाहिये कि अंग्रेज लोग प्राय अपने वंश सम्बन्धी नामोंसे पुकारे जाते हैं, जैसे पर्सी (Percy) वंशके प्रत्येक पुरुषको मिस्टर पर्सी और प्रत्येक कुमारीको मिस पर्सी तथा प्रत्येक स्त्रीको मिसिज पर्सी कहेंगे। वंशीय नामके अतिरिक्त व्यक्तिगत नाम अलग होगा। जैसे हैरी पर्सी (Harry Percy) एडवर्ड पर्सी (Edward Percy) इत्यादि। यदि किसीको सर (Sir) की उपाधि हो जाय तो वह सर पर्सी कहलायगा। इस प्रकार यदि पर्सी शब्द कई शताब्दियोंमें मिले तो उससे एक ही पुरुष नहीं समझना चाहिये। इसका वर्त्तमान भारतीय दृष्टान्त 'मालवीय' वंश है। पंडित मदनमोहन मालवीय, रमाकान्त मालवीय आदि सभी मिस्टर मालवीय कहलाते हैं और यदि एककी दूसरेसे पहचान करनी हो तो व्यक्तिगत नाम अलग लगाना चाहिये।

यदि कोई पुरुष किसी विशेष स्थानका ड्यूक, अर्ल, मार्किस आदि बना दिया जाता है तो उस पुरुषका नाम भी बदल जाता है। जैसे आर्थर वेलेस्ली वैलिङ्गटनका ड्यूक बना दिया गया तो उसका नाम वैलिङ्गटन ही हो गया। चूँकि वैलिङ्गटनके ड्यूक भिन्न भिन्न समयमें भिन्न भिन्न होते हैं और उन सबको वैलिङ्गटन ही कहते हैं अथवा नार्थम्बर्लैण्डके ड्यूक भिन्न भिन्न समयमें भिन्न भिन्न होते हैं और उन सबको नार्थम्बर्लैण्ड ही कहते हैं, अत भिन्न समयोंमें वर्णित नार्थम्बर्लैण्ड पृथक् पृथक् ही थे, एक व्यक्ति न थे। लाटपादरियोंके नामका भी यही हाल है, यदि किसी पुरुषका नाम हेनरी है और वह मदरासका लाटपादरी हो गया तो उसका नाम 'हेनरी मदरास' (Henry Madias) होगा, इत्यादि इत्यादि।

दूसरी आपत्ति जातीय महासभा अर्थात् पार्लमेण्टकी संस्थाके समझनेमें पड़ती है। इसके तीन भाग हैं—एक राजा, दूसरा हाउस आव लार्ड्स, तीसरा हाउस आव कामन्स। हाउस आव लार्ड्सके सभासद चुने नहीं जाते, यह उच्च वंशोंके उत्तराधिकारी या विशेष गिरजोंके लाट पादरी होते हैं। हाउस आव कामन्सके सभ्य चुने जाते हैं। चुननेवालोंकी योग्यता भिन्न भिन्न समयमें भिन्न भिन्न रही है। हाउस आव कामन्सके सभापति (प्रबंधक) को स्पीकर कहते हैं। शासनकी सुविधाके लिए प्रधान मंत्री राजाकी अनुमतिसे एक कैबीनेट (सचिव-मण्डल) चुनता है जो मन्त्रिवर्गकी एक समिति है। इसमें एक महामंत्री और उसके अधीन कई सचिव होते हैं जैसे भारतीय सचिव, स्वराष्ट्र सचिव (Home Secretary), परराष्ट्र सचिव (Foreign Secretary),

अर्थ सचिव (Chancellor of Exchequer) आदि। पार्लमेण्टके सभ्योंके दो दल होते हैं, एक अनुकूल दल जिसमेंसे प्रधानमत्री तथा अन्य सचिव चुने जाते हैं। ये लोग मन्त्रि-वर्गके कार्य्योंकी सर्वदा पुष्टि करते और उन्हींका पक्ष लेते हैं। प्रतिकूल दल मन्त्रि-वर्गके कार्य्योंपर आक्षेप करता और उसके प्रस्तावका विरोध करता है। जब प्रतिकूल दल बढ़ जाता है तो मन्त्रि-वर्ग या तो पद त्याग देते हैं या हाउस आव कामन्सके सभ्योंका निर्वाचन फिर कराते हैं। यदि फिर भी उनका प्रतिकूल पक्ष अधिक होता है तो वे अवश्य पद त्याग देते हैं और उनके स्थानमें उस दलके मन्त्रिगण आ जाते हैं और उस समयसे वही प्रतिकूल दल अनुकूल दल हो जाता है और अनुकूल दल प्रतिकूल।

लेखक।

ऐतिहासिक [illegible]

	वक्रम सवत्	ईसवी सन्
	१०७३-१०७६	१०१६-१०१९
	१०७६-१०९२	१०१९ १०३५
	१०९२-१०९४	१०३५ १०३७
	१०९७-१०९९	१०४०-१०४२
	१०९९-११२३	१०४२-१०६६
इंग्लैण्डपर फ्रूलियम [illegible]	११२३	१०६६
काडियस द्वारा ब्रिटन्के [illegible]		
रोमन ब्रिटेनसे [illegible]		
[illegible]यम	११२३-११४४	१०६६-१०८७
[illegible] प्रेमारी द्वारा हंग्लै [illegible]	११४४-११५७	१०८७-११००
[illegible]के जगली [illegible]	११५७-११९१	११००-११३४
[illegible] ब्रिटनस [illegible]	११९१-१२०२	११३४-११४५
[illegible]की लड़ा[illegible]		
[illegible]	११९१-१२११	११३४-११५४
[illegible]	१२११-१२४६	११५४-११८९
[illegible]के युद्ध [illegible]	१२४६-१२५६	११८९-११९९
पोइटियर्स [illegible]	१२५६-१२७३	११९९-१२१६
[illegible]	१२७३-१३२९	१२१६-१२७२
[illegible]	१३२९-१३६४	१२७२-१३०७
[illegible]	१३६४-१३८४	१३०७-१३२७
	१३८४-१४३४	१३२७-१३७७
	१४३४-१४५६	१३७७-१३९९
		१३९९-१४१३
		१४१३-१४२२
		१४२२ १४६०
		४६० १४८३

	विक्रम संवत्	ईसवी सन्
अधिकार-घोषणा	१७४६	१६८९
उत्तराधिकार विधान	१७५८	१७०१
त्रिगुट सन्धि	१७७४	१७१७
एक्सला शापेल सन्धि	१८०५	१७४८
सप्तवर्षीय युद्ध	१८१३—१८२०	१७५६—१७६३
अमेरिका द्वारा स्वतन्त्रताकी घोषणा	१८३३	१७७६
आयर्लैण्डमें पार्लमेण्टकी स्थापना	१८३९	१७८२
आयर्लैण्डकी पार्लमेण्ट तोडी गयी	१८५७	१८००
मैथुएन	१७६०	१७०३
वाटरलू	१८७२	१८१५
रिफार्म बिल	१८८९	१८३२
कैथोलिकोद्धारका प्रस्ताव	१८९६	१८३९
बोअर युद्ध	१९५६	१८९९
महायुद्ध	१९७१—१९७५	१९१४—१९१८
आयरिश फ्री स्टेटकी स्थापना	१९७९	१९२२

इंग्लैंडके राजाओंकी सूची।

	विक्रम संवत्	ईसवी सन्
नार्मन विजयके पूर्व		
समस्त इंग्लैण्डका राजा ईग्बर्ट	८६५	८०८
ईग्बर्टका पोता आल्फ्रेड	९२८-५८	८७१-९०१
एडवर्ड	९५८-९८२	९०१ ९२५
एथिल्स्टन, एडमण्ड, ईडरिड	९८२-१०१२	९२५-९५५
ईडवी	१०१२-१०१६	९५५-९५९
एडगार	१०१६-१०३६	९५९-९७९
अनुद्यत एथिलरेड	१०३६-१०७३	९७९-१०१६

	विक्रम संवत्	ईसवी सन्
एडमण्ड	१०७३-१०७६	१०१६-१०१९
कैन्यूट	१०७६-१०९२	१०१९ १०३५
कैन्यूटके दो पुत्र	१०९२-१०९४	१०३५ १०३७
हार्थानट	१०९७-१०९९	१०४०-१०४२
एथिलरेडका पुत्र एडवर्ड कन्फेसर	१०९९-११२३	१०४२-१०६६
हेरोल्ड	११२३	१०६६
नार्मन वंश		
विजयी विलियम या प्रथम विलियम	११२३-११४४	१०६६-१०८७
विलियम द्वितीय	११४४-११५७	१०८७-११००
हेनरी प्रथम	११५७-११९१	११००-११३४
स्टीफन	११९१-१२०२	११३४-११४५
एञ्जू वंश		
अराजकता	११९१-१२११	११३४-११५४
द्वितीय हेनरी	१२११-१२४६	११५४-११८९
प्रथम रिचर्ड	१२४६-१२५६	११८९-११९९
जौन	१२५६-१२७३	११९९-१२१६
तीसरा हेनरी	१२७३-१३२९	१२१६-१२७२
प्रथम एडवर्ड	१३२९-१३६४	१२७२-१३०७
द्वितीय एडवर्ड	१३६४-१३८४	१३०७-१३२७
तृतीय एडवर्ड	१३८४-१४३४	१३२७ १३७७
द्वितीय रिचर्ड	१४३४-१४५६	१३७७-१३९९
लाङ्कास्टर वंश		
चतुर्थ हेनरी	१४५६-१४७०	१३९९-१४१३
पंचम हेनरी	१४७०-१४७९	१४१३-१४२२
षष्ठ हेनरी	१४७९-१५१७	१४२२ १४६०
चतुर्थ एडवर्ड	१५१७ १५४०	१४६०-१४८३

	विक्रम संवत	ईसवी सन
ट्यूडर वंश		
सप्तम हेनरी [रिचमाण्ड]	१५४२-१५६६	१४८५-१५०९
अष्टम हेनरी	१५६६-१६०४	१५०९-१५४७
षष्ठ एडवर्ड	१६०४-१६१०	१५४७-१५५३
मेरी ट्यूडर	१६१०-१६१५	१५५३-१५५८
एलीजबिथ	१६१५-१६६०	१५५८-१६०३
स्टुअर्ट वंश		
प्रथम जेम्स	१६६०-१६८२	१६०३-१६२५
प्रथम चार्ल्स	१६८२-१७०६	१६२५-१६४९
आलिवर क्राम्वेल	१७०६-१७१५	१६४९-१६५८
रिचर्ड क्राम्वेल	१७१६	१६५९
द्वितीय चार्ल्स	१७१७-१७४२	१६६०-१६८५
द्वितीय जेम्स	१७४२-१७४५	१६८५-१६८८
(राज्य-विप्लव)	१७४५-१७४६	१६८८-१६८९
विलियम तृतीय	१७४६-१७५९	१६८९-१७०२
महारानी एन	१७५९-१७७१	१७०२-१७१४
हनोवर वंश		
प्रथम जार्ज	१७७१-१७८४	१७१४-१७२७
द्वितीय जार्ज	१७८४-१८१७	१७२७-१७६०
तृतीय जार्ज	१८१७-१८७७	१७६०-१८२०
चतुर्थ जार्ज	१८७७-१८८७	१८२०-१८३०
विलियम चतुर्थ	१८८७-१८९४	१८३०-१८३७
महारानी विक्टोरिया	१८९४-१९५७	१८३७-१९०१
सप्तम एडवर्ड	१९५७-१९६७	१९०१-१९१०
पंचम जार्ज	१९६८	१९११

विषय-सूची ।

पूर्वार्द्ध

प्रथम खण्ड ।

राष्ट्रका प्रारंभ ।

द्वितीय खण्ड ।

निरंकुश राज्य ।

तृतीय खण्ड।

राजा और प्रतिनिधि-सभा।

चतुर्थ खण्ड।

वर्तमान राष्ट्रके अंकुर।

उत्तरार्द्ध

प्रथम खण्ड ।

पार्लमेण्ट और आधिपत्यके लिए कलह ।

द्वितीय खण्ड ।

ब्रिटिश साम्राज्यका आरम्भ ।

तृतीय खण्ड।

व्यापारिक वृद्धि तथा राजनीतिक सुधार।

प्रथम खण्ड।

राष्ट्रका प्रारंभ

पहला अध्याय।

प्राचीन निवासी।



टिश देश यूरोप महाद्वीपके पश्चिममें कुछ द्वीपों का एक समूह है जिनका क्षेत्रफल १२१००० वर्गमील और जनसंख्या चार करोड़के लग भग है। सबसे प्रसिद्ध टापू दो हैं—ग्रेट ब्रिटेन (Great Britain) अर्थात महा ब्रिटेन जो पूर्वकी ओर महाद्वीपसे मिला हुआ है, दूसरा आयर्लैण्ड जो महा ब्रिटेनके पश्चिमको है। इनके अतिरिक्त कई छोटे छोटे टापू हैं जिनमेंसे होली आईलेण्ड (Holy Island या पवित्र टापू), शेपी (Sheppy) और थेनिट (Thanet) पूर्वीय तटपर, वाइट (Wight) तथा सिली (Scilly) दक्षिण तटपर और एङ्गलसी (Anglesea) तथा मान (Man) पश्चिमी तटके निकट हैं। ग्रेट ब्रिटेनके तीन प्रसिद्ध भाग हैं

अर्थात् इंग्लॅंड, स्काटलैण्ड और वेल्ज। ये सब टापू आजकल एक ही सम्राट्के अधीन हैं, यद्यपि आयर्लैण्डकी पार्लमेण्ट अब ग्रेट ब्रिटेनकी पार्लमेण्टसे अलग है। परन्तु यह राष्ट्र-संघटन केवल थोड़े ही दिनोंसे प्राप्त हुआ है। पहले न केवल ये टापू ही पृथक् पृथक् थे किन्तु एक टापूके भिन्न भिन्न भाग भी भिन्न भिन्न राज्योंके अधीन थे जिनमें सदैव लड़ाई झगड़े हुआ करते थे। आंग्लदेशके इतिहासमें दो बातें मुख्य हैं अर्थात्—

(१) सब टापू किस प्रकार संयुक्त हुए, और

(२) राजसभाका वर्तमान संघटन किस प्रकार हुआ।

कहते हैं कि प्राचीन कालमें यह द्वीप एक प्रायद्वीप था। यहाँका जलवायु अत्यन्त ठंडा था। पर्वत सदैव बर्फसे ढके रहते थे। जंगलोंमें अनेक प्रकारके जंगली जानवर निवास करते थे। ऐसी दशामें कुछ जंगली मनुष्योंको छोड़कर और किसी सभ्य जातिको यहाँ रहनेका साहस न हुआ। धीरे धीरे प्राकृतिक परिवर्त्तनोंके कारण यहाँका जलवायु कुछ उष्ण हो चला और जंगली पशुओंमें भी कमी हो गयी। पूर्वकी ओर कुछ भूमि निम्न हो गयी। समुद्रने आक्रमण किया और प्रायद्वीपका द्वीप बन गया। बर्फ भी प्राचीन समयकी अपेक्षा कम गिरने लगा। इन घटनाओंने अन्य जातियोंका भी चित्त आकर्षित किया और धीरे धीरे प्राचीन जाति लुप्त हो गयी अथवा नवागतोंमें मिल गयी।

इस प्राचीन जंगली जातिका कुछ पता नहीं। न जाने ये लोग कहाँसे आये और किस उच्च जातिकी संतान थे और न यही ज्ञात है कि इनके अधःपतनका क्या कारण हुआ। केवल इनके पत्थरोंके अस्त्र-शस्त्र इधर उधर गड़े हुए मिलते हैं। उत्तरी विल्टशायरके एवबरी (Avebury) और साल्सबरी

मैदान (Salisbury Plain) के स्टोनहेंज नामक स्थानोंमें पत्थरोंके टीले भी पाये जाते हैं जिनमें ये अपने मृत पुरुषोंके शव गाड़ते अथवा जला कर उनकी राख रखते थे। इन टीलोंमें मृतकोंकी अस्थियोंके अतिरिक्त पत्थर तथा लोहेके शस्त्र और स्वर्ण, चांदी आदिके आभूषण भी मिलते हैं।

दो हजार वर्षोंसे कुछ अधिक समय हुआ कि पूर्वकी ओरसे एक आर्य्य जातिने आकर इस टापूपर कब्जा कर लिया। यह केल्ट (Celt) जाति थी। आंग्ल देशमें केल्ट जातिकी दो शाखाएँ भिन्न भिन्न समयमें आयीं, पहली गोइडिल (Goidel) और दूसरी ब्रिथन (Brythan) या ब्रिटन। ब्रिटन लोगोंने गोइडिलको उत्तर तथा पश्चिमकी ओर भगा दिया। आयर्लैण्ड, मान टापू तथा स्काटलैण्डके हाईलैण्ड भागके निवासी इन्हीं गोइडलोंकी सन्तान हैं और इन्हींकी भाषा बोलते हैं। वेल्ज-निवासी ब्रिटन लोगोंकी सन्तान हैं और इनकी भाषा भी प्राचीन ब्रिटन भाषाका ही एक निकटस्थ रूपान्तर है।

जब ब्रिटन लोगोंको इस टापूमें रहते रहते कुछ समय हो गया तो केल्ट जातिकी ही दो और शाखाएँ अर्थात् गाल (Gauls) और बेल्जियन इस टापूके तटपर आ बसीं और इनके आनेसे इग्लैण्डका व्यापार यूरोपके दक्षिणी भागोंसे बढ़ गया, और स्वर्ण-मुद्रा तथा आभूषणोंका भी प्रचार होने लगा।

ब्रिटन लोग लम्बे और बलवान होते थे। इनके केश सुन्दर, काले और पीठपर लटकते थे। इनकी आँखें नीली होती थीं। ये केवल मूछें रखते और समस्त डाढ़ी मुड़ा डालते थे। युद्धके समय ये एक नीली नीली जड़ीके रससे अपने चेहरोंको रँग

लेते थे जिससे इनकी आकृति बहुत ही भयानक हो जाती थी। ये जगलोंके बीचमें कुछ स्थान साफ़ करके अपने दुर्ग बनाते थे और उनके चारों ओर मिट्टीके तूदे और बडी बडी झाडियाँ बना लेते थे।

ब्रिटन लोग रथ चलानेमें बडे दक्ष थे। पहाडीसे ढालकी ओर बडे वेगसे रथ दौडाते थे और इस दशामें भी घोडोंको झट रोक कर मोड सकते थे। युद्धके समय पहले तो रथों द्वारा दौड दौड कर शत्रुकी पंक्तियोंको तितर बितर कर देते थे, फिर रथोंसे उतर कर पैदल लडते थे और सारथी रथोंको पीछे हटा लेते थे। यदि योद्धा लोग परास्त हो जाते तो झट भाग कर अपने रथोंकी शरण लेते और अपने कैम्पमें पहुँच जाते। ब्रिटन लोग कपडा बनाना जानते थे जैसा कि ब्रिटन शब्दके अर्थ (वस्त्रयुक्त) से प्रकट होता है।

केल्ट जातिके पुरोहितोंको ड्रूड (Druids) कहते थे। ड्रूड लोग वनोंमें रहते थे और युवकोंको सदाचार तथा धर्म सम्बन्धी शिक्षा दिया करते थे। उनको पुनर्जन्मपर विश्वास था अर्थात् वे यह मानते थे कि जीव एक शरीरको छोडकर मृत्युके पश्चात् दूसरे शरीरको धारण कर लेता है।

पुरोहिताईके अतिरिक्त न्यायालयका कार्य्य भी ड्रूडोंको ही करना पडता था। ये झगडोंका निबटारा करते और यही अपराधियोंको दण्ड देते थे। परन्तु गाल देश (जिसे आजकल फ्रांस कहते हैं) के ड्रूड अधिक विद्वान् तथा सभ्य थे। ब्रिटन और आयर्लैंडके ड्रूड जादू-टोनेके अतिरिक्त और कुछ नहीं जानते थे। इनमें सबसे बुरी बात यह थी कि अपने इष्ट देवताओंको प्रसन्न करनेके लिए ये पुरुषों, स्त्रियो तथा बच्चोंको टोकरीमें बन्द करके जला देते थे।

ड्रूड लोगोंका अपनी जातिमें बडा मान होता था। इनकी शक्ति असीम समझी जाती थी और केवल यही धर्मके रहस्योंको जानते थे। सर्वसाधारणको इनके अनुसरणकी ही आज्ञा थी। 'क्या' और 'क्यों' से उन्हें कुछ मतलब न था। ड्रूड लोग पद्य बनाते और पूर्वजोंकी प्रशंसा तथा गुणानुवाद के अतिरिक्त धर्मशास्त्रोंका प्रचार भी काव्य द्वारा ही करते थे। परन्तु पुस्तकें रचनेकी प्रणाली इन लोगोंमें न थी। ईसासे ३०० वर्ष पूर्व मैसीलियाके (जिसको आजकल मार्सेल्ज कहते हैं) यूनानी व्यापारियोंने पिथियस (Pytheas) नामक एक गणितज्ञको पश्चिमोत्तर यूरोपके अन्वेषणके लिए भेजा। वह ब्रिटनमें आया और वहाँका वृत्तान्त लिख ले गया। उस समयसे लोग टीन, सीसा तथा मोतियोंका व्यापार मैसीलिया आदि नगरोंसे करने लगे। व्यापार बढ जाने पर सोने तथा टीनकी मुद्राएँ भी बनने लगीं और ब्रिटन टापू अब एक अज्ञात और पृथक् देश न रहा।

दूसरा अध्याय।

रोमन विजय।



टली देशमें टाइबर नदीके तटपर रोम नामक एक प्रसिद्ध नगर है। दो सहस्र वर्षोंसे कुछ अधिक समय हुआ कि यहाँके लोग बहुत बलवान् होगये। पहले तो उन्होंने टाइबर नदीके निकट एक राज्य स्थापित किया। धीरे धीरे यह राज्य समस्त

इटलीमें फैल गया और कुछ ही दिनों पश्चात् भूमध्य सागरके तटस्थ सभी देश रोम साम्राज्यके अधीन हो गये।

रोमका सबसे प्रसिद्ध पुरुष जूलियस सीज़र हुआ। यह बहुत बड़ा सैनिक योद्धा तथा विजेता हो गया है। विक्रमाब्द प्रारम्भ होनेके एक वर्ष पहिले (ईसासे ५८ वर्ष पूर्व) वह उत्तरी इटलीका शासक नियत हुआ। ९ वर्षमें उसने फ्रांस तथा बेल्जियमको जीतकर रोम-साम्राज्यमें मिला लिया। इस देशको रोमन लोग गाल (Gaul) नामसे पुकारते थे। विक्रम संवत् २ (ईसासे ५५ वर्ष पूर्व) में उसने दो जर्मन जातियोंको, जिन्होंने उसके देशसे छेड़छाड़ करना आरम्भ कर दिया था, समूल नष्ट कर दिया। फिर उसने राइन नदी पार करके जर्मन लोगोंको जा दबाया।

इस समय गाल अर्थात् फ्रांस देशमें ब्रिटन लोगोंके ही भाईबन्धु निवास करते थे और ग्रेटब्रिटेन अर्थात् आंग्ल देशके ब्रिटन लोगोंसे उनकी सहानुभूति थी। इसीलिए इग्लैण्डके ब्रिटन लोगोंने अपने गाल-देशस्थ भाइयोंकी रोमन लोगोंके विरुद्ध सहायता की। जूलियस सीजर इस बातसे जल उठा। उसने विक्रम सवत् २ (ईसाके ५५ वर्ष पूर्व) में बहुतसे युद्ध-पोत तथा दस हजार पैदल सेना लेकर इग्लैण्डपर आक्रमण कर दिया। तीन बजे प्रात कालसे चलते चलते ये लोग १० बजे दिनके इग्लैण्ड पहुँचे। इन्हें डोवरकी चट्टानों और शस्त्र-धारी ब्रिटन लोगोंका सामना करना पड़ा। इनके पोत इतने बड़े थे कि किनारे तक न जा सके और सेनाको पानीमें ही उतरना पड़ा परन्तु ब्रिटन लोग शुष्क स्थानोंसे बड़ी वीरताके साथ आक्रमण करते थे। यह देख कर सीजरने अपने युद्ध-पोतोंको आगे बढ़ाया और गोफन, तीर तथा भिन्न भिन्न प्रका-

रके पत्थर फेंकनेके यन्त्रो द्वारा अशिक्षित ब्रिटनोंको भगा दिया। रोमन लोगोंको इंग्लैण्डके तटपर आनेमें बडी कठिनाइयाँ पडीं। ब्रिटन लोग रोमन अस्त्र शस्त्रोंसे घायल हो कर भाग जाते और थोडी देरमें लौट आते थे। रोमवाले इन लोगोंसे अधिक बलिष्ठ तथा वीर न थे परन्तु केवल शिक्षाका भेद था। सुशिक्षित योद्धाओंके सम्मुख अशिक्षित गँवारोंकी क्या चलती थी। अतको उन्हें सन्धि करनी पडी। सीजरने कहा कि यदि ब्रिटन अपने प्रसिद्ध नेताओंको हमारे सुपुर्द कर दे तो हम लोग क्षमा कर देंगे। कुछ नेता तो इस प्रकार सीजरकी सेवामें उपस्थित कर दिये गये, अन्योंको लानेके लिए प्रबन्ध किया गया। इतनेमें तूफान आया और सीजरके जहाज नष्ट भ्रष्ट हो गये। ब्रिटन लोगोंने शत्रुकी यह क्षति देख कर फिर सिर उठाया और सीजरके कैम्पपर आक्रमण किया। परन्तु सीजर बडा चतुर था, उसने टूटे फूटे जहाजोंकी लकडी और लोहा इकट्ठा करके शीघ्र ही बहुतसे पोतोंकी मरम्मत करा ली और बची हुई सेनाकी सहायतासे ब्रिटनोंपर आक्रमण किया। परन्तु निरंतर युद्ध करते करते सीजरके अनुयायी भी थक चुके थे। अत जब फिर ब्रिटन लोगोंने सन्धि करनी चाही तो सीजर झट सहमत हो गया और शीघ्र ही गाल देशको लौट आया।

इस वर्ष सीजरने इंग्लैण्डको दर्शनमात्र ही किया था। देशकी आतरिक अवस्थाका उसे कुछ भी ज्ञान न था परन्तु दूसरे वर्ष (विक्रम सवत् ३) के चतुर्थ श्रावण (२० वीं जुलाई सन् ६० ई०) को उसने इंग्लैण्डपर फिर चढ़ाई की। इस समय उसके साथ ८०० पोत, ३० सहस्र पैदल और दो सहस्र सवार थे। ब्रिटन लोग अबकी बार तटपर इकट्ठे न हुए किन्तु

देशके भीतरके अरण्योंमें छिप गये और ज्योंही सीजर आगे बढ़ा उसके ऊपर अचानक टूट पडे। जब रोमन सवारोंने उन्हें परास्त किया तो वे एक जंगली किलेमें जा छिपे। सीजरने इस किलेको भी जीत लिया, परन्तु इस समय भी गत वर्षकी भाँति तूफानने रोमन जहाजोंको हानि पहुँचायी, और जितने दिनों सीजर उनकी मरम्मत करता रहा उतने कालमें ब्रिटन लोग टेम्स नदीके उत्तरस्थ देशके अधिपति कैसवालन-(Caswallon) को मुखिया बना कर फिर चढ आये। कैसवालनका समस्त ब्रिटन लोगोंने साथ दिया और उसने बीस सहस्र रोमनोंका बडी वीरतासे सामना किया परन्तु अन्तको परास्त हुआ। सीजर केण्ट होता हुआ वेरुलम (Verulam) तक पहुँचा जिसे आज कल सेण्ट एल्बंस (St Albans) कहते हैं। कैसवालनसे सधि हो गयी परन्तु इस समय गालमें विप्लव होनेका सदेशा मिला, इसलिए सीजरने ब्रिटन देशमें धाक बिठा लेना ही पर्य्याप्त समझा, अत' वह गालको लौट गया।

जूलियस सीजरके चले जाने पर केल्ट लोग फिर स्वतन्त्र हो गये और किसी रोमन शासकने सौ वर्षतक ब्रिटन जीतनेका विचार तक न किया। सवत १०० (सन् ४३) में जब रोममें क्लौडियस सम्राट् हुआ, तो उसने ब्रिटनपर चढाई कर दी और उसके सैनिकोंने सं० १००-१०६ (४३ से ५२ ई०) तक दस वर्षके समयमें ब्रिटनका समस्त दक्षिणी भाग जीत लिया। इस समय कैसवालनका वशज कैरेडाक (Caradoc) वेल्ज़का अधिपति था। उसने बहुत सेना लेकर रोमनोंका सामना किया। इसकी सेना एक पहाडीपर जमी हुई थी, आगे एक नदी थी जिसको पार करना दुस्तर था। पहाड़ीके

इधर उधर कैरेडाकने खाइयाँ खुदवा लीं और दीवारें बनवा ली थीं। रोमन सेनाको देखते ही उसने एक उत्साहपूर्ण वक्तृता दी और कहा,—"आज या तो तुम्हारी स्वतन्त्रता रहेगी या निरतर दासत्वका आरम्भ होगा। तुम्हारे पूर्वज सीजरके विरुद्ध बडी वीरतासे लडे, उसीका यह फल है कि सौ वर्ष तक तुम रोमन शासकोंके लालच तथा रोमन सैनिकोंके अत्याचारोंसे बच सके। उसी धीरतासे आज भी लडो, तभी तुम्हारा देश स्वतन्त्र रह सकता है।"

ब्रिटन लोग उसी वीरतासे लडे परन्तु निरंतर दासत्वको न रोक सके। कैरेडाक परास्त हो गया, उसकी कन्या तथा रानी बन्दी हो गयी। भाइयोंने अपनेको विजेताके हवाले कर दिया। कैरेडाक भाग गया परन्तु पकडा गया। उसे हथकडी और बेडी डाल कर रोमको ले गये। जिस समय रोमकी गलियोंमें होकर उसे ले जा रहे थे, रोमके लोग अपनी छतों तथा मार्गोंमें खडे खड़े तमाशा देख रहे थे, क्योंकि कैरेडाककी वीरताकी कथाएं पहलेसे ही रोममें प्रचलित हो चली थीं। कैरेडाकके नोकर तथा अनुयायी सबसे आगे थे। इनके पीछे उसके भाई, स्त्री तथा पुत्री थी। सबके पोछे वह स्वय था। जब ये लोग रोमन सम्राट्के सम्मुख पेश हुए तो सबने सिंहासनके सम्मुख सिर झुकाकर सम्राट्से जीवन दान माँगा। परन्तु कैरेडाक खडा रहा और सम्राट्से कहने लगा,—"मेरे पूर्वज शासक थे। यदि आज मैं तुम्हारे विरुद्ध न लडा होता तो रोममें मित्र बन कर आता, न कि बन्दी होकर। परन्तु मेरे पास सेना थी, शस्त्र थे, घोडे थे और धन था। अत. आश्चर्य ही क्या है यदि मैंने इनको पृथक् करना पसन्द न किया। तुम सब जातियोंको अपने " लाना चाहते

हो, परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि अन्य जातियाँ भी तुम्हारे अधीन होना चाहें। यदि मैं तुमसे न लडता तो तुमको भी मुझे पराजित करनेका यश न मिलता। मुझे मार डालोगे तो लोग शीघ्र ही मेरी कथाको भूल जायँगे। यदि क्षमा करोगे तो तुम्हारी दयाका यश सदा बना रहेगा।" क्लौडियसकी आत्मापर इसका बडा प्रभाव पडा। उसने कैरेडाक तथा उसके वंशको क्षमा प्रदान की, परन्तु उनको स्वदेश जानेकी आज्ञा न मिली।

कैरेडाककी पराजयपर भी वेल्जके पर्वतीयोंने रोमन शासन स्वीकार न किया और सदा विद्रोह करते रहे। परन्तु पूर्वकी ओर नार्फक, सफक और इसेक्समें रोमन राज्य स्थापित हो गया और कोलचेष्टर (Colchester) में राजधानी नियत हुई। संवत् १११ से १२५ (५४ से ६८ ई०) तक जब कि रोमका सम्राट् नीरो (Nero) था रोमके सेनापतियोंने ब्रिटेनका उत्तरी भाग भी ले लिया और चेष्टर (Chester) में दुर्ग बनाकर एङ्गलसी लेनेके लिए कटिबद्ध हो गये। जिस समय रोमन लोग पश्चिममें इस प्रकार विजय प्राप्त कर रहे थे, पूर्वी प्रदेशोंमें आइसिनी (Iceni) जातिने, जो केल्ट जातिकी एक उपशाखा थी, विद्रोह किया और उनकी महारानी बोडेशिया (Boadicea) ने कुछ सेना लेकर रोमन राजधानी कोलचेष्टरको नष्ट कर डाला। बोडेशिया बडी वीर स्त्री थी। उसकी नसोंमें स्वतन्त्रताका रुधिर प्रवाहित होता था, उसकी आत्मा दासत्वसे काँपती थी। उसने समस्त सजातीयोंको इकट्ठा किया। फिर वह स्वयं अपनी दो लडकियों सहित रथपर चढ कर रणक्षेत्रमें आयी और सेनाको सम्बोधित कर कहने लगी,—"मैं तुम्हारे पास रानी बनकर नहीं आयी कि तुम मेरे गये

हुए राज्य तथा धनको वापस दिला दो, किन्तु मैं एक दरिद्र स्त्री बनकर आयी हूँ और कहती हूँ कि प्रजाकी स्वतन्त्रता नष्ट करनेवालोंसे बदला लो। अब एक ही बात हो सकती है, या तो विजय पाओ या मर जाओ। मुझ स्त्रीका तो यही निश्चय है। तुम पुरुष जीवित रह सकते हो यदि रोमनोंके दास होना चाहो।"

वोडेशियाने अपना प्रण रखा और अपने शत्रुओंको जीतते देखकर विष खाकर मर गयी। कहते हैं कि उस दिन अस्सी हजार मनुष्योंका प्राणान्त हुआ और रोमन लोगोंने स्त्रियों तकको जीता न छोड़ा।

अब रोमवालोंने शत्रुओंको भयभीत करनेके लिए नौरिज (Norwich) पर एक बड़ा भारी दुर्ग बनाया और संवत् १२७ (सन् ७० ई०) तक ब्रिटेनका वह भाग जो चीएरसे हम्बर तक खिंची हुई रेखाके दक्षिणमें है वेल्जको छोड़कर सबका सब रोमन आधिपत्यमें सम्मिलित हो गया। संवत् १३५ और १४१ (सन् ७८ और ८४) के बीचमें जूलियस एग्रीकोला (Julius Agricola) नामी रोमन सेनापतिने क्लाइड और फोर्थ नदी तक छापा मारा और टाइनतक समस्त देश जीत लिया। इस समय यार्क रोमन ब्रिटनकी राजधानी था।

संवत् १७६ (१२२ ई०) में सम्राट् हैड्रियन (Hadrian) ने न्यूकाससे लेकर कार्लाइल (Carlisle) तक एक मजबूत दीवार बनायी। संवत् १६६ (सन् १४२ ई०) में क्लाइड नदीसे फोर्थ नदीतक एक और दीवार बनायी गयी। इस प्रकार रोमन लोग समस्त इंग्लैण्डके शासक हो गये, परन्तु स्काटलैण्ड और आयर्लैण्डपर उनको स्वत्व प्राप्त नहीं हुआ। इंग्लैण्डपर रोमन लोगोंने ३५०. वर्ष तक राज्य किया। संवत्

४६७ (४१० ई०) में रोमन साम्राज्यकी अधोगतिके कारण रोमन लोग इंग्लैण्डको छोटकर चले गये।

रोमन राज्यमें इंग्लैण्डकी काया पलट गयी। ३५० वर्षका राज्य वास्तवमें अनेक परिवर्त्तन कर सकता है। उस समय इंग्लैण्डपर रोमका जो प्रभाव पड़ा उसके चिह्न आजतक चले आते हैं। रोमन लोग सड़कें बनानेमें बड़े दक्ष थे। इनको अपनी सेनाओंके एक स्थानसे दूसरे स्थानतक ले जानेमें कठिनाइयाँ पड़ा करती थीं, इसलिये आवश्यकता हुई कि सड़कें बनायी जायँ। अनेक स्थानोंपर दुर्ग बनाये गये। चीष्टर, ग्लोष्टर आदि कई सैनिक नगर स्थापित हुए। लन्दन आदि व्यापारिक नगर बसाये गये। उत्तम उत्तम सड़कें चारों दिशाओंमें फैल गयीं और नदियोंपर पुल बनाये गये।

रोमन लोगोंने जंगल काट कर भूमिको साफ किया। यहाँकी पैदावार इतनी बढ़ गयी कि उस समय इंग्लैण्ड समस्त उत्तरी देशोंका अन्नकोष कहलाने लगा। बाग बगीचे लगाये गये और अन्य देशोंसे ला लाकर लाभदायक वृक्ष उत्पन्न किये गये।

केण्ट, डीन तथा मध्यदेशमें लोहा निकाला जाने लगा, टीन, सीसे तथा नमककी खानें खोदी जाने लगीं। टेम्स और मेडवे (Medway) नदियोंके किनारेपर मिट्टीके सुन्दर बर्तन बनाना आरम्भ हो गया। इंग्लिश चेनलके तटस्थ प्रदेशोंमें शीशेकी चीजें बनने लगीं।

इन चीजोंके बनते ही विदेशीय व्यापारकी वृद्धि हो गयी। ब्रिटिश लोग जहाज बनाने लगे और उनके द्वारा अन्न, धातुएँ मोती, दास, घोडे, कुत्ते आदि दूसरे देशोंको ले जाते और उनके बदले रेशम, स्वर्ण तथा रत्न अपने देशको लाया करते थे।

रोमन पदाधिकारियोंने अपने रहनेके लिए नगरों तथा ग्रामोंमें उत्तम उत्तम भवन बनाये। सुन्दर मन्दिर तथा बृहत् न्यायालयोंका निर्माण हुआ। इन सब बातोंका प्रभाव इंग्लैंएड-पर किसी किसी अंशमें अच्छा और किसी किसीमें बुरा पडा। रोमन लोगोंकी बदौलत इंग्लैएडका व्यापार बहुत बढ़ गया और ब्रिटन लोग पहलेकी अपेक्षा धनाढ्य तथा सभ्य हो गये। इनका सम्बन्ध भी बाह्य जगत्से हो गया। परन्तु सबसे बुरी बात यह हुई कि इंग्लैएडवाले अपने पैरोंपर खडा होना भूल गये। शासकोंके दो कर्तव्य हैं, पहला कर्तव्य यह है कि प्रजा सुखी हो, परन्तु इससे भी मुख्य कर्त्तव्य यह है कि प्रजा स्वतन्त्र हो और अपना प्रबन्ध आप करना सीखे। रोमन लोगोंने पहला कर्त्तव्य पालन किया परन्तु दूसरे कर्त्तव्यसे वे सदैव भागते रहे। उन्होंने इंग्लैएड वालोंको सेनामें नहीं रखा। ये विचारे ३५० वर्षमें सब युद्ध-विद्या भूल गये। इनमें दासत्वके संस्कार इतने प्रबल हो गये कि छोटी छोटी आपत्तियोंमें भी ये रोमवालोंका मुँह ताकने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि ज्योंही रोमन लोगोंने इंग्लैएड छोडा ब्रिटन लोग अन्य जातियोंके अधीन हो गये। सारांश यह कि रोमवालोंने इंग्लैएडके निवासियोंको सुख तो दिया परन्तु भेड बनाकर दिया जिससे ये भविष्यमें भी गडेरियेका मुँह ताकते रहें।

तीसरा अध्याय।

आंग्ल जातिका आगमन।

रोमन लोग जब इग्लैण्डमें शासन कर रहे थे, उसी समय आयर्लैंडमें स्काट, क्लाइड और फोर्थ नदियोंके उत्तरमें पिक्ट जातिके जंगली लोग रहते थे। रोमन लोगोंके सुराज्यमें इनको इग्लैण्ड पर आक्रमण करनेका साहस न होता था, परन्तु ज्योंही रोमन लोगोंने मुँह मोड़ा त्योंही स्काट और पिक्ट लोग बारी बारीसे इग्लैण्डपर चढ़ाई तथा लूट-मार करने लगे। जो जाति स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सकती उसका संसारमें जीवित रहना कठिन है। ब्रिटेनवालोंकी उस समय यही दशा थी। लुटेरोंसे बचनेके लिए उन्होंने रोमवालोंसे सहायता माँगी। एक रोम सेनापति एक बार आकर शान्ति स्थापित कर गया, परन्तु दूसरोंकी दी हुई शान्ति कबतक रह सकती थी? अन्तको समस्त इग्लैण्ड पिक्ट और स्काट जातिसे भर गया। परन्तु थोड़े ही दिनोंमें अन्य जातियोंने भी आक्रमण आरम्भ कर दिया। इग्लैण्डके पूर्वको जर्मन सागरके इस पार, उस देशमें जो आज कल जर्मनी और हालैण्ड कहलाता है एल्ब नदीके मुहानेके दोनों ओर एङ्गल, सैक्सन और जूट जातिके लोग रहते थे। इन जातियोंकी भाषा कुछ कुछ वर्त्तमान डच और जर्मन भाषासे मिलती थी। ये लोग छोटे छोटे जहाजोंमें बैठकर निकटस्थ देशोंमें लूट-मार किया करते थे और लड़ाईके काममें बड़े चतुर थे।

सबसे पहले संवत् ५०६ (४४९ ई०) में जूट लोग हेंजिस्ट (Hengist) और होर्सा (Horsa) नामके दो भाइयोंके

सेनापतित्वमें थेनिट टापूमें आये और बहुत जल्द इंग्लैण्डके दक्षिण पूर्व केण्ट देशमें बस गये। दक्षिणी इंग्लैण्डके अन्य भागोंपर सैक्सन लोगोंने चढाई की और पूर्वमें एसेक्स, पश्चिममें वैसेक्स, दक्षिणमें ससेक्स नामक राज्य स्थापित किये। इनमें सबसे प्रसिद्ध 'वसेक्स' राज्य था।

तीसरी अर्थात् एङ्गल जातिने उत्तरी, मध्य और पूर्वी इंग्लैण्ड ले लिया। हम्बर नदीके उत्तरमें नार्थम्बरलैण्ड या नार्थम्ब्रियाकी रियासत थी। पूर्वीय राज्यको ईस्ट एङ्गलिया कहते थे और मध्यस्थ राज्य मर्सिया (Mercia) कहलाता था।

जूट, सैक्सन और एङ्गल, ये तीनों जातियाँ ही इंग्लिश (आंग्ल) जातिके नामसे प्रसिद्ध है और इन्हींके नामपर देशका नाम भी इंग्लैण्ड पड़ा। इससे पूर्व इसे ब्रिटेन कहते थे और यहाँके लोगोंका नाम ब्रिटन था। जब इंग्लिश जातियाँ आयीं तो इन्होंने यहाँके प्राचीन निवासी अर्थात् ब्रिटन लोगोंको जीत जीत कर भगाना शुरू किया और उनके देशपर स्वय अधिकार जमा लिया। बेचारे ब्रिटन लोग भाग भाग कर वेल्जके पहाड़ोंमें जा छिपे और वहीं उन्होंने नये राज्यकी नींव डाली, जिस प्रकार कि मुसलमानोंके राज्यमें भारतवर्षके राजपूत-वंश बीकानेर आदि मरु देशोंमें बस गये थे। यही कारण है कि वेल्जके निवासियोंकी भाषा ब्रिटन भाषा है और ये लोग ब्रिटन लोगोंकी ही सन्तान हैं।

इंग्लिश जातियोंको इंग्लैण्ड लेनेमें कोई डेढ सौ वर्ष लगे होंगे। परन्तु इन लोगोंमें परस्पर वैमनस्य था और एक इंग्लिश शाखा दूसरी शाखासे लड़ा करती थी। इस लड़ाई-झगड़ेमें ब्रिटन लोगोंका लाभ था, क्योंकि यदि ऐसा न होता, तो ये लोग वेल्जमें भी न रहने पाते। उस समय पहले

कम्बरलैंड, कार्नवाल और डेवन् शायर भी वेल्जके ही भाग थे, परन्तु धीरे धीरे ये देश ब्रिटन लोगोंके हाथसे निकल चुके थे। इस लड़ाई झगड़ेका अन्तिम परिणाम यह हुआ कि अधिक बलवान शासकोंने निर्बलोंको मार गिराया। इस प्रकार चार मुख्य इंग्लिश राज्य स्थापित हो गये अर्थात् नार्थम्ब्रिया, मर्सिया, वैसेक्स और केण्ट।

इसके पूर्व देशमें इंग्लिश जातिकी भिन्न भिन्न शाखाएँ थीं और इनमें परस्पर सम्बन्ध न था। इनका कोई राजा न था किन्तु एक ग्राममें प्राय. एक ही वंशके पुरुष रहते थे। ये गाँव वनोंके बीचमें कुछ भूमि साफ करके बसा लिये जाते थे। वर्षमें एक या दो बार भद्र पुरुषोंकी एक सभा होती थी। इनमें प्राय तीन कक्षाएँ थीं। सबसे बड़ी कक्षामें उच्च वंशीय लोग थे। दूसरी कक्षा साधारण स्वतन्त्र पुरुषोंकी थी। पहली और दूसरी कक्षाओंमें कुछ अधिक भेद न था परन्तु तीसरी कक्षा उन दासोंकी थी जो ऋण अथवा अपराधके कारण अपनी स्वतन्त्रता खो चुके थे या उसमें अन्य जातियोंके वे लोग थे जो युद्धमें वन्दी हो गये थे।

प्रत्येक ग्राममें एक मुखिया होता था जो आपसके झगड़ोंको सुलझाता और अपराधियोंको दण्ड देता था। आपत्ति या युद्धके समय एक नेता चुन लिया जाता था जिसकी आज्ञाका पालन करनेके लिए समस्त जन-समूह शपथ खाता था।

इंग्लिश लोग लम्बे और मजबूत होते थे। इनके केश सुन्दर और नेत्र नीले या खाकी होते थे। ये सन या ऊनके कपड़े पहनते और अपने अँगरखोंमें काँसेकी पिन लगाते थे। धनाढ्य पुरुष भुजाओंमें सोने चाँदीके कड़े और बाजूबन्द भी

पहनते थे। दासोंके बाल छोटे होते थे और उनको शस्त्र धारण करनेकी आज्ञा न थी, परन्तु स्वतन्त्र पुरुषोंके केश लम्बे होते थे और उनके पास लोहेकी तलवार, बर्छी तथा लकड़ीकी ढाल रहा करती थी।

इन लोगोंमें न्यायाधीश या जज नहीं होते थे। यदि कोई किसीको मार डालता था तो मृत पुरुषके सम्बन्धी ही घातकको दण्ड देते थे। मृत पुरुषका सम्बन्धी यदि घातकको मार डालता तो इस मृत घातकके सम्बन्धी उसको मारना अपना कर्त्तव्य समझते थे। इस प्रकार हत्याकाण्डकी एक शृङ्खला बँध जाती थी जिससे समस्त देशमें अशान्ति फैली रहती थी। इङ्गलैण्डमें आनेपर भी इनमें बहुत कुछ पुराने गुण, कर्म तथा स्वभाव बने रहे। परन्तु कुछ दिन पश्चात् घातक लोग मृत पुरुषके सम्बन्धियोंको रुपया देकर जान छुड़ाने लगे। शनै शनै यह सन्धि सभा द्वारा होने लगी। अन्य दोषोंके लिए भी रुपया लिया जाने लगा। दोषोंकी छानबीनके नियम भी इन लोगोंमें विचित्र ही थे। यदि किसी पुरुषपर अपराधका दोष लगाया जाता और वह उससे इनकार करता तो इस निराकरणके दो उपाय थे। एक तो उसको अपने सत्यवादी पड़ोसियोंकी साक्षी दिलानी पड़ती थी। यदि वे लोग उसे निर्दोष ठहरा देते तो वह छोड़ दिया जाता था। दूसरे यदि उसे साक्षी न मिलती तो उसे आँखें मींचकर गर्म लोहेपर चलना या खौलते हुए तेलमें हाथ देना पड़ता था। यदि हाथ अकस्मात् जलनेसे बच जाता तो अपराधी निर्दोष समझा जाता था। इस विधिसे विरला ही दण्डसे बचने पाता था।

इन लोगोंके धार्मिक विचार भी असभ्य लोगोंको ही तरह-के थे। इनमें दयाका तो नाम न था। मनुष्योंको चींटीकी

तरह मार डालना पाप नहीं समझा जाता था। रुधिर-पिपासा और क्रूरता ही वीरता समझी जाती थी। इनका यह भी विचार था कि जो मनुष्य लड़ाईमें मरे वह स्वर्गको जाता है, चाहे वह युद्ध धर्मके लिए हो या न हो। ये अनेक देवोंके उपासक थे। सबसे प्रसिद्ध देवका नाम वोडिन (Woden) था और राजा लोग अपनेको इसी देवकी सन्तान समझते थे। थार (Thor) बिजलीका देव, ट्यू (Tiu) युद्धका देव, और फ्रेया (Freya) प्रेमकी देवी समझी जाती थी। इनके अतिरिक्त और भी बहुतसे देवता थे।

चौथा अध्याय।

स्काटलैण्डका प्राचीन वृत्तान्त।

फोर्थ नदीके मुहानेसे क्लाइड नदीके मुहाने तक यदि रेखा खींच दी जाय, तो स्काटलैण्डके दो भाग हो जाते हैं, एक उत्तरी और दूसरा दक्षिणी। फिर हर एक भागके दो दो भाग हो गये हैं अर्थात् पश्चिमी पहाड़ी देश और पूर्वी निम्न देश।

रोमन लोगोंसे पहले स्काटलैण्डमें भी कैल्ट जातिके लोग रहते थे। रोमन लोगोंने केवल दक्षिण-पूर्वी भाग ही जीता था। ऊपर बतलाया जा चुका है कि सवत् १७८ (१२२ ई०) में फोर्थके मुहानेसे क्लाइडके मुहानेतक एक दीवार बनायी गयी थी। यह रोमन राज्यकी उत्तरी सीमा थी। जब इंग्लिश जातिने इग्लैण्डपर अधिकार किया, तो ये लोग भी रोमन

उत्तरी सीमासे आगे नहीं बढ़े और पश्चिमी पहाडी स्काटलैण्डमें कैल्ट लोगोंने अपनी स्वतन्त्रताको स्थिर बनाये रखा। दक्षिण-पूर्व भाग, जो इंग्लिश जातिके पास था, नार्थम्ब्रिया राज्यमें सम्मिलित था।

रोमन लोगोंके इन टापुओंसे चले जानेके समय आयर्लैण्डमें स्काट जातिके लोग रहते थे और स्काटलैण्डमें कैल्ट। उस समय स्काटलैण्डका नाम कैलीडोनिया (Caledonia) था। जब इंग्लिश जातिने ब्रिटेनको जीता, उसी समय स्काट लोग कैलीडोनियाके पश्चिमी भागमें आगये और उन्होंने डैलरियाडा (Dalriada) नामक राज्य स्थापित किया। परन्तु शेष भागपर पिक्ट नामक कैल्टिक शाखा ही राज्य करती थी। इस प्रकार संवत् ६५७ (६०० ई०) के समीप स्काटलैण्डके चार भाग थे और चारों एक दूसरेसे स्वतन्त्र थे, अर्थात् पश्चिम-दक्षिणी भाग जो गैलोवे (Galloway) कहलाता था, डैलरियाडा जो पश्चिम-उत्तरी भाग था और पिक्टलैण्ड जो उत्तरपूर्वी भाग था। ये तीनों कैल्ट जातिकी स्काट और पिक्ट शाखाओंके अधीन थे। चौथा अर्थात् दक्षिण-पूर्वी भाग जो लोथियन (Lothian) कहलाता था इंग्लिश जातिके अधिकारमें था। थोडे दिनोंमें नार्थम्ब्रियाका इंग्लिश राज्य बहुत बढ़ गया, और वहांके राजा एडविनने फोर्थ नदीपर एक दुर्ग बनाया जिसका नाम एडिम्बरा (Edinbergh) रक्खा गया। संवत् ७२७ (६७० ई०) के निकट स्काट और पिक्ट जातिके राजा भी नार्थम्ब्रियाके अधीन हो गये। परन्तु जब नार्थम्ब्रिया वालोंने इन जातियोंको अधिक दबाया और इनकी स्वतन्त्रता छीननी चाही तो झगडा हो गया। संवत् ७४२ (६८५ ई०) में नार्थम्ब्रियाका राजा ईगफ्रिथ (Egfrith)

नैक्टन्समियर (Nectansmere) की लडाईमें मारा गया और स्काटलैण्ड सर्वथा स्वतंत्र होगया।

संवत् ८५७ (८०० ई०) के समीप उत्तर और पूर्वकी ओरसे नार्वेके जंगली निवासियोंने आक्रमण करना आरम्भ किया और दक्षिणमें इंग्लैण्डकी छोटी छोटी रियासतें संयुक्त होकर संवत् ८८४ (८२७ ई०) में ऐगबर्ट (Egbert) के आधिपत्यमें आ गयीं। इस प्रकार स्काटलैण्डवाले दोनो ओरसे भयभीत हुए और अपनी स्वतन्त्रता सुरक्षित रखनेके लिए उनको भी संयुक्त होकर यत्न करना पडा। संवत् ६०० (८४३ ई०) में डैलरियाडाका राजा केनिथ मैक एल्पिन (Kenneth Mac Alpin), जो पिक्ट वंशका था, पिक्ट और स्काट दोनों जातियोंका नरेश होगया और उसी समयसे सम्पूर्ण कैलीडोनियाका नाम स्काटलैण्ड पड गया। उस समयसे स्काटलैण्ड कभी इंग्लैण्डके वशमें नहीं आया। संवत् १६६० (१६०३ ई०) में स्काटलैण्डके राजा जेम्सके इंग्लैण्ड-नरेश होनेपर दोनों देश एक हो गये।

पाँचवाँ अध्याय।

आयर्लैण्ड और वेल्जका प्राचीन वृत्तान्त।



म पहले लिख चुके है कि इंग्लिश जातिके ब्रिटेन-पर आक्रमण करनेपर केल्ट जातिके लोगोंने भाग कर वेल्जके पहाडोंमें जान बचायी। पर यहाँ भी वे बहुत दिनोंतक सुरक्षित न रह सके। ज्यों ज्यों बाह्य जातियोंने बल पकडा और वे आगे बढती गयीं, त्यों त्यों

कैल्ट लोगोंको अपना देश छोडना पडा। समयान्तरमें वेल्ज-की पहाड़ियोंमें भी वे स्वतत्र न रह सके। वेल्ज वस्तुत एक बहुत छोटा देश है और पहाडी होनेके कारण उपजाऊ भी नहीं है। आजकल कोयले और लोहेकी बहुत सी खानें होनेके कारण यह धनाढ्य है, परन्तु उस समय, जब कोई इन चीजों-के अस्तित्वसे अभिज्ञ न था, यहाँके लोग बडे दरिद्र थे। यही कारण था कि ये अपने धनाढ्य और बलवान् पडोसियोंके हाथसे न बच सके और ईसाकी तेरहवीं शताब्दीके अन्ततक बिलकुल परतत्र हो गये।

आयर्लैंण्ड वेल्जसे बहुत बडा देश है और उपजाऊ भी बहुत है। परन्तु आयर्लैंण्ड और इग्लैण्डके बीचमें एक समुद्र है जिसके कारण न तो रोमन लोगोंने आप आयर्लैंण्डपर चढाई करनेका साहस किया और न कई सौ वर्ष तक इग्लिश जाति ही वहाँ पहुँची। इस प्रकार आयर्लैंण्डमें केवल कैल्ट जातिके लोग स्वतन्त्रतापूर्वक रहते रहे। इनके बडे बडे जत्थे थे। हर जत्थेका एक राजा होता था जिसकी सहायताके लिए एक और शासक होता था जिसे 'टैनिस्ट' [Tanist] कहते थे। कभी कभी कई जत्थे मिलकर एक राजा चुन लेते थे परन्तु उसका अधिकार सभाकी अपेक्षा नाम मात्रका ही था। आयर्लैंण्डमें चरागाह बहुत थे और अन्न बहुत कम उगता था। लोगोंका साधारण व्यापार पशु-पालन ही था।

आयर्लैंण्डके निवासियोंमें विशेष बात यह थी कि धर्मभाव प्रधान था। समस्त देश साधुओंसे भरा था। ये लोग विद्वान्, धार्मिक और परोपकारी होते थे। पहाडी भागोंमें ये छोटे छोटे समूहों मेंपत्थरकी छोटी छोटी कोठरियोंमें रहते थे और उपजाऊ जगहोंमें अच्छी धर्मशालाएँ और साधु आश्रम बने

हुए थे। यहाँ दूर दूरसे आ कर विद्यार्थी विद्योपार्जन करते थे। राज सभाओंमें संगीत और काव्यका अधिक प्रचार था। रत्न-जडाऊ काम और धातुकी चीजें बनानेमें ये बडे चतुर थे और लिखनेकी कलामें समस्त यूरोपसे आगे बढ़े हुए थे।

परन्तु ये सब गुण आयर्लैंण्डमें उसी समय तक रहे जब-तक विदेशियोंने उनपर विशेष कृपा नहीं की। वस्तुत दासत्व के साथ कौनसा गुण रह सकता है? आठवीं शताब्दीके अन्तमें नार्वेके नौर्समैन [Norsemen] लोगोंने आयर्लैंण्डपर भी आक्रमण किया और सवत् ६०७ (८५० ई०) के लगभग तट-वर्त्ती उत्तम उत्तम बन्दरोंको ले लिया। वहाँ रहते हुए देशके भीतरी भागमें भी लूट-मार कर सकते थे। इस समय कुछ डेन लोग भी, जो नौर्समैनके भाई-बन्धु थे, आयर्लैंण्डमें आ पहुँचे।

दशवीं शताब्दीके मध्यमें मन्स्टरके राजा मेहोन (Mahon) के भाई ब्रियन बोरू (Brian Boru) ने डेन लोगोंको पराजित करके लिमरिक ले लिया और सवत् १०३३ (६७६ ई०) में मेहोनके मारे जानेपर स्वय राजा हो गया। बीस वर्षके निरन्तर युद्धके पश्चात् उसने सवत् १०५६ (१००२ ई०) में डेन लोगोंको आयर्लैंण्डसे बिलकुल बाहर निकाल दिया और समस्त टापूका राजा हो गया।

ब्रियन बडा अच्छा राजा था। उसने आयर्लैंण्डकी गयी हुई सम्पत्तिको पुन. प्राप्त करानेके लिए बडे प्रयत्न किये। परन्तु सवत् १०७० (१०१३ ई०) में डेन लोग लीन्स्टरके निवासियोंसे मिल गये और उन्होंने फिर आक्रमण किया। डब्लिनके निकट क्लौण्टार्फ (Clontarf) पर युद्ध हुआ। आयर्लैंण्डवालोंकी विजय हुई। डेन लोग अपना सा मुँह

लेकर भागे, परन्तु आयर्लैंण्डको यह जीत बहुत मँहगी पडी। उनका अच्छा राजा ब्रियन मारा गया।

अब परस्परके लडाई झगडे शुरू हुए। लीन्स्टरके राजा उर्मटको, जो एक बुरा मनुष्य था, 'ओ'कोनर (O'conor) ने देशसे निकाल दिया।' उर्मटने इग्लैण्डके राजा हेनरीसे सहायता माँगी। हेनरीने सवत् १२२७ (११७० ई०) में रिचर्ड स्ट्रांगबो (Richard Strongbow) को उर्मटकी सहायताके लिए भेजा। स्ट्रांगबोने उर्मटको गद्दीपर बिठाकर उसकी पुत्री ईवा (Eva) से विवाह कर लिया और उर्मटकी मृत्युपर स्वय राजा बन गया। राजा होते ही उसने इग्लैण्ड-नरेश हेनरीकी अधीनता स्वीकार कर ली। उस दिनसे बराबर आयर्लैण्ड इग्लैण्डके साथ सयुक्त चला आता है। पर इग्लैण्डके शासनसे आयर्लैण्ड कभी सन्तुष्ट नहीं हुआ। बीच बीचमें विद्रोह और लडाई झगडे होते ही रहे। हर बार आयर्लैण्ड पराजित हो जाता था। उसका अन्तिम विद्रोह गत महायुद्धके बाद हुआ जिसमें इग्लैण्डको लाचार होकर वहाँ वालोंको स्थानीय स्वराज देना पडा। २० मार्गशीर्ष १९७८ (६ डिसम्बर १९२१) को इग्लैण्ड और आयर्लैण्डमें सन्धि हुई—दक्षिण आयर्लैण्डमें फ्री स्टेट सरकार स्थापित हुई जिसके अनुसार उसे कैनाडा आस्ट्रेलिया आदिकी तरहका ही स्वराज प्राप्त हो गया। उत्तरी आयर्लैण्डकी पार्लमेण्ट अलग हुई।

छठा अध्याय।

ग्रेट ब्रिटेनका ईसाई धर्म्म स्वीकार करना।

जिस समय रोमन लोग इंग्लैण्डसे वापस गये उसके पूर्व ही ब्रिटन लोग ईसाई हो चुके थे और राज-सभाओंमें ईसाई पुरोहितोंको स्थान मिलता था। पाँचवीं शताब्दीमें इन्होंने आयर्लैंडमें भी ईसाई धर्मका प्रचार कर दिया था। सन्त पैतृक (Saint Patrick) एक ब्रिटन पादरी था जिसको स्काट डाकू पकड़ कर आयर्लैंण्ड ले गये। इसीने आयर्लैंण्डमें ईसाई धर्मका विशेष प्रचार किया।

परन्तु एङ्गल, सक्सन और जूट लोगोंके आनेपर ईसाई धर्म इंग्लैण्डसे तिरोभूत हो गया। केवल वेल्ज और आयर्लैंण्डमें इस धर्मके अनुयायी बने रहे। इंग्लिश जातियाँ अनेक-देवोपासक थीं और उनको ईसाई धर्मसे घृणा भी थी। ब्रिटन लोग इंग्लिश लोगोंसे शत्रुता रखते थे और अपने धर्मके मर्म उनपर प्रकट करना उसी प्रकार पाप समझते थे जैसे भारतवर्षके पण्डित यवनों तथा ईसाइयोंको गायत्री मंत्र बताना। इसके अतिरिक्त इंग्लिश जातियाँ भी विजेता होनेके कारण अपने अधीन प्रजाका धर्म स्वीकार करना एक प्रकारका अपमान समझती थीं। यही कारण था कि राजनीतिक विप्लवोंके साथ ईसाई धर्मको भी बहुत कुछ क्षति उठानी पड़ी। और जब इंग्लिश जातियोंने ईसाई धर्म स्वीकार किया, तो अपनी परतंत्र प्रजासे नहीं, किन्तु स्वतंत्र विदेशियोंसे। दासोंके गुण भी दासत्वके कारण दूषित हो जाते हैं।

। संवत् ६५४ (५९७ ई०) में रोमके ईसाई पोप ग्रेगरीने इंग्लैण्डको ईसाई बनानेका उपाय किया। ग्रेगरीने रोमकी गलियोंमें एङ्गल जातिके सफेद चमड़ेवाले बच्चे गुलामोंके रूपमें बिकते देखे थे। उसे इनपर दया आ गयी। उसने व्यापारीसे पूछा—"क्या ये ईसाई हैं?" व्यापारीने उत्तर दिया—"नहीं।" ग्रेगरीने आह भर कर कहा—"शोक है कि इनकी बाह्य आकृति अतीव सुन्दर हैं, परन्तु इनके अन्तःकरणमें सत्य धर्मका प्रकाश नहीं।" उसने इनकी जातिका नाम पूछा, तो व्यापारीने उत्तर दिया—"ये एङ्गल हैं।" ग्रेगरीने कहा—'सत्य है, इनके मुख एन्जिल (Angel) अर्थात् फरिश्तोंके सदृश हैं और ये अवश्य ही मृत्युके पश्चात् एन्जिलों (फरिश्तों) के साथ रहनेके योग्य हैं।" ग्रेगरीने पूछा—"ये कहाँसे आये हैं?" उत्तर मिला डीईरा (Deira) से। रोमकी भाषामें डी ईरा का अर्थ हुआ "कोपसे।" ग्रेगरी इस उत्तरको सुन कर कहने लगा "सत्य है, इनको प्रभु ईसाकी शरणमें लाकर ईश्वरके कोपसे बचाना चाहिये।"

ग्रेगरीने उसी समय पोपसे प्रार्थना की कि मुझे आंग्ल देशमें ईसाई धर्मका प्रचार करनेकी आज्ञा दी जाय। पोप राजी होगया, परन्तु रोमवालोंने ग्रेगरी जैसे उत्तम पुरुषको इटली छोड़ने न दिया। जब कुछ दिनों पश्चात् ग्रेगरी स्वयं पोप हुआ तो उसने आगस्टाइनको चालीस भिक्षुओं सहित ईसाई धर्मके प्रचारके लिए इंग्लैण्ड भेजा।

ये लोग थेनिट टापूमें उतरे और केण्टके राजा ईथिल्बर्टके पास सन्देशा भेजा कि हम लोग रोमसे इसलिए आये हैं कि स्वर्गके आनन्दको प्राप्त करनेकी विधि आपको बतलायें।

ईथिल्वर्टकी रानी बर्था पहलेसे ही ईसाई धर्मकी थी और उसी धर्मके अनुकूल उसका आचार व्यवहार था, अत. ईथिल्वर्टने बड़े सम्मानसे इनका स्वागत किया। राजा खुले मैदानमें सिंहासन लगाये इनकी प्रतीक्षा कर रहा था। जब ये लोग आये तो आगे चांदीका क्रास* और ईसाकी मूर्त्ति लायी जा रही था। उसके पीछे आगस्टाइन और उसके साथी ईश्वरप्रार्थनाके भजन गाते हुए धीरे धीरे चले आ रहे थे।

राजाने उनका उपदेश सुना और उत्तर दिया "आप जो कुछ कहते हैं अच्छा है, परन्तु मेरे लिए यह एक नयी बात है और समझमें नहीं आती। अत हमलोग अपने पूर्वजोंका धर्म नहीं त्याग सकते। हाँ, आप मेरे राज्यमें बहुत दूरसे आये हैं, अत· आपका यथायोग्य सत्कार किया जायगा। आप रहें और प्रचार करें।" फलत ईथिल्वर्टने अपनी राजधानी केण्टरबरीमें इनको स्थान दिया जहाँ ये अपने धर्मका प्रचार करते रहे। अन्तमें ईथिल्वर्ट भी ईसाई होगया।

यह हुआ दक्षिणका हाल। अब उत्तरका वृत्तान्त सुनिये। नार्थम्ब्रियाके राजा ईडविनको वचपनमें बड़ी विपत्तियोंका सामना करना पड़ा। कहते हैं कि एक रातको जब वह घबराया हुआ सोचमें बैठा था कि उसी समय एक अज्ञात पुरुषने आकर उसे ढाढस दिया और उसके हाथपर क्रासका चिह्न बनाकर कहा—"यदि तुम्हें सफलता प्राप्त हो तो इस चिह्नको स्मरण रखना और यदि कोई नया धर्म बतलाया जाय तो उसको मानना।" अज्ञात पुरुष चला गया और ईडविनको भी कुछ दिनोंमें विपत्तियोंसे छुटकारा मिल गया। जब ईड-

* यह चिन्ह उस सूलीकी आकृति है जिसपर ईसाको प्राणदण्ड दिया गया था। यह ईसाई धर्ममें बड़ा पवित्र माना जाता है।

विन गद्दीपर बैठा, तो उसने केण्टके राजाको, जो ईथिल्वर्टका पुत्र था, कहला भेजा कि तुम अपनी बहिनका विवाह हमारे साथ कर दो। राजाने उत्तर दिया कि हम विधर्मियोंके साथ विवाहसम्बन्ध नहीं कर सकते। परन्तु ईडविनने प्रतिज्ञा की कि रानीके धर्ममें हस्तक्षेप न किया जायगा और उसे अपने ईसाई पुरोहित लानेका भी अधिकार रहेगा। अतः यह विवाह हो गया और आगस्टाइनका शिष्य पौलीनस (Paulinus) उसके साथ गया।

जब ईडविनके राजकन्या उत्पन्न हुई, तो पौलीनसने ईसा मसीहकी प्रार्थना की और राजासे भी ऐसा ही करनेको कहा। राजाने उत्तर दिया कि "मैं पश्चिमके सैक्सन लोगोंसे लड़ने जा रहा हूँ। यदि तुम्हारे प्रभु मुझे विजय प्राप्त करा दें तो मैं अवश्य उनको मान लूँ।" अकस्मात् ऐसा ही हुआ। उस समयसे ईडविनने अपने देवता और मूर्तियाँ पूजना छोड़ दिया परन्तु वह ईसाई धर्म स्वीकार करनेसे हिचकचाता था। एक दिन पौलीनस आया और हाथपर क्रासको चिन्ह बनाकर कहने लगा—"राजन्! इस चिन्हको जानते हो?" राजा उसके पैरोंपर गिरनेको ही था कि पौलीनसने उठा लिया और कहा—"प्रभुने तुमको शत्रुओंपर विजय प्राप्त करायी है। अब तुमको अपने पूर्वजोंकी राजगद्दी मिल गयी और तुम्हारा राज्य बढ़ने लगा। अब समय है कि तुम प्रतिज्ञा पालन करो और ईसाई हो जाओ।" इसपर राजाने अपने मन्त्रियों तथा इष्ट मित्रोंकी सभा की और धर्म परिवर्तनका विचार पेश किया। वोडिन देवताके पुजारी कोइफी (Coi... ने ईसाई धर्म स्वीकार किया और वोडिनकी ... डालीं। वह कहने लगा कि इन देवी-देवताओंने

बात हमारे हितकी नहीं की। ईडविन और उसकी प्रजा भी इस प्रकार ईसाई हो गयी।

ईसाई धर्मके प्रचारका यह सब वृत्तान्त बीड (Bede) नामक एक योग्य साधुने, जो आगस्टाइनसे ८० वर्ष पीछे हुआ, अपने इतिहासमें दिया है। यह साधु बड़ा विद्वान्, धर्मात्मा तथा अपने धर्मका बड़ा श्रद्धालु प्रचारक था। वृद्धावस्थामें भी दिन भर पढ़ाता और यूहनकी इजीलका अंग्रेजीमें अनुवाद कराया करता था। जब उसकी सांस बढ़ने लगी और पैर सूज गये तो उसने अपने शिष्यसे कहा—"जल्दी जल्दी पढ़ो, न जाने मैं कितना और रहूँ।" एक दिन बुधवारको तड़केसे पढ़ाते पढ़ाते नौ बज गये और शिष्यने कहा—"गुरो! अभी एक अध्याय शेष है और मेरे प्रश्नोंसे आपको कष्ट हो रहा है।" बीडने कहा—"नहीं नहीं, कलम लो और जल्दी जल्दी लिखो।" इस प्रकार लिखते लिखते सायंकाल हो गया। तब शिष्यने कहा "अभी एक वाक्य शेष है।" बीड बोला—"जल्दी लिखो।" थोड़ी देरमें शिष्य बोला—"अब सब समाप्त हो गया।" बीडने कहा "सच है, अब सब समाप्त हो गया" और यह कहते ही सदाके लिए आँखें मींच लीं।

संवत् ६९० (६३३ ई०) में मर्सियाके राजा पेण्डा (Penda) ने ईडविनको हीथफील्ड (Heathfield) के युद्धमें मार डाला। उस समय ईसाई मतके पैर नार्थम्ब्रियासे उखड़ गये। परन्तु थोड़े दिनों पीछे वहाँके राजा ओस्वाल्डने फिर यह धर्म स्वीकार कर लिया। इसकी कथा यह है.—

आयर्लैण्डका एक पादरी कोलम्बा आयोना (Iona) नामक टापूमें आया और उसने स्काटलैण्डके पश्चिमी भागको ईसाई बनाया। ओस्वाल्ड भी बचपनमें आयोनामें रहा था।

अतएव नार्थम्ब्रियाका अधिपति होते ही उसने कोलम्बाके एक शिष्य आईडान (Aidan) को बुलाया जिसने नार्थम्ब्रियाको फिर ईसा मसीहका अनुयायी बना लिया ।

संवत् ७१२ (६५५ ई०) में ईसाई मतका शत्रु पेण्डा भी मारा गया और उस समयसे समस्त इग्लैण्ड ईसाई हो गया ।

परन्तु उस समय ईसाई मतकी दो शाखाएँ थीं । एक रोमन शाखा जो रोमके पोपके अधीन थी और जिसका आगस्टाइन और पौलीनसने प्रचार किया था, दूसरी कैल्टिक शाखा जिसके प्रचारक कोलम्बा और उसके शिष्य थे । अनेक बातोंमें इन दोनों शाखाओंमें भेद था परन्तु सबसे मुख्य बात यह थी कि कैल्टिक लोग न तो बिशप अर्थात् पुरोहितोंके अधीन थे और न वे पोपके आधिपत्यको स्वीकार करते थे ।

इस झगडेको दूर करनेके लिए संवत् ७२१ (६६४ ई०) मे व्हिटबी (Whitby) मे एक सभा हुई जिसका प्रधान नार्थम्ब्रियाका राजा ओस्वी (Oswy) था । अन्तमे ओस्वी पोपके अधीन हो गया । स्काटलैण्डके ईसाइयोंने ऐसा करने से निषेध किया परन्तु सवत् ७७३ (७१६ ई०) मे वे भी रोमन शाखामे मिल गये । इस प्रकार ९०० वर्ष तक रोमके पोप इंग्लैण्ड तथा समस्त यूरोपके धर्माध्यक्ष बने रहे ।

सातवाँ अध्याय।

इंग्लैण्डका संघटन।

तीसरे अध्यायमें बताया जा चुका है कि एङ्गल, सैक्सन और जूट जातियोंके आनेके पश्चात् चार मुख्य इंग्लिश राज्य इंग्लैण्डमें स्थापित हो गये—नार्थम्ब्रिया, वैसेक्स, मर्सिया और केण्ट। इन सबमें परस्पर झगडे होते रहे—कभी कोई और कभी कोई विजय पाता रहा।

ओस्वीका लडका ईगफ्रिथ नार्थम्ब्रियाका एक बलवान् राजा था। अन्य राजा उसके अधीन होगये, परन्तु सं० ७४२ (६८५ ई०) में उसके मारे जानेपर मर्सियाके राजाका आधिपत्य आरम्भ हुआ। यहाँका नरेश ओफा (Offa) बहुत प्रसिद्ध हुआ है। इसने संवत् ८१४-८५३ (७५७ ई० से ७९६ ई०) तक राज्य किया। इसके मरनेपर वैसेक्सकी बारी आयी और सं० ८६५ (८०८ ई०) मे वहाँका राजा ईग्बर्ट समस्त इंग्लैंडका वास्तविक राजा हो गया। उसने संवत् ८४२ (८८५ ई०) में इलेण्डून (Ellandun) के रणक्षेत्रमें मर्सिया-वालोंको, संवत् ८८३ (८२६ ई०) में एसेक्स और पूर्वी एङ्ग-लियाको, और संवत् ८८४ (८२७ ई०) में नार्थम्ब्रिया वालोंको पराजित करके अपने अधीन कर लिया।

ईग्बर्टकी मृत्युके पश्चात् सम्भव था कि इंग्लैण्डके फिर टुकडे टुकडे हो जाते, परन्तु उस समय एक और शत्रुका सामना करना पडा जिसके लिए आवश्यक था कि समस्त देशकी संयुक्त शक्तिसे काम लिया जाय। ये नये वैरी डेन लोग

थे। ये वस्तुत. नार्वे और डेन्मार्कके रहनेवाले थे। इनकी दो शाखाएँ हो गयीं। एकने फ्रांसके उत्तरमें पैर जमाया और वहाँ नार्मन अर्थात् "उत्तरी लोगोंके" नामसे प्रसिद्ध हुए। दूसरी शाखा डेन कहलायी और उसने उसी प्रकार इंग्लैण्ड-पर आक्रमण करना शुरू किया, जैसे पहले एङ्गल, सैक्सन और जूट लोगोंने किया था। ये भी लुटेरे ही थे और अपने हलके जहाजोंमें आकर गाँवोंको जला देते और लोगोंको लूट ले जाते थे। उस समय ईसाई धर्मके साधु भी धनवान हो चले थे। यद्यपि आरम्भमें उन्होंने तापसी जीवन व्यतीत किया था, तथापि लोगोंने उनको भेंट देनी शुरू की और बहुत जल्द उनके मठ भारतवर्षके मन्दिरोंके समान धन और सम्पत्तिसे परिपूर्ण हो गये। डेन लोग यह भी जानते थे कि साधु लोग लड़ना नहीं जानते इस लिए अधिकतर ये इन मठोंपर ही छापा मारते थे और साधुओंको मार कर मठोंको जला कर धन हरण कर लेते थे।

ईग्बर्ट और उसकी सन्तानने बहुत उपाय किये कि डेन लोगोंको इंग्लैंडमें न आने दें। भिन्न भिन्न स्थानोंपर युद्ध हुए जिनमें कभी डेन और कभी अंग्रेजोंने विजय पायी। परन्तु डेन लोगोंने आना न छोड़ा और अंग्रेजोंके समान वे भी देशमें बस गये।

जब ईग्बर्टका छोटा पोता एल्फ्रेड स० ६२८ (८७१ ई०) में गद्दीपर बैठा उस समयतक डेन लोग उत्तर और पूर्वमें फैल चुके थे। एल्फ्रेडके पिता ईथलवुल्फ (Ethelwulf) और एल्फ्रेडके तीन बड़े भाइयोंने, जिनको राजा होनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ, डेन लोगोंको रोकनेका बड़ा प्रयत्न किया, पर उनकी एक न चली। सात वर्ष तक एल्फ्रेडने भी बराबर

लड़ाई जारी रक्खी, परन्तु सवत् ६३५ (८७८ ई०) में वह पराजित हो गया और सोमरसेट शायरके दलदलोंमें एथिलिनी (Athelney) नामक टापूमें जा छिपा। इस अवस्थामें भी उसने डेन लोगोंका पीछा न छोड़ा और एक बड़ी सेना एकत्र करके इथानडुन (Ethandune) पर डेन लोगोंको बड़ी बुरी तरहसे हराया। सवत् ६२६ (८७६ ई०) में डेनके सेनापति गथरमसे चिपिन्हाम (Chippenham) स्थानमें संधि हो गयी जिसके अनुसार गथरम और उसकी सेना ईसाई हो गयी और इग्लैण्डके दो भाग हो गये जिनकी सीमाकी रेखा टेम्ससे रीडींग स्थानतक खींची गयी। इस रेखाके दक्षिण और पश्चिमका भाग एल्फ्रेडके अधीन रहा और शेष इग्लैंड डेन लोगोंके। स० ६४३ (८८६ ई०) में एक और सन्धि हुई जिसके अनुसार लन्दन और उसका निकटस्थ प्रान्त भी एल्फ्रेडको मिल गया।

एल्फ्रेड इग्लिस्तानके बड़े प्रसिद्ध राजाओंमेंसे एक है। उसने देशको गिरती हुई अवस्थामें सँभाल लिया और न केवल एक दो बार डेन लोगोंको पराजित करके ही देशकी रक्षा की, किन्तु इससे भी अधिक कार्य्य यह किया कि प्रजाको आत्मरक्षाके योग्य बना दिया। सबसे पहले उसने जलपोतोंका बेड़ा तैयार किया और तटस्थ नगरोंपर उसके लिए कर लगाया। इस तरह जहाज मजबूत होगये और डेन लोग फिर आक्रमण न कर सके। उसने अपनी प्रजाके लिए सेनामें सम्मिलित होना अनिवार्य कर दिया और सेनाके दो भाग कर दिये। एक लड़ाईपर जाता था, दूसरा खेतीबारीके लिए घरपर रहता था। इस प्रकार आन्तरिक उन्नति और बाह्य रक्षा दोनों काम साथ साथ होते चलते थे।

उसने नगरोंको मजबूत कर लिया और सीमान्तपर दुर्ग बनाये जिसमें आक्रमणके समय यथेष्ट रक्षा हो सके।

एल्फ्रेड स्वयं सुशिक्षित था और उसे पूर्ण विश्वास था कि प्रजाको सुशिक्षित करना ही शत्रुको परास्त करनेका मुख्य साधन है। वह अशिक्षित प्रजापर राज्य करना नहीं चाहता था। इसलिए उसने अपने राज्यमें बहुतसी पाठशालाएँ खोल दीं। अन्य देशोंसे प्रसिद्ध विद्वानोंको बुलाकर अध्यापक और गिरजोंका पुरोहित नियत किया। इटलीके रोम नगरमें अंग्रेज लड़कोंकी उच्च शिक्षाके लिए एक विद्यालय खोला। ३९ वर्षकी आयुमें स्वयं लैटिन भाषा सीखी और प्रजाके हितके लिए लैटिन भाषासे अंग्रेजीमें उत्तम पुस्तकोंका अनुवाद किया। उसने वैसेक्स की प्राचीन रीतियोंके आधारपर एक धर्म-शास्त्र बनाकर उसे राज-महासभासे पास करा लिया। उसने अपने समयका इतिहास भी लिखवाया। एल्फ्रेड वस्तुत: एक महान् आत्मा था। वह राजनीतिको भली प्रकार समझता था। उसने डेन लोगोंकी दशा देख कर जान लिया था कि इस समय उनको देशसे निकाल देना दुस्तर है। इसीलिए उसने आधे देशपर ही सन्तोष कर लिया, परन्तु उस विजयका बीज भली प्रकार बो गया जो उसके पुत्र और पौत्रोंको उसके पश्चात् प्राप्त हुई। उसमें धैर्य्य और कर्मण्यता भी विलक्षण थी। उसे एक प्रकारका भयानक रोग था जिससे उसे सदैव पीडा रहती थी। परन्तु इसपर भी उसने कभी अपना कर्त्तव्य न छोडा। वह कहा करता था कि उच्च बननेके लिए मनुष्यको सेवा-धर्म ग्रहण करना चाहिये।

एल्फ्रेड स० ६५८ (९०१ ई०) में मर गया। उस समय आधा इंग्लैण्ड डेन लोगोंके अधीन था। उसके लडके एडवर्ड-

ने गद्दीपर बैठते ही राज्य बढ़ानेके उपाय किये। देशमें उन्नति हो ही रही थी, आन्तरिक उन्नतिके साथ बल भी बढ रहा था। एडवर्डकी बहिन ईथिलफ्लीडा, जो मर्सियाके पहले राजाको व्याही थी और जो अब वैधव्य दशामें थी, बडी बलवती स्त्री थी। उसकी सहायतासे एडवर्डने बहुत जल्द चौहर और कई स्थान डेन लोगोंसे ले लिये और जब देवी ईथिलफ्लीडा मर गयी तो मर्सियाका आधा भाग एडवर्डको मिल गया। एडवर्ड इतना शक्तिशाली हो गया था कि पूर्वी एङ्गलिया और नार्थम्ब्रियाके डेन तथा स्काटलैण्ड और वेल्ज़के राजा भी उसका लोहा मानते थे।

स० ९८२ (९२५ ई०) में एडवर्डकी मृत्युपर उसके बेटे एथिल्स्टन (Athelstan) ने भी देशोद्धारका कार्य्य जारी रखा। पहले उसने अपनी पुत्री नार्थम्ब्रियाके डेन राजाको व्याह दी और उस राजाकी मृत्युपर नार्थम्ब्रियाको अपने राज्यमें मिला लिया। एथिल्स्टनके पश्चात् उसके भाई एडमण्ड और ईडरिडने समस्त देश डेन लोगोंसे ले लिया। इस प्रकार स० १००७ (९५० ई०) तक खोया हुआ देश अंग्रेजोंके हाथ आगया। यह सब एल्फ्रेडके ही काय्योंका फल था।

परन्तु इस समय तक डेन और अंग्रेज परस्परके विवाह आदि सम्बन्धों द्वारा एक हो चुके थे और अब उनमें पहलेकी भाँति भेद-भाव नहीं रहा था। देशमें भी कुछ परिवर्त्तन हो गये अर्थात् प्रथम तो विजयी राजाओंके कारण राजाओंकी शक्ति बढ़ गयी और राजसभाकी शक्ति कम हो गयी। दूसरे, डेन लोगोंके आक्रमणके कारण देश दरिद्र होगया। कृषक लोगोंका भूमिपरसे स्वत्व जाता रहा और भूमि विजयी लोगोंकी होगयी। डेन लोगोंके आनेसे देशमें व्यापार और

कला-कौशल बहुत बढ गया क्योंकि डेन लोग व्यापार प्रिय थे। उनके संसर्गसे अंग्रेजोंने भी बहुत कुछ सीखा और इस समय जो वैभव अंग्रेजोंको प्राप्त हो रहा है उसका बहुत कुछ मूल कारण डेन लोग ही थे। इग्लैण्डके संघटनमें डेन लोगोंने सहायता दी, क्योंकि डेनोंके आक्रमणसे बचनेका प्रयत्न करते हुए अंग्रेज लोग अपने पारस्परिक झगडोंको भूल गये और शत्रुसे लडनेके लिए एक होगये।

स० १००७ (९५० ई०) के निकटतक अंग्रेजोंका गया हुआ देश फिर उनके हाथ आ चुका था और इससे भी अधिक बात यह हुई कि दो सौ वर्ष पहले जो इग्लेण्ड छोटे छोटे स्वतंत्र राज्योंमे बँटा था, वही अब समष्टिरूपसे संघटित हो गया। अब यह बताना भी आवश्यक जान पडता है कि इस समय राजनियम किस प्रकारके थे।

पहली बात तो यह है कि राजा देश और सेना दोनोंके प्रबन्धके लिए उत्तरदाता था और वही युद्ध आदिमें सेनापति होता था। दूसरी बात यह है कि उसकी सहायताके लिए राज सभा थी जिसे वाईटन (Witan) कहते थे। इस सभाके सभ्य ये थे—(१) महारानी, (२) वे राजवंशीय लोग जो बालिग होते थे, (३) गिरजों और मठोंके महन्त अर्थात् विशप, एबट आदि, (४) प्रान्तोंके शासक, (५) राजगृहके प्रबन्ध कर्ता, और (६) अन्य उच्चवंशीय लोग जो राजाके सहायक समझे जाते थे। इस सभाका सभापति राजा होता था। सभाके कर्तव्य ये थे —

(१) राजाका निर्वाचन, (राज्य पैतृक सम्पत्ति नहीं था, और राजपुत्रको राजगद्दी देना न देना राजसभाके अधिकारमें था। प्राय. राजाकी मृत्युपर उसके छोटे या अयोग्य

लडकोंकी जगह दूसरा मनुष्य राजा बना दिया जाता था। राजसभा राजाको गद्दीसे भी उतार सकती थी।)

(२) नियम निर्माण,

(३) सन्धि आदिकी स्वीकृति,

(४) प्रान्तोंके शासक नियत करना,

(५) गिरजोंके बिशप अर्थात् बडे पादरियोंका नियत करना,

(६) उच्च न्यायालय (हाईकोर्ट) का काम करना अर्थात् बडे बडे अभियोगोंका निर्णय करना, और

(७) कर लगाना।

राजसभाके नीचे प्रान्तसभाएँ भी थीं जिनको शायरमूट (Shiremoot) कहते थे। इनका सभापति प्रान्तका शासक अथवा गिरजेका बिशप होता था और इसके सभ्य प्रान्तभरके प्रतिनिधि होते थे। यह सभा न्यायालयका काम भी करती थी।

प्रत्येक प्रान्तके कई भाग होते थे जिनको 'हण्ड्रेड' अर्थात् शतक कहते थे। प्रत्येक शतकमें एक शतकसभा थी जिसका सभापति शतकाध्यक्ष (Hundredsealdor) कहलाता था। इसका मुख्य उद्देश्य यह था कि डाका चोरी आदि न होने पावे और डाकुओं तथा चोरोंको खूब दण्ड दिया जाय।

प्रत्येक शतक ग्रामोंमें बटा हुआ था जिसमें एक एक लम्बरदार रहता था।

इस प्रकार ऊपरसे लेकर नीचेतक देशका प्रबन्ध बहुत अच्छा था और स्थानिक शक्तियाँ बड़ी प्रबल थीं, परन्तु केन्द्रीय शासन इतना बलिष्ठ न था जितना आज कल है। नियम भी साधारण ही थे और वही शान्ति स्थापनके लिए पर्य्याप्त समझे जाते थे।

आठवाँ अध्याय ।

डेन लोगोंका पुनरागमन ।

ईडरिट सं० १०१२ (९५५ ई०) में मर गया और उसकी जगह एडमण्डका पुत्र ईडवी गद्दीपर बैठा। इसके समयमें डुन्स्टन नामक एक बहुत योग्य पादरी था। उसने गिरजों और मठोंको शुद्ध रखनेके लिए बडे बडे नियम बनाये थे जिनका पालन करना प्रत्येक साधु और पादरीका कर्त्तव्य था। इन कडे नियमोंके कारण राजा रुष्ट हो गया और डन्स्टनको देश छोडकर भाग जाना पडा। ईडवीने स्वतन्त्र होकर अत्याचार करना प्रारम्भ कर दिया जिसके कारण मर्सिया और नार्थम्ब्रियाने स्वतंत्र होकर उसके भाई एडगरको अलग शासक नियत कर लिया। चार वर्षमें ईडवी मर गया और संवत् १०१६ (९५९ ई०) में एडगर समस्त इंग्लैण्डका राजा होगया।

एडगर योग्य और धर्मात्मा राजा था। उसने फिर डन्स्टनको बुलाकर राज्यप्रबन्ध सुधार लिया। जो मठ डेन लोगोंके समयमें नष्ट अथवा शिथिल हो गये थे वे फिर बनाये गये। दूर दूरके देशोंसे योग्य अध्यापक बुलाकर पाठशालाएँ बनायी गयीं। साधु लोग पवित्र जीवन व्यतीत करनेके लिए बाध्य किये गये। परन्तु एडगर भी सं० १०३६ (९७९ ई०) में मर गया और डन्स्टन सं० १०४५ (९८८ ई०) में। तत्पश्चात् इग्लेंडके दुर्भाग्य फिर शुरू हुए।

एडगरके पश्चात् एक निर्बल राजा ईथिलरेड (Ethelred) हुआ जिसको लोग "अनरेडी" (Unready) अर्थात्

"अनुद्यत" कहते थे। इसने ३७ वर्ष अर्थात् संवत् १०७३ (१०१६ ई०) तक राज्य किया। इसके समयमें देशपर सहस्रों विपत्तियाँ आयीं। डेनमार्क और नार्वेसे डेन लोग फिर आकर लूटमार करने लगे। ईथिलरेड लड़ना तो जानता ही न था, उसने डेन लोगोंसे बचनेके लिए एक विचित्र उपाय सोचा जो रक्षाके स्थानमें नाशका कारण हो गया, अर्थात् उसने डेन लोगोंको रुपया देकर टालना चाहा। इससे इन लोगोंको लूटकी और चाट पड़ गयी। वे बार बार आने लगे। यहाँ तक कि उनके सेनाध्यक्ष स्वेण्ड (Swend) और उसके पुत्र कैन्यूट (Canute) ने बहुतसा देश अपने अधिकारमें कर लिया। ईथिलरेडके मर जानेपर एडमण्ड गद्दीपर बैठा। यह वीर था और इसने युद्ध करके बहुतसा भाग डेन लोगोंसे ले लिया था, परन्तु यह उसी वर्ष मर गया और १०१६ ई० के अन्तमें डेन कैन्यूट समस्त इंग्लैण्डका राजा हुआ।

नवाँ अध्याय।

कैन्यूट और उसके उत्तराधिकारी।



न्यूट इंग्लैण्डके अतिरिक्त डेन्मार्क और नार्वेका भी अधिपति था। यह बहुत अच्छा राजा था और समस्त प्रजाको सुख देता था। यद्यपि यह डेन था, तथापि किसीके साथ पक्षपात नहीं करता था और नित्यप्रति इसका उद्देश देशहित ही था। अंग्रेजों और डेनोंको यह एक दृष्टिसे देखता

और एकको दूसरेपर अत्याचार करनेसे रोकता था। वस्तुत ऐसे राजा संसारमें बहुत कम होते हैं जो अपनी जातिके लोगोंको दूसरोंपर अत्याचार न करने दें। यह अंग्रेजोंके धर्मका भी ध्यान रखता था और गिरजों तथा मठोंमें जाकर उनसे शिक्षा ग्रहण करता था। जब यह रोममें गया तो वहांसे लिखा, "मैंने ईश्वरकी साक्षीमें व्रत किया है कि मैं धर्म और न्यायपूर्वक राज्य करूँगा। यदि युवावस्थाकी क्रूरता वा असावधानताके कारण कोई अन्याय हुआ हो तो मैं उसे बदलनेके लिए तैयार हूँ।"

कैन्यूटकी मृत्युपर सं० १०९२ (१०३५ ई०) में उत्तरी इङ्गलैण्डने उसके एक लड़के हेरल्ड हेअरफुट (Harold Harefoot) को और दक्षिणी इङ्गलैण्डने उसके दूसरे पुत्र हार्थानट (Harthacnut) को गद्दीपर बैठाया। परन्तु ये अपने पिताके समान बलवान् न थे और वास्तविक शासन नार्थम्ब्रियाके सीवर्ड (Siward), मर्सियाके लिओफ्रिक (Leofric), और वैसेक्सके गौडविनके हाथमें था।

हार्थानट डेन्मार्कमें रहता था और इङ्गलैण्ड आना नहीं चाहता था, इसलिए संवत् १०९४ (१०३७ ई०) में राजसभाने हेरल्डको समस्त इङ्गलैण्डका राजा बना दिया, परन्तु संवत् १०९७ (१०४० ई०) में उसके मरनेपर हार्थानट फिर गद्दीपर बैठा। यह भी संवत् १०९९ (१०४२ ई०) में मर गया। इस प्रकार कैन्यूटका वंश समाप्त हो गया।

सं० १०९९ (१०४२ ई०) में ईथिलरेड अनरेडीका पुत्र एडवर्ड कन्फेसर अर्थात् सन्त एडवर्ड गद्दीपर बैठाया गया। इसकी माता ईमा (Emma) नार्मन थी। एडवर्ड धर्मात्मा परन्तु निर्बल था और राज्यप्रबन्ध दूसरोंके ही अधीन था।

सं० ११२३ (१०६६ ई०) तक उसने राज्य किया। इसके पश्चात् एक बड़ा विप्लव हुआ जिसकी नींव एडवर्डने ही डाल दी थी। इस विप्लवका हाल आगे लिखा जायगा।

इस खण्डकी समाप्तिपर उचित प्रतीत होता है कि तत्कालीन इंग्लैण्डके निवासियोंके आचार व्यवहारका भी कुछ संक्षिप्त वृत्तान्त दिया जाय। यद्यपि पुस्तकोंसे इस विषयमें बहुत कम सहायता मिलती है तथापि उस समयकी पुस्तकोंमें अनेक प्रकारके चित्र बने हुए हैं जो वहाँके लोगोंके जीवनपर बहुत कुछ प्रकाश डालते हैं। एक विचित्र बारहमासी चित्रका पता लगा है जिसपर वर्षके प्रत्येक मासकी दशा पृथक् पृथक् दिखलायी गयी है। ये चित्र बड़े मनोरञ्जक हैं। जनवरीके चित्रसे ज्ञात होता है कि उस समय वहाँ इसी मासमें खेत बोये जाते थे। एक हल जोतता था, दूसरा बीज बोता था और आगे एक लड़का बैलोंको हाँकता था। गेहूँ और जौ अधिक बोये जाते थे। धनाढ्य गेहूँ खाते थे। जौ दरिद्रोंके भोजन तथा शराब बनानेके काममें आता था। हलमें बैल जोते जाते थे। घोड़ोंको जोतनेकी राजाकी ओरसे आज्ञा न थी। रोमवालोंने अंगूर बोना भी आरम्भ कर दिया था, परन्तु इंग्लैण्डका जल-वायु इसके अनुकूल न था। अंगूरकी शराब खट्टी होती थी और उसे मीठा बनानेके लिए शहद मिलाना पड़ता था। अप्रेलमें गर्मीकी ऋतुका आरम्भ होता है। इस समय अनेक प्रकारसे ईस्टर उत्सव मनाया जाता था। अब भी लोग गर्मीका बड़ी श्रद्धासे स्वागत करते हैं। ये लोग आजकलके समान उस समय भी शराब बहुत पीते थे। इनके पीनेके गिलास सींगके बने होते थे। धनाढ्योंके पास शीशेके गिलास भी होते थे परन्तु पेंदे गोल होते थे और भरा हुआ

गिलास भूमिपर नहीं जम सकता था। बैठनेके लिए स्टूल होते थे। मेजें भद्दी लकडीके तख्तोंकी बनी होती थीं जिनका नीचेका ढाँचा अलग होता था। इग्लैण्डमें गौ, बकरी, भेड, तथा सूअरका मांस बहुत खाया जाता था। सूअर वहाँके लोगोंकी विशेष सम्पत्ति समझे जाते थे। यदि कोई धनी मरता, तो लिख जाता कि "मै सौ सौ सूअर दो गिरजों (धर्म मन्दिरों) के लिए छोडता हूँ। पुजारीको चाहिये कि मेरी आत्माकी सद्गतिके लिए प्रार्थना करे। एक एक सहस्र सूअर अपनी लडकियोंके लिए और सौ सो सूअर अपने अन्य अन्य सम्बन्धियोंके लिए देता हूँ"। शरद ऋतुमें भोजन बहुत कम मिलता था। उस समयके लिए मासको सलोना करके रख छोडते थे, क्योंकि जाडोंमें चारेके अभावके कारण पशु दुर्बल हो जाते थे। भोजनके पश्चात् प्राय सभी लोग सारगी बजाकर अपना मन बहलाव करते थे। गवैयोंको धनाढ्य लोग नौकर भी रखते थे।

उस समय इग्लैण्डमें जगल बहुत थे। जलानेके अतिरिक्त मकान भी लकडियोंके ही बनाये जाते थे। पत्थरोंका बहुत कम प्रयोग होता था। दरिद्र लोग मिट्टी और लकडीके झोपडे बनाते थे। धनी लोगोंके घरोंमें भी बहुत सामान न था। बडे बडे मकानोंमें भी खिडकियां या झरोखे न थे। छत में एक छिद्र होता था। दालानके बीचमें आग एक पत्थरपर जलायी जाती थी और धुआँ उसी छिद्र द्वारा निकलता था। जिन छिद्रोंद्वारा प्रकाश आता था उनके भीतरकी ओर बहुधा कपडा लगा रहता था। चारों ओरसे वायु आनेके कारण दीपक बहुधा बुझ जाते थे, इसीलिए एल्फ्रेडने लालटेनोंका आविष्कार किया था।

इन लोगोंको शिकारका बहुत शौक था। वे हिरनों, बारह-सींगों, जंगली सूअरों, बकरियों और खरगोशोंका शिकार जाल बिछा कर अथवा उनके पीछे शिकारी कुत्ते दौड़ाकर, करते थे परन्तु रविवारको पवित्र समझ कर उस दिन शिकार करनेका निषेध था। चिड़ियोंके शिकारके लिए बाज़ भी पाले जाते थे।

द्वितीय खण्ड।

निरंकुश राज्य

पहला अध्याय।

नार्मन वंश।

जो डेन लोग डेन्मार्कसे आकर इग्लैण्डमें बसे उन्हीं की एक शाखा फ्रांसके उत्तरी भागमें सीन नदी-के दोनों ओर रहने लगी। इस शाखाका नाम नार्मन (नार्थ मैन अथवा उत्तरी लोग) पड़ गया और जिस प्रान्तमें ये रहे उसको नार्मण्डी कहने लगे। ये लोग वास्तवमें स्वतन्त्र थे परन्तु नामके लिए फ्रांस-नरेशके अधीन थे। दो तीन शताब्दियोंमें इन्होंने बहुत कुछ सभ्यता प्राप्त कर ली और फ्रांसवालोंके समान रहने लगे।

हम बता चुके हैं कि एडवर्ड कन्फैसरकी माता नार्मन थीं। चूंकि एडवर्डका पालन-पोषण नार्मण्डीमें हुआ था इसलिए कई अंशोंमें नार्मन लोगोंका प्रभाव इसके हृदय-पर जमा हुआ था। इग्लैण्डका राजा होने पर भी इसने नार्मन

लोगोंका ही पक्ष लिया। अंग्रेजोंसे इसे कुछ घृणा सी थी, इसीसे उच्च पद नार्मनोंको ही दिये गये थे। केण्टरबरीका लाट पादरी भी एक नार्मन ही बनाया गया था। राजसभामें अंग्रेजी भाषाके स्थानमें फ्रेंच भाषा बोली जाती थी। इन सब बातों को देखकर अंग्रेज लोग बहुत जलने लगे, और वैसेक्सका अंग्रेज शासक गौडविन ऐसे उपाय सोचने लगा कि जिसमें नार्मन लोग इंग्लैण्डसे निकल जावें। प्रथम तो गौडविनको ही देश छोडकर भागना पडा। परन्तु कुछ दिनों पीछे उसने नार्मन लोगोंको राजसभासे निकाल ही दिया। गौडविनकी मृत्युपर उसका पुत्र हैरोल्ड अपने पिताका स्थानापन्न होगया और एडवर्ड केवल नामके लिए राजा रहा। उसके समयका एक ही प्रसिद्ध कार्य्य है अर्थात् वेस्ट मिन्स्टर-एबी नामक गिरजेका निर्माण। यह गिरजा लन्दनका प्रसिद्ध गिरजा है। इस समय तक इसमें बहुत परिवर्तन होगया है, परन्तु इसकी नीव एडवर्ड कन्फैसरने ही डाली थी।

संवत् ११२३ (१०६६ ई०) में एडवर्डकी मृत्युके पश्चात् हैरोल्ड राजा बनाया गया क्योंकि एडवर्ड निस्सन्तान था और उसके भाईका पौत्र एडगर बहुत छोटा था। हैरोल्डके गद्दीपर बैठते ही देशमें बडा भारी उपद्रव हुआ। प्रथम तो प्रान्तिक पक्षपातके कारण नार्थम्ब्रिया और मर्सियावालोंने हैरोल्डको राजा मानना स्वीकार न किया क्योंकि वह वैसेक्सका निवासी था। दूसरे, उत्तरसे नार्वे-नरेश हैरोल्ड हैड्रडा (Harold Hadrada) ने और दक्षिणसे नार्मण्डी-नरेश विलियमने चढाई की। हैरोल्ड पहले उत्तरकी ओर चला और उसने हैरोल्ड हैड्रडाको पराजित करके मार डाला। तत्पश्चात् विलियमसे लडनेको झपटा। परन्तु सेन्लैक (Senlac) के रणक्षेत्रमें

मारा गया और विलियम सवत् ११२३ (१०६६ ई०) में इग्लैंड-की गद्दीपर बैठा।

विलियम नार्मन वशका सस्थापक हुआ। इस वशमे ये चार राजा हुए—

(१) प्रथम विलियम या विजयी विलियम सवत् ११२३ से ११४४ (१०६६ से १०८७ ई०) तक।

(२) द्वितीय विलियम या लाल विलियम सवत् ११४४ से ११५७ (१०८७ से ११०० ई०) तक (यह प्रथम विलियमका पुत्र था)।

(३) प्रथम हेनरी सवत् ११५७ से ११९१ (११०० से ११३४ ई०) तक (यह भी प्रथम विलियमका पुत्र था)।

(४) स्टीफन सवत ११९१ से १२११ (११३४से११५४ई०) तक।

विलियमको लगभग पाच वर्ष तो अपना राज्य दृढ करने-में ही लग गया, क्योंकि हैरोल्डको जीतना इतना कठिन न था जितना समस्त देशपर अधिकार जमा लेना। भूमिके प्रत्येक टुकडेके लिए उसे लडना पडता था। सवत् ११२३ (१०६६ ई०) में उसका राज्याभिषेक हुआ और सवत् ११२४ (१०६७ ई०) में पश्चिमके लोगोंने विद्रोह किया। विलियम इस समय नार्मण्डीमें था। विद्रोहका समाचार सुनते ही वह इग्लैंड आया और उसने विद्रोहियोंको दण्ड दिया। परन्तु स० ११२५ (१०६८ ई०) में उत्तरके लोग बिगड उठे। जब उनको दबाया तो सवत् ११२६ (१०६९ ई०) में चारों ओर-से बलवेकी आग भडक उठी। उत्तरके लोगोंने दुबारा सिर उठाया। वेल्सके लोग पश्चिमी सीमाको लाँघकर देशपर छापा मारने लगे। स्काटलैण्डके राजा मालकम (Malcolm)

ने एडगरके साथ एक सेना विद्रोहियोंके सहायतार्थ भेजी। डेन्मार्कका राजा स्वीन (Sweyn) भी अंग्रेजोंके पक्षमें हुआ, परन्तु विलियमने एक ही वर्षमें सबको हरा दिया। केवल केम्ब्रिज प्रान्तमें हियरवर्ड शेष रहा परन्तु संवत् ११२८ (१०७१ ई०) की एली (Ely) की विजय होनेपर सर्वत्र विलियमका निष्कटक राज्य हो गया।

संवत् ११२६ (१०७२ ई०) में विलियमने स्काटलैण्डपर चढाई की और वहाँके राजा माल्कमने विलियमका आधिपत्य स्वीकार कर लिया। संवत् ११३१ (१०७४ ई०) में नार्मन लोगोंने विलियमके विरुद्ध सिर उठाया और सवत् ११३५ (१०७८ ई०) में उसके बड़े पुत्र रावर्टने विद्रोह किया। परतु विलियमने सबको परास्त कर दिया। इसके पश्चात् विलियम विजयीके राज्यमें कोई विघ्न न हुआ और उसे राज्यप्रबन्धके सुधारनेका बहुत अवसर मिला।

कैन्यूटके समान विलियमने भी न्यायपूर्वक राज्य करनेकी कोशिश की। उसे एडवर्ड कन्फैसरके समान अंग्रेजोंसे घृणा न थी। राज्याभिषेक होते ही उसने अपनेको अंग्रेज बना लिया था। उसने अंग्रेजी नियमानुसार ही शासन किया। प्रथम तो उसने अंग्रेजोंके नियमोंकी खोज की और किञ्चित् परिवर्तन करके उन्हीं नियमोंको राजनियम बना दिया। इस बातसे लोग बहुत प्रसन्न हुए। उसने प्रान्तसभाओं और शतक सभाओंको सुरक्षित रखा और लन्दनके लोगोंको एक आज्ञापत्र लिख दिया कि तुम्हारे सब अधिकार सुरक्षित रखे जायगे।

परन्तु राजाकी शक्ति बहुत बढ़ गयी। इसके कई कारण थे। प्रथम तो विलियम समस्त इग्लैंडका राजा होगया।

वस्तुत रोमन राज्यके पश्चात् यह पहला ही अवसर था जब कि इंग्लैंड संयुक्त होकर एक ही शासकके अधीन हुआ। दूसरी बात यह थी कि इससे पहलेके राजाओंकी शक्तिको अर्ल (Earl) अर्थात् जागीरदार बढने नहीं देते थे। विलियमने केवल चार जागीरदार रखे और उनको अपनी इच्छाके अनुसार ऐसे प्रान्तोंमें नियत किया जहाँ रक्षाकी अधिक आशा थी। अन्य सबकी जागीरें ले लीं। विजयी होनेके कारण विलियम इतना बलिष्ठ था कि कोई उसकी इच्छाके विरुद्ध नहीं चल सकता था। उसने बहुतसी भूमि तो अपने ही लिए रख ली और शेषको जमींदारोंमें इस शर्तपर बाँट दिया कि वे उसकी सेनाके लिए शस्त्रों सहित घुडसवारोंकी एक नियत संख्या दें। इस प्रकार इंग्लैंडमें बहुतसे शस्त्रधारी जमींदार हो गये जिनका कर्तव्य राजाकी सहायता करना था। पर विलियम यह भी नहीं चाहता था कि जमींदार अधिक बलवान् होकर उसीको हानि पहुँचावें। इसलिए उसने इनको जो भूमि दी थी वह एक स्थानपर न थी किन्तु भिन्न भिन्न स्थानोंमें बँटी हुई थी और वे कभी अपनी शक्तिको संघटित न कर सकते थे। इसके अतिरिक्त उसने संवत् ११४३ (१०८६ ई०) सालसबरीके मैदानमें एक सभा की जिसमें सब जमींदारोंने राजभक्त रहनेके लिए शपथ खायी। इसी साल उसने भूमिकी माप भी करायी और प्रत्येक जमींदारका नाम भूमि और करका परिमाण आदि सब बातें एक पुस्तकमें लिखी गयीं। इस पुस्तकको डूम्स-डे बुक (Domesday Book) कहते थे।

विलियमकी सफलताका एक कारण वह प्रबन्ध भी था जिससे रोमन और इंग्लिश जमींदार दोनों उसीके आश्रित

हो गये। नार्मन लोग तो उसकी सहायताके विना ठहर ही न सकते थे। और अंग्रेज भी, नार्मन लोगोंकी क्रूरतासे बचनेके लिए, उसीका सहारा पकडते थे। इस प्रकार विलियमकी शक्ति बढती जाती थी।

इग्लैण्डकी धार्मिक अवस्थापर भी नार्मन विजयका बडा भारी प्रभाव पडा। इग्लैण्ड आते ही विलियमने अंग्रेज धर्माध्यक्ष अर्थात् बिशपोंको निकाल कर नार्मण्डीके विदेशी बिशपोंको बुलाना आरम्भ कर दिया और थोडेही दिनोंमें इग्लैण्डके गिरजे फ्रेंच और इटालियन बिशपोंसे भर गये। इस समय धीरे धीरे यूरोपमें रोमके पोपकी शक्ति बढ रही थी और इटलीके इन बिशपोंने इग्लैण्डको भी पोपके अधीन कर दिया। इस धार्मिक परतन्त्रतासे इग्लैण्ड साढे चार सौ वर्ष तक मुक्त न हो सका और इस बधनका तोडनेवाला जर्मनीका प्रसिद्ध सुधारक लूथर था जिसका वर्णन हम आगे करेंगे।

विलियम विजयी सवत् ११४४ (१०८७ई०) में मर गया। उसके तीन लडके थे। राबर्ट, विलियम और हेनरी। राबर्टको वह नार्मण्डीका राज्य दे गया। विलियम, द्वितीय विलियमके नामसे, इग्लैण्डकी गद्दीपर बैठा। सवत् ११५७ (११००ई०) में वह अपने आदमीके ही एक तीरसे जगलमें मारा गया और उसका भाई हेनरी गद्दीपर बैठा। इसने अपने भाई राबर्टको कैद करके नार्मण्डी ले ली। सवत् ११९१ (११३४ई०) में हेनरी मर गया। उसका इकलौता लड़का विलियम संवत् ११७७ (११२० ई०) में ही डूबकर मर चुका था। अत. उसकी लडकी मैटिल्डाके पुत्र हेनरीको राज्य मिलना चाहिये था। परन्तु हेनरी छोटा बालक था इसलिए लोगोंने प्रथम विलि

यमकी लडकी एडिला (Adela) के पुत्र स्टीफनको गद्दी दी। परन्तु सवत् ११६१ (११३४ ई०) से स्टीफनकी मृत्यु अर्थात् सवत् १२०२ (११४५ई०) तक बराबर लडाई-झगडे होते रहे और इङ्गलैंडको शान्ति न मिली । अन्तमें संवत् १२०२ (११४५ ई०) में मेटिल्डाका पुत्र हेनरी, द्वितीय हेनरीके नामसे राजा हुआ । और चूंकि यह एंजू वशका था इसलिए द्वितीय हेनरीसे एञ्जू वशका आरम्भ होता है।

नार्मन समयमें इङ्गलैंडकी वह दशा न थी जोआज कल है। प्राय समस्त देश जगलोंसे भरा हुआ था। यहा जगली सूअर अधिक रहते थे। विजयी विलियमके समयमें इन जगलोंमें और भी आधिक्य होगया था। उसे शिकारसे प्रेम था। लोग कहते थे कि विलियमको प्रजाकी अपेक्षा जगली पशुओंसे अधिक प्रेम है, क्योंकि उसने गाव उजाड उजाड कर जगल रखवा दिये थे। इन जगलोंमें सात वर्ष तक लगातार जानवर छूटे रहे और फिर विलियम इनका शिकार करने लगा।

विलियमके समयमें इग्लंडमें यूरोपके अन्य देशोंकी तरह जागीरदारीकी प्रथा (Feudal system) प्रचलित हुई। विलियमको अंग्रेजोंके विद्रोहको दबानेके लिए सेनाका रखना आवश्यक था। उस समय किसी भी राजाके पास इतना द्रव्य नहीं था कि वह स्थायी सेना रख सके, पर उसके पास जमीन थी। वह जमीनको बडे बडे जमीन्दारोंको इस शर्तपर बाँट दिया करता था कि आवश्यकता पडने पर वे योद्धाओंसे राजाकी सहायता करें। जमीन्दार भूमिको किसानोंको जोतनेके लिए और योद्धाओंको, आवश्यकता पडनेपर उनकी तरफसे राजाकी सेनामें कार्य करनेके लिए, बाँट देता था। जिस

आदमीको जिस किसीसे उपर्युक्त शर्तोंपर जमीन मिलती थी उसे उसका जागीरदार कहते थे। जागीरदारको अपने लार्ड या मालिककी अधीनता स्वीकार करनी पडती थी। उसे मालिकके सामने झुक कर उसके हाथमें हाथ रखकर शपथ करनी पडती थी कि मैं तुम्हारा आदमी हूँ, तुम्हारी आज्ञाका पालन करूंगा। यदि जागीरदार कभी अपने लार्डके विरुद्ध जाता था तो वह 'धोखेबाज' समझा जाता था। इस प्रकारकी प्रथाको जागीरदारीकी प्रथा कहते थे।

यों तो यह प्रथा थोडी बहुत इग्लैण्डमें नार्मन विजयके पहिले भी प्रचलित थी पर यूरोपमें इसका अधिक प्रभाव था और जब विलियमका इग्लैण्डपर अधिकार हुआ तब उसने इस प्रथाको वहा भी प्रचलित किया।

इग्लैण्डकी उस समयकी जनसख्या २० लाखसे अधिक न थी। जो किलोंमें रहते और कृपकोंसे कर लिया करते थे वे सबसे उच्च श्रेणीके लार्ड कहलाते थे। ये कृपक आज कलके कृपकोंके समान खेत जोतते और घास आदि उगाते थे। परन्तु आजकलके कृपकोंमें और इनमें यह भेद था कि युद्धका कार्य्य भी इन्हींको करना पडता था। लार्डकी आज्ञा पाते ही शस्त्र उठा कर ये उसके साथ हो लेते थे। सबसे अधम जाति दासों की थी जिनका क्रय विक्रय हो सकता था। दासो और पशुओं में थोडासा ही भेद था। इनके गलेमें भी आजकलके कुत्तोंके समान एक पट्टा पडा रहता था जिसपर इनके स्वामीका नाम अकित रहता था।

इनके अतिरिक्त साधु, साधुनिया तथा पुजारी भी थे जो गिरजों और मठोंमें रहते थे। नगरोंमें व्यापारी तथा कला-कौशल वाले और बन्दरगाहोंमें मल्लाह भी थे।

काम सब होता था, परन्तु करनेकी विधियाँ भिन्न थीं। कपड़ा बुननेके लिए बड़ी बड़ी कलें और कारखाने न थे, परन्तु घरोंमें उसी प्रकार कपड़े बुने जाते थे, जैसे आजकल हमारे देशके जुलाहे बुनते हैं। विलियमकी विजयके पश्चात् इंग्लैण्डके व्यापारमें वृद्धि हो गयी। फ्लैंडर्सके लोग, जो व्यापारमें दक्ष थे, इंग्लैंडमें आ बसे और अनेक प्रकारकी वस्तुएं बनाने लगे।

नार्मन लोगोंके समयमें वस्त्रोंका ढंग भी बदल गया। लोगोंने सुनहरी किनारीके छोटे अगरखे पहनने शुरू किये। जूतोंकी नाकें बड़ी और ऊपरको मुड़ी हुई होती थीं। अगरखेके ऊपर लाल रेशमी और चमकीले चुड़्ढे भी पहने जाते थे।

नार्मन लोग पहले बाल कटाते थे परन्तु अंग्रेजोंकी देखादेखी उन्होंने लम्बे लम्बे केश धारण करना आरम्भ कर दिया। अंग्रेजोंने नार्मन लोगोंसे विविध प्रकारके भोजन बनाना भी सीख लिया।

नार्मन विजयका मातृभाषापर भी बड़ा प्रभाव पड़ा और न्यायालयोंमें फ्रेञ्च भाषा प्रविष्ट होगयी, परन्तु अंग्रेजोंने अपने विजेताओंकी भाषा न सीखी। अन्तको नार्मन लोग अंग्रेजी पढ़नेपर बाध्य हुए। कुछ दिनोंमें नार्मन और अंग्रेज हिल मिल कर एक होगये और एक नयी जाति बन गयी।

इस समयके मठोंकी दशा भी भिन्न थी। साधु लोग बड़े परिश्रमी और शान्तिप्रिय थे। ये अपनी भूमि स्वयं जोतते, पशु चराते, अपने कपड़े आप बुनते और आप ही घरोंकी सफाई करते थे। इन्होंने अमीरोंके पुत्रोंको पढ़ानेके लिए पाठशालाएँ भी खोल रखी थीं। इसके अतिरिक्त रोगियोंकी

सेवा और दरिद्रोंको भोजन देना भी इन्हींका कर्त्तव्य था। इनकी प्रार्थना कई बार होती थी और रात्रिमें भी उठ उठकर गिरजेमें प्रार्थना करने जाना पडता था।

उस समय छापेखाने तो थे नहीं, अतः पुस्तकें भी इन्हीं साधुओंको लिखनी पडती थीं। पुस्तकोंके पृष्ठोंके आसपास ये लोग बडी श्रद्धाके साथ विविध प्रकारके चित्र बनाते और उनमें रंग भरा करते थे। ये चित्र विशेषकर ईसाई साधुओं अथवा प्रसिद्ध पुरुषोंके ही होते थे। बहुतसे तत्कालीन इतिहास इन्हीं साधुओंके लिखे हुए हैं।

मठ प्रायः नदियोंके तटपर हुआ करते थे जहां ये मछलियां मार सकते थे, क्योंकि वर्षके अधिकांशमें इनको मांसभक्षणका निषेध था। मछलियोंके मासको मांस न समझना एक विचित्र बात है।

नार्मन लोगोंने बहुतसे दुर्ग बनाये। ये दुर्ग बहुधा किसी पहाडी चट्टानपर या समुद्र अथवा नदीके किनारे बनाये जाते थे। दुर्गोंके केन्द्रमें एक सुदृढ़ मकान होता था जिसको कीप (Keep) कहते थे। इसकी दीवारें बहुत मोटी और इसमे छोटी छोटी खिडकियाँ होती थीं। कीपके बाहर एक बडा आँगन होता था जिसमें घोडोंके अस्तबल और सिपाहियों तथा नौकरोंके सोनेके लिए कोठरियाँ होती थीं। इस आँगन और कीपके चारों ओर एक बहुत मजबूत और ऊँची दीवार होती थी जिसमें केवल एक ही द्वार होता था। दीवारके बाहर एक गहरी खाई खुदी होती थी। खाईके ऊपर एक ऊपर उठनेवाला पुल होता था। जब पुल ऊपर उठ जाता तो द्वार बन्द हो जाता था जैसा कि प्रयागमें अकबरके किलेका हाल है।

साधारण लोग अब भी लकडीके ही मकान बनाते थे परन्तु उनमें धुआँकश भी बनाने लगे थे। दालानके अतिरिक्त उसके ऊपर या पीछेको ओर स्त्रियोंके लिए भी अलग एक गृह होता था। यदि यह गृह दालानके ऊपर होता तो उसे सोलर (Solar) कहते थे। कुर्सियाँ बहुत कम थीं। बडे बडे लोग भी भूमिपर ही बैठते थे। खिडकियोंमें शीशे लगाना शुरू ही हुआ था। दरिद्रोंके झोपडे इस प्रकारके थे कि जब चाहो तब गिरा लो और जहाँ चाहो खडा कर लो।

नार्मन समयमें नगर बहुत बढ गये थे। परन्तु इनके चारों ओर रक्षाके लिए बडी ऊँची ऊँची दीवारें थी। नागरिक लोगोंकी शक्ति इतनी बढ़ गयी थी कि राजाओं तकको उनकी बात सुननी पडती थी।

दूसरा अध्याय।

एंजू वंशका संस्थापक द्वितीय हेनरी।

द्वितीय हेनरी संवत् १२११ (११५४ ई०) में गद्दी पर बैठा। वस्तुतः इस प्रकारके राजाकी इंग्लैंडमें बडी आवश्यकता थी। संवत् ११९१ और १२११ (११३४–५४ ई०) के बीचमें इंग्लैंडमें गदर मचा रहा। २० वर्ष तक "जिसकी लाठी उसकी भैंस" रही। स्टीफन तो नाम मात्रका ही राजा था। उसे अपनी गद्दी सँभालना ही दुस्तर था। मटिल्डा और स्टीफन अपने अपने स्वत्वके लिए लडते

थे और कभी कोई और कभी कोई जीतता था। ऐसी अवस्था में शान्ति ही कैसे मिल सकती थी? प्रजा बेचारी उच्चवंशीय लोगोंके अधिकारमें थी जो अपनेको नोबल (Noble) अर्थात् उच्चवंशीय कहते थे। इस समय ये उच्चवंशीय लोग डाकुओंसे कम न थे। इन्होंने बडे बडे दुर्ग बना रखे थे जिनमें शस्त्रधारी सिपाही रहते थे। इन दुर्गोंमें से निकल निकल कर ये प्रजापर उसी प्रकार लूट-मार करते थे जैसे सिंह व्याघ्र आदि अपनी मांदसे निकलकर जीवोंका विध्वस करते हैं। जो कुछ धन सम्पत्ति पाते जबर्दस्ती छीन लेते, घरोंको जला देते और नगरोंको लूट लेते थे। यदि किसीपर धन छिपानेका सन्देह होता तो पकड कर अपने दुर्गमें ले जाते और भयानक दण्ड देते थे। बहुतोंको ये पैरोंके अथवा अंगूठोंके बल टॉग देते और नीचेसे आग जला देते थे। बहुतोंके सिरोंके चारों ओर गॉठदार रस्सी लपेट कर उसको इतना मरोडते थे कि ये गॉठें मस्तिष्कके भीतर घुस कर भेजा निकाल लेती थीं। बहुतों-को तहखानोंमें डाल देते थे जहॉ सॉप, बिच्छू काट काट कर उनको समाप्त कर देते थे। छोटे तग सन्दूकोंमें कङ्कड भरकर उनमें आदमियोंको इस प्रकार मरोडकर बिठाते थे कि उनके शरीरावयव चूर चूर हो जाते थे। एक शहतीरमें तेज लोहा इस प्रकार लगाया जाता था कि जिस मनुष्यके सिरपर यह रखा जाता उसकी गर्दनमें यह लोहा ऐसा जकड़ जाता-था कि उसे बैठने, सोने अथवा लेटनेका अवसर न मिल सकता था। साराश यह कि कभी सिंह, व्याघ्र आदि भी मनुष्योंसे ऐसा व्यवहार नहीं करते जैसा उस समयकी इंग्लैण्डकी प्रजाको उच्च श्रेणीके लोगोंसे प्राप्त होता था। बिल्ली चूहेको कभी ऐसी निर्दयतासे नहीं मारती। न्योला

साँपको मारते समय भी इतनी क्रूरता नहीं करता। लोग हाहाकार मचाते और कहा करते थे कि "ईसा मसीह और उनके साथी सन्त सो रहे हैं।"

हेनरीने गद्दीपर बैठते ही इसका प्रबन्ध आरम्भ कर दिया। वह बड़ा बलवान् पुरुष था। दया तो उसके हृदयमें भी न थी, परन्तु वह यह जानता था कि वही राजा बलवान् हो सकता है जिसकी प्रजा उससे प्रीति करे। उसे यह भी भली प्रकार ज्ञात था कि उच्चवंशीय लुटेरे उसके और उसके देश, दोनों के शत्रु हैं। इसलिए उसने सबसे प्रथम तो इन लोगोंके दुर्ग तोड़ डाले। ऐसा करनेसे लोगोंको पकड़ ले जाने और अत्याचार करनेका अवसर जाता रहा।

दूसरी बात उसने यह की कि एक राजसेना स्थापित की। इससे पहले यह नियम था कि जमींदार लोग अवसर पड़नेपर राजाको अपने अपने सिपाही दिया करते थे। हेन रीने कहा कि हम तुमसे लड़ाईके समय सेना नहीं माँगते। तुम हमको नियत समयपर रुपया दे दिया करो। इस रूप ऐसे उसने अपनी सेना स्वय रखी। उधर जमींदारोंके सिपा हियोंको लड़नेका कम अवसर मिलनेसे उनकी युद्धकी शक्ति जाती रही। इधर राजाकी शक्ति बहुत बढ़ गयी, इस प्रकार जमींदारोंकी लूटमार बन्द हो गयी।

हेनरी (द्वितीय) ने न्याय करनेके लिए जज नियत किये जो देशमें दौरा करके स्थानिक वृत्तान्त जानते और उसीके अनुकूल न्याय करते थे। इसके अतिरिक्त हेनरीने देशके प्रब न्धमें भी अन्यान्य सुधार किये।

उसने धार्मिक बातोंमें भी सुधार करना चाहा परन्तु उसे सफलता न हुई। उस समय नियम यह था कि यदि कोई

पादरी अपराध करता तो उसे राजाकी ओरसे कुछ दंड नहीं दिया जाता था, किन्तु पादरियोंके न्यायालय अलग थे जिनमें पादरी लोग ही अपने अपराधी पादरियोंको नाम मात्रका दण्ड देकर छोड़ देते थे। इस प्रकार पादरी लोग राजनियमोंसे किञ्चित् भी न डरते थे। वस्तुत: धर्मसंस्था और राजसंस्था दो पृथक् पृथक् संस्थाएँ थीं। राज-संस्थाका अधिपति स्थानिक राजा होता था और सब ईसाई देशोंकी धर्म संस्थाका मुखिया रोमका पोप था। बहुत दिनोंसे यह झगड़ा चला आता था कि धर्मसंस्था स्वतन्त्र रहे या राजसंस्थाके अधीन? यह झगड़ा न केवल इंग्लैण्डमें ही था किन्तु अन्य देशोंमें भी यही हाल था। प्रथम हेनरीके समयमें लाटपादरी एन्सेल्म (Anselm) ने राजासे इस बातपर झगड़ा उठाया कि धर्म संस्था राजाके अधीन नहीं रह सकती। पोपकी शक्ति बढ़ते ही उसने चाहा कि समस्त यूरोपपर आधिपत्य प्राप्त कर ले और राजा उसके हाथमें कठपुतली बने रहें। द्वितीय हेनरीको यह बात बुरी मालूम होती थी। पादरी लोग नियमोल्लंघन करते हुए भी बच जाते थे, इससे उसके प्रबन्धमें बाधा पड़ती थी। अतः उसने धर्मसंस्थाको अधीनतामें लानेका बड़ा प्रयत्न किया।

जब कैण्टरबरीका लाटपादरी थीबाल्ड मर गया तब हेनरीने अपने ही एक पुरुष टामस बैकिटको लाटपादरी नियत कर दिया। ऐसा करनेसे उसका मुख्य प्रयोजन यही था कि अब धर्मसंस्था स्वतन्त्र न रह सके और टामस बैकिट मेरे कहेपर चले। यह टामस बैकिट पहले थीबाल्डकी नौकरीमें था। हेनरी उससे प्रसन्न होगया और उसे उसने अपना मंत्री बना लिया। मन्त्री बनकर बैकिट बड़ा धनी हो गया और

बड़े ठाटबाटसे रहने लगा। इसकी पाकशाला दिनरात अतिथियों तथा मित्रोंके लिए खुली रहती थी। इसके पास सर्वोत्तम वस्त्र तथा सामान था। इसके साथ सदैव बहुतसे मित्र रहा करते थे। इसके शौकीन होनेका एक अद्भुत दृष्टान्त यह है कि एक वार हेनरीने एक झगड़ा निवटानेके लिए इसे फ्रांस नरेशके दरबारमें भेजा। बैकिट अपने साथ इतने पुरुष ले गया कि फ्रांसके लोग चकित होगये। फ्रांसकी राजधानीमें बैकिट बड़े समारोहसे प्रविष्ट हुआ। आगे दो सौ लड़के गीत गाते चले जाते थे। इनके पीछे शिकारी कुत्ते अपने रक्षकोंके साथ थे। इनके पीछे गाड़ियोंमें भयानक अंग्रेजी मास्टिफ (Mastiff) कुत्ते थे। एक गाड़ीमें शराब भरी हुई थी जो मार्ग बताने वालोंको बाँटी जा रही थी। इनके पीछे बारह घोड़े थे जिनपर एक एक बन्दर और एक एक साईस बैठा हुआ था। इनके पीछे बहुतसे सरदार और पुजारी दो दो करके घोड़ोंपर सवार थे। सबसे पीछे बैकिट और उसके मित्र थे। इस जन-शृंखलाको देखकर फ्रांसीसी कहने लगे कि जब अंग्रेजी महामन्त्री इस समारोहसे चलता है तो न जाने वहाँके राजाकी क्या दशा होगी!

यही बैकिट था जिसको हेनरीने अपने प्रयोजनकी सिद्धिके लिए केण्टरबरीका लाटपादरी बनाया परन्तु बैकिटने पादरी होते ही अपना चालचलन बदल लिया। वह पादरियोंके समान तपका जीवन व्यतीत करने लगा, सुन्दर वस्त्रोंका स्थान काली कमलीने ले लिया। नित्य प्रति वह दरिद्रोंकी सेवा करने लगा। लाटपादरी होकर उसने राजाके हस्तक्षेपसे धर्मसंस्थाकी रक्षा करना भी अपना कर्तव्य समझा। यह बात हेनरीको बुरी लगी और उसने कह दिया "मैं

नहीं चाहता कि तुम मुझे शिक्षा दो। क्या तुम मेरे चाकरके लडके नहीं हो ?"

लाटपादरीने उत्तर दिया "सच है। मैं प्राचीन राजाओंकी सन्तान नहीं परन्तु महात्मा पीटर भी तो ऐसा ही था जिसको स्वर्गकी कुञ्जी दी गयी थी।"

राजा बोलो "सच है। परन्तु पीटरने धर्मके लिए प्राण दिये।" बैकिटने उत्तर दिया, "समय आनेपर मैं भी धर्मके लिए प्राण दूंगा।"

बैकिटका यह कहना सत्य हुआ। धर्मबलिदानका समय शीघ्र ही आगया। एक दिन हेनरी क्रोधमें भरा हुआ कह रहा था, "क्या कोई ऐसा नहीं जो इस अभिमानी पादरीसे मुझे छुटकारा दे।"

चार खुशामदी सर्दारोंने यह समझकर कि राजा बैकिटको मरवाना चाहता है, झट कैण्टरबरीके गिरजेमें जाकर उसे मार डाला। इसपर समस्त प्रजा बिगड गयी। जमींदारोंने विद्रोह किया। पोपने बैकिटको सन्तकी पदवी दी *। हेनरी घबरा गया और उसने बडा पश्चात्ताप किया। बैकिटकी समाधि (कब्र) के पास जाकर उसने सिर झुकाया और अन्य पादरियोंसे अपराधके दण्डमें अपनी पीठपर कोडे लगवाये। इस अनुतापको देखकर प्रजा सन्तुष्ट होगयी और हेनरी संवत् १२४६ (११८९ ई०) तक शान्तिपूर्वक राज्य करता रहा। परतु बैकिटकी मृत्युने धर्मसंस्थाको स्वतंत्र कर दिया।

हेनरीके अधिकारमें इग्लैंडके सिवाय फ्रांसका बहुतसा भाग था जिसमेंसे कुछ भाग तो उसे अपने पितासे मिला था

---

* यह नियम था कि यदि कोई पुरुष धर्मके लिए प्राण देता था तो उसकी मृत्युके पश्चात् पोप उसे सन्तकी पदवी देता था।

और कुछ अपनी स्त्रीके दहेजमें। अन्तमें फ्रांस-नरेशसे उसकी लड़ाई हुई। परन्तु सन्धि होनेपर उसे मालूम हुआ कि उसका सबसे अधिक विश्वसनीय पुत्र जौन शत्रुसे जा मिला था। इस बातका उसके हृदयपर इतना आघात पहुँचा कि वह शीघ्र ही बीमार होकर कालका ग्रास हो गया।

हेनरीके आयर्लैंण्ड लेनेका वर्णन हम प्रथम खण्डमें लिख चुके हैं। यहां दोहरानेकी आवश्यकता नहीं।

तीसरा अध्याय।

प्रथम रिचर्ड और जौन।



तीय हेनरीके चार लड़के थे, हेनरी, रिचर्ड, ज्यूफ्रे और जौन। हेनरी अपने पिताकी मृत्युसे पहले ही मर चुका था। इसलिए दूसरा लड़का रिचर्ड संवत् १२४६ (११८९ ई०) में गद्दीपर बैठा। रिचर्ड बड़ा बलवान् और योद्धा था। उसे सदा युद्धसे ही प्रेम था और अपने राज्यके १० वर्षमें वह निरन्तर लड़ता ही रहा। सबसे पहले तो "उसे सूलीकी लड़ाई" (क्रूसेड वार) में भाग लेना पड़ा। यह सूलीकी लड़ाई क्या थी? यूरोपमें सभी देश ईसाई थे। ईसाकी समाधि जरूसलममें थी जहां ये लोग दर्शन करने जाया करते थे। जरूसलम मुसलमानोंके अधिकारमें था। वे ईसाइयोंसे घृणा करते थे और उनको ईसाकी समाधि तक जानेसे रोका करते थे। यूरोपमें एक ईसाई साधु पीटर हुआ। इसने ईसाई राजाओंको उकसाया कि मुसलमानोंसे 'पवित्र नगर' ले लेना

चाहिये। धर्म-भावसे प्रेरित होकर बहुतसे ईसाई राजा तथा योद्धा मुसलमानोंसे लडनेके निमित्त निकल पडे। इन लोगोंके वस्त्रोंपर सूलीका चिन्ह होना था जो ईसाके सूली दिये जानेका स्मारक था। इस लिए ये युद्ध 'सूलीको लडाई' कहलाते हैं। सूलीकी लडाई बहुत दिनोंतक जारी रही और यूरोपके भिन्न भिन्न लोगोंने उसमें भाग लिया परन्तु अन्तमें जरूसलम मुसलमानोंके ही अधिकारमें रहा।

द्वितीय हेनरीके राज्यसमयमें जरूसलमको ईसाइयोंने ले लिया था परन्तु संवत् १२४४ (११८७ ई०) में मुसलमान बादशाह सलाहदीनने फिर जरूसलमपर अधिकार जमा लिया। सलाहदीन बडा वीर था। उसने यूरोपकी समस्त शक्तियोंका सफलतापूर्वक सामना किया। रिचर्डके गद्दीपर बैठते ही फ्रांसनरेश फिलिप, आस्ट्रिया-नरेश लीपाल्ड और रिचर्ड स्वय तीसरी 'सूलीकी लडाई' के लिए चल पडे। रिचर्डने बडी वीरता दिखायी और अक्का (Akka) प्रान्तको मुसलमानोंसे ले लिया। परन्तु सलाहदीन जैसे महाशत्रुसे युद्ध करनेके लिए सघटित शक्तिकी आवश्यकता थी। दुर्भाग्य-से रिचर्ड तथा दो अन्य राजाओंमें तनातनी होगयी और वे दोनों रिचर्डको अकेला छोडकर घर चले आये। रिचर्डको लौटना पडा। परन्तु जब वह जर्मनी देशसे होकर इग्लैंडको आरहा था तो आस्ट्रिया-नरेशने उसे पकडवा कर कैद कर लिया और फिर जर्मनी-नरेशके हाथ बेच दिया। वहाँ बिचारा रिचर्ड संवत् १२५१ (११९४ ई०) तक कैद रहा और उसकी मुक्तिके लिए इग्लैण्डको बहुत रुपया देना पडा।

जब रिचर्ड लड़ाईपर गया हुआ था तब उसकी अनुपस्थितिमें उसका छोटा भाई जौन राज्यप्रबन्ध करता था। जौन

बडा दुष्ट था। पहिली दुष्टताका परिचय उसके पिताको ही मिल चुका था। अपने भाईके साथ भी उसने वैसा ही व्यवहार किया। जब रिचर्ड कैदमें पडा हुआ था तो जौनने बहुत कोशिश की कि इग्लैण्डसे रुपया न पहुँचे और रिचर्ड बन्दी गृहमें ही सड सडकर मर जाय। उसने रिचर्डके विरुद्ध फ्रांसनरेशसे भी सन्धि कर ली। परन्तु रिचर्ड जितना ही वीर था उतना ही उदार भी था। उसने आते ही अपने भाई का अपराध क्षमा कर दिया और फ्रांसनरेशसे लडनेको चल पडा। पॉच वर्षतक युद्ध होता रहा। अन्तमें सवत् १२५६ (११९९ ई०) में लडते हुए वह एक तीरसे मारा गया।

अब तो जोनकी पाँचों अगुलियाँ धीमें थीं। उसने दस वर्षसे प्रजापर अधिकार प्राप्त कर रखा था। राजसभा भी उसीके कहनेमें थी। जौन द्वितीय हेनरीका सबसे छोटा लडका होनेके कारण गद्दीका अधिकारी न था, क्योंकि उसके बडे भाई ज्यूफ़े (जो मर चुका था) का लडका आर्थर जीवित था। परन्तु जो जोन पिता और भाईसे न चूका वह भतीजेकी क्या परवाह करता? राजसभापर दबाव डालकर सवत् १२५६ (११९९ ई०) में स्वय गद्दीपर बैठ गया।

जौनका गद्दीपर बैठना इग्लैंडके लिए दुर्भाग्य और सौभाग्य दोनोंका कारण हुआ। दुर्भाग्य इसलिए कि उसने बडे अत्याचार किये। सौभाग्य इसलिए कि जा स्वतन्त्रता आज इग्लैण्ड-निवासियोंको प्राप्त है उसका बीज जौनके समयमें ही बोया गया। यदि जोन इतना अत्याचारी न होता तो स्वतन्त्रता पानेके लिए कोशिश भी इतनी न होती।

जोनका प्रथम अत्याचार तो अपने भतीजे आर्थरके साथ ही था। हम बता चुके हैं कि आर्थर इंग्लैण्डकी गद्दीका

अधिकारी था। इस समय वह नार्मण्डीका ड्यूक था। फ्रांस-नरेश फिलिपने उसका साथ दिया। जौन जीत गया और आर्थरको वन्दी कर ले गया। आर्थर थोड़े ही दिनोंमें मर गया। लोग कहते हैं कि जौनने उसे मरवा डाला। शेक्सपियर लिखता है कि जौनने पहले उसकी आँखें निकलवानी चाहीं परन्तु जब वह किसी तरह बच गया तो एक दिन स्वयं वन्दीगृहकी दीवारसे गिरकर मर गया। इसपर फिलिपने लड़ाई करके नार्मण्डी, एञ्जू और फ्रांसके अन्य भाग संवत् १२६१ (१२०४ ई०) में जौनसे छीन लिये जिसके कारण बहुतसे अंग्रेज जमींदार, जिनकी इन देशोंमें सम्पत्ति थी, जौनसे अप्रसन्न हो गये।

तत्पश्चात् जौन और पोपमें तनातनी होगयी। संवत् १२६२ (१२०५ ई०) में केण्टरबरीका लाटपादरी (आर्क बिशप) मर गया। उसकी जगहपर केण्टरबरी मठके महन्तोंने एकको लाटपादरी बनाना चाहा। पोपने इस झगड़ेका निबटारा करनेके लिए स्टीफन लेङ्गटन (Stephen Langton) को लाटपादरी नियत किया परन्तु जौनने न माना। इसपर पोप अप्रसन्न होगया और उसने इङ्गलैण्डको संवत् १२६५ (१२०८ ई०) में धर्मबहिष्कृत कर दिया। धर्म बहिष्कारसे तात्पर्य्य यह था कि पोपके आज्ञानुसार गिरजे बन्द कर दिये जायँ, प्रार्थनाएँ न हों और लोगोंके संस्कार पादरी लोग न करायें।

जोन इसपर भी न माना और गिरजोंकी भूमि और धन सम्पत्तिको भी छीनने लगा। इसके अतिरिक्त उसने अपनी प्रजाको भी दुःख दिया। अनेक प्रकारके कर बढा दिये गये, जमींदारोंका अपमान किया गया। इसलिए पोपने संवत्

१२७० (१२१३ ई०) में जौनको धर्म-बहिष्कृत कर दिया और प्रजाको आज्ञा दे दी कि वह राजाका कहना न माने। साथ ही उसने फ्रांसनरेश फिलिपको इग्लैंडकी गद्दीका अधिकारी होनेकी व्यवस्था दे दी।

इसपर तो जोनके छक्के छूट गये, क्योंकि जब पोप किसी राजाको किसी देशकी गद्दीका अधिकारी बना देता था तो समस्त ईसाई संसारका कर्त्तव्य होता था कि उस राजाको इस गद्दीकी प्राप्तिमें सहायता दे। जोन डर गया कि इग्लैंण्ड उसके हाथसे चला। झट उसने पोपकी अधीनता स्वीकार कर ली। स्टीफन लैङ्गटनको केण्टरबरीका लार्ड पादरी मान लिया और पोपको वार्षिक कर देना भी अङ्गीकार कर लिया। इस अपमानको देखकर अंग्रेज लोग और भी अप्रसन्न हो गये। वे कहने लगे "राजा पोपका अनुचर बन गया है। उसे राजा कहना ही अनुचित है।"

पोपसे सन्धि करके जौनने फ्रांसपर चढ़ाई की, परन्तु इग्लैंण्डके भद्रपुरुषोंने उसका साथ देनेसे इनकार किया। जौन अकेला ही गया परन्तु हार गया और संवत् १२७१ (१२१४ ई०) में अपना सा मुँह लेकर लौट आया। इसपर उसकी प्रजा उससे और भी क्रुद्ध हो गयी।

जौनकी हार देशके लिए उपकारी हुई। यदि जौन जीत जाता तो अपनी प्रजाको और कुचल डालता। जिस समय वह फ्रांसमें लड रहा था, स्टीफन लैङ्गटनने सेण्ट पालके गिरजेमें कुछ जमींदारोंको बुलाया और प्रथम हेनरीका प्रतिज्ञापत्र दिखाया जिसमें गिरजों और उच्चवंशीय सरदारोंके लिए भिन्न भिन्न अधिकार दिये गये थे और देशके लिए प्राचीन अंग्रेजी कानून प्रचलित रखा गया था। अब जमींदारोंने

निश्चय कर लिया कि जौनसे भी इन अधिकारोंको बिना लिये न रहेंगे।

अत जब जौन संवत् १२७१ (१२१४ ई०) में फ्रांससे लौटा और उसने प्रजा तथा ज़मींदारोंसे बहुत कर माँगा तब जमींदार बिगड बैठे और अधिकार माँगने लगे। पहले तो जौनने बातोंमें टालना चाहा परन्तु अब सब जान गये थे कि जौन दुष्ट और झूठा है। उसकी बातका कुछ ठीक नहीं। इसलिए उन्होंने सेना इकट्ठी करके लन्दनपर धावा बोल दिया। जौनने मजबूर होकर १ आषाढ संवत् १२७२ (१५ जून १२१५ ई०) को महान् अधिकार पत्रपर हस्ताक्षर कर दिये। इसको अंग्रेजीमें ग्रेट चार्टर और लैटिनमें मैग्ना कार्टा (Magna Carta) कहते हैं। इस अधिकार पत्रमें निम्न लिखित अधिकार दिये गये थे—

(१) पवित्र गिरजे अर्थात् धर्म-संस्थाके अधिकार सुरक्षित रहेंगे, और उसकी स्वतंत्रतामें कोई बाधा न होगी।

(२) पहले राजा लोग किसी जमींदारके मरनेपर उसके उत्तराधिकारियोंसे बहुत कर लेते थे, (यदि उत्तराधिकारी छोटा होता था तो उसकी जायदादका सब प्रबन्ध करनेके बहाने बहुत सा धन खा जाते थे) अथवा मृत पुरुषकी विधवाओं और लडकियोंको ऐसे पुरुषोंके साथ विवाह करनेपर मजबूर करते थे जो राजाको बहुत रुपया देते थे। अधिकार पत्रके अनुसार राजाको इन बातोंका अधिकार न रहा और न जमींदारोंको अपने किसानोंके साथ ऐसा करनेका हक शेष रहा।

(३) कर केवल राजसभाकी स्वीकृतिसे ही लिये जायँगे।

(४) किसी मनुष्यके साथ न्याय करनेमें देरी या निषेध न होगा और न न्याय वेचा जायगा अर्थात् रुपया लेकर अपराधी छोडे न जायँगे।

(५) किसी मनुष्यका न्यायके विरुद्ध दण्ड न दिया जा सकेगा।

(६) राजाको विना कारण, जबर्दस्ती किसीको पकडवानेका अधिकार न होगा।

इस प्रकार अंग्रेजी स्वतन्त्रताकी नींव पड गयी। यद्यपि स्वतन्त्रताका पूर्ण मन्दिर निर्माण करनेमें कई सौ वर्ष लग गये, क्योंकि राजा लोग समय समयपर इनका उल्लंघन करते रहे, फिर भी महान् अधिकार-पत्र सदैव प्रामाणिक समझा जाता रहा और इसीके आधारपर अन्य अधिकार भी नियत किये गये।

हम लिख चुके हैं कि जौन बडा झूठा था। उसने केवल टालनेके लिए हस्ताक्षर कर दिये थे, इसलिए थोडे दिनोंमें ही वह अपनी प्रतिज्ञासे हट गया। उसने प्रथम तो पोपसे प्रार्थना की कि आप मुझे इसके विरुद्ध करनेकी व्यवस्था दीजिये। फिर सेना लेकर जमींदारोंपर चढ बैठा परन्तु ईश्वरने जमींदारोंकी सहायता की और जौनको २ कार्त्तिक सवत् १२७३ (१६ अक्टूबर १२१६ ई०) के दिन इस संसारसे उठा लिया।

चौथा अध्याय।

स्वतंत्रताकी पहली दीवार।



न संवत् १२७३ (१२१६ ई०) में मर गया और उसका बेटा हेनरी, जो केवल ६ वर्षका था, तीसरे हेनरीके नामसे गद्दीपर बैठा। राज्यप्रबन्ध स्टीफन लैङ्गटन और अन्य पुरुषोंको सौंपा गया। हेनरीके गद्दीपर बैठते ही फ्रांस और स्काटलैंडवालोंने चढ़ाई कर दी। इस समय प्रबन्धकर्त्ताओंने बुद्धिमत्तासे काम लिया और झट प्रजाको सूचना दे दी गयी कि महान् अधिकार-पत्रके अनुसार कार्य होगा। यह सुनते ही प्रजा इकट्ठी हो गयी और उसने शत्रुओंको भगा दिया।

हेनरी अपने बापसे बहुत अच्छा था। उसमें न तो छल था और न उसका आन्तरिक जीवन पापमय था, परन्तु उसमें प्रबन्ध करनेकी योग्यता न थी। इसलिये राज्यप्रबन्ध किसी न किसी पार्टीके अधीन रहता था। दूसरी बात यह थी कि हेनरी कानका कच्चा था, झट दूसरोंकी बातोंमें आजाता था। इसलिये प्रबन्धमें गडबड हो जाती थी। उसने संवत् १२८८ और १२९९ (१२३१ और १२४२ ई०) में फ्रांसनरेशसे उन प्रान्तोंको लेनेकी कोशिश की जो जौनके समयमें हाथसे निकल चुके थे। परन्तु दोनों बार मुँहकी खानी पडी। कुप्रबन्धके कारण प्रजा भी बिगड बैठी और जब संवत् १२९९ (१२४२ ई०) में उसने राजसभासे कर माँगा, तो सबने एक स्वर होकर इनकार कर दिया। इस समयसे यह प्रथा चल

पडी कि जब कोई राजा प्रजाके विरुद्ध कार्य्य करता, तो प्रजा उसे कर देना स्वीकार न करती।

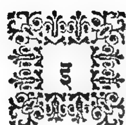
कुप्रबन्धसे तग आकर पादरियों और जमींदारोंने लेस्टर (Leicester) के जमींदार साइमन डी मोएटफर्टके सभापतित्वमें सवत् १३१५ (१२५८ ई०) में आक्सफोर्डमें एक सभा की, जिसके अनुसार राज्यप्रबन्ध राजाके हाथसे निकाल कर सभाओंके हाथमें रखा गया। परन्तु इससे कुछ काम न चला। सवत् १३२१ (१२६४ ई०) में साइमनने हेनरीको लीवेस (Lewes) के रणक्षेत्रमें पराजित किया और स्वय राज्यप्रबन्ध करने लगा। हेनरी कैद कर लिया गया और हेनरीका लडका एडवर्ड अपने पिताके साथ कैद भुगतनेके लिए स्वयं आगया।

साइमनने राजसभा बुलायी जिसमें हर प्रान्तसे चार चार सभ्य चुनकर आये थे। वस्तुतः यह सभा आजकलकी पार्लमेण्टकी माँ थी, क्योंकि साइमनने प्रत्येक प्रान्त और प्रत्येक पार्टीके प्रतिनिधि बुलाये थे।

साइमनसे प्रजा तो प्रसन्न थी, क्योंकि वह प्रजाके हितके लिए कार्य्य करता था, परन्तु राजा और बडे आदमी उसके विरुद्ध थे। हेनरीका लडका एडवर्ड सवत् १३२२ (१२६५ ई०) में कैदखानेसे भाग गया और उसने सेना इकट्ठी करके साइमनपर चढाई की। साइमन सवत् १३२२ में ईवशामके युद्धमें मारा गया। हेनरी फिर गद्दीपर बैठा और संवत् १३३५ (१२७८ ई०) तक राज्य करता रहा। यद्यपि साइमनके मरनेसे नैतिक सुधारोंमें बाधा पडी परन्तु सच पूछो तो वह स्वतन्त्रताकी पहली दीवार बनाकर खडी कर गया।

पाँचवाँ अध्याय ।

सामाजिक अवस्था ।



इस समय आवश्यक प्रतीत होता है कि ईसाकी तेरहवीं शताब्दीतककी सामाजिक अवस्था-को भी सक्षिप्त आलोचना की जाय। पहले पहल अंग्रेज और नार्मन एक दूसरेसे बड़ी घृणा करते थे। नार्मन लोग अंग्रेजोंको नीच समझते थे। परन्तु धीरे धीरे पारस्परिक विवाहादि सम्बन्धों-के कारण ये दोनो जातियाँ एक हो गयीं और लाइमनके समयतक नार्मन और सैक्सन दोनों अपनेको अंग्रेज कहने लगे। प्रजा और राजाकी लड़ाईने देशभक्तिका भाव हरएक पार्टीमें उत्पन्न कर दिया और सब लोग 'अंग्रेज' नामपर अभिमान करने लगे। इस समय किसीको नार्मन या सैक्सन कहना मुश्किल भी हो गया क्योंकि ऐसा कौन नार्मन था जिसकी माता या दादी सैक्सन न थी।

परन्तु यहूदियोंपर बड़ा अत्याचार किया जाता था। उनको हमारे देशकी अछूत जातियोंके समान समझते थे और उनको शांतिसे रहने न देते थे। धर्मात्मासे धर्मात्मा ईसाई भी यहूदियोंको सतानेमें पुण्य समझता था। यहूदी लोग बड़े व्यापारी और धनाढ्य होते थे। इस धनके कारण वे और भी सताये जाते थे। राजे महाराजे यहूदियोंको पकड़ लेते और यदि वे रुपया देना स्वीकार न करते तो जलती हुई कढ़ाईमें छोड़ दिये जाते, उनके दाँत तोड़ दिये जाते और अनेक प्रकारके भयानक अत्याचार किये जाते थे। यह

अत्याचार वस्तुत ईसाई दुनियाके माथेपर कलङ्क है क्योंकि इन अत्याचारोंको धर्म-संस्थाओंने धर्म समझ रखा था और बड़े बड़े पादरी तक अभिमानके साथ ऐसा करते थे। वस्तुत ये अत्याचार १९ वीं शताब्दी (ईसवी) तक जारी रहे और केवल उस समय बन्द हुए जब इग्लैण्ड बहुत सभ्य हो गया।

यहूदियोंको छोड़कर और लोगोंकी अवस्था अच्छी होती जाती थी। लोग राजनीतिक उत्तरदायित्व समझने लगे थे। प्रजाको राज्यप्रबन्धमें अधिक भाग दिया जाता था और देशमें अनेक प्रकारकी सभाएँ स्थापित हो गयी थीं। प्रत्येक व्यापारिक नगरमें व्यापारिक सभाएँ थीं जिनको 'गिल्ड' कहते थे। ये सभाएँ व्यापार सम्बन्धी अधिकारोंको सुरक्षित रखती थीं।

नार्मन विजयसे देशकी भाषा बदलने लगी थी। मातृभाषा को कुछ हानि अवश्य पहुँची। पादरी लोग पोपकी अधीनता-के कारण लैटिन बोलते थे। राजदर्बारमें फ्रेंच बोली जाती थी। अन्य लोग भी फ्रेंच बोलनेमें मान समझते थे। यह अवस्था थोड़े दिनोंतक जारी रही। परतु बुद्धिमानोंने समझ लिया था कि उद्धार मातृभाषासे ही होगा। अत चौसर जैसे विद्वानोंने मातृभाषामें लिखना आरम्भ कर दिया। परतु अंग्रेजीमें लैटिन और फ्रेंचके शब्दोंका बहुत प्रयोग होने लगा। यही वर्त्तमान अंग्रेजीकी माता थी। क्योंकि यदि आठवीं या नवीं शताब्दीकी ऐङ्गलो सक्सन भाषासे आजकलकी अंग्रेजीकी तुलना की जाय तो उनमें इतनी ही समानता मिलेगी जितनी कालिदासकी संस्कृत और गालिब या जौककी उर्दूमें।

तृतीय खण्ड ।

राजा और प्रतिनिधि-सभा

पहला अध्याय

प्रथम एडवर्ड ।

संवत् १३२९—१३६४ (१२७२—१३०७ ई०)



म द्वितीय खण्डमें देख चुके हैं कि विजयी विलियमसे लेकर तृतीय हेनरीतक २०६ वर्ष इङ्गलैण्डके राजा निरङ्कुश राज्य करते रहे। उनका वचन ही नियम था। देशकी दशा भी यही चाहती थी, क्योंकि उस समय धनाढ्य लोग दरिद्रोंपर अत्याचार करते थे। द्वितीय हेनरीने बलपूर्वक इसका प्रबन्ध किया परन्तु यदि राजा दुष्ट होता था तो फिर प्रजा पददलित हो जाती थी जैसा कि जौनके समयमें हुआ। जौनके अत्याचारोंने प्रजाकी आँखें खोल दीं। इसीका परिणाम था कि तृतीय हेनरीके समयमें साइमनने प्रजाके अधिकारोंके लिए प्रयत्न किया।

एडवर्डने यद्यपि साइमनको ईवशामके रणक्षेत्रमें परास्त करके मार डाला था, परन्तु मृत्यु साइमनके शरीरकी हुई थी, न कि उसकी आत्माकी। साइमनका उद्देश उसके शरीरके साथ नष्ट नहीं हुआ किन्तु आज तक जीवित है। एडवर्ड साइमनका शत्रु था परन्तु यह उसे निश्चय हो गया था कि साइमनके विचार पवित्र थे। उसे यह भी भली प्रकार ज्ञात हो गया था कि निरङ्कुश राजा प्रजाका यथोचित हित नहीं कर सकता।

एडवर्ड सर्वाङ्गसुन्दर, लम्बा और वीर पुरुष था। उसकी शक्तिका ईवशामके युद्धमें ही प्रकाश हो चुका था। समस्त देश उससे डरने लगा था और शत्रु भी उसका लोहा मानने लगे थे। यह उसीका काम था कि जिसके कारण उसके पिता तृतीय हेनरीका अन्तिम जीवन शान्तिसे व्यतीत हुआ।

जब सवत् १३२६ (१२७२ ई०) में तृतीय हेनरीकी मृत्यु हुई, तब एडवर्ड सूलीके अन्तिम युद्धके सम्बन्धमें जरूसलममें था। परन्तु देशमें इतनी शान्ति थी कि एडवर्ड निश्चिन्त रहा। इंग्लेंड पहुँचते पहुँचते उसे दो वर्ष लग गये। जिस समय वह और उसकी भार्य्या एलीनर (Eleanor) लन्दनमें पहुँचे तो उनका बड़े आदरसे सत्कार किया गया। राज्याभिषेकके दिन प्रत्येक घरमें हर्ष मनाया गया। धनाढ्य नागरिकोंने रुपये-पैसे लुटाये। फव्वारोंसे दिन भर पानीकी जगह शराब निकलती रही।

एडवर्डने राजा होते ही प्रजाके लिए उत्तम उत्तम कार्य्य करना प्रारम्भ कर दिया। वह बहुत बुद्धिमान् था। उसने विदेशियोंको कभी उच्च पदाधिकारी नहीं बनाया। उसने प्रजाके साथ कभी ऐसी प्रतिज्ञा नहीं की जिसका वह पालन न कर सका हो। उसने बड़े बड़े बुद्धिमानोंको मन्त्री बनाया परन्तु

केवल उन्हींकी अनुमतिपर विश्वास न किया। वह स्वयं भी भली भाँति विचार करता था।

संवत् १३५२ (१२९५ ई०) में उसने पार्लमेण्ट अर्थात् प्रतिनिधि सभा स्थापित की। इसके दो भाग हो गये—पहला 'हाउस आव लार्ड्स' अर्थात् अमीर-सभा, जिसके सभ्य बड़े बड़े जमींदार और लाटपादरी होते थे, दूसरा 'हाउस आव कामन्स' अर्थात् साधारण लोक सभा, जिसके सभ्य साधारण प्रजामें से चुने जाते थे। एडवर्डने प्रतिज्ञा कर ली थी कि बिना प्रतिनिधि-सभाकी स्वीकृतिके किसी प्रकारका कर न लूँगा। ऐसा करनेसे प्रतिनिधि-सभा उसकी ओर हो गयी थी और राजाका बल बहुत बढ गया था।

इसी समय पोपसे भी बिगड गयी। तीसरे हेनरीके समयमें पोपने इंग्लैण्डसे बहुत सा रुपया लिया था और समस्त यूरोपके राजाओंपर कर लगाया था। अब पोपने यह आज्ञा दी कि कोई पादरी राजाओंको कर न दे क्योंकि धार्मिक विचारसे राजा पादरियोंसे कम है। एडवर्डने इस पर बडी बुद्धिमत्तासे काम लिया और कह दिया कि यदि तुम कर नहीं देना चाहते तो न दो। हम अपने न्यायालयोंमें तुम्हारे मुकद्दमे न करेंगे। इस प्रकार यदि किसी पादरीकी चोरी हो जाती तो न्यायालयसे चोरको दण्ड न मिल सकता। मजबूर होकर पादरियोंने कर देना स्वीकार कर लिया और पादरी लोग राजाके अधीन हो गये।

प्रथम एडवर्डने वेल्जको जीतकर अपने अधीन कर लिया। उसने अपने पुत्र राजकुमार एडवर्डको वेल्जकी प्रजाके सम्मुख करके कहा कि 'यह प्रिंस आव वेल्ज (Prince of Wales) अर्थात् वेल्जका राजकुमार है।' उस सम-

यसे इङ्गलैण्ड नरेशका बड़ा बेटा "प्रिंस आव वेल्ज" कहलाता है।

स्काटलैण्डका राजा तीसरा अलेक्जेण्डर मर गया। उसकी नातिन नार्वेकी राजकुमारी उसको गद्दीके लिए बुलायी गयी। परन्तु वह आनेसे पहले ही मर गयी। अब गद्दीके दो अधिकारी हुए—एक तो जौन बैलियल, दूसरा रॉबर्ट ब्रूस*। स्काटलैण्डवालोंने एडवर्डको फैसला करनेके लिए बुलाया। एडवर्डने इस शर्तपर फैसला करना अङ्गीकार किया कि स्काटलैण्ड इंग्लैण्डके बादशाहका आधिपत्य स्वीकार कर ले। वस्तुत एल्फ्रेडके पुत्र एडवर्डके समयमें जब डेन लोग स्काटलैण्डको पादाक्रान्त कर रहे थे, तो उस समय वहाँके राजाने एडवर्डको अपना पिता तथा स्वामी मानना स्वीकार कर लिया था। परन्तु जब इग्लैंडके राजा स्वयं ही बलहीन हो गये तो कौन उनको पिता मानता और कौन अधिपति? जब स्काटलैण्डने फिर यह अधिकार स्वीकार कर लिया तो प्रथम एडवर्डने जोन बैलियलको राज्यका अधिकारी होनेकी व्यवस्था दे दी। एडवर्डने एक बात और चाही अर्थात् स्काटलैंडके न्यायालयोंके फैसलोंके विरुद्ध अपील इग्लैंडमें हुआ करे। इसपर स्काटलैंडवाले बिगड़ गये और जौन बैलियलको अंग्रेजोंके विरुद्ध लड़नेपर मजबूर किया। एडवर्डने बैलियलको परास्त करके गद्दीसे उतार दिया और अंग्रेजी शासक नियत कर दिये। एडवर्ड स्काटलैंडसे वह पत्थर भी उठा लाया जिसे भाग्य शिला (Stone of Destiny) के नामसे पुकारते हैं। स्काटलैण्डके राजाओंका अभिषेक इसी पत्थरके ऊपर हुआ करता था और एडवर्डके समयसे यह पत्थर

* John Balliol, Robert Bruce

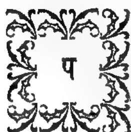
लन्दनके वेस्टमिनूस्टर नामक गिरजेमें रखा हुआ है। इग्लैण्डके राजाओंका अभिषेक इसी पत्थरपर हुआ करता है। सम्राट पंचम जार्जका अभिषेक भी इसी पत्थरपर हुआ था। स्काटलैण्डवाले समझते थे कि यह पत्थर जहां जायगा वहीं स्काटलैण्डका भाग्य भी जायगा। तीन सौ वर्ष पीछे स्काटलैण्डका राजा ही इग्लैण्डका सम्राट् हो गया और इस प्रकार स्काटलैण्ड वालोंका यह विचार सत्य निकला।

एडवर्डने स्काटलैण्ड ले लिया, पर स्काटलैण्डवाले स्वतंत्र ही रहना चाहते थे। अंग्रेजी सम्राट् उन्हें परास्त करके उनके शरीरोंपर राज्य कर सकता था, परन्तु उनके मन स्वतंत्र थे। इसलिए पहले तो विलियम वालेस नामक एक स्काटने विद्रोह किया और अंग्रेजी सेनाको परास्त किया। परन्तु अन्तको वह पकडा गया और भयानक रीतिसे मारा गया। स्काटलैण्डवाले उसे देशहितके लिए याद करते हैं। वालेसके पश्चात् रॉवर्ट ब्रूस, जो पहले ब्रूसका पोता था, स्काटलैण्डवालोंका अगुआ हुआ, परन्तु वह भी हार गया। संवत् १३६४ (१३०७ ई०) में एडवर्ड स्वयं विजयका कार्य्य पूर्ण करनेके लिए चला परन्तु रास्तेमें ही मर गया। एडवर्ड अपने देशके सबसे बडे राजाओंमें से एक था, परन्तु स्काटलैण्डवाले उसे क्रूर समझते थे।

दूसरा अध्याय।

द्वितीय एडवर्ड।

संवत् १३६४–१३८४ (१३०७—१३२७ ई०)



हले एडवर्डके पश्चात् उसका लडका दूसरा एडवर्ड गद्दीपर बैठा। परन्तु यह मनमौजी था। कभी राज्यप्रबन्धमें भाग नहीं लेता था और जहांतक हो सकता विषयासक्तिमें लवलीन रहता था। इसका परिणाम यह हुआ कि ब्रूसने शनैः शनैः बल पकड कर संवत् १३७१ (१३१४ ई०) में अंग्रेजोंको बैनकबर्न (Bannockburne) पर बिलकुल हरा दिया। उस समयसे अंग्रेज लोग कभी स्काटलैण्डको न ले सके। एडवर्ड फिर भी न चेता और उसके हँसी-ठट्ठे बढते ही गये, यहां तक कि उसकी स्त्री भी उससे अप्रसन्न हो गयी और एडवर्डको गद्दी से उतार उसने अपने पुत्र तीसरे एडवर्डको संवत् १३८४ (१३२७ ई०) में गद्दीपर बैठाया। द्वितीय एडवर्ड थोडे दिनों पीछे कैदखानेमें ही मार डाला गया।

तीसरा अध्याय।

तृतीय एडवर्ड।

संवत् १३८४—१४३४ (१३२७-१३७७ ई०)



सरे एडवर्डका राज्य केवल दो बातोंके लिए प्रसिद्ध है—(१) शतवर्षीय युद्ध, (२) जौन विक्लिफका जन्म और धार्मिक सुधार।

शतवर्षीय युद्ध प्राय. दो भागोंमें बटा हुआ है। पहला भाग संवत् १३९५ से १४३४ (१३३८ से १३७७ ई०) तक रहा और यद्यपि पहले अंग्रेज लोग जीत गये, तथापि अन्तमें सब कुछ उनके हाथसे जाता रहा। दूसरा भाग संवत् १४७२ से १५१० (१४१५ से १४५३ ई०) तक रहा। इसका परिणाम भी वही हुआ। इस युद्धका कारण यह था कि फ्रांसनरेश चौथे फिलिपकी लडकी इजबिला तृतीय एडवर्डकी माता थी। इसलिए जब चौथे फिलिपकी मृत्युके पश्चात् उसके तीनों लडके भी सन्तान-रहित मर गये तो फ्रांसकी गद्दीका उत्तराधिकारी एडवर्ड रह गया। परन्तु फ्रांस वाले अंग्रेजी सम्राट्को अपना राजा नहीं बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने उसी वंशके एक और पुरुषको छठे फिलिपके नामसे गद्दीपर बैठा दिया और उन्होंने कहा कि जिस सैनिक धर्मशास्त्रका फ्रांसमें प्रचार है उसके अनुसार कोई बेटी या बेटीकी सन्तान गद्दीकी उत्तराधिकारिणी नहीं हो सकती। एडवर्डने अपना अधिकार जमानेके लिए लड़ाई छेड दी। उस समय अंग्रेज लोग फ्रांस वालोंसे लडना भी चाहते थे क्योंकि फ्रांस-नरेश फ्लैंएडर्सपर

अधिकार करना चाहता था । इस बातसे अंग्रेजोंकी बडी हानि होती थी क्योंकि उनका व्यापार फ्लैण्डर्स से ही चलता था। इसके अतिरिक्त फ्रांस-नरेश फ्रांसके उन प्रान्तोंको भी लेना चाहता था जो अब तक अंग्रेजोंके हाथमें थे। तृतीय एडवर्डने यह देखकर कि समस्त इंग्लैण्ड फ्रांससे युद्ध करनेके लिए उत्सुक हो रहा है, लडाई छेड ही दी।

पहले तो स्लूज (Sluys) में, जो कि उस समय फ्लैण्डर्स में था और अब वेलजियममें है, सामुद्रिक युद्ध हुआ। विजय एडवर्डकी रही। ३०००० फ्रांसीसी मरे या डुबा दिये गये। सवत् १४०३ (१३४६ ई०) में क्रेसी (Crecy) के युद्धमें भी अंग्रेज ही जीते। थोडे दिनों पश्चात् फ्रांसका अति उपयोगी नगर कैले* ले लिया गया। सवत् १४१३ (१३५६ ई०) में पोइटियर्स† में तृतीय एडवर्डके पुत्र एडवर्ड श्याम कुमार (एडवर्ड ब्लैक प्रिन्स) ने छठे फिलिपके पुत्र जौनको कैद कर लिया। इस समय छठा फिलिप मर चुका था और उसके स्थानमें जौन राज्य करता था। राजकुमारने जोनके साथ बडा अच्छा व्यवहार किया। उसने अपने हाथसे चाकरोंके समान खाना परोसा। परन्तु अन्य स्थानोंमें अंग्रेजोंने बडी निर्दयता की थी जिसके कारण फ्रांसवाले अंग्रेजोंके नामसे घृणा करने लगे। चार वर्षतक फ्रांसवाले विना राजाके ही लडते रहे परन्तु सवत् १४१७ (१३६० ई०) में ब्रिटीनीमें ‡ सन्धि हो गयी। जिसके अनुसार गैस्कनी, पोइटू †† और कैले अंग्रेजोंके हाथ लगे और एडवर्डने फ्रांसकी गद्दीका अधिकार छोड दिया।

---

* Calais † Poitiers ‡ Bretigny †† Poitou

परन्तु यह सन्धि थोडे ही दिनोंतक चली। राजकुमार एडवर्ड जो फ्रांसके प्रान्तोंका शासक नियत हुआ था बडा वीर पुरुष था, परन्तु उससे प्रबन्ध न हो सका। तृतीय एडवर्ड भी बूढा हो गया था, और उसकी बुद्धि भी भ्रष्ट हो चली थी। देखते देखते फ्रांसके सभी प्रान्त अंग्रेजोंके हाथसे निकल गये। संवत् १४३४ (१३७७ ई०) में बोर्डो और कैलेके सिवाय अंग्रेजोंके हाथमें कुछ न रह गया। संवत् १४३४ (१३७७ ई०) में तृतीय एडवर्ड मर गया।

इस बडे युद्धका प्रभाव दोनों देशोंपर पडा। फ्रांस तो बिलकुल नष्ट हो गया परन्तु उसकी स्वतन्त्रता भङ्ग न हुई। इंग्लैण्ड भी बलहीन हो गया। इंग्लैण्डकी हानि इस कारण और भी अधिक हुई कि जो कुछ जीता था वह सब हाथसे जाता रहा। परन्तु इस समय इंग्लैण्डकी पार्लमेंट अर्थात् लोकसभा जोर पकड गयी। राजाको युद्धके लिए रुपयेकी अधिक आवश्यकता होती थी। इसलिए राजा हर साल सभा करता था। सभा रुपया देनेसे पहले कुछ न कुछ अधिकार स्वीकार करा लेती थी।

परन्तु तृतीय एडवर्डके समय सर्वसाधारणकी सामाजिक दशा बिगड गयी। उच्च वंशोंके लोग क्रूरता अधिक करने लगे। धार्मिक व्यवस्था न रही। साधु लोग मनमानी करने लगे। गिरजोंमें अत्याचार होने लगा। पोपकी ओरसे पापोंके क्षमाके पत्र (Indulgences) बिकने लगे। इस समयका वर्णन महाकवि चौसरने भली भाँति किया है। उस समय यह कहावत थी कि जो लोग पाप करना चाहते हैं उन्हें रुपया खर्च करना चाहिये। सारांश यह कि बडी दुर्दशा हो गयी थी। इस समय जौन विक्लिफ नामक एक पादरीने सुधा-

रका बीड़ा उठाया । जौन विक्लिफ आक्सफर्ड विश्वविद्यालयमें उपाध्याय था। उसने वाइबिलका अंग्रेजीमें अनुवाद किया । उसने पोपके विरुद्ध अपनी आवाज उठायी और एक साधुवर्ग स्थापित किया। उसके साधु दरिद्र कहलाते और भीख माँगकर धर्मका प्रचार करते थे। पोपके विरुद्ध देख कर कुछ बड़े आदमी उसके अनुकूल हो गये थे। परन्तु विक्लिफ समस्त संसारको समानताका उपदेश करता था, यह बात बड़े आदमियोंको पसन्द न थी। इससे लोग उसले नाराज हो गये। संवत् १४४१ (१३८४ ई०) में विक्लिफ मर गया, परतु उसके चेले निरन्तर उसके धर्मका प्रचार करते रहे।

चौथा अध्याय ।

द्वितीय रिचर्ड ।

संवत् १४३४-१४५६ (१३७७—१३९९ ई०)



तीय एडवर्डके पश्चात् उसका पोता रिचर्ड गद्दीपर बैठा। रिचर्डका पिता एडवर्ड श्याम कुमार अपने बापके जीवन-कालमें ही मर चुका था। राज्यप्रबन्ध तृतीय एडवर्डके छोटे बेटे जौन आव गॉण्टके हाथमें था। इस समय भी फ्रांसमें लड़ाई जारी थी, परन्तु विजयके स्थानमें व्यय ही अधिक होता था जिसके कारण प्रजापर नित्य नये कर लगते थे। कर उगाहनेवाले बड़ी मुशकिलसे कर वसूल कर

सकते थे। एक समय एक राजपुरुषने केण्टके एक किसानके घरमें घुसकर उसकी पुत्रीको छेडा। इसपर उसके पिताने झट उस आदमीका सिर काट लिया और हजारों किसानोंने मिलकर विद्रोह कर दिया। वे चाहते थे कि सब कर छोड दिये जायें और वेगारमें काम न लिया जाय। उन्होंने हिसाब-के रजिस्टर, जहाँ भी मिले जला डाले, वकीलोंको, जिन्होंने उनके विरुद्ध अभियोग चलाये थे, मार डाला और बहुतसे लोगोंने वाट (Wat) नामक खपरे बनानेवालेको अगुआ बनाकर लन्दनपर धावा बोल दिया। रिचर्ड उस समय १६ वर्षका ही था परन्तु बडी वीरतासे वह घोडेपर सवार होकर बाहर आया और उनकी कठिनाइयाँ दूर करनेकी प्रतिज्ञा की। कुछ तो सन्तुष्ट होकर चले गये, कुछ लन्दनकी गलियों में घुस पडे और केण्टरबरीके लाटपादरीको मार डाला। अन्य बडे आदमी भी मारे गये। वाटके साथी हजारोंकी सख्यामें स्मिथफील्डमें इकट्ठे थे। रिचर्ड वहीं वाटसे बात-चीत करने पहुँचा। वाटके अपशब्दोंपर लन्दनके मुख्य शासक वालवर्थ (Walworth) ने उसे मार डाला। इसपर सब लोग बिगड बैठे। परन्तु जब राजाने कहा कि "मैं तुम्हारा राजा हूँ, मैं तुम्हारा अगुआ बनूँगा" तो वे सब सन्तुष्ट होकर घर चले गये। रिचर्ड अपनी प्रतिज्ञा पूरी करना चाहता था परन्तु उसके मन्त्रीगण उसे ऐसा करने न देते थे। बिचारा रिचर्ड पराधीन था। उसके कर्मचारियोंने किसानोंपर आक्रमण करके उनको खूब दण्ड दिया और फिर धडाधड बेगार चलने लगी। बाईस वर्षकी अवस्थामें रिचर्डने अपने चाचाओं-से स्वतन्त्रता प्राप्त करनी चाही परन्तु वे अपना आधिपत्य छोडना नहीं चाहते थे। प्रबन्ध करना न तो रिचर्डको ही

आता था, न उसके चाचाओंको ही। जो प्रबल हो जाता वही अपने शत्रुओंपर क्रूरता करता। रिचर्डने अपने चाचा ग्लोस्टरको भी मरवा डाला। अब केवल दो शत्रु रह गये, नार्फोकका टामस मौवरे और जौन आफ गाटका बेटा हेनरी बोलिंगब्रोक। रिचर्डने इन दोनोंको क्षमा तो कर दिया परन्तु वह इनको निकालनेकी चिन्ता करने लगा। अचानक इन दोनों में झगडा होगया। इस समय यह नियम था कि यदि दो आदमी आपसमें झगडते थे तो परस्पर लडकर फैसला कर लेते थे। जो जीत जाता उसीका पक्ष ठीक रहता था। मौवरे और हेनरी कवेण्टरी (Caventry) नामक स्थानमें इस झगडेका निबटारा करनेके लिए पहुँचे। रिचर्ड मध्यस्थ बना परन्तु युद्ध होनेसे पूर्व ही रिचर्डने मौवरेको आयुपर्यन्त और हेनरीको दश वर्षके लिए बिना कारण देशनिकाला दे दिया। इसके पश्चात् रिचर्डने अन्यान्य अन्याय किये। जौन आव गांटके मर जाने पर उसकी जायदाद जब्त कर ली। ऐसे ही अन्य कारण भी हो गये जिससे रिचर्डके शत्रु बढ गये। जौन आव गाण्टके पुत्र हेनरी बोलिंगब्रोकने यह देख कर इग्लेण्डपर धावा बोल दिया। सहस्रों लोगोंने उसका साथ दिया। रिचर्ड कैद हो गया और थोडे दिनोंमें मार डाला गया। सवत् १४५६ (१३९९ ई०) में हेनरी बोलिंगब्रोक चतुर्थ हेनरीके नामसे गद्दीपर बैठा।

पाँचवाँ अध्याय ।

लङ्कास्टर वंश ।

संवत् १४५६-१५१८ (१३६६—१४६१ ई०) ।



यद्यपि चतुर्थ हेनरीको राजगद्दी पानेका अधिकार न था तथापि प्रतिनिधिसभाने इसको ही राजा बनाया। वस्तुत' उस समय गद्दी किसी विशेष पुरुषको सम्पत्ति नहीं समझी जाती थी। प्रतिनिधिसभाको अधिकार था कि अन्यायी राजाको गद्दीसे उतार कर किसी भद्र पुरुषको राजा बना दे। हेनरीसे लङ्कास्टर-वंश शुरू होता है, क्योंकि उसको अपने पिता जोन आव गाटसे पैतृक जायदादमें लङ्कास्टर प्राप्त हुआ था। इस वंशमें तीन राजा हुए—चौथा हेनरी, उसका पुत्र पाँचवाँ हेनरी, और पाँचवें हेनरीका पुत्र छठा हेनरी।

चतुर्थ हेनरीके गद्दीपर बैठते ही पहले तो पार्लमेंटमें विधर्मियोंको जीवित जलानेका कानून पास हुआ। विक्लिफके अनुयायी लोलार्ड लोग (Lollards) अपने धर्मका प्रचार किया करते थे और बड़े आदमियोंके अत्याचारोंके विरुद्ध अपनी आवाज उठाते थे। इसीलिये बड़े आदमी उनके विरुद्ध थे और विक्लिफके अनुयायी उनको विधर्मी समझते थे। इस नियमके अनुसार बहुत से प्रचारक जीवित जला दिये गये।

इसके पश्चात् हेनरीकी प्रजाने विद्रोह किया। नार्थम्बरलैण्डका ड्यूक राजासे बिगड़ गया और स्काटलैण्ड वालों तथा वेल्जके ग्लेण्डोवरकी सहायतासे राजासे भिड़ पड़ा।

परतु श्रूस्बरीके रणक्षेत्रमें विद्रोहियोंकी हार हुई और नार्थम्बर-लैण्डके ड्यूकका पुत्र हेनरी हौटस्पर मारा गया। इसके पश्चात् अन्य शत्रुओंने भी सिर उठाया और सवत् १४५० (१४१३ ई०) में चतुर्थ हेनरी थककर मर गया।

चतुर्थ हेनरीके पश्चात् उसका लडका पचम हेनरी गद्दी पर बैठा। वह बडा वीर पुरुष था और अपने पिताके साथ कई लडाइयोंमें बडी वीरतासे लडा था। उसने शत्रुओंसे बचनेका एक नया उपाय निकाला और फ्रांसको गद्दीपर अपने प्रपिता-मह तृतीय एटवर्डकी तरह अपना अधिकार स्थापित किया। ऐसा करनेसे वह जानता था कि जब अग्रेजी ज़मींदार विदेश-में जाकर लडेंगे, तो आपसमें या मुझसे लडनेका अवसर न मिलेगा।

अग्रेज लाग फ्रासस लडनेके लिए उधार खाये बैठे थे। बहुत सी सेना इकट्ठी होगयी। सवत् १४७२ (१४१५ ई०) में हेनरी फ्रासमें घुस गया और हारफ़्लरका* नगर ले लिया। इसके पश्चात् अजीनकोर्टके रणक्षेत्रमें उसने फ्रास वालाको हराया। ११००० फ्रासीसी मारे गये। इनमें फ्रासके चुने हुए वीर पुरुष भी थे। दो वर्ष पीछे हेनरीने टुएन† ले लिया। इस समय फ्रासके लोगोंमें परस्पर भी झगडा हुआ। फ्रांसका राजा चार्ल्स पागल था। वह न तो लड सकता था और न राज्य प्रबध ही कर सकता था। आर्लियन्सके ड्यूकने बरगण्डीके ड्यूकको मार डाला, इस लिए उसका लडका, जो बरगण्डीका नया ड्यूक हुआ, अपने पिताका बदला लेनेके लिए अग्रेजोंसे मिल गया। संवत् १४७७ (१४२० ई०) में पेरिसमें सन्धि हुई जिसके अनुसार निश्चित हुआ कि फ्रास नरेशकी राज

*Harfleur † Touen

कन्या कैथराइनसे हेनरीका विवाह हो और चार्ल्सकी मृत्यु पर हेनरी फ्रांसकी गद्दीपर बैठे। सं० १४७६ (१४२२ ई०) में पाँचवाँ हेनरी मर गया और उसके थोड़े दिन पीछे चार्ल्स भी। संवत् १४७६ (१४२२ ई०) में पाँचवें हेनरीका सालभरकी अवस्थाका पुत्र छठे हेनरीके नामसे गद्दीपर बैठा और सधिके अनुसार फ्रांसकी गद्दीपर भी इसीका राज्याभिषेक हुआ। फ्रांसका प्रबन्ध पाँचवें हेनरीके छोटे भाई ड्यूक आव बैडफर्डके सुपुर्द हुआ। अब फ्रांसके दो भाग हो गये। उत्तरी भाग छठे हेनरीकी आज्ञामें था और दक्षिणी भाग चार्ल्सके बेटे सातवें चार्ल्सके। अंग्रेज लोग दिनपर दिन फ्रांसके बचे हुए भागोंको लेते जाते थे और अनेक प्रकारके अत्याचार भी करते थे। सातवाँ चार्ल्स निर्बल था, उससे कुछ भी न बन पड़ता था। देशमें हाहाकार मचा हुआ था। अंग्रेजोंने अपनी शक्तिका दुरुपयोग किया था, इसलिए ईश्वर भी इनसे अप्रसन्न था। जब मनुष्यकी बुद्धि कार्य्य नहीं करती तो ईश्वर कुछ न कुछ उपाय कर ही देता है।

फ्रांसके लोरेन प्रान्तमें एक किसानकी लड़की जोन-डे-आर्क नाम्नी बड़ी शूरवीरा और शुद्धहृदया थी। उसने अपने देशकी दुर्दशाकी कथाएँ सुनी थीं। ईश्वरने उसके हृदयमें ऐसी प्रेरणा की कि उसने वह काम कर दिखाया जो बड़े बड़े वीरोंसे नहीं होता। वह यह कहने लगी कि फरिश्तोंने मुझे स्वप्नमें कहा है कि 'देशको शत्रुओंसे मुक्त कर।' पहले तो उसकी बात किसीने न सुनी। अन्तको उसने राजाके सामने जाकर कहा "मैं कुमारी जान हूँ। ईश्वर मुझे यह कहनेकी प्रेरणा करता है कि तुम्हारा रीम्स नगरमें अभिषेक होगा।" जोनको कवच और शस्त्र दे दिये गये और उसको देखते ही

फ्रांसीसियोंमें ऐसी जान आ गयी कि अंग्रेजोंके छक्के छूट गये, और उनकी हारपर हार हुई। रीम्समें चार्लसका अभिषेक भी हुआ। परन्तु फ्रांसीसी सेनापति डाहके मारे जलने लगे क्योंकि सब जोनकी ही प्रशंसा करते थे। एक वार जोनको उन लोगोंने अकेला छोड़ दिया। अंग्रेज उसे पकड़ लाये और यह दोष लगाया गया कि वह शैतानकी सहायतासे कार्य्य करती है। इस अपराधके दण्डमें उसे जीवित जला दिया गया। जोन मरते समय भी उतनी ही वीर रही। वह कहती थी कि 'जो कुछ मैं करती हूँ ईश्वरकी प्रेरणासे करती हूँ।'

अब अंग्रेजोंके हाथसे एकके बाद दूसरा नगर निकलने लगा। जोनके पश्चात् भी फ्रांसीसी बड़ी वीरतासे लड़े। सच पूछो तो जोनने मरे हुए फ्रांसको पुनर्जीवित कर दिया और संवत् १५१० (१४५३ ई०) तक अंग्रेजोंके कब्जेमें कैलेके सिवा फ्रांसमें कुछ भी न रहा। शतवर्षीय युद्धका यही परिणाम निकला और इसके पश्चात् फिर कभी इंग्लैण्डके किसी सम्राट्‌ने फ्रांसकी गद्दीका दावा नहीं किया।

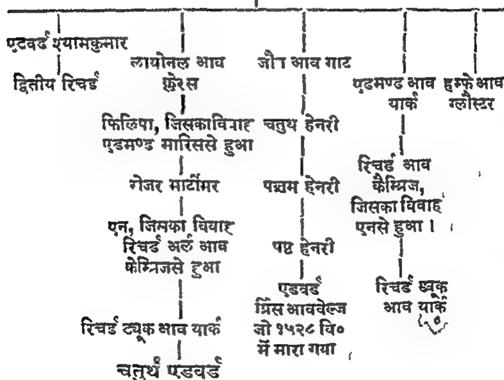
छठा अध्याय।

गुलावयुद्ध और यार्क वंश।



फ्रांसके शतवर्षीय युद्धमें सब कुछ खो बैठनेके पश्चात् छठे हेनरीको अन्य विपत्तियोंने आ घेरा। ये विपत्तियाँ चौथे और पाँचवे हेनरीके समय भी कुछ कम न थीं क्योंकि ये लोग गद्दीके न्याय्य अधिकारी न थे। परन्तु पाँचवे हेनरीने

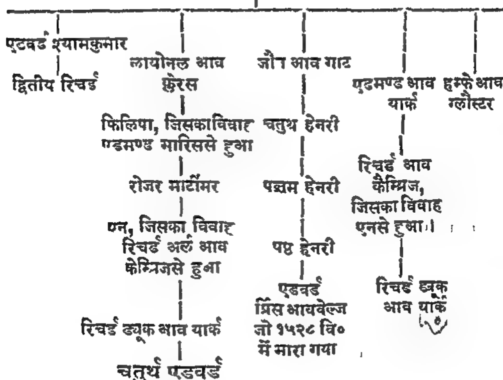
फ्रांससे युद्ध छेड़कर देशका ध्यान दूसरी ओर खींच लिया था। अब फ्रांस-युद्धकी समाप्तिपर गड़े हुए मुर्दे उखड़ने लगे। नीचे तृतीय एडवर्डकी वंशावली दी जाती है जिससे भली भाँति ज्ञात हो सकेगा कि वस्तुत गद्दीका कौन अधिकारी था और यह लङ्कास्टर वंशको क्यों मिल गयी'—



इस वंशावलीसे विदित होता है कि द्वितीय रिचर्डके पश्चात् राजगद्दी तृतीय एडवर्डके दूसरे लड़के लायोनलके वंशमें जानी चाहिये थी। चतुर्थ हेनरीका कोई अधिकार न था क्योंकि वह तृतीय एडवर्डके तीसरे पुत्रका बेटा था।

संवत् १५१० (१४५३ ई०) में लङ्कास्टर वंशको राज्य करते हुए ५४ वर्ष व्यतीत हो चुके थे और अब यह आशा न थी कि गद्दीके अधिकारका प्रश्न फिर उठेगा, परंतु दुर्भाग्यवश ऐसे कारण उपस्थित हो गये जिनका परिणाम भयानक युद्धके रूपमें परिवर्त्तित हो गया। प्रथम तो राज्यप्रबन्ध ठीक न था। छठा हेनरी यद्यपि धार्मिक, सुशील और दयालु था परन्तु वह राज्यप्रबन्धके सर्वथा अयोग्य था। वह अपने नाना फ्रांसके चार्ल्सके समान कभी कभी पागल हो जाया करता था। उसके रोगी रहनेके समयमें राज्यप्रबंध दूसरोंके हाथमें आता था और "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वाली कहावत चरितार्थ होती थी। संवत् १५११ (१४५४ ई०) में रिचर्ड ड्यूक आव यार्क (वंशावली देखो) ने चाहा कि मैं प्रबंधकर्त्ता नियत किया जाऊँ। ऐसा ही किया गया, परंतु जब वर्ष भरके पश्चात् छठा हेनरी नीरोग हुआ तो उसने झट रिचर्ड ड्यूक आव यार्कको राज्यप्रबन्धसे बहिष्कृत कर दिया। इसपर यार्कने नियमानुसार युद्ध छेड़ दिया। यह बड़ा भीषण युद्ध था जिसमें इंग्लैण्डकी वीरता और योग्यता दोनों ही मिट्टीमें मिल गयीं। यार्कवाले श्वेत गुलाबका फूल अपनी पार्टीके आदमियोंका चिह्न मानते थे और छठा हेनरी तथा लङ्कास्टरके अन्य वीर अपना चिह्न लाल गुलाब मानते थे। इसीलिए यह युद्ध 'गुलाब युद्ध' के नामसे प्रसिद्ध हो गया। पहली लड़ाई सेण्ट एल्बन्समें संवत् १५१२ (१४५५ ई०) में हुई। यार्कवालोंकी विजय हुई। राजा हेनरी कैद हो गया। उसी समय वह फिर उन्मत्त हो गया और राज्यप्रबन्ध रिचर्ड यार्कके अधीन रहा परन्तु हेनरीने अच्छा होते ही फिर यार्कको निकाल दिया। इसपर और भी भीषण युद्ध हुआ।

फ्रांससे युद्ध छेडकर देशका ध्यान दूसरी ओर खींच लिया था। अब फ्रांस-युद्धकी समाप्तिपर गडे हुए मुर्दे उखडने लगे। नीचे तृतीय एडवर्डकी वंशावली दी जाती है जिससे भली भाँति ज्ञान हो सकेगा कि वस्तुतः गद्दीका कौन अधिकारी था और यह लङ्कास्टर वंशको क्यों मिल गयी:—



इस वंशावलीसे विदित होता है कि द्वितीय रिचर्डके पश्चात् राजगद्दी तृतीय एडवर्डके दूसरे लडके लायोनलके वंशमें जानी चाहिये थी। चतुर्थ हेनरीका कोई अधिकार न था क्योंकि वह तृतीय एडवर्डके तीसरे पुत्रका बेटा था।

सवत् १५१० (१४५३ ई०) में लङ्कास्टर वशको राज्य करते हुए ५४ वर्ष व्यतीत हो चुके थे और अब यह आशा न थी कि गद्दीके अधिकारका प्रश्न फिर उठेगा, परतु दुर्भाग्यवश ऐसे कारण उपस्थित हो गये जिनका परिणाम भयानक युद्धके रूपमें परिवर्त्तित हो गया। प्रथम तो राज्यप्रवन्ध ठीक न था। छठा हेनरी यद्यपि धार्मिक, सुशील और दयालु था परतु वह राज्यप्रवन्धके सर्वथा अयोग्य था। वह अपने नाना फ्रासके चार्ल्सके समान कभी कभी पागल हो जाया करता था। उसके रोगी रहनेके समयमें राज्यप्रवध दूसरोंके हाथमें आता था और "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वाली कहावत चरितार्थ होती थी। सवत् १५११ (१४५४ ई०) में रिचर्ड ड्यूक आव यार्क (वशावली देखो) ने चाहा कि मैं प्रबधकर्त्ता नियत किया जाऊँ। ऐसा ही किया गया, परन्तु जब वर्ष भरके पश्चात् छठा हेनरी नीरोग हुआ तो उसने झट रिचर्ड ड्यूक आव यार्कको राज्यप्रबन्धसे बहिष्कृत कर दिया। इसपर यार्कने नियमानुसार युद्ध छेड दिया। यह बडा भीषण युद्ध था जिसमें इङ्गलैण्डकी वीरता और योग्यता दोनों ही मिट्टीमें मिल गयीं। यार्कवाले श्वेत गुलाबका फूल अपनी पार्टीके आदमियोंका चिह्न मानते थे और छठा हेनरी तथा लङ्कास्टरके अन्य वीर अपना चिह्न लाल गुलाब मानते थे। इसीलिए यह युद्ध 'गुलाब युद्ध'के नामसे प्रसिद्ध हो गया। पहली लडाई सेण्ट एल्बन्समें सवत् १५१२ (१४५५ ई०) में हुई। यार्कवालोंकी विजय हुई। राजा हेनरी कैद हो गया। उसी समय वह फिर उन्मत्त हो गया और राज्यप्रवन्ध रिचर्ड यार्कके अधीन रहा परन्तु हेनरीने अच्छा होते ही फिर यार्कको निकाल दिया। इसपर और भी भीषण युद्ध हुआ।

संवत् १५१७ (१४६० ई०) में नार्थम्प्टनमें यार्कवाले जीते और रिचर्ड यार्कने गद्दीका दावा किया। परन्तु प्रतिनिधि-सभाने यह निश्चित कर दिया कि सम्प्रति हेनरी ही राजा रहे, प्रबन्ध रिचर्ड यार्क करे और हेनरीकी मृत्युपर रिचर्ड गद्दीपर बैठे।

इस सन्धिसे राजा हेनरी तो सन्तुष्ट था परन्तु महारानीका पुत्र एडवर्ड गद्दीसे वञ्चित रह जाता था, इसलिए उसने सेना एकत्र करके संवत् १५१७ (१४६० ई०) में वेकफील्ड स्थानपर यार्कवालोंको पराजित कर दिया। रिचर्ड यार्क मारा गया, परन्तु रिचर्ड यार्कका बेटा एडवर्ड यार्क पराजित होनेपर भी सेना सहित लन्दनपर चढ आया और चतुर्थ एडवर्डके नामसे गद्दीपर बैठ गया। उसी साल चतुर्थ एडवर्डने टौटन (Towton) पर लङ्कास्टर वालोंको सदाके लिए हरा दिया। इसके पश्चात् हेनरीकी मुख्य रानी एनने बहुत यत्न किया, परन्तु उसको मजबूर होकर देशसे भाग जाना पडा। संवत् १५२१ (१४६४ ई०) में राजा हेनरी भी एडवर्डके हाथ पड गया।

चतुर्थ एडवर्डकी सहायता अब तक रिचर्ड नेविल अर्ल आव वारिक * करता था। परन्तु विवाहके विषयमें वारिक एडवर्डसे क्रुद्ध हो गया और छठे हेनरीकी महारानीसे मिल गया। परन्तु संवत् १५२८ (१४७१ ई०) में एडवर्डने बार्नेट (Barnet) पर उसको हरा दिया। वारिक मारा गया, और थोडे दिनों पीछे ट्यूक्सबरी (Tewkesbury) के रणक्षेत्रमें लङ्कास्टर वालोंकी रही सही आशा भी जाती रही। हेनरीका

* Richard Neville Earl of Warwick

पुत्र एडवर्ड रणक्षेत्रमें मारा गया। हेनरीके प्राण कैदखानेमें हर लिये गये।

संवत् १५४० (१४८३ ई०) तक चौथे एडवर्डने राज्य किया। उसकी मृत्यु पर उसका पुत्र पाँचवें एडवर्डके नामसे गद्दीपर बैठा परन्तु चौथे एडवर्डके भाई रिचर्ड ग्लौस्टरने पाँचवें एडवर्ड और उसके भाईको, जो दोनों बालक थे, मरवा डाला और स्वयं तृतीय रिचर्डके नामसे राजा बन बैठा। यह बहुत क्रूर था और इस क्रूरताका फल इसे शीघ्र मिल गया, क्योंकि संवत् १५४२ (१४८५ ई०) में लङ्कास्टर दलका अगुआ हेनरी रिचमाण्ड, जो ट्यूडरवंशका था, चढ़ आया और उसने बास्वर्थ (Bosworth) के युद्धमें रिचर्डको मार डाला। गुलाब युद्धकी यह अन्तिम लड़ाई थी।

सातवाँ अध्याय।

मध्यकालीन अवस्था और विचार।



संवत् १५४२ (१४८५ ई०) में हेनरी रिचमाण्ड सप्तम हेनरीके नामसे इंग्लैण्डके राजसिंहासनपर बैठा। उसके राज्यका वृत्त हम फिर लिखेंगे। इस अध्यायमें केवल उन परिवर्त्तनों-का लिखना अभीष्ट है जो यूरोपकी धार्मिक, सामाजिक तथा नैतिक संस्थाओंमें हो रहे थे। वस्तुतः १५ वीं शताब्दीके मध्यमें, जब गुलाब-युद्धकी अग्नि बड़े प्रचण्ड रूपसे भड़क रही थी और इंग्लैण्डके बड़े बड़े रत्न उसमें आहुति हो रहे थे, न केवल इंग्लैण्डमें बल्कि

समस्त यूरोपमें नवीन विचार फैल रहे थे। रोमके पोपका मान शनै शनै कम हो रहा था। धार्मिक स्वतन्त्रताके साथ मानसिक तथा साहित्य सम्बन्धिनी स्वतंत्रता भी बल पकडने लगी थी।

इस परिवर्त्तनके कई कारण थे। सवत् १५१२ (१४५५ ई०) में यूरोपमें छापेखाने खुल गये थे। सवत् १५३४ (१४७७ ई०) में कैक्स्टन (Caxton) वैस्टमिन्सटरमें धडाधड पुस्तकें छापने लगा। विद्याके प्रचारमें आधिक्य होनेसे विचारोंमें भी उदारता आ गयी।

सवत् १५१० (१४५३ ई०) में तुर्क लोगोंने कुस्तुन्तुनियाको जीत लिया। उनके डरसे बहुतसे यूनानी विद्वान् यूनानी भाषाकी पुस्तकें बगलमें दबाये विद्या देवीकी रक्षाके लिए इटली भाग आये। इस प्रकार यूनानी भाषाका प्रचार बढा और यूनानी दर्शन शास्त्र तथा कलाकौशलने समस्त यूरोपके मस्तिष्कमें हलचल मचा दी।

सवत् १५४६ (१४८२ ई०) में कोलम्बसने भारतवर्षकी खोज करते हुए अमरीकाका पता लगा लिया और सवत् १५५४ (१४९७ ई०) में वास्कोडिगामा भारतवर्षमें आ ही गया। इस प्रकार यूरोपका सम्बन्ध पश्चिम तथा पूर्व दोनों ओर बढ गया। अब यूरोपवाले कूपमण्डूकके समान कब रह सकते थे ? अनेक देशोंके विविध प्रकारके लोगोंका ससर्ग होते हुए उनके मस्तिष्क तथा हृदय दोनों ही उदार बन गये और उन्नतिके युगका आरम्भ हो गया।

गुलाब युद्धके समयमें, जब उच्च वशज शिर-फुटव्वलमें मस्त हो रहे थे, सर्व साधारणकी शनै-शनै उन्नति हो रही थी। व्यापार और कला कौशलमें विशेष वृद्धि हो गयी। पक

एक व्यापारी राजा महाराजाओंसे भी अधिक धनाढ्य होगया था। एक समय ह्विटिंग्टन (Whittington) नामक लन्दन के व्यापारीने सम्राट् पञ्चम हेनरीको न्योता दिया। अग्निमें सुगंधित पदार्थ जल रहे थे जिनको देखकर महारानी मुग्ध हो गयीं। ह्विटिंग्टनने कहा "श्रीमतीजी, मैं इनसे भी अधिक बहुमूल्य पदार्थ जला सकता हूँ।' यह कहकर उसने जो तीन लाख पौंड राजाने उससे ऋण लिये थे उनके तमस्सुक आगमें जला दिये। ह्विटिंग्टनने अपनी मृत्युके समय बहुतसा धन पुस्तकालयों, धर्मशालाओं तथा चिकित्सालयोंके लिए छोड़ा।

पन्द्रहवीं शताब्दीके अन्ततक लन्दनमें बहुत ही सुन्दर मकान बन गये थे। अभी चारों ओरकी दीवार तो बनी थी परन्तु खाई अटा दी गयी थी। गलियाँ तंग थीं परन्तु घरोंमें छज्जे सुन्दर प्रतीत होते थे। गलियोंके किनारे किनारे दूकानें थीं जिनके पीछे या अट्टेपर दूकानका स्वामी सपरिवार रहता था और उसका मुनीम दूकानपर सोता था। मुनीमका डण्डा सदा उसके पास ही रहता था क्योंकि गलियोंमें नित्य प्रति झगड़े हुआ करते थे। साधुओंके मठ कुछ नगरके भीतर और कुछ बाहर भी थे। परन्तु उनकी दशा अच्छी न थी।

लन्दनका बन्दरगाह जहाजोंसे भरा रहता था। इसके अतिरिक्त विंचेस्टर, सौथम्पटन, नारिज, यारमौथ, ब्रिस्टल और लिन भी बड़े बन्दरगाह थे। परन्तु बहुतसे वर्तमान प्रसिद्ध नगरोंका उस समय नाम और निशान भी न था।

समस्त इंग्लैण्डमें उस समय ५० लाख मनुष्य रहते थे। अर्थात् चार सौ वर्षमें जन सख्या दुगुनी हो गयी थी। परन्तु उस समय समस्त देशमें उतने मनुष्य भी न थे जितने आज केवल लन्दनमें रहते हैं। कई बातोंपर विचार करनेसे ज्ञात

होता है कि दुगुनी संख्या भी कुछ कम न थी, क्योंकि कई बार प्लेग आया, निरन्तर युद्धोंने भी बहुत विघ्न डाला और दुर्भिक्ष भी इन विपत्तियोंकी सहायता करने लगे। चिकित्सा और अन्न पानका भी ऐसा अच्छा प्रबन्ध न था जैसा आज है।

वस्त्रोंके ढङ्गमें भी बहुत कुछ परिवर्त्तन हो गया था। उच्च वर्गके लोग कपडेके लम्बे लम्बे अँगरखे पहनते थे जिनकी बाहें चौडी, गर्दन तथा कन्धोंपर समूर लगे होते थे। कमर पर चमडेकी पेटी और उसमें एक चमडेकी थैलीमें चाकू और दूसरीमें रुपया-पैसा होता था। अंगरखेके नीचे एक चुस्त जाकिट पहनी जाती थी जो घुटनों तक पहुँचती थी। मोजे लम्बे होते थे जो जाँघोंतक आ जाते थे। टोपियोंके कई प्रकार थे। क्रेसीके युद्धके चित्रसे ज्ञात होता है कि राजा और अन्य लोग कन्धेतककी टोपी ओढते थे। कुछ दिनों पीछे इनके नीचेका भाग ऊपरको उलट दिया गया। जूते चमडे तथा कपडेके बनाये जाते थे और उनकी नोकें मुडी रहती थीं। घोडेपर चढनेमें लोग नरम चमडेके लंबे जूते पहनते थे।

स्त्रियोंकी गाउन ढीली ढाली और लम्बी होती थी। यह गले तक आती थी और इनकी बाँहें चौडी चकली होती थीं। दरिद्र लोग भी उसी प्रकारके परन्तु मोटे वस्त्र पहिनते थे।

साधारणतया भोजनकी कमी न थी। परतु संवत् १४६५ (१४३८ ई०) के दुर्भिक्षमें वृक्षोंकी जडें तक खानी पडी थीं। गाय, बकरी तथा सूअरका मांस सस्ता था। चाय और कहवेका नाम भी न था परतु शराब बहुत पी जाती थी। व्रत अर्थात् उपवासके दिनोंमें लोग सलोनी मछली खाया करते थे।

प्रत्येक प्रकारके व्यापारियोंके समाज होते थे । ये वर्षमें एक दिन नगरकीर्तन करते, गाते बजाते और खेल कूद किया करते थे । मुर्गा, साड तथा रीछोंकी लडाई लोगोंके जी बह लावका एक प्रचलित साधन था । व्यापारिक समाजोंके नियम कडे थे । जो लोग उनके सभासद न थे उनको उस कामके करनेकी आज्ञा न थी । अर्थात् जो मनुष्य मोजा बनानेवालोंके समाजका सदस्य न था वह मोजा नहीं बेच सकता था ।

खेती अधिकतर गेहूँ, जो और जईकी होती थी । कन्द-मूल अर्थात् गाजर मूलीका प्रचार न था । मक्खन उस समय भी निकलता था और नमक मिलाकर जाडोंके लिए रख लिया जाता था । खेतोंपर मेंडें न थीं । प्रत्येक ग्राममें चरागाह थे जहाँ प्रत्येक मनुष्य अपने पशु चरा सकता था । इनको कामन (Common) अर्थात् साझेकी भूमि कहते थे ।

प्रत्येक ग्राममें एक लोहार होता था जो किसानोंके हल, बढइयोंके औजार, सिपाहियोंके बर्छे और घरके बर्तन बनाया करता था । इसके अतिरिक्त बढई, दरजी आदि भी रहते थे । यात्रा करनेकी प्रणाली बहुत कम प्रचलित थी ।

सडकें भी अच्छी न थीं । जाडोंमें कीचड और गर्मियोंमें धूल तो एक साधारण बात थी । प्राय घोडे ही सवारीके काम आते थे और स्त्रियाँ भी पुरुषोंके समान सवारी करती थीं, अर्थात् आजकलकी मेमोंके समान दोनों पैर एक ही ओरको नहीं रखती थीं । किसानोंकी गाडियाँ भद्दी और सन्दूकके समान होती थीं । इनसे बहुधा खेतोंमें काम लिया जाता था ।

प्राचीन समयमें प्रत्येक नगरको शान्ति-स्थापन करनेका प्रबन्ध स्वय ही करना पडता था । नार्मन लोगोंके राज्यमें भी

यही प्रथा रही। इस समय प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य था कि स्वय शान्तिसे रहे और अपराधियोंकी भी खोज रखे। तृतीय एड्वर्डके समयमे प्रत्येक प्रान्तमें जमीदार मुखिया नियत कर दिये गये। ये अपराधियोंको दण्ड देते और शान्तिस्थापक (Justices of peace) कहलाते थे। परन्तु उस समय दण्ड केवल दरिद्रोंको ही दिया जाता था। धनाढ्य लोग छूट ही जाते थे। यदि कोई दरिद्र पुरुष धनाढ्योंके विरुद्ध नालिश करता तो उसकी सुनाई बहुत कम होती थी।

उस समय पुलीस न थी। हॉ, चौकीदार थे, जो रातके समय लालटेन लिये हुए घण्टे बजनेपर समय बताया करते थे। परन्तु इस पदपर वे बुड्ढे नियत किये जाते थे जो किसी और कामके योग्य न रहते थे। अत इनसे रक्षाका कार्य नहीं हो सकता था।

पन्द्रहवीं शताब्दीमें दण्ड बहुत कड़े न थे परन्तु इसके पश्चात् अत्यन्त कठोर हो गये थे। यदि कोई नागरिक अनुचित कार्य्य करता और न मानता तो प्राय वह नगरके फाटकसे बाहर कर दिया जाता था और उसे फिर भीतर आनेकी आशा न थी। छोटे छोटे अपराधोंके लिए कटहरेमें डाल देते थे, या तख्तीपर अपराधको लिखकर उसे नगरमें घुमाते थे। सड़ा मांस बेचने वालेको पिलरी (Pillory) में डालकर उसकी नाकके नीचे दुर्गन्धयुक्त मांस जलाया जाता था। पिलरी एक बड़ा लकड़ीका ढॉचा होता था जिसमें सिर और दोनों हाथोंको दूसरी ओर निकालनेके लिए तीन छिद्र होते थे। अपराधीको पिलरीके एक ओर खड़ा करके उसके सिर और बॉहोंको दूसरी ओर निकाल देते थे। इस प्रकार उसका बैठने या गर्दन मोड़नेका अवसर न मिलता था। सोनेक

बजाय पीतल बेचनेवाले, झूठी खबरें फैलाने या झूठा माल बेचनेवालेको सजा भी पिलरी ही थी। गाली देनेवाली स्त्रियोंको एक प्रकारकी तिपाईसे बाँध कर बतखके समान पानीमें छोड देते थे। इन तिपाइयोंको डकिंग-स्टूल (Ducking Stool) कहते थे।

विजयी विलियमसे लेकर पन्द्रहवीं शताब्दी तक विद्याका प्रचार नाम मात्र रहा। पाठशालाएँ बहुत कम थीं। बडे बडे उच्चवंशीयोंमें भी बहुत कम लोग हस्ताक्षर कर सकते थे। परन्तु १५ वीं शताब्दीके अन्ततक विद्याकी इच्छा बहुत बढ गयी जिसके कारण हम इसी अध्यायके आरम्भमें बता चुके हैं।

चतुर्थ खण्ड ।

वर्तमान राष्ट्रके अंकुर ।

पहला अध्याय ।

सप्तम हेनरी

संवत् १५४२—१५६६ (१४८५—१५०६ ई०)



म लिख चुके हैं कि स्टीफनके समयमें अशांतिका कारण यह था कि जमींदार (Barons—बैरन) लोग अधिक बल पकड गये थे और वे राजशासनके अकुशमें नहीं रहते थे। इसका सुधार द्वितीय हेनरीने किया था। इसी प्रकार सप्तम हेनरीको भी गद्दीपर बैठते ही उन सब झगडोंका निराकरण करना पडा। उसको भलीभाँति ज्ञात हो गया कि गुलाबयुद्ध और वे सब आपत्तियाँ जो गुलाबयुद्धके कारण उत्पन्न हुईं केवल एक ही कारण अर्थात् राजशासनकी शिथिलिता और जमींदारोंकी

प्रबल उद्दण्डतासे प्रकट हुई थीं। ये जमींदार लोग ही कभी इस पार्टीके ओर कभी उस पार्टीके सहायक हो जाते थे। वस्तुत. यही लोग देशकी शान्तिमें बाधा डालते थे। इनको दण्ड भी नहीं दिया जा सकता था क्योंकि किसी जज या न्यायकर्त्तामें इतनी शक्ति न थी कि अपनी कुशल चाहता हुआ इनको दण्ड दे सके। इन लोगोंने अपने प्रबल दुर्ग बना रखे थे और वर्दियां अर्थात् सैनिक चोले देकर बहुतसी सेना इकट्ठी कर ली थी। सैनिकोंके चोलोंका विचित्र नियम था। प्रत्येक जमींदारके सैनिकोंके भिन्न भिन्न चोले होते थे और जो सिपाही जिस जमींदारका चोला पहनता था उसीके पक्षमें लडता भी था। चोलोंका सिपाहियोंपर बडा प्रभाव पडता था और एकसे चोले देखकर उनके हृदय उत्साहपूर्ण हो जाते थे। चोलोंके कारण वे लोग अपने अपने जमींदारोंपर अभिमान भी करने लगते थे। यद्यपि वस्त्र एक तनिक सी बात थी पर तु तो भी वस्त्रोंका सादृश्य एकता स्थापन करनेके लिए अद्भुत और प्रबल साधन हो जाता है।

सप्तम हेनरी यद्यपि लङ्कास्टर वंशका था परन्तु बिना यार्क दलको मिलाये उसके सिंहासनका सुदृढ़ होना दुस्तर था। गुलाबयुद्धका कारण इन्हीं दलोंका वैमनस्य था अत राज्याभिषेकके पश्चात् ही हेनरीने चतुर्थ एडवर्डकी कन्या एलीजबिथसे विवाह कर लिया। इस प्रकार यार्क और लङ्कास्टर दोनोंका ही हेनरीसे सम्बन्ध हो गया और यार्क वंशीयोंको हेनरीसे युद्ध करनेका कोई कारण न रहा। हेनरीने अपने सैनिकोंका एक ऐसा चिह्न नियत किया जिसमें लाल और श्वेत दोनोंही गुलाब थे। हेनरीके इस चातुर्यने गुलाब युद्धके पुनर्जीवित होनेका अवसर ही नष्ट कर दिया। केवल लेम्बर्ट सिम्नल और

पर्किन वारवेक नामक दो पुरुषोंने यह झूठी घोषणा कर दी कि हम चतुर्थ एडवर्डके भतीजे और बेटे हैं, अतएव गद्दीके अधिकारी हम ही हैं, परन्तु इन दोनोंकी कलई शीघ्र खुल गयी। पर्किनको प्राणदण्ड दिया गया। परन्तु लेम्बर्ट सीधा था अतः हेनरीने उसे अपनी पाकशालाके कर्मचारियोंमें रख लिया।

अब हेनरीको देश सुधारकी सूझी। राजकोशमें कौड़ी तक न थी और धनके विना कोई सुधार हो ही नहीं सकता था। अत. सबसे पहले हेनरीने धन इकट्ठा करना आरम्भ कर दिया। कैदके स्थानमें अपराधियोंपर जुर्माने होने लगे। भिन्न भिन्न प्रकारके कर लगाये गये। इसके अतिरिक्त दान तथा चन्दोंसे भी कोशकी पूर्ति की गयी। साराश यह कि जिस प्रकार वना, धन लिया गया। हेनरीका महामन्त्री कार्डिनल मार्टन नित्यप्रति धन ही बटोरा करता था। यदि उसे कोई खर्चीला मिलता तो वह कहता—"तुम इतना व्यय करते हो। प्रतीत होता है कि तुम्हारे पास बहुत धन है। तुमको चाहिये कि राजाको धन दो।" यदि किसी मितव्ययीसे भेंट होती तो कहता "तुम बडे मितव्ययी हो। अवश्य तुमने प्रचुर धन इकट्ठा किया होगा। राजाको भी दो।"

आयकी वृद्धिके साथ साथ हेनरीने व्ययकी कमीके भी उपाय सोचे। सबसे अधिक व्यय युद्धमें होता है। अत हेनरीने कई देशोंसे सन्धि कर ली जिससे व्यय कम हो जाय। सप्तम हेनरीके सब कार्य दूरदर्शितासे पूर्ण थे। जर्मनीके सम्राट् मैक्सीमीलियनसे सन्धि करके उसने फ्लेण्डर्स देशके साथ व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित किया। स्काटलैण्डके राजा चतुर्थ जेम्सके साथ उसने अपनी कन्या मारग्रेटका विवाह कर दिया जिसमें उसकी सन्तान इंग्लेड और स्काटलैंड दोनोंकी

शासक बन सके। वह कहा करता था कि यदि इग्लैंडके साथ स्काटलैंड नहीं मिल सकता तो स्काटलैंडके साथ इग्लैंडको मिल जाना चाहिये। वस्तुत ऐसा ही हुआ क्योंकि सवत् १६६० (१६०३ ई०) में इसी मारग्रेटकी पोतीका लड़का छठाँ जेम्स प्रथम जेम्सके नामसे स्काटलैण्ड तथा इग्लैण्ड दोनोंका राजा हो गया। जिस स्काटलैंडपर प्रथम एडवर्ड तथा उसके उत्तराधिकारी शस्त्रके बलसे विजय न पा सके उसे सप्तम हेनरीने बुद्धिमत्तासे सहजमें ही जीत लिया।

जमींदारोंको दमन करनेकी उसने यह विधि निकाली कि प्रथम तो उनके दुर्ग तोड दिये गये। दूसरे, उसने यह नियम पास किया कि जो जमींदार अपने सैनिकोंको चोले देगा वह दण्डनीय होगा। इस नियमका पालन विशेषतासे किया गया। एक दिन आक्सफर्डके अर्लके यहाँ हेनरीका निमन्त्रण था। राजाके सम्मानार्थ अर्लने अपने सैनिकोंको चोले पहना कर सलामीके लिए घरके बाहर खडा किया था। राजाने कहा "महाशय मैं इस सम्मानके लिए कृतज्ञ हूँ। परन्तु मेरा वकील आपसे उत्तर माँगेगा।" कहते हैं कि अर्लपर १५ हजार पौण्ड जुर्माना किया गया। इससे हेनरीके दो प्रयोजन सिद्ध हो गये। एक तो यह प्रकट हो गया कि नियमोल्लघनपर राजा मित्रोंको भी न छोडेगा, दूसरे कोशमें इतना रुपया आ गया। दुर्गोंके नष्ट हो जाने और सैनिक चोलोंका निषेध हो जानेसे जमींदारोंके बलमें बहुत कमी हो गयी। इसके अतिरिक्त उसने एक विशेष न्यायालय स्थापित किया जिसे 'कोर्ट आव स्टार चेम्बर'* अर्थात् नक्षत्र-भवन कहते थे

* Court of Star Chambor

क्योंकि जिस भवनमें जज लोग बैठते थे उसकी छतमें सितारोंके चित्र बने हुए थे। इस न्यायालयके जज ऐसे बलवान् आत्मावाले नियत किये गये थे जो बडेसे बडे जमींदारको भी निर्भय होकर दण्ड दे सकें। इस प्रकार देशका बहुत सुधार हुआ। बलवान् निर्बलोंपर अत्याचार करनेसे घबराने लगे।

सप्तम हेनरीका राज्य इन सब बातोंके लिए अच्छा था। परन्तु इसमें एक दोष भी था। राजाकी शक्ति बहुत बढ गयी थी। पार्लमेंट अर्थात् प्रतिनिधि सभाकी शक्ति बहुत कम हो गयी थी। राजाकी शक्तिका आधिक्य उस समय सबको भला लगता था, क्योंकि प्रजा सुखी थी। उपद्रव दमनके लिए राज शक्तिके आधिक्यकी ही आवश्यकता थी। परन्तु "प्रभुता पाय काहि मद नाहीं" की लोकोक्ति चरितार्थ हो गयी और राजा लोग अपनी इस शक्तिका दुरुपयोग करने लगे। हेनरीके उत्तराधिकारियोंको हेनरीकी शक्ति तो मिल गयी, परन्तु उसके समस्त गुण न मिले। राजाओंको एक बार शक्ति देकर फिर उनसे इस शक्तिका छीन लेना प्रजाके लिए सरल कार्य्य नहीं है। इसलिए पार्लमेंटको अपने अधिकार प्राप्त करने और राजाओंकी निरकुशता रोकनेके लिए भद्र पुरुषोंका बलिदान करना पडा जैसा कि आगेके अध्यायोंसे विदित होगा।

सप्तम हेनरी ट्यूडर वंशका था अतएव सप्तम हेनरीसे लेकर एलीज़बिथतक सब राजा ट्यूडरवंशी कहलाते हैं।

दूसरा अध्याय ।

अष्टम हेनरी ।

सवत् १५६६ से १६०४ (१५०६ से १५४७ ई०) तक

सप्तम हेनरीका ज्येष्ठ पुत्र आर्थर उसीके जीवन समयमें मर चुका था अत उसका दूसरा बेटा हेनरी 'अष्टम हेनरी' के नामसे इग्लैंडका राजा बना। इसको विद्यासे प्रेम था। विद्वानोंसे बहुत मिलता और उनसे घण्टों वार्त्तालाप किया करता था। इसके अतिरिक्त उसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा था। उसे खेलकूदसे बहुत प्रेम था। जितनी दूर वह कूद सकता था उतनी दूर समस्त इग्लैंडमें कोई कूदनेवाला नहीं था। यही हाल उसके तीर चलानेका था। उसका निशाना कभी खाली नहीं जाता था, सदैव लक्ष्यपर ही तीर पडता था। उसे अपनी शारीरिक दशापर अभिमान भी था। एक समय जब फ्रासका दूत फ्रासनरेशकी प्रशसा करने लगा तो हेनरीने अपनी पिंडली (टाँगके अधोभाग) पर हाथ मारकर कहा—"तुम्हारे स्वामीकी पिंडली मेरी पिण्डलियोंका सामना नहीं कर सकती।" हेनरीकी बातें सदा हास्यपूर्ण हुआ करती थीं। वह लोगोंको बातोंमें ही प्रसन्न कर देता था। यही कारण था कि थोडे दिनोंमें ही लोग उससे प्रेम करने लगे थे। उसकी इच्छाशक्ति भी बडी प्रबल थी। जो बात एक बार मस्तिष्कमें बैठ जाती उसे वह करके छोडता था। परन्तु वह विश्वसनीय न था। समय आनेपर लोगोंको धोखा दे बैठता था और प्रियसे प्रिय पुरुषसे यदि किञ्चित् भी अप्रसन्न हो

जाता तो उसके प्राणतक लेकर छोड़ता। स्वार्थ सिद्धिके सामने उसे धर्म, अधर्म कुछ भी न सूझता था।

अष्टम हेनरीने संवत् १५६६ से १६०४ (१५०९ ई० से १५४७ ई०) तक लगभग ३८ वर्ष राज्य किया। इस अर्धशताब्दीमें अनेक और विचित्र परिवर्तन हुए जिनमें राजा तथा प्रजा दोनोंने भिन्न भिन्न भावोंसे भाग लिया।

हेनरीको गद्दीपर बैठते ही मालूम हुआ कि स्पेन और फ्रांस अति प्रबल हुए जाते हैं। यदि एकका बल बहुत बढ़ जायगा तो वही दूसरोंकी स्वतंत्रता नष्ट करनेका उपाय करेगा, अतएव हेनरीने एकको दूसरेसे लड़ा दिया जिससे सबकी शक्तियाँ सामान्य रहें। जिसका पक्ष गिर जाता था वह उसीको सहायता देना स्वीकार कर लेता था।

संवत् १५९९ (१५४२ ई०) में स्काटलैंडसे लड़ाई हुई जिसमें सौल्वे मास* पर स्काटलैण्डवालोंकी हार हुई। इस भयानक समाचारको सुनकर वहाँका राजा पाँचवाँ जेम्स, जो हेनरीका भानजा था, रजके मारे मर गया, और उसकी कन्या स्काट रानी मेरी गद्दीपर बैठी। हेनरीने अपने शासन-समयके अन्तमें फ्रांसवालोंसे फिर युद्ध छेड़ दिया और प्रजापर भयानक कर लगाये। परन्तु हेनरीकी संवत् १६०४ (१५४७ ई०) में मृत्यु हो गयी जिससे प्रजाको बड़ा सन्तोष हुआ।

आठवें हेनरीके समय यूरोप भरमें बड़ा भारी धार्मिक विप्लव हुआ। जर्मनीमें लूथर नामक एक सुधारक उत्पन्न हुआ जिसने पोपके आधिपत्यके विरुद्ध जोरोंसे आवाज उठायी। वस्तुतः ईसाई दुनियामें पोपका आधिपत्य बहुत बढ़

* Solway mass

रहा था। उसके नामसे राजातक काँपते थे और किसीका साहस न होता था कि उसके विरुद्ध कुछ भी कह सके। देश का बहुतसा धन पोपकी भेंट होता था। एकाधिपत्यके कारण धर्म-संस्थामें अनेक प्रकारके दोष आगये थे। लोग ईसाकी माता मरियम तथा अन्य पूर्वजोंकी मूर्तियोंको पूजते थे और जो धन दीन दुखियोंकी सेवामें लगता उससे गिरजाघर सजाये जाते थे। मूर्तियोंको अनेक प्रकारके आभूषण पहनाये जाते थे। पोपको दान देकर क्षमा माँगनेकी प्रथा चल पड़ी थी। इसलिए धनाढ्य पुरुष पाप करनेसे डरते न थे। मठोंमें ईसाई महन्त विषयासक्तिके दास बने हुए भोग भोग रहे थे। जर्मनीमें लूथरने बताया कि जो धर्म आजकल ईसाई धर्म माना जा रहा है वह बाइबिलका धर्म नहीं है। बाइबिलका ईसाई धर्म सबसे उच्च है। उसमें मूर्ति पूजन अथवा अन्य आडम्बर नहीं हैं, और न उसमें पोपका दास होना ही आवश्यक है। उसने यह भी बतलाया कि मनुष्य रुपया देकर पापोंसे मुक्त नहीं हो सकता। यूरोपके बहुतसे लोग इसके अनुयायी हो गये और प्रोटेस्टेण्टके नामसे प्रसिद्ध हुए।

इङ्गलैण्डमें भी लोग लूथरकेसे विचार रखने लगे थे और जो उससे विरुद्ध थे वे भी यह मानते थे कि धार्मिक अवस्थामें सुधारकी आवश्यकता है। दैववशात् एक कारण भी उपस्थित हो गया जिससे इंग्लैंडके राजा और प्रजाजन पोपके विरुद्ध हो गये। हेनरीने अपने भाई आर्थरकी विधवा कैथराइनसे विवाह कर लिया। उससे कई सन्तानें भी हुईं परन्तु एक कन्या मेरी ही जीवित बची। प्रश्न यह था कि हेनरीके पीछे कौन गद्दीपर बैठे। भय था कि लड़की राज्य न कर सकेगी और देशमें विद्रोह होगा। इन्हीं दिनोंमें राजा एक

रूपवती स्त्री एन बोलिन* पर मोहित होगया, परन्तु एक स्त्रीके रहते विवाह कैसे करे। अब यह पता चला कि भाईकी स्त्रीसे विवाह करना धर्मविरुद्ध है। फिर क्या था, झट हेनरी ने प्रसिद्ध कर दिया कि उसे अपने इस धर्म-विरुद्ध कार्य्यपर बड़ा पश्चात्ताप है और उसने पोपसे प्रार्थना की कि कैथराइन को तलाक देनेकी आज्ञा मिले। पोपने अपने दो प्रतिनिधि नियत कर दिये जो इस मामलेका फैसला कर दें। इनमेंसे एकका नाम वूल्जे† था। वूल्जे अबतक राज्यका समस्त प्रबन्ध करता था, और राजाओंकी दृष्टिमें उसका बड़ा मान था। संवत् १५८६ (१५२६ ई०) में जब मुकद्दमा होने लगा तो कैथराइन आकर हेनरीके पैरोंपर गिर पड़ी और रो रोकर कहने लगी कि मुझपर दया करो, सिवाय तुम्हारे मेरा कोई नहीं है। मैंने बीस वर्षतक पातिव्रत्यके साथ तुम्हारी सेवा की है। परन्तु जब हेनरीने न माना तो उसने कहा कि मेरा मुकद्दमा केवल पोप ही करेगा। कैथराइनका भतीजा इटली और स्पेनका सम्राट् था और पोप कैथराइनके विरुद्ध निर्णय देनेसे डरता था। इसलिए हेनरी पोपके विरुद्ध होगया। उसने पार्लमेंटसे एक नियम पास करा दिया कि इंग्लैंडके गिरजों-का शासक राजा है, न कि पोप। जो लोग इस बातसे इन-कार करते थे उनको फाँसी हुई। वूल्जेको राज्याधिकारसे निकाल दिया और उसपर अभियोग चलाया। बेचारा वूल्जे यह कहता हुआ मर गया कि "जिस परिश्रमसे मैंने राजाकी सेवा की, उसी परिश्रमसे यदि ईश्वरकी भक्ति करता, तो ईश्वर मुझे इस बुढ़ापेमें कभी न त्यागता।"

* Anne Boleyn † Wolsey

अब हेनरीने दो पादरियोंकी व्यवस्था लेकर कैथराइनको तलाक दिया और एन बोलिनसे विवाह कर लिया। प्रसिद्ध महारानी एलीज़बिथ एन बोलिनकी ही लडकी थीं। हेनरी एन बोलिनसे भी क्रुद्ध होगया और उसे फॉसी दिलवा दी। इस प्रकार उसने एक दूसरेके पीछे छ विवाह किये। तीसरी स्त्री जेन सीमोरसे एक लडका एडवर्ड हुआ।

अब पोपका शासन तो इंग्लैण्डसे उठ गया, परन्तु राजा का शासन उससे भी कठिन था। जो धन पहले पोपकी जेब में जाता था वह अब राजाकी भेंट होने लगा। बहुतसे मठ और धर्मशालाएँ तोड दी गयीं और उनकी भूमि तथा धन राजाको मिला। इनके अतिरिक्त अनेक अत्याचार किये गये जिनके कारण प्रजा बडी दु खी हो गयी। हेनरी पोपके विरुद्ध होगया था परन्तु वह लूथरका अनुयायी होना भी नहीं चाहता था इसलिए उसने ऐसे नियम बना रखे थे कि प्रोटेस्टेण्ट लोग जीवित जला दिये जाते थे।

हेनरीके समयमें सर्वसाधारणकी अवस्था ठीक न थी। चोरी करनेके अपराधमें प्राणदण्ड होता था। इसलिए चोर लोग प्राणघात भी कर बैठते थे। बहुतसे किसानोंने खेती करना छोड दिया और भेडें पालने लगे क्योंकि इनकी ऊन बेचनेसे अधिक लाभ होने लगा। इन सब दोषोंको दूर करनेके लिए कई विद्वानोंने पुस्तकें लिखीं, उनका प्रचार किया और साधारण लोगोंके विचार बदल दिये। इनमें प्रसिद्ध विद्वान् तीन थे, एरेसस, कोलेट और टामस मोर*। यहा टामस मोरका सक्षिप्त वृत्तान्त लिखना कुछ अनुचित न होगा। वह एक

* Erasmus, Colet, Thomas More

होता तो वह पहले कर डालता और तत्पश्चात् पार्लमेण्टसे पास करा लेता। मठोंका दमन उसने इसी प्रकार किया। छठे एडवर्डके समयमें भी पार्लमेण्टका यही हाल रहा और राज्य-प्रबन्धक उसको कठपुतलीके समान नचाते रहे।

सोमर्सेट कट्टर प्रोटेस्टेण्ट था और उसने चाहा कि लाठी-के बल समस्त देशको प्रोटेस्टेण्ट बना दूँ। उसने पार्लमेण्टसे दो नियम पास कराये, प्रथम तो प्रोटेस्टेण्टोंको जलाने-के नियमका अपवाद था। दूसरे नियमके अनुसार अंग्रेजीमें प्रार्थनापुस्तक निर्माण हुई और आदेश हुआ कि समस्त गिरजोंमें यही पुस्तक पढी जाय। जो प्रोटेस्टेण्ट लोग आठवें हेनरीके समयमें देश छोडकर भाग गये थे वे सब लौट आये। मूर्तियाँ तोड डाली गयी और धर्ममन्दिरोंके आभूषण नष्ट कर दिये गये। लन्दन और विन्चेस्टरके लाटपादरि-योंने ही नवीन प्रार्थना पुस्तकका पाठ स्वीकार न किया, अत उनको कारागार हुआ। इन सब बातोंका परिणाम सोमर्से-टके लिए बुरा हुआ। यद्यपि उस समय इंग्लैण्ड निवासि योंके धार्मिक विचारोंमें परिवर्तन हो रहा था, परन्तु प्रोटे-स्टेण्ट अभी बहुत थोडे थे। साधारण मनुष्य अपना धर्म बद-लना न चाहते थे। जो लोग अबतक लैटिन भाषामें प्रार्थना सुन रहे थे, उन्हें अंग्रेजी भाषामें प्रार्थना सुनना बुरा प्रतीत होता था। वे समझते थे कि प्रार्थनाका उच्च भाव नष्ट किया जा रहा है।

सोमर्सेटने स्काटलैंडपर कब्जा करनेके लिए वहाँकी महारानी मेरीसे एडवर्डका विवाह करना चाहा और जब स्काट लोग राजी न हुए तो उनपर चढ़ाई कर दी। एडिन्-बराके निकट पीरीपर घोर युद्ध हुआ। स्काट हार गये और

उनका देश लूट लिया गया परन्तु उन्होंने अपनी महारानी मेरीको फ्रांस ले जाकर उसका विवाह फ्रासके युवराज फ्रेंसिससे कर दिया। सोमर्सेटको न केवल अपने कार्य्यमें ही विफलता हुई किन्तु विना वातके वहुत सा धन भी व्यय हो गया। अव मठ भी शेष न रहे थे जिनको तोडनेसे रुपया मिलता अत सिक्केमें मेल कर दिया गया। आठवें हेनरीके समयमें भी सिक्कोंमें कुछ गडवड हुई थी। अव तो शिलिङ्ग और अर्ध शिलिङ्ग और भी हल्के कर दिये गये।

सोमर्सेटने लन्दनमें अपने लिए वहुत वडा मकान वनाया और उसपर वहुतसा धन व्यय किया। मकान और दुकानें वनानेके लिए शवालय खोद डाले और वहाँके शव हटा दिये गये, धर्म मन्दिर नष्ट कर दिये गये।

ये कार्य्य ऐसे थे कि सोमर्सेटसे कोई प्रसन्न न रह सकता था। छठा एडवर्ड तो अव भी वच्चा ही था। डेवन और कार्नवालके लोग नयी प्रार्थनापुस्तकपर विगड गये। उन्होंने वडा भारी विद्रोह किया परन्तु राजसेनाने उनको परास्त कर दिया और नेताओंको प्राणदण्ड देकर शान्ति स्थापित कर दी। दूसरा विद्रोह नार्फाकके किसानोंका था क्योंकि पहले जो भूमि ग्रामीण पुरुषोंकी खेतीके लिए छूटी हुई थी, उसपर वाडे वनाकर धनाढ्य पुरुषोंने अपनी भेडें पालना शुरू किया। ग्रामीण विचारे विद्रोह न करते तो क्या करते? क्योंकि उनकी प्रार्थना सुननेवाला तो कोई था ही नहीं। अन्तको केट नामक एक चमारको अगुआ करके वे हजारोंकी सख्यामें चढ़ गये और वाडोंको तोड डाला। राजसेनाने उनका भी दमन किया, परन्तु इतने झगडोंने सोमर्सेटका नाश कर दिया। पहले तो वह पद-त्याग करनेको वाध्य हुआ,

फिर उसपर राजद्रोहका अपराध लगाया गया और उसीके सम्बन्धमें उसे प्राणदण्ड दिया गया।

सोमर्सेटके पश्चात् प्रबन्धका कार्य डडलेके सुपुर्द हुआ। ये डडले साहब सोमर्सेटसे भी बढ़े-चढ़े थे। प्रबन्धकी शक्ति इनमें सोमर्सेटसे कई गुनी कम थी, रहा धार्मिक भाव, सो दिखानेके लिए तो बहुत था, परन्तु वास्तविक जीवन बगला भक्तोंके ही समान था। धन लूटना और सम्मान पाना इनका मुख्य उद्देश्य था। पहले तो यह नार्थम्बर्लैंण्डके ड्यूक होगये। फिर चाहा कि राज्य भी हमारे ही घरानेमें रहे। यह भी कट्टर प्रोटेस्टेण्ट थे और इन्होंने भी एक और प्रार्थनापुस्तक बनायी। जो धन अब तक पुरोहितोंकी जेबोंमें जाता था, वह इनके कोशको भरने लगा। यही कारण था कि इग्लैण्डके लोग प्रोटेस्टेण्ट मतसे क्रुद्ध हो गये। यद्यपि सभी प्रोटेस्टेण्ट लोलुप न थे परन्तु जिन प्रोटेस्टेण्टोंके हाथमें अधिकार था वे बहुत बुरा आदर्श दिखलाते थे। साधारण लोग यही समझते थे कि ये बुराइयाँ प्रोटेस्टेण्ट धर्मके कारण हैं।

यह कह चुके हैं कि नार्थम्बर्लैंण्ड इग्लैण्डका राज्य अपने ही घरमें रखना चाहता था। आठवें हेनरीने मृत्युके समय यह निश्चय कर दिया था कि एडवर्डके सन्तानरहित मरने पर उसकी पुत्रियों—मेरी और एलीजबिथको राज्य मिले और इनके पश्चात् लेडी जेन ग्रे राजसिंहासन पर बैठायी जाय। लेडी जेन ग्रे अष्टम हेनरीकी बहिन मेरीकी पोती थी। छठा एडवर्ड सदा रोगी रहा करता था और सब जानते थे कि यह शीघ्र ही मृत्युका ग्रास हो जायगा। उसकी बहिन मेरी रोमन केथोलिक थी और प्रोटेस्टेण्टोंसे घृणा करती थी। इसीलिए नार्थम्बरलैंण्ड आदि प्रोटेस्टेण्टोंका माथा ठनक रहा

था और इनकी कोशिश थी कि जिस प्रकार हो सके मेरी राज्यसे वञ्चित कर दी जाय। नार्थम्बर्लैण्डके पुत्रका विवाह लेडी जेन ग्रेसे हो गया, और जब छठा एडवर्ड मृत्युशय्यापर पडा तो नार्थम्बर्लैण्डने उससे कह सुन कर लेडी जेन ग्रेको राज्यकी उत्तराधिकारिणी निश्चित करा लिया। एडवर्ड संवत् १६१० (१५५३ ई०) में मर गया और जेन ग्रे राजगद्दीपर बैठा दी गयी परंतु उसे १३ ही दिन राज्य करनेको मिला। समस्त प्रतिनिधि-सभाने मेरीको ही सिंहासन दिया और जेन ग्रे कारागार में डाल दी गयी।

चौथा अध्याय।

मेरी ट्यूडर।

संवत् १६१०-१५ (१५५३–५८ ई०)

सो मर्सेट और नार्थम्बर्लैण्डके अत्याचारोंसे देश तंग आ गया था और प्रोटेस्टेण्टोंके अन्याय-युक्त स्वार्थोंके कारण लोगोंको लूथर*से घृणा भी हो चुकी थी। इसलिए मेरीके गद्दीपर बैठनेसे सब लोग प्रसन्न हो गये परंतु यह कैथोलिक मेरीका ही राज्य था जिसमें प्रोटेस्टेण्ट धर्मकी उज्ज्वलता सिद्ध होगयी। स्वर्ण-की चमक अग्निमें तपानेसे ही जान पडती है।

---

* लूथरके ही अनुयायी प्रोटेस्टेण्ट कहलाते थे और अन्य ईसाई जो पोपके अधीन थे रोमन कैथोलिक नामसे प्रसिद्ध थे।

मेरी कैथराइनकी बेटी थी। हम ऊपर बता चुके हैं कि कैथराइनके तलाकसे ही नये विचार इंग्लेण्डमें उत्पन्न हुए थे और उसीके कारण कैथराइनको इतना अपमान सहना पड़ा। अतः स्वभावतः मेरी पोपकी अनुयायिनी अर्थात् कट्टर कैथोलिक थी। उसने गद्दीपर बैठते ही उन लोगोंको छोड़ दिया जो एडवर्डके समय बन्दी किये गये थे। एडवर्डके समयकी प्रार्थना पुस्तकोंका पाठ बन्द हो गया और कैथोलिक रीतिसे प्रार्थना होने लगी। आठवें हेनरी और छठें एडवर्डके समयमें जो राज्यनियम पोपके विरुद्ध पास किये गये वे सब रद्द कर दिये गये। पोपका आधिपत्य फिर स्थापित करनेके लिए उसने स्पेन नरेश द्वितीय फिलिपसे विवाह कर लिया, क्योंकि फिलिप पोपका अनुयायी और लूथरके मतका परम शत्रु था। इंग्लैण्डकी प्रजा स्पेननरेशसे सम्बन्ध रखना नहीं चाहती थी। इसलिए यह विवाह सबको बुरा लगा और सर टामस व्याटने विद्रोह भी किया परन्तु किसीकी न चली। विद्रोही मारे गये और मेरीने इस भयसे कि कहीं जेन ग्रेको गद्दीपर बैठानेका उपाय न किया जाय बेचारी जेन ग्रे और उसके श्वशुरको प्राणदण्ड दे दिया।

विवाहके पश्चात् मेरीने पार्लमेण्टसे पोपके आधिपत्यको स्वीकार कराना चाहा। लोग तैयार ही थे परन्तु उनको एक भय था। हेनरी और एडवर्डके समयमें बहुत सी भूमि जो गिरजों और मठोंसे लगी हुई थी ले ली गयी थी। यदि पोप इस सबको माँगता तो बड़ी आपत्ति होती। पोपने आधिपत्यपर ही सन्तोष किया और प्रतिज्ञापत्र लिख दिया कि गयी हुई भूमि वापिस न ली जायगी। इस प्रकार फिर समस्त इंग्लैंडमें पोपडमका राज्य होगया।

अब मेरीने अपने शत्रुओंसे जी खोलकर बदला लिया। प्रोटेस्टेंटोंके जीवित जलानेका नियम फिर पास हुआ। लन्दन और विन्चेस्टरके लाटपादरियोंकी अनुमतिसे प्रोटेस्टेण्ट पादरी जीवित जला दिये गये। देशमें हाहाकार मच गया। परन्तु इन धर्मवीरोंने बड़े धैर्यसे विपत्तियोंका सहन किया और अग्निमें जलते हुए भी धर्म न छोड़ा। सुफोकके पादरी रोलेण्ड टेलरको जीवित जलानेकी आज्ञा हुई। उसे प्रात काल अँधेरे कारागारसे अपनी स्त्री और बच्चोंसे मिलाने लाये। ये लोग गलीमें उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। एक लड़कीने चिल्ला-कर कहा "पिताजी ! पिताजी !! माताजी देखो, पिताजीको लिये जा रहे हैं।" उस समय गलीमें लालटेन न थी। अँधेरेके कारण स्त्रीको सूझ न पड़ा और उसने पुकार कर कहा "रोलेण्ड ! रोलेण्ड !! तुम कहाँ हो।" उसने उत्तर दिया "प्रिये ! मैं यह हूँ।" उसे कुछ देर ठहरनेकी आज्ञा होगयी और उसने सपरिवार ईश्वर प्रार्थना की। चलते समय उसने कहा "प्रिये, अब जाता हूँ। सन्तोष करो, क्योंकि मेरी आत्मा शान्त है। ईश्वर मेरे बच्चोंका पिता होगा।" जब उसे चितासे बाँधने लगे तो एक दुष्टने एक लकड़ी उठा कर उसके सिरमें मारी। उसने नम्र होकर कहा "मित्र ! इतनी ही आपत्ति पर्याप्त है। इसकी क्या आवश्यकता थी ?" थोड़ी देरमें आग जलने लगी और अमर रोलेण्ड टेलरका नश्वर शरीर भस्मी-भूत होगया।

एक समय एक लड़केको पकड़ लाये। पुलीसके गोरोंने कहा "कैथोलिक हो जाओ, नहीं तो जला दिये जाओगे।" इस लड़केने जलते हुए दीपककी लौपर अँगुली रख दी। अँगुली जलने लगी और लड़केने हर्षपूर्वक कहा—"जलनेमें

इससे अधिक कष्ट नहीं हो सकता। पादरी रिड और लैटीमरने जलते समय अभिमानपूर्वक कहा "हम स्वर्गमें ऐसा दीपक जलायेंगे जिसमें समस्त संसार प्रकाशित हो जायगा"। वस्तुतः ऐसा ही हुआ क्योंकि इस बलिदानके प्रभावसे बहुत जल्द समस्त इग्लैण्ड प्रोटेस्टेण्ट होगया। पादरी क्रैनमर कैदखानेमें पड़ा हुआ कुछ लोभमें आगया और उसने प्रोटेस्टेण्ट धर्म छोड़नेके लिए प्रतिज्ञापत्रपर हस्ताक्षर कर दिये। परन्तु फिर उसे पश्चात्ताप हुआ और उसने धर्मपर स्थिर रहनेकी ठान ली। जब उसे जलाने लगे तो हर्षपूर्वक अपना दाहिना हाथ आगमें डाल कर उसने कहा—"पहले हाथ जलाना चाहिये क्योंकि इसीने अधर्मयुक्त प्रतिज्ञापत्रपर हस्ताक्षर किये थे।" जिस धर्मके ऐसे प्रचारक हों, उसकी उन्नति कैसे न हो?

मेरीने अपने पति फिलिपके साथ फ्रांस देशसे भी युद्ध छेड़ दिया जिसके कारण कैले भी अंग्रेजोंके हाथसे चला गया। शतवर्षीय युद्धमें केवल कैले ही उनके पास रह गया था, मेरीके समयमें वह भी जाता रहा।

संवत् १६१५ (१५५८ ई०) में मेरीकी मृत्यु हो गयी। उसके साथ उसके अत्याचारोंका भी अन्त होगया। इग्लैण्डके इतिहासमें मेरी "रक्तपा मेरी" (ब्लडी मेरी) के नामसे प्रसिद्ध है।

पाँचवाँ अध्याय ।

एलीजबिथका राज्याभिषेक ।

संवत् १६१५ (१५५८ ई०)



मेरीके पश्चात् उसकी सौतेली बहिन एलीजबिथ गद्दीपर बैठी । यह हेनरी अष्टमकी दूसरी भार्य्या एन बोलिनकी बेटी थी । मेरीने इसे अपने राज्य-समयमें कारागारमें डाल रखा था । जब एलीजबिथको अपने महारानी होनेकी खबर मिली उस समय वह एक वृक्षके नीचे बैठी हुई थी । वह कहने लगी "यह सब ईश्वरकी महिमा है, हमको तो बहुत ही आश्चर्य होता है ।" गद्दीपर बैठते ही एलीजबिथको अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा । यद्यपि लोग इस बातसे प्रसन्न थे कि जीवित जलानेका युग समाप्त होगया तथापि धार्मिक बातोंमें बहुत मत-भेद था । इंग्लैंडमें प्रोटेस्टेंटोंकी संख्या तिहाईसे भी कम थी । केवल लन्दन और प्रसिद्ध नगरों तथा विश्वविद्यालयों और विशेष कर केम्ब्रिजमें इनका आधिक्य था । उच्चवंशीय तथा विद्वान् लोग यदि प्रोटेस्टेण्ट न थे तो होना चाहते थे । परन्तु सर्वसाधारण तथा ग्रामीण लोग कैथोलिक धर्मके ही अनुयायी थे । एलीजबिथकी सबसे पहली कठिनाई धार्मिक विचारोंकी थी ।

एलीजबिथकी माता प्रोटेस्टेण्ट थी अत एलीजबिथकी शिक्षा भी उसी मतके अनुसार हुई थी । परन्तु एलीजबिथका धर्मकी अपेक्षा राजनीतिकी ओर अधिक ध्यान था । उसे शक्तिकी इच्छा थी और उसे वही मत अङ्गीकार्य्य था जो

उसको राजसिंहासनपर सुदृढ कर सके। कैथोलिक होनेसे एलीजबिथकी यह इच्छा पूर्ण न होती। पोपने यह निर्णय कर दिया था कि हेनरी अष्टमका केथराइनको तलाक देना धर्मविरुद्ध था। इसलिए एलीजबिथकी माता एन बोलिनका विवाह भी धर्म विरुद्ध सिद्ध होनेसे एलीजबिथ अपने पिताकी धार्मिक पुत्री भी सिद्ध न होती थी। फिर उसका राजसिंहासनपर अधिकार ही क्या था। इन सब बातोंपर विचार करते हुए एलीजबिथने यही निर्णय किया कि मैं पोप और उसके मतसे किसी प्रकारका सम्बन्ध न रखूँगी। परन्तु इसके साथ ही वह अपनी प्रजाको भी असन्तुष्ट न करना चाहती थी। उसकी इच्छा थी कि कोई ऐसा मत प्रचलित किया जाय कि सब लोग मान जायँ और लडाई झगडे न होने पावें। अतः उसने छठे एडवर्डके समयकी द्वितीय प्रार्थना पुस्तकमें कुछ परिवर्तन करके उसीको स्वीकार कर लिया। रोमन कैथोलिक होना अपराध न समझा गया परन्तु प्रत्येक पुरुषके लिए गिरजेमें जाना आवश्यक था।

एलीजबिथ प्रोटेस्टेएट तो हो गयी परन्तु ऐसा करनेमें भी कुछ न कुछ आपत्ति अवश्य थी। जेनेवा (स्विटजर्लैण्ड) में कालविन नामक एक धार्मिक सुधारक हुआ जिसके मतानुसार चर्चोंमें पादरी तथा पुरोहित रखनेकी आवश्यकता न थी। लोग स्वयं ही समस्त प्रबन्ध कर सकते थे। यह मत इंग्लैएडके प्रोटेस्टेएटोंको भी स्वीकार था। परन्तु एलीज़बिथ डरती थी कि यदि पादरी और लाटपादरी न रहेंगे तो उसका गिरजोंपर कुछ भी आधिपत्य न रहेगा और प्रोटेस्टेएट लोग निरङ्कुश होकर रोमन कैथोलिकोंको रुष्ट कर देंगे अतः उसने पादरियोंका नियत करना निश्चित कर लिया। मेरी ट्यूडरसे

रोमन कैथोलिक लोग भी अप्रसन्न हो चुके थे, क्योंकि उसने स्पेननरेशके कहनेसे फ्रांसवालोंसे व्यर्थ युद्ध ठान लिया था। अतः एलीजबिथसे वे भी सन्तुष्ट रहे। एलीजबिथकी सर्वप्रियता अन्ततक बनी रही, क्योंकि उसने पोप या किसी विदेशी नरेशके कहनेसे देशको हानि नहीं पहुँचायी। उसने विवाह भी नहीं किया, क्योंकि वह जानती थी कि उसका पति उसके राज्यकार्य्यमें बाधक होगा। वह अपनी प्रजासे भली प्रकार मिलती, उनके खेल कूदमें सम्मिलित होती, और कहा करती थी कि मेरी प्रजा ही मेरे पति हैं। उसकी इच्छाशक्ति बडी प्रबल थी, परन्तु उसने अपने इन पतियोंके खुश करनेके लिए अपनी इच्छाका कभी दुरुपयोग नहीं किया। वह मितव्ययी भी बहुत थी। उसकी आय अति न्यून थी। मठ आदि भी न थे जिनको तोड कर वह आय बढाती। फिर भी उसने कर न बढ़ाये। एक बार तो एक कर वसूल होनेपर भी यह कहकर लौटा दिया गया कि हमको इसकी आवश्यकता नहीं है। शायद ही किसी राजाने कभी ऐसा किया हो।

छठाँ अध्याय।

सोलहवीं शताब्दीमें स्काटलैण्डकी अवस्था।

प्राचीन अवस्थाका संक्षिप्त वृत्तान्त हम लिख चुके हैं। एलीजबिथके राज्यसे स्काटलैण्डका भी बहुत कुछ सम्बन्ध है। अतः उचित प्रतीत होता है कि स्काटलैण्डकी सोलहवीं शताब्दी (ईसवी) की अवस्थाका कुछ वर्णन यहाँ किया जाय।

सोलहवीं शताब्दी न केवल इंग्लैण्ड किन्तु समस्त यूरोप के लिए अशान्तिकी शताब्दी रही है। इसमें प्रत्येक विभागमें बड़े भारी परिवर्तन हुए और स्काटलेण्डने इन परिवर्तनोंमें कुछ कम भाग नहीं लिया।

चतुर्थ जेम्स संवत् १५४५ (१४८८ ई०) में स्काटलेण्डको गद्दीपर बैठा। उसे इंग्लैण्डके प्रति आरम्भसे ही वैमनस्य था। पर्किन वार्बेक (देखो पृष्ठ ९८) को उसीने सहायता दी थी। परन्तु सप्तम हेनरी बड़ा चतुर था। जो बात नीति द्वारा सम्भव थी उसे वह शस्त्र द्वारा करना नहीं चाहता था। संवत् १५५४ (१४९७ ई०) में सन्धि हो गयी और कुछ दिनों पीछे हेनरीकी सबसे बड़ी लड़की मारग्रेटका विवाह भी चतुर्थ जेम्सके साथ होगया।

यह मित्र-भाव कई वर्षों तक जारी रहा परन्तु अष्टम हेनरीकी युद्धप्रियताने बना बनाया काम बिगाड़ दिया। स्काटलेण्ड और फ्रांसमें बहुत प्राचीन समयसे मैत्री चली आती थी। अतः ज्यों ही अष्टम हेनरीने फ्रांससे लड़ाई ठानी त्यों ही स्काटलैण्ड इंग्लैण्डसे अलग हो गया। इधर अंग्रेजी सेना फ्रांसपर आक्रमण करती, उधर स्काटलैण्ड-नरेश इंग्लैण्डके उत्तरी भागपर धावा बोल देता। अन्तको संवत् १५७० (१५१३ ई०) में फ्लोड्डिन हिलकी लड़ाईमें स्काटलैण्डकी पराजय हुई और चतुर्थ जेम्स मारा गया।

चतुर्थ जेम्सके पश्चात् उसका लड़का पंचम जेम्स स्काटनरेश हुआ परन्तु इसकी आयु दो ही वर्षकी थी। छोटोंके राजा होनेमें बड़ी विपत्ति यह है कि राजा तो नाम मात्रको होता है और यों 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' हो जाती है। यही हाल अब भी हुआ। स्काटलैण्डमें दो दल होगये।

विधवा महारानी मारग्रेटने एङ्गससे विवाह कर लिया जो डोगलसके वंशका था। एक दल तो यह हुआ। दूसरा दल एरन (Arran) के अर्लका था। इन दोनों दलोंमें इतना वैमनस्य हो गया कि एडिनबराकी गलियोंमें भी गुत्थम गुत्थी होने लगी। ड्यूक आव अल्बनीने इन दोनोंका दमन किया परन्तु दमन क्या किया, उसे स्वयं बड़ी कठिनाई पड़ी और वह फ्रांसको भाग गया। एङ्गस अंग्रेजोंके पक्षमें था और उसके शत्रु फ्रांसके। अतः जिस दलकी बन आती थी वह अपने मित्रोंकी ओर समस्त स्काटलैण्डको घसीटना चाहता था। कुछ दिनों पश्चात् जब पंचम जेम्स बड़ा होगया तो उसने एङ्गसको निकाल दिया और वह इंग्लैण्डकी ओरसे उदासीन हो गया। उसे अष्टम हेनरीकी पोपके विरुद्ध कार्य्यवाही रुचिकर न हुई और जब इंग्लैण्डकी राजकन्याके विवाहकी चर्चा की गयी तो उसने झट इसको अस्वीकार कर दिया और फ्रांसकी राजकुमारीसे विवाह कर लिया। इसपर इंग्लैण्डवाले बड़े अप्रसन्न हुए। युद्ध छिड़ गया और उसका परिणाम यह हुआ कि संवत् १५९९ (१५४२ ई०) में साल्वे मास * पर स्काटलैण्डवालोंकी हार हुई और पंचम जेम्स शोकके मारे मर गया। इसके पश्चात् उसकी पुत्री मेरी, जो अपने पिताकी मृत्युके कुछ ही दिन पहले उत्पन्न हुई थी, स्काटलैण्डकी महारानी हुई।

इंग्लैण्डके समान स्काटलैण्डमें भी धार्मिक परिवर्त्तन हो रहे थे। परन्तु एक भेद था। इंग्लैण्डके परिवर्त्तन राजासे आरम्भ हुए। हेनरी अष्टम, छठे एडवर्ड तथा एलिज़बेथने अपने उद्देश्यकी पूर्तिके लिए परिवर्त्तनोंमें भाग लिया

* Salway Mass

था और प्रजाको अपने राजाका अनुसरण करना पडा, परन्तु स्काट लोग स्वय इन परिवर्त्तनोंके अग्रगामी हुए। वहाँके राजाने तो सदा इसका विरोध ही किया। स्काटलैएडके धार्मिक सुधारका सबसे मुख्य नेता जौन नौक्स था। यह बडा विद्वान्, बुद्धिमान् तथा प्रभावशाली व्याख्यानदाता था। संवत् १६०३ (१५४६ ई०) में पादरी बीटनकी अनुमतिसे जार्ज विशर्ट नामका प्रोटेस्टेएट पादरी सेएट एएड्रूके किलेमें जीवित जला दिया गया। इसपर नौक्स बिगड गया और कई साथी लेकर किलेमें जा घुसा। उसने बीटनको तो वहीं ढेर कर दिया और वह वर्ष भर तक किलेपर जमा रहा। अन्तमें उसकी हार हुई।

हम छठे एडवर्डके वृत्तान्तमें वर्णन कर चुके हैं कि स्काट महारानी मेरीका एडवर्डसे विवाह करनेके लिए कितने उपाय किये गये और सोमर्सेटने युद्ध भी किया परन्तु मेरी फ्रांस नरेशसे व्याह दी गयी। इसका परिणाम यह हुआ कि न केवल मेरी फ्रांसकी मित्र ही बन गयी किन्तु उसको प्रोटेस्टेएटोंसे घृणा भी उत्पन्न हो गयी।

स्काटलैएड में राज्यकी ओरसे ज्यों ज्यों धर्मके सुधारकों का दमन किया गया त्यों त्यों वे और बल पकडते गये। अन्तमें सवत् १६१४ (१५५७ ई०) में उन्होंने एक सघटन स्थापित किया और पोपका विरोध करने तथा अग्रेजी अंजील और एडवर्डके समयकी प्रार्थनापुस्तकके स्वीकार करनेकी शपथ खायी। जोन नौक्स जो कि फ्रांस भाग गया था फिर लौट आया और सुधारकोंका नेता हो गया।

सवत् १६१५ (१५५८ ई०) में जब एलीजबिथ इग्लैएडकी गद्दीपर बैठी उसी समय स्काटलैएडमें वाल्टर मिल (Walt-

er Mill) नामक एक और प्रोटेस्टेण्ट पादरी जीतेजी जलादिया गया। अब प्रोटेस्टेंट लोगोंके क्रोधकी सीमा न रही। अनेक स्थानोंपर विद्रोह हुए, मठ तोड डाले गये और एडिन्बरा ले लिया गया। इसके अतिरिक्त महारानी मेरी-की माता जो इस समय अपनी बालिका पुत्रीकी ओरसे राज्य-प्रबन्ध करती थी अपने पदसे च्युत कर दी गयी। प्रोटेस्टेंट लोगोंने एक नयी प्रतिनिधि सभा अर्थात् पार्लमेंट चुन ली और संवत् १६१७ (१५६० ई०) में पोपके आधिपत्यको त्याग कर काल्विनका धर्म स्वीकार करनेकी घोषणा कर दी गयी।

स्काट महारानी मेरी अबतक फ्रांसमें रहती थी। अपने पतिकी मृत्युपर संवत् १६१८ (१५६१ ई०) में वह स्काटलैंड आयी और प्रोटेस्टेंटोंका बल देखकर जल उठी। पहले तो उसने इंग्लैंडकी गद्दीका दावा किया क्योंकि वह सप्तम हेनरीकी लडकी मारग्रेटकी पोती थी। एलीजबिथको वह अधिकारिणी न समझती थी क्योंकि उसके मतानुसार एन बोलिनका अष्टम हेनरीसे विवाह ही अनुचित और अधर्म-युक्त था। कुछ दिनों पश्चात् मेरीने प्रार्थना की कि एलीज बिथ उसको अपना उत्तराधिकारी ही निश्चित कर दे। एली-जबिथको इतना करनेमें कोई सकोच न था परन्तु जब उसने देखा कि मेरी कट्टर कैथोलिक है और उसके कारण इंग्लैंडके सब प्रोटेस्टेंट अप्रसन्न हो जायँगे तो उसने ऐसा करनेसे मुख मोड लिया।

मेरी पहलेसे ही प्रोटेस्टेण्टोंसे जल रही थी, अब उसने यूरोपमें एक प्रोटेस्टेण्ट-विरोधिनी महासभा स्थापित की जिसका मुखिया स्पेनका फिलिप था।

मेरीकी यह शत्रुता देखकर स्काटलेंडके प्रोटेस्टेण्टोंने विद्रोह किया। मेरी यह चाहती थी कि निरङ्कुश होकर पोपके आधिपत्यको फिर स्थापित कर दूँ। प्रजा इसका प्रतिरोध करती थी। यह झगड़ा नित्य प्रति बढता जाता था। अन्तको मेरी कैद कर ली गयी और उससे जबरदस्ती राजगद्दीके त्यागपत्रपर हस्ताक्षर करा लिये गये। इसके अनुसार मेरीका बालक छठे जेम्सके नामसे स्काटनरेश हुआ।

मेरी कैदसे भाग आयी और सेना इकट्ठी करने लगी, परन्तु अन्तमें हारकर संवत् १६२५ (१५६८ ई०) में इग्लेंड चली आयी और एलीजबियकी शरणमें रहने लगी। एलीज-बियने उसके साथ अच्छा व्यवहार किया परन्तु रखा कैदमें ही। इसका वृत्तान्त आगे लिखा जायगा। यहाँ केवल इतना और बतला देना देना चाहिये कि मेरीके लडके छठे जेम्सको प्रोटेस्टेण्ट धर्मकी शिक्षा दी गयी थी, और इसके पश्चात् स्काटलैण्ड प्रोटेस्टेण्ट ही रहा।

सातवाँ अध्याय।

एलीज़बियको गद्दीसे उतारनेका प्रयत्न।



री स्काटका इग्लैण्डमें आना बहुतसी विपत्तियोंका कारण हुआ। यह अतीव रूपवती थी और बहुतसे व्यक इससे विवाह करनेके लिए उत्सुक रहा करते थे। बहुतोंकी ऐसी भी धारणा थी कि एलीजबियके पश्चात् मेरी ही राजसिंहासनपर बैठेगी अत उनकी विवाहकी लालसा

ओर भी बढ़ जाती थी । ड्यूक आव नार्फाकने इस इच्छाके पूर्ण करनेका निश्चय कर लिया और नार्थम्बरलैण्ड तथा वेस्टमोर्लैण्डके ड्यूकोंकी सहायतासे विद्रोह कर दिया। इस विद्रोहको 'उत्तरी विद्रोह' कहते हैं। ये सब लोग कैथोलिक थे। विद्रोहियोंने गिरजाघरोंपर धावा बोल दिया। प्रार्थना पुस्तकें फाड डालीं और कैथोलिक रीतिके अनुसार प्रार्थना करनी आरम्भ कर दी। परन्तु इस विद्रोहमें बहुतसे कैथोलिक सम्मिलित न हुए। वे समझते थे कि आन्तरिक झगडोंसे देशका नाश हो जाता है। इसके अतिरिक्त उनको इन ड्यूकोंपर विश्वास भी न था अत एलीजबिथकी सेनाने तुरन्त ही विद्रोहका दमन कर दिया। यद्यपि एलीजबिथ दयालुहृदया थी तो भी इस समय वह घबरा गयी और उसने बहुतसे विद्रोहियोंको प्राणदण्ड दे दिया।

उत्तरी विद्रोहके दमनके पश्चात् दूसरे वर्ष पोपने घोषणा कर दी कि एलीजबिथ धर्मच्युत की जाती है और गद्दीसे उतारी जाती है। ऐसा करनेसे पोपका यह अभिप्राय था कि रोमन कैथोलिक लोग विद्रोह करनेमें पाप न समझें। क्योंकि पोप द्वारा गद्दीसे उतारे हुए राजाकी भक्ति करना प्रजाके लिए कर्त्तव्य ही न था। इसके अतिरिक्त प्रत्येक रोमन कैथोलिक शासकका कर्त्तव्य था कि एलीजबिथको गद्दीसे उतारनेमें सहायता दे। इस समय प्रोटेस्टैंट मत बड़े वेगसे फैल रहा था। केवल चालीस वर्षके समयमें यूरोपका अधिकांश प्रोटेस्टेण्ट हो गया। संवत् १६१७ (१५६० ई०) तक इंग्लैण्ड, स्काटलैण्ड, नीदरलैण्डका अधिकांश, स्वीडन, नार्वे, डेनमार्क तथा जर्मनी, हंगरी और स्विट्ज़र्लैण्ड लूथरके अनुयायी हो चुके थे। अब केवल दो कैथोलिक सम्राट् बच रहे। एक स्पेन-

नरेश द्वितीय फिलिप, दूसरा फ्रांस-नरेश नवम चार्ल्स। ये दोनों इतने प्रबल थे कि यदि इनका मेल हो जाता तो इंग्लैण्ड कुछ न कर सकता। परन्तु इनमें भी परस्पर वैमनस्य था। एक दूसरेको अत्यन्त प्रबल करना नहीं चाहता था। जो इंग्लेण्डको ले पाता उसीकी शक्ति बढ जाती और वह दूसरेको अवश्य पददलित कर डालता। फिर फ्रांस और स्पेनमें भी प्रोटेस्टेंट उपस्थित थे जिनका दमन करनेमें ही वहाँके राजाओंकी शक्ति कुछ कम खर्च नहीं हो रही थी। स्पेननरेशके आधिपत्यमें नीदरलैण्ड था जहाँके लोग प्रोटेस्टेण्ट थे। फिलिपने इनके दमनके लिए ड्यूक आव आलवाको भेजा जिसने बडे भारी अत्याचार किये। बहुतोंको सूलियाँ दी गयीं, अनेक प्रकारके कडे कडे कर लगाये गये जिसके कारण लोग और भडक गये। आलवाकी सेना इन्हींके दमनमें लगी रही। उसे इंग्लैण्डपर आक्रमण करनेका अवसर न मिला। फ्रांसमें भी ह्यूगेनॉट्स (Huguenots) नामके प्रोटेस्टेण्ट थे, जिनके फ्रांस-नरेशसे सदा झगडे हुआ करते थे।

इस समय कुछ कैथोलिक जमींदारोंने एक और उपाय सोचा और रिडोलफी (Ridolfi) नामक एक इटालियन व्यापारीके द्वारा आल्वासे पत्रव्यवहार किया कि यदि तुम स्पेनके ६००० सिपाही भेज दो तो हम एलीजबिथको उतार कर मेरीको गद्दीपर बैठा दें। आल्वाने फिलिपकी आज्ञा चाही परन्तु एलीजबिथके महामन्त्री लार्ड बर्ले (Burghley) को यह सब षड्यन्त्र ज्ञात हो गया। एलीजबिथने इसपर बडी दृढतासे कार्य्य किया। स्पेनके दूतको देशसे निकाल दिया और नार्फोकको फाँसी दे दी गयी। परन्तु इस समय उसने स्पेनसे युद्ध करना उचित न समझा।

जब एलीजबिथको राज्य करते हुए बीस वर्षके लगभग होगये तो रोमन कैथोलिक लोग डरे कि कहीं समस्त इङ्गलैण्ड ही प्रोटेस्टेंट न हो जाय अत उन्होंने यथाशक्ति हाथ पैर मारना आरम्भ किया। बहुतसे अंग्रेज, जो रोमन कैथोलिक धर्मको छोडना न चाहते थे और जो एलीजबिथके डरसे देश छोडकर भाग गये थे, प्रचारक बन कर देशको लौट आये और प्रोटेस्टेंट लोगोंको अपने धर्ममें मिलाने तथा रोमन कैथोलिक लोगोंको अपने धर्मपर सुदृढ रहनेका उपदेश करने लगे। इनमेंसे एक जौन जिराई (John Gerard) था जो अपने कार्य्यमें बहुत कुछ सफल होगया था। एलीजबिथ डर गयी। उसने समझा कि पोपका आधिपत्य होते ही मैं मार डाली जाऊँगी। अत उसने कडेसे कडे नियम रोमन कैथोलिक लोगोंके विरुद्ध पास किये। जिराई पकड लिया गया। जब उससे पूछा गया कि तुम इस देशमें क्यों आये, तो उसने उत्तर दिया "बहके हुए आत्माओंको ईश्वरसे मिलानेके लिए।" परन्तु राजकर्मचारी जानते थे कि ऐसा करनेसे बहुतसे आत्मा महारानी एलीजबिथकी भक्तिसे मुख मोड लेंगे। अत जिराई कैद कर दिया गया और दो दिन उसकी कलाइयाँ बाँधकर लोहेकी शलाकाओंसे इसलिए लटकाया गया कि वह अपने अन्य साथियोंके नाम बतला दे। परन्तु उसने न बतलाया। अन्तमें एक दिन वह कैदखानेसे भाग निकला। कारागारके बाहर बहुत बडी खाई थी जिसका पार करना दुस्तर था। निदान उसके मित्रोंने एक रस्सेमें सीसेका लट्टू बाँधकर खाईकी दूसरी ओर फेंक दिया। जिराई उसको पकडकर बाहर निकल आया। जो कठिनाई जिराईको रस्सेके सहारे बाहर आनेमें हुई उसका वर्णन करना मुश्किल

हैं। वह कहता है कि मैंने रस्सेको दाहिनी भुजामें लेकर टाँगोंमें लपेट लिया कि गिर न पड़ूं, फिर सिरके बल उतरा। वह कई बार गिरते गिरते बच गया। जिरार्डके अतिरिक्त अन्य कैथोलिकोंको भी कष्ट दिये गये। बहुतोंको फॉसी दे दी गयी। कुछ लोग जीवित ही चार भागोंमें काटकर लन्दनके पुलपर लटका दिये गये कि और लोग उनकी दशा देखकर शिक्षा ग्रहण करें

इस कठोर वर्तावपर स्वभावत कैथोलिक बहुत बिगडे और फ्रांसिस थ्रोग्मार्टन (Francis Throgmorton) तथा कई अन्य युवकोंने एलीजबिथके मारनेका यत्न किया परन्तु अन्तमें पकडे गये और उनको प्राणदण्ड दिया गया। उस समय हाउस आव कामन्सने राजभक्त लोगोंकी एक समिति बनायी जिसने निश्चय किया कि यदि एलीजबिथ मारी गयी तो न केवल मारनेवाले ही, किंतु वे लोग भी मार डाले जायँगे जिनके कारण एलीजबिथके प्राण जायँगे। इसका स्पष्ट सकेत मेरी स्काटकी ओर था।

कुछ दिनों पश्चात् एन्थनी बैबिङ्गटन और उसके साथियोंने एलीजबिथको मारनेके लिए एक षड्यन्त्र रचा परन्तु महारानीके भाग्यवश इसका भी पता लग गया और वे भी प्राणदण्ड द्वारा इस लोकसे निकाल दिये गये। बहुतसे अंग्रेजोंको यह निश्चय हो गया था कि जब तक स्काटरानी मेरी जीवित रहेगी एलीजबिथके प्राण सकटमें रहेंगे। उसके मन्त्रीगणोंको तो मेरीके हस्ताक्षर किये हुए पत्र भी प्राप्त हो गये थे जिनमें एलीज़बिथके मारनेके लिए सकेत था। यह सच हो या झूठ, परतु मेरीपर अभियोग चलाया गया। मेरीकी वक्तृताशक्ति बडी प्रबल थी। अभियोगके समय वह

स्वय अपनी रक्षा करती थी और प्रत्येक लाञ्छनका उत्तर देती थी। अन्तमें जजोंने यह निश्चित किया कि यदि मेरीका स्वय महरानी एलीजबिथको मरवानेकी कोशिश करना सिद्ध न भी हो तो भी यह तो निस्सन्देह ठीक है कि यह सब षड्-यन्त्र मेरीके लिए ही रचे जाते है। जो स्त्री समस्त देशकी आपत्तिका कारण हो उसे प्राणदण्ड ही देना चाहिये। फलत सवत् १६४४ (१५८७ ई०) में मेरीका सिर काट दिया गया।

आठवाँ अध्याय।

स्पेनसे युद्ध और आमंडा।



न नरेश फिलिपका बहुत दिनोंसे इग्लैंडपर दाँत था। मेरी टूडरसे उसने विवाह ही इसलिए किया था। मेरीके मर जानेपर उसने एलीजबिथका भी पाणिग्रहण करना चाहा परन्तु एलीजबिथने सूखा उत्तर दे दिया। फिर स्काट रानी मेरीकी बारी आयी। कहा जाता है कि मेरी स्काटने फिलिपको लिख दिया था कि यदि तुम मुझे कैदसे मुक्त कराके इग्लैंडकी गद्दीपर बैठा दो तो मैं तुम्हारे साथ विवाह कर लूगी। पोपकी एलीजबिथ-विषयक घोषणा भी कैथोलिक फिलिपके लिए पर्याप्त थी परन्तु फिलिप अब तक दो बातोंसे डरता था। पहले तो वह समझता था कि ज्यों ही मैं इग्लैण्डपर आक्रमण करूँगा त्यों ही झट मेरी स्काटको फासी दे दी जायगी। दूसरी बात यह थी कि अगर मेरी किसी प्रकार इग्लैण्डकी महारानी हो गयी तो फ्रासकी

वन जायगी, क्योंकि मेरीका फ्रांससे हार्दिक प्रेम था। फिलिप कभी न चाहता था कि फ्रांसकी अत्यन्त वृद्धि हो जाय।

परन्तु अब मेरी मर गयी, इसलिए दोनों आपत्तियाँ दूर हो गयीं। इस समय इंग्लैण्डपर आक्रमण करनेके लिए अति उचित अवसर था। मेरीकी मृत्युने फ्रांसवालोंको भडका दिया और वे भी फिलिपके सहायतार्थ उपस्थित हो गये।

फिलिपने एक वडा जहाज़ोंका वेडा तैयार कराया जिसको आर्मेडा* कहते थे। आर्मेडा शब्दका अर्थ है 'शस्त्र सुसज्जित'। ये जहाज हर प्रकारके शस्त्रोंसे युक्त थे अतः इनके समूहका नाम आर्मेडा पडा। संवत् ६४४ (१५८७ ई०) में समाचार मिले कि फिलिप इंग्लेण्डपर आक्रमण करनेकी तैयारियाँ कर रहा है। इसलिए इंग्लैण्डका प्रसिद्ध सामुद्रिक सैनिक ड्रेक† जो समस्त भूमण्डलके समुद्रोंका चक्कर लगा चुका था एक दिन केडिजकी खाडीमें घुस गया और स्पेनके जहाजोंको जला आया। उसने आकर एलीजबिथसे कहा "मैं स्पेननरेश की दाढी जला आया हूँ।" वस्तुतः ड्रेकने वडा काम किया, क्योंकि उस वर्ष फिलिप आक्रमण न कर सका। संवत् १६४५ (१५८८ ई०) में आर्मेडा तय्यार हो गया। उसमें १३० जहाज और २५००० मनुष्य थे। अंग्रेज़ोंके पास इतने बडे और इतने अधिक जहाज न थे परन्तु अंग्रेजी जहाज सुदृढ थे और छोटे आकारके होनेसे शीघ्रगामी भी थे।

जुलाईके अन्तमें आर्मेडा इंग्लिश-चेनलमें प्रगट हुआ। स्पेनकी कुछ सेना ड्यूक आव पार्माके आधिपत्यमें फ्लैण्डर्समें इकट्ठी थी। विचार यह था कि आर्मेडा फ्लैण्डर्समें पहुँच

* Armada. † Drake

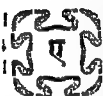
ते ही इस सेनाको लेकर इंग्लैण्डके तटपर उतार देगा । इतनी सेनाके उतरनेपर इंग्लैण्डका बचना असम्भव था। परन्तु अंग्रेजी पोतके स्वामियोंने पहले ही इसका प्रबन्ध कर लिया और आर्मेडाके इंग्लिश-चैनलमें पहुँचते ही युद्ध आरम्भ कर दिया। आर्मेडा लडता-झगडता २२ श्रावण (७ अगस्त) को कैले पहुँचा परन्तु वहाँ भी अग्निवर्षाने चैन न लेने दी। २३ श्रावण (८ अगस्त) को घोर संग्राम हुआ। अंग्रेजी पोत छोटे और हलके थे, स्पेनके बडे और भद्दे। अंग्रेजी जहाज हाथियों-के बीचमेंसे बन्दरोंके समान बहुत तीव्रता और फुर्तीसे उन जहाजोंमें से होकर निकल जाते थे। अंग्रेजोंकी सहायता करना ईश्वरको भी स्वीकार था। अतः उसने इंग्लिश चैनलमें तूफान उठा दिया। वायु अंग्रेजोंके तो पक्षमें थी परन्तु स्पेन-का विरोध करती थी। परिणाम यह हुआ कि आर्मेडा परा-जित हो गया। बहुत से जहाज नष्ट हो गये, कुछ स्काटलैण्ड-की ओर भाग गये। फिलिपने पराजयका सन्देसा सुनकर कहा 'मैंने जहाज इंग्लैण्डका सामना करनेके लिए बनवाये थे, न कि तूफानके विरोधार्थ।'

आर्मेडाके नष्ट होनेपर फिलिपने कई बार इंग्लैण्डपर आक्रमण करनेका यत्न किया परन्तु कभी उसे सफलता न हुई। अंग्रेजोंको कई लाभ हुए। जब आर्मेडाके आनेकी खबर मिली तो इंग्लैण्डके समस्त दल एक हो गये। एलीजबिथ स्वयं घोडेपर सवार होकर टिलबरीके मैदानमें आयी और सेनाको उत्तेजित करने लगी। इससे लोग एकताके लाभोंको भली प्रकार समझ गये। दूसरी बात यह हुई कि अंग्रेज लोग, जो अब तक स्पेनवालोंसे डरते थे, निर्भय हो गये। इसका इंग्लैण्डके व्यापारपर बडा अच्छा प्रभाव पडा।

आर्मेडाके पश्चात् स्पेनकी शक्ति टूट गयी। इग्लैण्ड आक्रमणोंसे बच गया। इसके साथ ही प्रोटेस्टेण्ट धर्मकी विजय हुई। यदि कहीं आर्मेडा विजय पा जाता तो फिर प्रोटेस्टेण्ट लोगोंकी जड यूरोपसे उखड ही जाती।

नवाँ अध्याय।

एलीज़बिथ और देशोन्नति।



लीजबिथने प्रोटेस्टेण्ट धर्म स्वीकार करके पहले तो इग्लैण्डके लिए कुछ आपत्तियाँ उत्पन्न कर दी थीं। परन्तु अन्तमें इसका फल अच्छा निकला। उस समय ससारका व्यापार स्पेन और पुर्तगालवालोंके हाथमें था। कोलम्बसने स्पेनके उपनिवेश अमरीकामें स्थापित कर दिये थे। वास्कोडिगामा पुर्तगालवालोंकी ओरसे भारतवर्षमें आया और यहाँसे व्यापारिक सम्बन्ध उत्पन्न कर गया। पूर्वीय द्वीपसमूहमें इन्हीं लोगोंका डका बजने लगा। अग्रेजोंको इस समय कोई जानता न था, परन्तु एलीजबिथके समयमें इग्लैण्डकी दशा ही बदल गयी।

गुलाब-युद्धके पश्चात् देशमें शान्ति रही, अत यहांके निवासी भी धनाढ्य और बलवान् हो गये। दरिद्र लोगोंको तो इस समय भी जईकी रोटी ही खानेको मिलती थी। इन बेचारोंको गेहूँके दर्शन तक न होते थे। परन्तु इनकी दशा यूरोपके अन्य देशोंके दरिद्रोंसे अच्छी थी। स्पेनके एक पुरुषने मेरी ट्यूडरके समयके विषयमें लिखा है कि 'ये अंग्रेज लोग

घास-फूसके मकानोंमें रहते हैं, परन्तु इनका भोजन राजाओं के समान है।" एलीजबिथके समयमें भी लोगोंकी दशा कुछ सुधर गयी थी। उस समय लोग भूसा [चावलका भूसा] बिछाकर ही सोते थे और लकडीका लट्ठा या भूसेका ही थैला सिरके नीचे सिरहाना बनाकर रख लेते थे। यह एक लोकोक्ति थी कि तकियोंकी आवश्यकता रोगी स्त्रियोंको ही होती है। कुछ दिनोंके पश्चात् नरम गद्दोंकी बारी आयी। भोजनके समय लकडीके बजाय टीनके चमचे प्रयुक्त होने लगे। सलोनी मछलीके स्थानपर बकरीका मांस खाया जाने लगा। इसपर भी बहुतसी चीजोंकी कमी थी। गलियोंमें रोशनी नहीं होती थी। चोर-डाकुओंको पकड़नेके लिए पुलीस न थी। केवल बड़े नगरोंमें रातके लिए चौकीदार थे। मकानोंकी बनावटमें भी बहुत कुछ सुधार हुआ। अब लुटेरों और शत्रुओंका भय जाता रहा, अत खिडकियाँ भी बनने लगीं। परन्तु शीशोंका रिवाज बहुत कम था। सप्तम हेनरीके समयमें जब अर्ल आव नार्थम्बरलैण्ड अपने एक मकानको छोडकर कुछ दिनोंके लिए अन्य स्थानपर गया तो उसने खिडकियोंके शीशे उतरवा कर रख लिए कि कहीं टूट न जायँ। छतोंमें छिद्रोंके स्थानमें उत्तम धुआँकश बनने लगे।

अष्टम हेनरी और छठे एडवर्डके समयमें भेडें बहुत पाली जाने लगी थीं, परन्तु उनकी ऊन अन्य देशोंको भेज दी जाती थी, क्योंकि इंग्लैण्डके लोग ऊनी कपडे नहीं बना सकते थे। एलीजबिथके समयमें इंग्लैण्डके पश्चिम, एसेक्स, मानचेस्टर, हालीफाक्स आदिमें ऊनी कपडे बनने लगे। शैफील्ड-में चाकू उस्तरे अच्छे बनते थे। ससेक्स तथा हेम्पशायरमें जंगलोंकी लकडी लोहा गलानेके काममें आती थी। पत्थरका

कोयला केवल उत्तरमें ही मिलता था और जहाजों द्वारा इङ्गलैण्डके तटस्थ नगरोंमें भेजा जाता था क्योंकि थल द्वारा ले जानेमें अधिक व्यय होता था।

इस कला-कौशलकी वृद्धिने मजदूरोंकी मजदूरीमें भी वृद्धि कर दी और लोगोंको काम बहुत मिलने लगा, परन्तु अब भी सैकड़ोंको रोटी कमाना दुस्तर था अतः एलीज़बिथके समयमें पार्लमेण्टने यह कानून पास कर दिया कि प्रत्येक प्रान्तमें उन दरिद्रोंको, जो काम कर सकते हों परन्तु जिनको काम न मिलता हो, काम दिया जाय। इस प्रकार किसीको यह कहनेका अवसर न रहा कि अगर हम चोरी न करें तो मरा जायं।

एलीजबियके समयमें वस्त्रोंके पहरावेमें भी परिवर्तन हुआ। जो लोग राजदरबारमें जाते आते थे वे रेशम, मखमल आदिके चमकीले और विविध प्रकारके वस्त्र पहिनते थे। यह कहावत थी कि दरबारी अपनी सारी जायदाद पीठपर लादे फिरता है।

कलाकौशलकी उन्नतिके साथ यह भी आवश्यक था कि यह माल दूसरे देशोंमें पहुँचाया जाय। इसलिए व्यापारिक जहाजोंका बनना आरम्भ हुआ। कपडे रँगनेके लिए अन्य देशोंको भेजे जाते थे क्योंकि अंग्रेज रँगना नहीं जानते थे। परन्तु व्यापारमें सबसे अधिक सहायता इस बातसे मिली कि एलीज़बियने सिक्का ठीक कर दिया। अब शिलिङ्ग पेंस इतने हलके न थे जितने उसके पिता या भ्राताके समयमें थे। कलाकौशल और व्यापारकी वृद्धिके लिए आवश्यक हुआ कि दूरस्थ देशोंसे भी सम्बन्ध जोड़ा जाय। केप आव गुडहोप अर्थात् उत्तमाशा अन्तरीपसे होते हुए भारतवर्ष आनेमें देर लगती थी अत

मेरी ट्यूडरके समयमें सर ह्फ विलोबी (Sir Hugh Willoughby) ने उत्तरी ओरसे भारतवर्षकी खोज करना आरम्भ किया। इसका परिणाम यह हुआ कि उसका एक साथी रिचर्ड चांस्लर (Richard Chancellor) श्वेत सागर (ह्वाइट सी) पहुँचा और रूसके साथ व्यापारकी नींव पड गयी। उस समय रूसका आधिपत्य बाल्टिक अथवा कृष्ण सागरके तटोंपर न था।

एलीजबिथके समयमें फ्रोबिशर और डेविसने भारतवर्षकी ही खोजमें उत्तरी अमेरिकाका उत्तरी भाग ढूँढ लिया। फ्रोबिशरके साथी कहते थे कि हडसनकी खाडीके पास सोनेकी खानें हैं, क्योंकि वहाँ मकडियाँ पायी जाती हैं। ये उनके अद्भुत विचार थे कि जहाँ मकडियाँ पायी जायँ वहाँ सोना अवश्य होगा।

स्पेनकी देखादेखी कुछ लोगोंने अमरीकामें अंग्रेजी उपनिवेश बनाने शुरू किये। गिल्बर्ट और सर वाल्टर रैले दोनों अपने अपने जहाज लेकर गये। गिल्बर्टका जहाज तो समुद्रमें डूबकर नष्ट हो गया परन्तु रैलेने अमरीकामें कुमारी महारानीके नामपर वर्जीनिया बसाया। परन्तु उस समय बसने वाले अंग्रेज या तो लौट आये या अमरीकाके प्राचीन निवासियोंने उन्हें मार डाला।

जब इंग्लेण्ड और स्पेनमें अनबन हो गयी तो इस लडाईझगडेसे भी अंग्रेजोंने बहुत कुछ लाभ उठाया। पहले जो अंग्रेजी नाविक तथा व्यापारी अमरीका या पश्चिमी द्वीपसमूहमें गये, उनको स्पेनवालोंने न घुसने दिया, और जो घुस गये उनसे बडा कुव्यवहार किया। स्पेनवाले रोमन कैथोलिक थे और अंग्रेज प्रोटेस्टेण्ट, इसलिए अंग्रेजी नावि-

कोंने ठान ली थी कि चाहे स्पेनवाले चाहें या न चाहें, हम जबरदस्ती अमेरिकासे व्यापार करेंगे। यही नहीं किन्तु जहाँ कहीं भी स्पेनके जहाज या माल पाते अंग्रेज नाविक लूट लिया करते थे। इनमें सबसे प्रसिद्ध फ्रांसिस ड्रेक था। वह पनामा पहुँचा और वहाँसे बहुतसी चाँदी लूट लाया। उसी स्थानपर अमरीकाके एक प्राचीन निवासीने एक वृक्षपर चढ़कर ड्रेकको प्रशांत महासागरके दर्शन कराये। ड्रेकने ईश्वरको धन्यवाद दिया और कहा कि एक दिन मैं प्रशांत सागरमें यात्रा करूँगा। ड्रेक पाँच जहाज लेकर चला। चार तो डूब गये परन्तु ड्रेकका जहाज प्रशान्त महासागर पहुँचा। प्रशान्त महासागरके तटपर ड्रेकको बहुतसा सोना मिला। वहाँसे पृथ्वीके चारों ओर घूमता हुआ उत्तमाशा अन्तरीप होकर ड्रेक इङ्गलैण्ड पहुँचा। स्पेनवालोंने एलीजबिथको कहला भेजा कि ड्रेक लुटेरा है, इसको दण्ड दिया जाय और जो धन लूटकर लाया है वह हमें वापिस दिला दिया जाय। एलीजबिथने ड्रेकका बड़ा सम्मान किया और उसे 'सर' का पद दे दिया। उस समयसे ड्रेक, 'सर फ्रांसिस ड्रेक' कहलाने लगा। आर्मेडाकी विजयमें सर फ्रांसिस ड्रेकका बहुत बड़ा हाथ था।

एलीजबिथका राज्य विद्वानों और साहित्य-सेवियोंके लिए भी बहुत प्रसिद्ध है। महाकवि स्पेंसरका महाकाव्य फेरी क्वीन (Faerie Queene) काव्य तथा सदाचारका उच्च ग्रन्थ है जिसमें अलङ्कार रूपसे धर्मके कुछ लक्षणोंकी व्याख्या की गयी है। मार्लो, जोनसन और शेक्सपियर जैसे प्रसिद्ध नाट्यशास्त्रवेत्ता भी एलीजबिथके ही समयमें हुए थे। बेकन, सिडनी, केम्डिन आदि अनेक विद्वान् इसी युगसे सम्बन्ध रखते हैं।

संवत् १६६० (१६०३ ई०) में एलीजबिथका देहान्त हो गया। इसके ४५ वर्षके राज्यमें देशकी हर प्रकारकी उन्नति हुई और इसीके समयसे इङ्गलैण्डकी गणना सभ्य देशोंमें होने लगी। भारतवर्षसे इङ्गलैण्डका सम्बन्ध एलीजबिथके समयसे ही हुआ क्योंकि ईस्ट इण्डिया कम्पनी संवत् १६६० (१६०३ ई०) में ही स्थापित हुई थी।

दसवाँ अध्याय।

टूडर युग और राज्य-संस्था।

टूडर युगकी सबसे विलक्षण बात यह थी कि समस्त टूडर राजा पार्लमेंएट होते हुए भी प्राय निरङ्कुश ही रहे। इन्होंने देशके आन्तरिक अथवा बाह्य प्रबन्धमें मनमाना कार्य किया। पार्लमेंएटकी अनुमतिके विना ही जिस देशसे चाहा लडाई छेड दी, जिस मन्त्रीको चाहा रखा और जिसको चाहा निकाल बाहर किया, जिस धर्मको चाहा स्वीकार किया और प्रजासे कराया और जब किसीने विद्रोह किया तो उसे शस्त्रों द्वारा कुचल डाला। यद्यपि टूडर वंशीय राजा सर्वथा निरङ्कुश थे, फिर भी प्रजा इनकी सहायता करती रही। यदि ऐसा न होता तो टूडर राजा कभी राज्य न कर पाते, क्योंकि इनके पास न रुपया था और न सेना। कभी कभी पार्लमेंएटकी बैठक भी होती ही थी और बडे बडे परिवर्त्तन उससे पास ही करा लिये जाते थे। पोपका आधिपत्य, मठोंका

दमन तथा दरिद्रोंके लिए नियम, यह सब कुछ पार्लमेंटकी स्वीकृतिसे ही हुआ था।

यह सच है कि एलीज़बिथ पार्लमेण्टके उन सभ्योंसे बुरा बर्ताव करती थी जो सभामें उसकी इच्छाका विरोध करते थे और कभी कभी उनको कैद भी कर देती थी, तथापि पार्लमेण्टका सर्वथा अभाव न था। करसम्बन्धी नियम इसीके हाथमें थे। तीन चार वर्षमें एक बार तो पार्लमेण्टका अधिवेशन हो ही जाता था। हाँ, कभी कभी एलीजबिथ पार्लमेण्टकी बात सुननेको वाध्य भी होती थी। इसका एक उदाहरण यह है। उसने अपने मित्रोंको विशेष वस्तु बेचनेकी आज्ञा दे रखी थी अर्थात् उनके सिवाय और कोई उस वस्तुको बेचने न पाता था। इस प्रकार उसके मित्र उस वस्तुको बहुत तेज बेचते थे। पार्लमेण्टने इसके विरुद्ध आवाज उठायी और एलीजबिथको यह ठेका वापिस लेना पड़ा।

परन्तु इस समयकी पार्लमेण्ट और ट्यूडर युगकी पार्लमेण्टमें आकाश पातालका भेद था। इन चार सौ वर्षोंमें तो इंग्लैण्डकी पार्लमेण्ट बहुत स्वतन्त्र हो गयी है। परन्तु यह स्वतंत्रता सहज ही प्राप्त नहीं हुई। इसके लिए बहुतोंको कैदमें सड़ना पड़ा, बहुतोंके सिर काटे गये और सहस्रोंको रक्त बहाना पड़ा। कितने देशोद्धारक अंग्रेज वीरोंने इस स्वतंत्रता देवीके मन्दिरमें अपनेको बलिदान किया, इसका वृत्तान्त उत्तरार्द्धमें दिया जायगा।

उत्तरार्द्ध

संवत् १६६० से १९८४ तक

प्रथम खराड

पार्लमेराट और आधिपत्यके लिए कलह ।

पहला अध्याय ।

प्रथम जेम्स ।

संवत् १६६०--१६८२ [१६०३–१६२५ ई०]



ग्लैंएडके वर्तमान निवासी पाँच भिन्न भिन्न जातियोंका मिश्रण हैं, अर्थात् कैल्ट, रोमन, एङ्गल, डेन और नार्मन। ये जातियाँ भिन्न भिन्न समयमें आयीं और प्रत्येक जातिने देशकी नैतिक, सामाजिक, तथा धार्मिक अवस्थामें बहुत कुछ परिवर्तन किया। इनका विस्तृत वर्णन हम पूर्वार्द्धमें कर चुके हैं।

एङ्गल या अंग्रेज स्वतन्त्र थे। इनका प्रबन्ध सभाओं द्वारा बहुपक्षानुसार हुआ करता था। राजाके अधिकार परिमित थे। स्थानीय शासक जो चाहते थे सो करते थे। अत देश कई भागोंमें विभक्त था और विद्याकी उन्नति न थी।

नार्मन लोगोंने आकर केन्द्रीय शक्तिकी वृद्धि की। समस्त भाग एक राजाके अधीन हो गये। आन्तरिक तथा वाह्य प्रबन्धोंमें सुविधा हो गयी। राज्यका संघटन हो गया।

द्वितीय हेनरीके समय तक समस्त इंग्लैण्ड एक हो गया था और आयर्लैण्डका कुछ भाग भी इंग्लैण्ड-नरेशके शासनमें आ चुका था। शनैः शनैः उसके उत्तराधिकारियोंके समयमें आयर्लैण्डका अधिक भाग इंग्लैण्ड राज्यमें सम्मिलित हो गया। परन्तु आयर्लैण्डवाले रोमन कैथोलिक धर्मके थे और एलीजबिथके समयमें इंग्लैण्ड प्रोटेस्टेण्ट हो चुका था, अतः आयर्लैण्डवालोंको इनसे घृणा थी। इसीसे वहाँ स्वभावत अनेक विद्रोह हुआ करते थे। जब प्रथम जेम्स गद्दीपर बैठा तो उसने आयर्लैंडके उत्तर पूर्वी भाग अर्थात् पूर्वीय अलस्टर प्रान्तसे आयर्लैंडके लोगोंको निकाल कर वहाँ इंग्लैण्ड और स्काटलैण्डके प्रोटेस्टेण्टोंको बसा दिया। इस प्रकार समस्त अलस्टर प्रांत प्रत्येक अंशमें इंग्लैंडके अधीन हो गया।

प्रथम एडवर्डके समयमें वेल्सका देश इंग्लैंडमें सम्मिलित ही हो चुका था। सप्तम हेनरी और उसके वंशज जो ट्यूडर कहलाते हैं वेल्सके ही निवासी थे।

अब रहा स्काटलैंड। इसपर बहुत दिनोंसे इंग्लैंडका दाँत था और सैकड़ों वर्षसे स्काट और अंग्रेज एक दूसरेके शत्रु चले आते थे। यह देश भी प्रथम जेम्सके इंग्लैंड नरेश होते ही इंग्लैंडमें सम्मिलित हो गया। जेम्स स्काटलैंडके स्टुअर्ट वंशका था और सप्तम हेनरीकी पुत्री मारग्रेटकी पोतीका लड़का था। अत उसके शरीरमें कुछ कुछ ट्यूडर वंशका भी रक्त था। उसकी माता स्काट रानी मेरी संवत् १६२५ (१५६७ ई०) में राजसिंहासनसे उतार दी गयी थी और उसके

स्थानमें जेम्स राजा बनाया गया था। चूँकि स्काटलेंडमें पाँच जेम्स राज्य कर चुके थे अत इसको छठाँ जेम्स कहते थे। परन्तु इग्लैण्डकी गद्दीपर अबतक जेम्स नामका कोई राजा न हुआ था, इसलिए इग्लैण्डके इतिहासमें यह प्रथम जेम्सके नामसे प्रसिद्ध है। जेम्स सवत् १६२४ (१५६७ ई०) में स्काटलैण्डका और १६६० (१६०३) में इंग्लैण्डका राजा हुआ। परतु पार्लमेण्ट दोनों देशोंकी अलग अलग ही रही। यह हाल सौ वर्ष तक रहा और सवत् १७६४ (१७०७ ई०) में दोनों पार्लमेण्टें सयुक्त हो गयीं।

जेम्स इग्लैण्ड और स्काटलैण्ड-नरेश कहलानेके बजाय अपनेको ग्रेट ब्रिटनका राजा कहा करता था परन्तु उसके राज्यका विस्तार इससे भी अधिक था। अमरीकासे कुछ कुछ सम्बन्ध तो एलीज़बियके समयमें ही हो चुका था और ड्रेक, रेले आदि प्रसिद्ध नाविक वहाँके सोने चाँदीसे अपने देशको लाभ पहुँचा चुके थे। जेम्सके समय अर्थात् संवत् १६६४ [१६०७ ई०] में अग्रेजोंने एलीजबिथके नामपर उत्तरी अमेरिकामें वर्जीनिया नामका एक उपनिवेश बसाया। प्रोटेस्टेण्टोंका एक विशेष सम्प्रदाय प्योरिटनके नामसे प्रसिद्ध था। जेम्सने उस सम्प्रदायके अनुयायियोंको इच्छानुसार उपासना करनेकी आज्ञा न दी। उन्होंने धर्म छोड़नेकी अपेक्षा देश छोड़ना अच्छा समझा और वे लोग पहले तो हालैण्ड और फिर सवत् १६७७ (१६२० ई०) में अमरीका चले गये। उनके हृदय धर्मभक्ति तथा देशभक्ति दोनोंसे पूरित थे अत उत्तरी अमरीकामें उन्होंने न्यू इग्लैण्ड नामका एक और उपनिवेश बसाया। थोड़े ही दिनोंमें इन लोगोंके परिश्रमसे वर्जीनिया और न्यू इग्लैण्ड दोनों समृद्ध हो गये और

अन्य उपनिवेश भी शनै शनै वसते गये। ये सब मिलकर आजकल उत्तरी अमरीकाका प्रसिद्ध संयुक्तराज्य कहलाते हैं। संवत् १६५७ (१६०० ई०) में ईस्ट इण्डिया कम्पनीके वनने से भारतवर्षमें अंग्रेजोंके पैर जमने लगे और इंग्लैण्डका बहुत छोटा सा राज्य ग्रेटब्रिटन या ग्रेटर ब्रिटनका बहुत बड़ा साम्राज्य हो गया जैसा कि आज हम देखते हैं।

राज्य प्रबन्धमें भाग लेनेका प्रयत्न तो प्रजा तृतीय हेनरी के समयमें ही कर चुकी थी। साइमनके समयकी प्रतिनिधि-सभा इसी प्रयत्नका फल थी परन्तु प्रथम एडवर्डकी दूरदर्शिताने सोनेपर सुहागेका काम किया और प्रतिनिधिसभाका नियमानुसार बीज बो दिया गया। ट्यूडर-वंशी शासक निरकुश रहे परन्तु पार्लमेण्टके अस्तित्वमें बाधा न हुई। एलीजबिथ आदि शासकोंने अपनी बुद्धिमत्तासे, पार्लमेण्ट रहते हुए भी, असीम शक्तिसे काम किया।

परन्तु इन सब बातोंके लिए बुद्धिकी आवश्यकता थी। प्रथम जेम्समें यह गुण अति न्यून था। यों तो वह विद्वान् था और कई ग्रन्थ भी रच चुका था, परन्तु अभिमान, आलस्य तथा कायरताने उसकी विद्याको निष्फल कर रखा था। लोग उसे "ईसाई दुनियाँका सबसे बड़ा विद्वान् मूर्ख" * कहा करते थे। वह केवल इतना जानता था कि मैं राजा हूँ। ईश्वरने मुझे राजा बनाया है, अत. मैं जो चाहूँ सो कर सकता हूँ। उसे प्रजाकी अवस्था, इच्छा, तथा आवश्यकताकी कुछ परवाह न थी। इसलिए पार्लमेण्ट और उसमें सदा झगड़े हुआ करते थे। ये झगड़े उसके उत्तराधिकारियोंमें भी रहे। वस्तुत समस्त स्टुअर्टवंशी इसी बातपर डटे रहे कि हम

* The most learned fool of the christendom

ईश्वरकी ओरसे राजा हे और जो चाहें सो कर सकते हैं। प्रजा कहती थी कि तुमको हमने राजा बनाया है अत तुम्हें हमारी इच्छा और आवश्यकतानुसार राज्य करना पडेगा। ये झगडे इतने बढे कि एक राजाको अपना सिर देना पडा, दूसरेको राज्य, और जानके लाले तो सभीके पडे रहे।

जेम्सको इस अनधिकार चेष्टाने उसे बडा अप्रिय बना रखा था। वह इसे ईश्वर प्रदत्त अधिकार (डिव्हाइन राइट) कहा करता था। उस समय बहुतसे लोग ईश्वर-प्रदत्त अधिकारपर विश्वास रखते थे अर्थात् वे मानते थे कि राजाओंको राज्य करनेका अधिकार ईश्वरने ही दिया है और प्रजाका कोई अधिकार नहीं कि राजाओंसे किसी बातके लिए उत्तर माँग सके अथवा नियमोल्लङ्घनके समय भी उनका विरोध कर सके। यद्यपि इतनी बात तो सभीको मान्य थी कि राजाको बिना पार्लमेण्टकी सम्मतिके कोई राजनियम न बनाने चाहिये और न कर लगाना चाहिये, परन्तु प्रश्न यह था कि यदि राजा किसी बातको न माने तो क्या पार्लमेण्टका यह भी अधिकार है कि राजाको दण्ड दे। इस विषयपर दोनों ओरसे गवेषणायुक्त पुस्तकें भी लिखी गयीं। और भी बहुत प्रकारका आन्दोलन हुआ परन्तु कुछ बात निश्चित न हुई और राजासे लोग रूठते ही चले गये।

एलीज़बिथ बहुत कम व्यय करती थी परन्तु जेम्स इतना बहुव्ययी था कि सदा उसकी जेब खाली ही रहा करती थी और वह पार्लमेण्टसे नये नये कर पास करनेके लिए ही कहा करता था। परन्तु उसमें इतनी बुद्धि नहीं थी कि जिस पार्लमेण्टसे रुपया लेना है उसे प्रसन्न भी रखे। अत पार्लमेण्ट उसे बहुत कम रुपया देती थी।

धार्मिक बातोंमें वह बहुत कुछ अष्टम हेनरी और एलीज़बिथके समान था। अपना आधिपत्य स्थिर रखनेके लिए वह चाहता था कि सब लोग इङ्गलिश चर्चके अधीन रहें अर्थात् धार्मिक विषयोंमें राजाके आधिपत्यको स्वीकार करें। जो लोग इसके विरुद्ध थे उनको बहुत कष्ट दिया जाता था। इनमें सबसे अधिक विरोधी प्योरिटन लोग थे जो राजाके आधिपत्यको भी पोपके आधिपत्यका रूपान्तर समझते थे। वे चाहते थे कि धार्मिक विषयोंमें हम सर्वथा स्वतन्त्र रहने दिये जायें। संवत् १६६० (१६०३ ई०) में जेम्स राजा हुआ तो उन लोगोंने सहस्र पुरुषोंके हस्ताक्षर कराके एक प्रार्थनापत्र दिया। राजाने उनकी प्रार्थनापर विचार करनेके लिए हैम्पटन कोर्टमें संवत् १६६१ (१६०४ ई०) में एक सभा की। राजा पहलेसे ही इनके विरुद्ध था। स्काटलैण्डमें उसने बहुत प्रयत्न किया था कि स्काटचर्च भी इङ्गलिश-चर्चके राजाके अधीन हो जाय। यहाँ भी यही हुआ। सभामें उसने लाट पादरियोंका साथ दिया और प्योरिटन लोगोंकी प्रार्थना अस्वीकृत हुई। इस सभाका केवल एक फल निकला अर्थात् अंजीलका अंग्रेजीमें नया अनुवाद हो गया जो इस समयतक प्रचलित है।

रोमन कैथोलिकोंसे भी उसे कुछ सहानुभूति न थी। यद्यपि उसकी माता स्काट-रानी मेरी कैथोलिक थी परन्तु वह कभी कैथोलिकोंको प्रसन्न न कर सकी। पहले उसने चाहा कि एलीजबिथके समयके कैथोलिकोंके विरुद्ध पास किये हुए नियमोंमेंसे कुछको शिथिल कर दे परन्तु कैथोलिक लोग इतनेसे सन्तुष्ट न थे। अन्तमें उन्होंने गुप्त रीतिसे राजाको मार डालनेकी चेष्टा की। संवत् १६६२ की १६ कार्त्तिक (५ नवम्बर १६०५ ई०) के दिन राजाका पार्लमेण्टमें आना निश्चित

हुआ था। गाई फौक्स * और उसके साथियोंने पार्लमेण्ट भवन के नीचेकी एक दूकान किरायेपर ली और उसमें वारूद भरे दी जिससे सभा होनेके समय उसमें आग लगाकर सभा-भवन उड़ा दिया जाय। राजाके मन्त्रीको किसी प्रकार यह बात मालूम हो गयी। विद्रोही पकड़े गये और उनको प्राण-दण्ड दिया गया। इसको बारूदी षड्यन्त्र (गनपाऊडर प्लाट) कहते हैं। कैथोलिकोंके इस यत्नसे प्रोटेस्टेण्ट लोग बहुत चिढ़ गये और उनके विरुद्ध बहुत कड़े नियम पास किये गये।

जेम्सकी इच्छाशक्ति प्रबल न थी। वह जिनपर कृपा करता था उन्हींकी अनुमतिसे कार्य्य करता था। संवत् १६६५ (१६०८ ई०) में उसे रुपयेकी बड़ी आवश्यकता थी। इस समय उसका मन्त्री रॉबर्ट सेसिल अर्ल आव सारसबरी था। सारसबरीके कहनेसे राजाने व्यापारियोंके उस मालपर कर लगा दिया जो देशसे बाहर जाता या अन्य देशोंसे भीतर आया करता था। यह कर अनुचित था क्योंकि इसमें पार्लमेण्टकी सम्मति नहीं ली गयी थी। परन्तु न्यायालयोंसे यह व्यवस्था दे दी गयी कि राजाको इस करके लगानेका अधिकार है। जब संवत् १६६७ (१६१० ई०) में पार्लमेण्ट हुई तो उसने इस करको अनुचित ठहराया। इसपर राजाने "बड़ा समझौता" † नामक पत्र पार्लमेण्टसे स्वीकृत कराना चाहा। इसके अनुसार राजाके कुछ अधिकार कम हो जाते थे परन्तु उसे कुछ धन प्राप्त हो सकता था। पार्लमेण्टवाले इसको स्वीकार कर लेते परन्तु अन्त समयमें राजा और पार्लमेण्टमें झगड़ा हो गया और संवत् १६६८ (१६११ ई०) में उसने पार्लमेण्टको तोड़ दिया।

* Guy Fawkes † Great Contract

संवत् १६७१ [१६१४ ई०] में जेम्सने नयी पार्लमेण्ट निर्वाचित करायी। परन्तु उस पार्लमेण्टने कहा कि राजा विना पार्लमेण्टकी स्वीकृतिके कर लगानेका अधिकार त्याग दे और जिन प्योरिटन पादरियोंकी जीविका उसने हर ली है, उन्हें फिर वह जीविका लौटा दे। जेम्सको यह बुरा लगा और उसने इस पार्लमेण्टको भी तोड़ दिया।

राबर्ट कारपर भी जेम्सकी बड़ी कृपा थी। उसने उसे अर्ल आव सोमर्सेट बना रखा था। सोमर्सेटपर एक समय विष देनेका अभियोग चलाया गया और प्राणदण्ड भी निश्चित हुआ, परन्तु जेम्सने उसे क्षमा कर दिया।

जेम्सका एक और कृपापात्र जार्ज विलियर्स था जिसको उसने लार्ड बकिंघम बना दिया था। जार्ज विलियर्स पहले बड़ा दरिद्र था। दर्बारमें आनेके लिए उसके पास पोशाक तक न थी। उसने ऋण लेकर वस्त्र बनवाये थे परन्तु जेम्सकी कृपासे वह इङ्गलैण्डका सबसे धनाढ्य व्यक्ति हो गया। धनके आते ही विलियर्समें वे अवगुण भी आ गये जिनका उसमें पहले नामतक न था।

जेम्सको इस समय भी रुपयेकी आवश्यकता थी। अब उसने अपने बड़े लड़के चार्ल्सका विवाह स्पेन नरेशकी कन्या इन्फेण्टा * से करना चाहा। स्पेनका राजा इस सम्बन्धके साथ धन भी देना चाहता था क्योंकि वह समझता था कि मेरी पुत्री किसी दिन इङ्गलैण्डकी रानी होकर पोपका आधिपत्य जमानेमें सहायता करेगी। एलीजबिथके समयसे ही अंग्रेज़ लोग स्पेनवालोंसे घृणा करते थे। जब उनको यह मालूम हुआ कि जेम्स स्पेनसे पुत्र वधू लाना चाहता है तो वे बिगड़ उठे।

* स्पेन नरेशकी कन्या 'इन्फेण्टा (Infanta) कहलाती है।

स्पेनसे घृणा करनेवालोंमें सबसे बड़ा सर वाल्टर रैले था। जेम्सने आरम्भमें ही उसे कारागारमें डाल रखा था। अब वह इस शर्तपर छोड़ दिया गया कि बिना स्पेनवालोंसे लड़े हुए वह अमेरिकासे सोना चांदी ला दे। रैलेसे स्पेन-वालोंका वहां झगड़ा हो गया। जब रैले वापस आया तो उसे फाँसी दे दी गयी।

स्पेनसे विवाहकी बातचीत होते होते बहुत दिन व्यतीत हो गये और कुछ निश्चित न हुआ। राजकुमार चार्ल्स बहुत उत्सुक था। उसने समझा कि यदि मैं स्पेन जाऊँ तो कुछ काम बन जाय। विलियर्स और चार्ल्स दोनों गये परन्तु इन्फेण्टा राजी न हुई और चार्ल्स अपनासा मुह लिये लौट आया। यहाँ आकर चार्ल्सने अपने पितासे कहा कि स्पेनसे युद्ध छेड़ देना चाहिये। परन्तु संवत् १६८२ (१६२५ ई०) में जेम्सकी मृत्यु हो गयी और उसके पश्चात् उसका बेटा चार्ल्स प्रथम चार्ल्सके नामसे गद्दीपर बैठा।

प्रथम जेम्सके समयमें यूरोपमें एक बड़ा युद्ध हुआ जिसे तीस-बरसका युद्ध (थर्टी-ईयर्स वार) कहते हैं। हम एलीज-बिथके वर्णनमें लिख आये हैं कि यूरोपमें प्रोटेस्टेण्ट और रोमन कैथोलिक, दो बड़े बड़े दल हो गये थे। उत्तरी देश प्रोटेस्टेण्ट थे और दक्षिणी देश पोपके अधीन थे। जर्मनीके प्रान्त भी दो भागोंमें विभक्त थे, उत्तरी प्रोटेस्टेण्ट और दक्षिणी कैथोलिक। जेम्स दोनोंसे मित्रता रखना चाहता था। अतः उसने अपनी कन्या एलीजबिथको संवत् १६७० (१६१३ ई०) में राइन नदीके तटस्थ पैलेटीनेट * के अधिपति फ्रेड्रिकके साथ व्याह दिया। फ्रेड्रिक प्रोटेस्टेण्ट दलका नेता था। उधर

* Palatinate

उसने अपने लड़के चार्ल्सका विवाह कैथोलिक स्पेन-नरेशकी कन्यासे करना चाहा। जर्मनीका एक प्रान्त बोहेमिया है। वहांके लोग भी प्रोटेस्टेएट थे। संवत् १६७४ (१६१७ ई०) में फर्डीनएड वहांका राजा हुआ। वह कट्टर रोमन कैथोलिक था। वह गद्दीपर बैठते ही प्रजाको सताने लगा। इसलिए संवत् १६७५ (१६१८ ई०) में बोहेमियावाले बिगड़ उठे और उन्होंने फर्डीनएडको गद्दीसे उतार कर फ्रेड्रिकको बैठा दिया।

इसपर यूरोपमें लड़ाई छिड़ गयी। स्पेनने फर्डीनएडका साथ दिया और संवत् १६७७ (१६२० ई०) में फ्रेड्रिकको बोहेमिया तथा पैलेटीनेट दोनोंसे निकाल बाहर किया। फ्रेड्रिकने अपने श्वशुर जेम्ससे सहायता मांगी। जेम्सने बहुत यत्न किया कि स्पेन फ्रेड्रिकको उसका पुराना राज्य पैलेटीनेट ही दिलानेपर राजी हो जाय। परन्तु सब जानते थे कि जेम्सकी पीठपर कोई देश नहीं है। निर्बलकी सुनता ही कौन है? इंग्लैएड और स्काटलैएडके प्रोटेस्टेएट फ्रेड्रिककी सहायता करनेपर तुले हुए थे, अतः उसने संवत् १६७८ (१६२१ ई०) में एक और पार्लमेएटका निर्वाचन कराया। पार्लमेएटने शुरूसे ही राजमन्त्रियोंपर आक्षेप करना आरम्भ किया। लार्ड बेकन न केवल पदच्युत ही कर दिया गया बल्कि उसे बहुत कुछ जुर्माना देना पड़ा। पार्लमेएटकी यह बड़ी भारी विजय थी कि राजाकी इच्छाके विरुद्ध वह उसके मंत्रियोंको दण्ड दे सकी। अब पार्लमेएटने चाहा कि स्पेनसे लड़ाई छेड़ दी जाय। यह बात जेम्सकी इच्छाके सर्वथा विरुद्ध थी। अन्तको जेम्सने पार्लमेएट तोड़ ही दी और कई विरोधी सभासदोंको कारागारमें डाल दिया। जेम्सके इस कार्यके कारण बहुत लोग उसके विरुद्ध हो गये।

जब राजकुमार चार्ल्सको स्पेनमें विवाह सम्बन्धी सफलता न हुई तो जेम्सने सवत् १६८१ में फिर पार्लमेण्टका निर्वाचन कराया। इस समय जेम्स बहुत वृद्ध और निर्बल था। उसने पार्लमेण्टको स्वतन्त्र कर दिया कि अन्य देशोंसे जिस प्रकार वह चाहे व्यवहार रखे। अब तक अन्य देशीय विषयोंमें राजा जो चाहता था वही करता था, पार्लमेण्टको कुछ भी अधिकार न था। सवत् १६८१ (१६२४ ई०) से तीस बरसके युद्धके झगडेने यह अधिकार भी पार्लमेण्टको दिलवा दिया।

दूसरा अध्याय।

चार्ल्सका शासन।



म्सके पश्चात् उसका ज्येष्ठ पुत्र चार्ल्स सवत् १६८२ (१६२५ ई०) में इंग्लैण्डकी गद्दीपर बैठा। यह धर्मात्मा, दयालु तथा वीर था परन्तु जो गुण इंग्लैण्डके राजाके लिए आवश्यक थे उसमें उनमेंसे एक भी न था। हम पूर्व अध्यायमें देख चुके हैं कि उसके पिता जेम्सने हठ करके अपने आपको झंझटमें डाल रखा था, परन्तु चार्ल्स जेम्ससे बढा चढ़ा था। उसको ईश्वर-प्रदत्तअधिकारकी धुन थी। इसके अतिरिक्त उसमें इच्छाशक्ति बहुत ही कम थी। स्वय तो कुछ सोच विचार ही न सकता था, जिसका मस्तिष्क प्रबल देखता उसीके अधीन हो जाता। बकिंघमका ड्यूक विलियर्स जेम्सके समयसे ही चार्ल्सपर अपना प्रभाव डालता था। वही इसको स्पेन ले गया था।

चार्ल्सके राजा होनेपर तो समस्त राजनीति ही बकिंघमके हाथमें आ गयी। साढ़े तीन वर्षतक बकिंघम ही वास्तविक राजा रहा और उसीके कारण पार्लमेण्ट और चार्ल्सका वैमनस्य वृद्धिको प्राप्त होता रहा।

जब चार्ल्सको स्पेनसे विवाह-सम्बन्ध जोडनेमें विफलता हुई तो राजा होते ही उसने फ्रांस-नरेश तेरहवें लुईकी बहिन हेनरीटा मेरियासे* विवाह कर लिया। एक कैथोलिक राजकुमारीको अपने देशकी गद्दीपर देखकर अंग्रेज प्रोटेस्टेण्टोंके कान खडे हो गये। वे पहलेसे ही चार्ल्सको ताड रहे थे। जब वह इन्फेण्टासे विवाह करनेके लिए रोमन कैथोलिक लोगोंसे सहानुभूति प्रदर्शित करनेको तैयार था तो अब रोमन कैथोलिक भार्याके होते हुए उसे अपने धार्मिक विचार बदल देना कुछ भी मुश्किल न था।

इसलिए जब संवत् १६८२ (१६२५ ई०) में पार्लमेण्टकी बैठक हुई तो उसने चार्ल्सको शुरूसे ही दबानेकी ठान ली। उसने आक्षेप किया कि राजाकी ओरसे रोमन कैथोलिक लोगोंके साथ सहानुभूति प्रदर्शित की जाती है और अंग्रेज पादरियोंसे रुपया देकर कैथोलिक धर्मकी पुस्तकें लिखायी जाती हैं। जब चार्ल्सने इन आक्षेपोंपर ध्यान न दिया तो पार्लमेण्टने "टनेज और पौंडेज" (Tonnage and Pondage) नामक कर, जो राजाके नाम आयु पर्य्यन्तके लिए आरम्भमें ही पास करा दिया जाता था, केवल साल भरके ही लिए पास किया। यह कर विदेशी मालपर लगाया जाता था और इसकी आय राजाके निजी कामोंमें खर्च होती थी। राजा इस बातसे क्रुद्ध हो गया और उसने पार्लमेण्ट तोड दी।

* Heuretta Maria

अब चार्ल्स और बकिंघमने सोचा कि किसी प्रकार प्रजाको सन्तुष्ट करना चाहिये। अंग्रेज लोग स्पेनवालोंसे घृणा करते ही थे। इस समय फ्रांस नरेश भी स्पेनसे युद्ध करना चाहता था। अत चार्ल्सने भी स्पेनसे युद्ध छेड दिया और बहुतसा धन कर्ज लेकर बहुत बडा बेडा तैयार किया। विचार यह था कि केडिजपर आक्रमण किया जाय और स्पेनके खजानेके जहाज लूट लिये जायें। परन्तु इसमें सफलता न हुई और प्रजा सन्तुष्ट होनेके स्थानमें अधिक क्रुद्ध हो गयी। इससे भी बुरी बात यह हुई कि चार्ल्सने जो पोत फ्रांस-नरेशको उधार दिये थे उन्होंसे उसने फ्रेंच प्रोटेस्टेण्टों-का दमन करना आरम्भ किया। प्रोटेस्टेण्ट इग्लैंण्डके पोतोंसे प्रोटेस्टेण्ट धर्मके अनुयायियोंका ही दमन किया जाना अंग्रे-जोंको सर्वथा असह्य था।

अत जब सवत् १६८३ (१६२६ ई०) के आरम्भमें पार्ल-मेण्ट बैठी तो उसने पहलेसे भी अधिक झगडा उठाया और उन सब कारणोंकी जाँच होने लगी जिनके कारण इग्लैण्डके राज्यमें इतनी गडबड मची हुई थी। सारा दोष बकिंघमके सिर मढा गया।

चार्ल्सको बडा क्रोध आया और उसने सर जोन इलियट्ट नामक पार्लमेण्टके प्रसिद्ध सभ्यको कैद कर लिया। परन्तु जब उसने देखा कि पार्लमेण्टमें और भी तनातनी हो गयी और समस्त प्रजा उसका विरोध करने लगी तो उसने इलि-यटको छोड दिया। बकिंघमके ऊपर हाउस आव लार्डसमें *

* पार्लमेण्टके दो भाग हैं, एक हाउस आव लार्ड्स (House of Lords) जिसमें उच्चवंशीय जमींदार तथा लाटपादरी हैं, दूसरा हाउस आव कामन्स (House of Commons) जिसमें प्रजाके निर्वाचित सभ्य हैं।

अभियोग चलाया गया था। हाऊस आव लार्ड्स बकिंघमसे उसी दिनसे जल रहा था जबसे उसका सभ्य अर्ल आव अरुण्डेल * कैद किया गया था। अतः बकिंघमके बचनेकी कोई आशा न रही। चार्ल्स यह न चाहता था, अतः उसने पार्लमेण्ट तोड दी। इस प्रकार चार्ल्स और प्रजाके प्रतिनिधियोंसे दो बार झगडा हो चुका। अब चार्ल्सने निश्चय कर लिया कि फिर कभी पार्लमेण्ट निर्वाचित न कराऊगा।

परन्तु चार्ल्सको रुपयेकी आवश्यकता थी। फ्रांसवालोंसे लडाई हो रही थी। पार्लमेण्ट रुपया देनेको राजी न थी, रुपया आता तो कहाँसे आता? अब बकिंघम और राजाने दो उपाय सोचे। बहुत प्राचीन समयमें राजाको अधिकार था कि लोगोंको सेनामें सम्मिलित होनेके लिए विवश करे और उसका व्यय साधारण पुरुषोंसे दिलावे अर्थात् वे सैनिक तो राजाके हों परन्तु उनको भोजन, स्थान, आदि साधारण पुरुष अपनी निजी आयसे दें। यह प्रणाली बहुत दिनोंसे बन्द थी। चार्ल्सने इस गडबडके समयमें इस पुराने अधिकारको निकाला। इसके अतिरिक्त जबर्दस्ती ऋण देनेके लिए लोगोंको बाध्य किया। सीधे-सादे मनुष्योंने तो धन दे दिया किन्तु कुछ वीर पुरुष ऐसे भी थे जो जातीय स्वतन्त्रताको अपनी स्वतन्त्रताकी अपेक्षा अधिक प्रिय समझते थे। जार्ज इलियट इनमेंसे एक था। वह कहता था कि बिना पार्लमेण्टकी इच्छाके राजाको कोई कर लगाने या धन लेनेका अधिकार ही नहीं है। इलियटके साथी और भी थे। इन सबपर अभियोग चलाया गया और सब क़ैद कर लिये गये। परन्तु ये अपनी बातसे न हटे। बकिंघमने एक पोत फ्रांसके प्रोटेस्टेण्टोंकी सहायताके लिए भेजा परन्तु

* Earl of Arundel

सफलता फिर भी न हुई। जब राजाके पास कौडी न रही तो संवत् १६८५ (१६२८ ई०) में उसने तीसरी वार पार्लमेण्टका निर्वाचन किया और जार्ज इलियट आदिको मुक्त कर दिया।

तीसरा अध्याय।

अधिकारपत्र और पार्लमेण्टसे लड़ाई।

संवत् १६८४—१६६१ (१६२८–१६३४ ई०)

संवत् १६८४ के फाल्गुन (मार्च १६२८ ई०) में तीसरी पार्लमेण्टकी बैठक हुई। चार्ल्स दो पार्लमेण्टें तोड चुका था, विना नियमके कई लोग कैद किये जा चुके थे। जज वही फैसला देते थे जो राजा चाहता था, अत समस्त प्रजा जान गयी कि अब किसीका धन तथा जीवन सुरक्षित नहीं है। इसीसे पार्लमेण्टने आते ही पहले बुराइयोंकी जडपर कुल्हाडा मारा। यद्यपि ये लोग बकिंघमसे बहुत अप्रसन्न थे परन्तु इस समय इन्होंने बकिंघम से कुछ न कहा और एक अधिकार पत्र पेश कर दिया। इसकी धारायें ये थीं —

(१) राजाको अधिकार नहीं है कि विना पार्लमेण्टकी स्वीकृतिके किसीपर कर लगावे या किसीको मदद देनेके लिए वाध्य करे।

(२) कोई व्यक्ति नियमानुसार अभियोग चलाये विना पकडा या कैद न किया जाय।

(३) कोई मनुष्य विना अपनी इच्छाके नैनिकोंका व्यय देनेके लिए वाध्य न किया जाय।

(४) सेना सम्बन्धी नियमोंका पालन करनेके लिए देश -वाले विवश न किये जायँ।

पहले तो राजाने आनाकानी की परन्तु अन्तमें वह मान गया। प्रणालीके अनुसार उसने अधिकार पत्रपर "यथेष्ट न्याय होना चाहिये" * लिखकर हस्ताक्षर कर दिये और सवत् १६८५ (सन् १६२८ ई०) से अधिकारपत्र राजनियमोंमें -सम्मिलित हो गया। अब पार्लमेएट सन्तुष्ट हो गयी और उसने राजाके लिए बहुत सा धन स्वीकार कर लिया। परन्तु झगडे यथापूर्व चलते रहे।

पार्लमेएटके लोग समझते थे कि जबतक बकिंघम रहेगा किसी प्रकारका सुधार न हो सकेगा, अत उसपर बहुत आक्षेप किये गये। जब चार्ल्ससे कुछ न बना तो उसने पार्ल-मेएटको छ: मासके लिए हटा दिया। अब बकिंघम फ्रांसके प्रोटेस्टेएटोंकी सहायताके लिए चला परन्तु फैल्टन नामक एक सैनिकने उसे मार डाला।

इस प्रकार बकिंघमसे तो छुट्टी मिल गयी परन्तु जब सवत् १६८५ (१६२६ ई० जनवरी) में पार्लमेएटकी बैठक हुई तो उसने धार्मिक विषयोंमें राजापर आक्षेप किये। राजा प्रार्थनामें कुछ परिवर्त्तन करना चाहता था और देशके लोग इसके विरुद्ध थे। इसके अतिरिक्त उस समय एक और बात आ पडी। यद्यपि अधिकार-पत्रपर राजाके हस्ताक्षर हो चुके थे, तो भी चार्ल्स उन राजाओंमेंसे न था जिनके 'प्रान जाहिं बरु बचन न जाई'। आरम्भसे ही वह समझता था कि हस्ताक्षर तो केवल तात्कालिक झगडा मिटाने और पार्लमेएटके सभ्योंको हरे हरे रूख दिखानेके लिए किये जाते हैं। उसने

* लेट राइट बी डन ऐज इज डिजायर्ड

पार्लमेण्टकी स्वीकृतिके विना भी 'टनेज पौंडेज' कर लगाना आरम्भ कर दिया। राजाका कथन था कि यदि 'टनेज पौंडेज' कर न लगे तो मेरी तिहाई आय बन्द हो जायगी और मैं देवालिया हो जाऊँगा। पार्लमेण्ट कहती थी कि यदि इस प्रकार कर लगेंगे तो प्रजाकी सुनाई कैसे होगी। राजा जब जैसा चाहेगा तब वैसा कर लेगा। अन्तमें इलियटने राजाको दबानेके नये साधन निकाले। पार्लमेण्टके एक सभ्यने 'टनेज-पौण्डेज' देनेसे इनकार किया और राजाके कर्मचारियोंने उसकी सम्पत्ति हरण कर ली। पार्लमेण्टने अपने एक सभ्यकी सम्पत्ति हरणके अपराधमें उन कर्मचारियोंको दण्ड देना चाहा। चार्ल्सने कहा कि हमारे कर्मचारियोंसे न बोलो। उसने कुछ समय इस बातके सोचनेके लिए दिया कि किस प्रकार समझौता हो सकता है। परन्तु जब इस समयमें भी कुछ समझौता न हुआ तो उसने पार्लमेण्टको बैठक उठानेके लिए आज्ञा दे दी। लोगोंने समझा कि राजा पार्लमेण्ट तोड़ना चाहता है और फिर कभी राजाके कुप्रबन्धके विरुद्ध आन्दोलन करनेका अवसर न मिलेगा, अत उन्होंने यह पास कराना चाहा कि जो पुरुष पार्लमेण्टकी स्वीकृतिके विना 'टनेज-पौण्डेज' कर प्राप्त करे या करावे अथवा धार्मिक विषयोंमें हस्तक्षेप करे वह देशका शत्रु है। किसी नियमका पास कराना विना सभापतिके कुर्सीपर बैठे हो नहीं सकता था और सभापति राजाकी आज्ञासे पार्लमेण्टकी बैठक उठाना चाहता था, अत हौलिस और वैलेण्टाइन* नामक दो बलवान सभ्योंने सभापतिको पकड़ लिया और बलात्कारेण कुर्सीपर बैठाये रखा। इस समय इलियट उपर्युक्त

* Holles, Valentine

नियमके पास करानेका प्रस्ताव करता रहा। बडा झगडा हुआ। सभा-भवनके द्वार बन्द कर दिये गये थे कि कहीं सभासद गडबड न करें। जितनी देरमें चार्ल्सने आकर दरवाजोंको तोडना चाहा उतनी देरमें नियम पास हो गया और चार्ल्सने आते ही पार्लमेण्ट तोड दी। उस समयसे राजाने शपथ खायी कि अब आयु पर्यन्त कभी पार्लमेण्टका निर्वाचन न होने दूँगा।

ग्यारह वर्ष अर्थात संवत् १६८६ से १६९७ (१६२९ से १६४० ई०) तक प्रथम चार्ल्सने विना पार्लमेंटके राज्य किया। उपर्युक्त पार्लमेण्टके टूटते ही इलियट और अन्य सभासद पकड लिये गये और उनपर राजविद्रोहका दोष लगाया गया। इलियटने सफाई देनेसे इनकार किया और कहा कि जो कुछ मैंने किया है उसके लिए केवल पार्लमेण्ट ही मुझसे उत्तर माँग सकती है। जजोंने कहा कि यद्यपि पार्लमेण्टके सभासदोंको उन शब्दोंके कहनेके लिए दण्ड नहीं दिया जा सकता जिनको उन्होंने पार्लमेण्टमें ही कहा है परन्तु पार्लमेण्टके भीतर जो उन्होंने शान्तिभङ्ग करनेका अपराध किया है उसके लिए उनको दण्ड दिया जा सकता है। फलत इलियटपर जुर्माना हुआ परन्तु इलियटने जुर्माना देनेसे इनकार किया क्योंकि ऐसा करना उसकी आत्माके विरुद्ध था। इलियट कहता था कि यदि जजलोग एक बार पार्लमेण्टके भीतर किए हुए भाषण अथवा कार्यके लिए किसी व्यक्तिपर अभियोग लगायेंगे और उसे सजा देंगे तो राजाको पार्लमेण्टके दमन करने और प्रजाका मुख बन्द करनेमें कुछ कठिनाई न होगी। देशकी स्वतन्त्रतापर यह बहुत बडा आघात था और इलियटका प्रण था कि प्राण भले ही चले जायँ परन्तु देशकी स्वतंत्रतामें बाधा न हो।

इलियट लन्दनके टावरमें* कैद कर दिया गया। कुछ दिनोंतक तो वह प्रसन्नचित्त रहा परन्तु इस शीतप्रधान देशमें जहाँ साधारण जीवन भी बिना अग्निदेवकी सहायताके दुर्लभ है उसकी कोठरीमें आग नहीं रखी जाती थी, अत उसे क्षय रोग हो गया। उसने राजासे प्रार्थना की कि मुझे स्वास्थ्य-रक्षाके निमित्त ग्राममें जानेकी आज्ञा दी जाय। चार्ल्सने कहा कि यदि इलियट अपनी भूल स्वीकार कर ले तो उसे आज्ञा मिल सकती है। इलियटको शरीरकी अपेक्षा धर्म अधिक प्रिय था। ११ मार्गशीर्ष संवत् १६८६ (२७ नवम्बर १६३२ ई०) को वीर इलियटका प्राणपखेरु नश्वर शरीरको छोड़कर उड़ गया। इलियट आदि महान् पुरुषोंकी वीरताका ही यह फल है कि इङ्गलैण्डकी गणना स्वतन्त्र देशोंमें है। इलियटकी मृत्युपर उसके पुत्रोंने चाहा कि उसका शव अन्त्येष्टि संस्कारके लिए दे दिया जाय परन्तु राजाने स्वीकार न किया और टावरके गिरजेमें ही उसकी समाधि बनायी गयी।

---

* लन्दनमें टावर (मीनार) नामक एक प्रासाद था जिसमें पहले राजा लोग रहा करते थे। उसके पश्चात् यह कारागार बना दिया गया। राजद्रोही पुरुष यहीं कैद रखे जाते थे। इङ्गलैण्डके कई रत्न इसी कारागारमें सड़कर मर गये। कुछ दिनों तक "टावरमें भेजना" ही कारागारमें भेजनेका पर्याय समझा जाता रहा। इस समय 'टावर' एक कौतुकालय है जहाँ प्राचीन शस्त्र, आदि रखे हुए हैं। यहाँ हम उन वीर देशभक्तोंके जिनके बलिदानने इङ्गलैण्डको आज स्वतन्त्र देश बनाया है कैद रखने, मारे जाने तथा समाधिस्थ होनेके चिह्न भी देख सकते हैं।

चौथा अध्याय।

पोतकर और स्काट-विद्रोह।



संवत् १६८६ (१६२९ ई०) में पार्लमेण्ट तोड़नेके पश्चात् प्रथम चार्ल्सने ११ वर्षतक बिना पार्लमेण्टके ही राज्य किया। फ्रांस और स्पेनसे सन्धि होगयी। युद्ध बन्द हो जानेसे व्यय घट गया। अब तो साधारण आयसे भी कार्य्य चल सकता था। टनेज और पौण्डेज कर व्यापारियोंसे बिना पार्लमेण्टकी स्वीकृतिके भी लिया जाने लगा।

अब राजाका ध्यान अपने पोतोंकी ओर आकर्षित हुआ। डच लोगोंके व्यापारिक पोत और युद्ध-पोत दोनों ही अंग्रेजोंके पोतोंसे अच्छे थे। फ्रांसनरेशने भी अपने पोतोंका एक नया बेड़ा तैयार कर लिया था। पड़ोसियोंके पोतोंकी वृद्धि इंग्लैण्डके लिए भयका कारण थी। इसकी रक्षाके लिए आवश्यक था कि यहाँ भी पोतोंका बहुत बड़ा बेड़ा निर्माण किया जाय। इसके लिए रुपयोंकी आवश्यकता हुई। रुपया पार्लमेण्टके बिना कैसे मिलता और यदि पार्लमेण्ट होती तो वह फिर चार्ल्सकी निरङ्कुशतापर आघात करती। इसी समयमें धार्मिक विषयोंमें भी चार्ल्स हस्तक्षेप कर चुका था जिसके कारण प्रजा असन्तुष्ट थी। इसका वर्णन हम आगे करेंगे। ऐसी दशामें राजाने पार्लमेण्टका निर्वाचन तो अनुचित समझा किन्तु अपने एक नियम व्यवस्थापक (अटर्नी जनरल Attorney General) की सहायतासे एक और उपाय

निकाला। प्राचीन समयमें बन्दरगाहोंका कर्त्तव्य था कि देशकी रक्षाके लिए पोत दें, अत उसीके अनुसार सवत् १६६१ (१६३४ ई०) में चार्ल्सने घोषणा की कि प्रत्येक बन्दरको पोत देने चाहिये, परन्तु चार्ल्स बहुत बडे बडे पोत चाहता था और बन्दरगाहोंमें छोटे छोटे पोत थे। जब चार्ल्सने यह सुना तो उसने अपने पोत इस शर्तपर उधार देना स्वीकार कर लिया कि इनका व्यय बन्दरगाहके नगर अपने ऊपर ले लें। बन्दरगाहोंने रुपया देना अङ्गीकार कर लिया और इस प्रकार पोत-कर द्वारा राजाको पार्लमेण्टकी स्वीकृतिके विना ही प्रचुर धन प्राप्त हो गया।

सवत् १६६२ (१६३५ ई०) में तो पोत कर बन्दरगाहोंके अतिरिक्त देशके भीतरी नगरोंपर भी लगाया गया। वस्तुत यह बात कुछ अनुचित न थी, क्योंकि देशके पोत न केवल बन्दरगाहोंके नगरोंकी किन्तु भीतरी स्थानोंकी भी रक्षा करते थे। यदि बन्दरगाह सुरक्षित न रहते और विदेशकी ओरसे आक्रमण होता तो भीतरी ग्रामों तथा नगरोंमें रहनेवाली व्यापारिक जनताको भी हानि होती अत. पोत कर देना उनका कर्त्तव्य था। परन्तु यह प्रश्न ही और था। प्रश्न यह नहीं था कि अमुक कर लाभदायक है या हानिकारक। प्रश्न यह था कि कर लगानेका अधिकार किसको है, यदि राजा स्वय ही पोतकर लगा सकता है तो वह सेनाकर और अन्य बीसियों कर भी लगा सकेगा और इस प्रकार राजा निरङ्कुश ही रहेगा। सवत् १६६३ (१६३६ ई०) में जब तीसरी बार पोत-कर लगानेकी घोषणा हुई तो वकिंघमशायरके एक महापुरुष हैम्पडनने कर देनेसे इनकार किया, यद्यपि यह कर केवल २० ही शिलिङ्ग था। हैम्पडन एक शात, परन्तु स्वतन्त्रता-

प्रेमी पुरुष था। उसको भी इलियटके साथ कारागारकी हवा चखायी जा चुकी थी। सवत् १६६४ (१६३७ ई०) में उसपर पोत कर न देनेका अभियोग चलाया गया।

उसका कथन था कि राजाको कर लगानेका अधिकार नहीं है। दोनों ओरसे प्राड्विवाकोंका वादविवाद हुआ। इस बातमें तो दोनों सहमत थे कि किसी आकस्मिक आक्रमण तथा विद्रोहके आजानेपर राजाको कर लगानेका अधिकार है। परन्तु राजाके वकील कहते थे कि इस बातका निश्चय भी राजा ही कर सकता है कि इस समय आकस्मिक घटना है या नहीं, और हैम्पडनके वकीलोंका कथन यह था कि इस समय कोई आकस्मिक अवश्यकता नहीं है। एक तो चार्ल्सके अतिरिक्त और किसीको ऐसी आवश्यकताका अनुभव ही न हुआ, दूसरे जब आश्विन मास (सितम्बर) में कर लगाकर चार्ल्स चैत्र (मार्च) में पोत तैयार करायेगा तो यह भी अनावश्यकताका सन्तोषजनक प्रमाण है। यदि यह कहा जाय कि "हेय दु:खमनागतम्" के अनुसार पोत तैयार किये जाते हैं तो इतना समय पार्लमेंएटके निर्वाचनके लिए भी पर्याप्त है। ऐसी दशामें राजाको कर लगानेका अधिकार नहीं। न्यायालयके १२ जजोंमें से ७ जजोंने राजाके पक्षमें ही व्यवस्था दी और हैम्पडनको २० शिलिङ्ग देने पड़े किन्तु हैम्पडनके वकीलोंकी युक्तियाँ देशभरमें फैल गयीं और सबको भली प्रकार ज्ञात हो गया कि हैम्पडनका पक्ष प्रबल तथा राजाका निर्बल है।

इसी समय स्काटलैंएडवालोंसे और चार्ल्ससे झगड़ा हो गया। इसके समझनेके लिए पूर्व घटनाओंपर भी दृष्टि डालनेकी आवश्यकता है। हम पूर्वार्द्धमें लिख चुके हैं कि स्काटरानी मेरीके देश-निकालेके पश्चात् स्काटलैंएडमें प्रेस्बि

टेरियन लोग बढ गये थे। प्रेस्बिटेरियन उन प्रोटेस्टेण्टोंका नाम है जो गिरजोंमें लाट पादरियों अथवा धार्मिक शासकोंकी आवश्यकता नहीं समझते। उनके कार्य्य पुरोहितोंकी साधारण सभा द्वारा हो जाते हैं। स्काटचर्च और इंग्लिशचर्चमें यही भेद था। अर्थात् इंग्लैण्डमें धर्म शासक या लाट-पादरी थे परन्तु स्काटलैण्डमें नहीं। स्काटचर्चकी प्रणालीके अनुयायियोंको प्रेस्बिटेरियन और इंग्लिशचर्चकी प्रणालीको एपिस्कोपेसी* कहते हैं।

जबसे जेम्स इंग्लैण्डको गद्दीपर बैठा उसने स्काटलैंडमें लाटपादरी नियत किये। सवत् १६६६ (१६१२ ई०) में उसने स्काटलैण्डकी पार्लमेण्टसे कहकर पादरियोंको कुछ अधिकार भी दिला दिये और सवत् १६७५ (१६१८ ई०) से प्रार्थनाओंमें कुछ कुछ परिवर्त्तन करके उसको इंग्लैण्डकी प्रार्थना-पुस्तकके अनुकूल बना दिया। सवत् १६६० (१६३३ ई०) में विलियम लार्ड† कैण्टरबरीका लाटपादरी नियत हुआ। उसके कहनेसे जब उसी वर्ष चार्ल्स स्काटलैण्ड गया तो एडिनबरामें भी उसने लाटपादरी नियत किया। सवत १६६२ (१६३५ ई०) में उसने चर्चके शासनके लिए कुछ नियम निर्माण किये, जिनके अनुसार सभा तो नाममात्रको रह गयी और पादरियोंके शासनकी कड़ियाँ कड़ी कर दी गयी। सवत् १६६४ (१६३७ ई०) में लाडने एक और प्रार्थना-पुस्तक बनायी जो इंग्लैण्डकी प्रार्थना पुस्तकके समान थी और जिसके पढनेके लिए समस्त स्काटलैण्डके गिरजोंको आज्ञा हुई।

स्काट बेचारे भीगी बिल्लीके समान अन्य परिवर्त्तनोंको धैर्य्यके साथ देखते रहे, परन्तु अन्तिम परिवर्त्तन उनको

* Episcopacy　　† William Laud

असह्य हुआ। जब एडिनबराके सेण्ट गाइलके चर्चमें नयी प्रार्थनापुस्तक पढ़ी जा रही थी तब लोगोंने विद्रोह कर दिया। अन्य धर्ममन्दिरोंमें भी ऐसा ही हुआ। मार्ग० सवत् १६६५ (१६३८ ई०) में लोगोंने धर्मरक्षार्थ एक समिति (Covenant कवेनैण्ट) बनायी, उसमें भद्र पुरुष अगुआ हो गये।

इस समितिने राजाकी सेवामें अपने प्रतिनिधि भेजे और चार्ल्सने मजबूर होकर केवल इतनी आज्ञा दी कि संवत् १६६५ के मार्ग० (नवम्बर १६३८ ई०) में ग्लास्गोमें चर्चकी एक साधारण सभा की जाय। सभाने बैठते ही पादरियोंपर आक्षेप करने आरम्भ किये और ड्यूक हैमिल्टनने, जो राजाका स्थानापन्न होकर सभापति बना था, सभाविसर्जन करनेकी घोषणा कर दी। परन्तु सभासद न उठे और उन्होंने प्रस्ताव निश्चित कर दिया कि एपिस्कोपेसी तोड़ दी जाय अर्थात् पादरी न रखे जायँ। यह राजाकी आज्ञाका स्पष्ट उल्लङ्घन था, अतः उसने स्काटदेशवालोंको विद्रोही कहकर उनके विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। परन्तु स्काट लोग पहलेसे ही युद्धपर तुले हुए थे। सवत् १६६६ (१६३९ ई०) में दोनो सेनाएँ सीमा-पर इकठ्ठी हुईं। परन्तु राजाने अपना पक्ष निर्बल देख कर लड़ाई न की और बर्विक स्थानमें एक सन्धि होगयी जिसके अनुसार समझौता करनेके लिए एडिनबरामें स्काटलैण्डकी पार्लमेण्टका अधिवेशन होना निश्चित हुआ।

परन्तु इस सन्धिने चार्ल्सका पक्ष और भी गिरा दिया क्योंकि ग्लास्गोकी सभाके समान एडिन्बराकी सभाने भी पादरियोंके विरुद्ध ही निर्णय दिया।

इतनेमें इग्लैण्डका कोष भी खाली हो गया। अब स्काट-लोगोंका दमन कैसे किया जाय? निदान अपनी दृढ़ प्रतिज्ञाके

विरुद्ध संवत् १६६७ के वैशाख (१६४० ई० के अप्रैल) में चार्ल्स को इग्लैण्डकी पार्लमेण्टका पुनर्निर्वाचन कराना ही पड़ा ।

चार्ल्स समझता था कि इंग्लैण्ड और स्काटलैण्डमें पुराना वैमनस्य चला आता है, अतः स्काट-दमनके लिए अंग्रेज अवश्य सहायता देंगे । यह चार्ल्सकी बड़ी भूल थी । अंग्रेज भली प्रकार जानते थे कि स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके लिए राजाको अति बलवान् बनने देना मूर्खता है, अतः उन्होंने धन देनेकी स्वीकृति न दी । राजा भी रूठ गया और पार्लमेण्ट तोड़ दी । इस पार्लमेण्टको अल्पायु पार्लमेण्ट (शार्ट पार्लमेण्ट) कहते हैं ।

पाँचवाँ अध्याय ।

दीर्घ पार्लमेण्ट ।

संवत् १६६७–६८ (१६४०–४१ ई०)

अल्पायु पार्लमेण्ट केवल तीन सप्ताह तक रही । परन्तु इसने यह प्रकट कर दिया कि चार्ल्सने बिना पार्लमेण्टकी सहायताके जो राज्य किया वह फलीभूत नहीं हुआ । वस्तुतः यदि चार्ल्सकी चलती तो कभी पार्लमेण्टका निर्वाचन न कराता, परन्तु स्काट लोगोंके विद्रोहने उसकी प्रतिज्ञा भंग कर दी । जब अल्पायु-पार्लमेण्टसे यथेष्ट कार्य न चला तो चार्ल्सने फिर स्वयं एक बार और स्काट लोगोंको पददलित करनेका यत्न किया ।

बड़ी कठिनाईसे यार्कमें कुछ सेना इकट्ठी की गयी । परन्तु सेना क्या थी, तमाशा थी । सैनिक वेतनके लिए चिल्ला रहे थे । न जाने कबसे पैसातक न मिला था और मिलता भी

कहाँसे ? कोष तो सफाचट था। फिर, सिपाहियोंको युद्धकी शिक्षा भी न दी गयी थी। इसके साथ साथ सबसे विचित्र बात यह थी कि सैनिक लोग लड़ना नहीं चाहते थे। यह हाल तो राजाकी सेनाका था। स्काटलैण्डवाले बड़े योग्य और अनुभवी होनेके अतिरिक्त स्व धर्मके लिए लड़ रहे थे। दोनोंमें बहुत बड़ा भेद था। इसलिए यहाँ राजा सेना ही इकट्ठी करता रहा, वहाँ उन लोगोंने इंग्लैण्डके भीतर घुसकर न्यूबर्न पर राजाकी सेनाके छक्के छुड़ा दिये और उत्तरी प्रान्तोंपर अधिकार प्राप्त कर लिया।

अब राजामें कहाँ दम था कि चू करता। अन्तको विक्रम सम्वत् १६६७ के कार्तिक (अक्टूबर १६४० ई०) मासमें रिपनमें क्षणिक सन्धि होगयी जिसके अनुसार स्काट सेनाका उस समयतक इंग्लैंडमें रहना निश्चित हुआ जबतक स्काट चर्च का झगड़ा न मिट जाय और सेनाके व्ययके लिए २५००० पौंड मासिक राजकोषसे मिलने लगा।

अब राजाने पार्लमेंटका फिर निर्वाचन कराया जिसका पहला अधिवेशन १७ कार्त्तिक संवत् १६६७ (३ नवम्बर १६४०) से लेकर आश्विन संवत् १६६८ (सितम्बर १६४१ ई०) तक रहा। इस पार्लमेंटको दीर्घ पार्लमेंट इसलिए कहते हैं कि यह कई वर्षोंतक कायम रही।

यह दीर्घ पार्लमेंट इंग्लैण्डकी समस्त पार्लमेंटोंमें सबसे प्रसिद्ध गिनी जाती है। कहते हैं कि दो सौ वर्षसे अधिकतक अंग्रेजोंमें इसकी काररवाइयोंकी चर्चा रही। कोई इसके कार्यों की प्रशंसा करता था और कोई निन्दा। परन्तु किसी न किसी भावसे इसका नाम अवश्य आ जाता था। इसीकी आलोचना-में कई ग्रन्थ रचे गये। वस्तुतः यह इसी पार्लमेण्टका काम था

कि निरङ्कुश राज्यकी नोव जडसे खोदकर वहा दी गयी और उसके स्थानमें नियन्त्रित राज्यकी स्थापना हुई।

दीर्घ पार्लमेंटके हाउस आव कामन्समें अधिकतर ऐसे प्रतिनिधियोंका निर्वाचन हुआ था जो या तो राजाको ऋण न देनेके अपराधमें कैद किये जा चुके थे, या जिनपर 'टनेज और पोंडेज' कर न देनेके कारण अभियोग चलाया गया था, या जिन्होंने राजाके कुराज्यपर अन्य रूपसे आक्षेप किये थे। इससे प्रकट होता है कि समस्त देश राजाके कितना विरुद्ध था। राजाके विरोधियोंमें सबसे प्रसिद्ध जौन पिम *, जोन हैम्पडन, जौन सेल्डन † और ओलिवर क्राम्वेल थे और लार्ड कलेरेण्डन तथा लार्ड फाकलैण्ड राजाके पक्षमें थे।

हम ऊपर लिख चुके हैं कि दीर्घ पार्लमेण्टके निर्वाचनका मुख्य कारण धन प्राप्तिकी इच्छा थी। परन्तु धन स्वीकार करना तो एक ओर रहा, पार्लमेण्टने आरम्भसे ही उन बातों-का प्रतीकार करना प्रारम्भ किया जो गत ११ वर्षोंमें राजाकी ओरसे हो चुकी थीं। पोत-करके विषयमें जजोंने जो निश्चय किया था वह काट दिया गया। लार्ड और स्ट्रैफर्डने जिनको कैद कराया था वे छोड दिये गये और स्वय स्ट्रैफर्डपर अभि-योग चलाया गया। यह स्ट्रैफर्ड पहले पार्लमेण्टका सभासद था और जिन लोगोंने अधिकारपत्रका निर्माण किया था उनमें यह भी एक व्यक्ति था, परन्तु कुछ दिनों पश्चात् यह राजासे जा मिला था और उसके महामन्त्रियोंमेंसे एक था। ग्यारह वर्षोंतक राजाने इसीकी शिक्षापर कार्य किया, अत. पार्लमे-ण्टके लोग चार्ल्सके कुप्रबन्धकी बहुत सी बातोंका कारण स्ट्रैफर्डको ही बतलाते थे।

* John Pym	† Selden

जिस समय पार्लमेएटमें स्ट्रैफर्डपर अभियोग चलानेका विचार हो रहा था उस समय वह यार्कमें था। राजाने उसे लिखा कि तुम शीघ्र चले आओ, तुम्हारे शरीर या सम्पत्ति, किसीको भी हानि नहीं पहुँचायी जायगी, परन्तु ज्यों ही स्ट्रैफर्डने हाउस आव लार्डसमें पैर रखा त्यों ही पिमने उसपर देश विद्रोहका दोष लगा दिया। दोष पत्रकी सूची से विदित होता है कि उसपर २८ दोष लगाये गये थे। ८ चैत्र १६६८ (२२ मार्च १६४१ ई०) को वेस्टमिनस्टर हालमें अभियोगकी सुनाई आरम्भ हुई। उस दिन बडी भीड थी। स्त्रियां बरामदोंमें बैठी थीं। राजा भी एक कमरेमें अलग परदेकी आडमें बैठा हुआ काररवाई देख रहा था। स्ट्रैफर्डने पहले तो अपने ऊपर लगाये हुए दोषोंका उत्तर देनेके लिए समय मांगा, परन्तु जब उसे आज्ञा हुई कि अभी उत्तर दो तो उसने बडी वीरता, धैर्य और चातुर्यसे १५ दिनोंतक उत्तर दिया। कभी तो उससे सहानुभूति रखनेवाले पुरुषोंकी ओर से "धन्य धन्य" के शब्द सुनाई देते थे और कभी उसके विरोधी 'धिक् धिक्' चिल्लाते थे। अन्तको हाउस आव कामन्सके सभ्योंको यह ज्ञात हो गया कि स्ट्रैफर्डको हम हाउस आव लार्डससे दण्ड नहीं दिला सकते। अतः स्वयं हाउस आव कामन्सने इस अभियोगको अपने हाथमें ले लिया और स्ट्रैफर्डके दोषयुक्त होनेका प्रस्ताव पास कर दिया गया। केवल ५९ सभासद इस प्रस्तावके विरुद्ध थे। परन्तु उनके नाम पत्रपर यह लिखकर गलियोंमें लगा दिये गये "ये लोग स्ट्रैफर्डके सहायक हैं जो एक विद्रोहीको सहायता देनेके अर्थ देशको हानि पहुँचा रहे हैं"। अब स्ट्रैफर्डके प्राण संकटमें थे, केवल राजाका आश्रय ही रहा था। राजाने प्रतिज्ञा भी की थी

कि पार्लमेण्ट तुम्हारा बालतक भी छूने न पावेगी। परन्तु २७ वैशाख १६६८ (१० मई १६४१) को राजाने भी हस्ताक्षर कर ही दिये और गहरी सांस लेकर कहा—"स्ट्रैफर्ड मुझसे अधिक भाग्यवान् है"। पिमने जब सुना कि राजाके हस्ताक्षर हो गये तो वह कहने लगा, यदि राजाने स्ट्रैफर्डको हमारे हाथमें दे दिया तो अब वह हमारी किसी बातसे इनकार न करेगा। स्ट्रैफर्डको जब ज्ञात हुआ कि मुझे प्राणदण्ड मिलेगा ही, तो उसने कहा, "राजाओंपर विश्वास कभी न करे। उनके हाथमें मुक्ति नहीं है।" मृत्युके समय स्ट्रैफर्डने बड़ी वीरता दिखायी। वह सूलीतक इस ऐंठके साथ गया मानो विजय प्राप्त करने जाता हो। २६ वैशाख (१२ मई) को उसके प्राण ले लिये गये। ज्यों ही उसका सिर नीचे गिरा, लोग हर्षके मारे उछलने कूदने लगे। गिरजोंमें घण्टियाँ बजायी गयीं और जो सुनता था वही टोपी उछालता था, क्योंकि स्ट्रैफर्डके अभियोगने सिद्ध कर दिया कि जो पुरुष राजाको अनुचित कार्य्योंमें सहायता देगा उसका जीवन सुरक्षित नहीं है।

पार्लमेण्टने न केवल स्ट्रैफर्डको प्राणदण्ड ही दिया किन्तु एक प्रस्ताव भी पास किया कि कमसे कम तीन वर्षोंमें एक बार पार्लमेण्टका निर्वाचन अवश्य हुआ करे और पार्लमेण्ट बिना स्वयं अपनी इच्छाके तोड़ी न जाय। इसके अतिरिक्त नक्षत्र-भवन-न्यायालय तथा अन्य न्यायालय, जिनके द्वारा राजाकी ओरसे अन्याय हुआ करता था, तोड़ दिये गये।

इस प्रकार देशका सम्पूर्ण आधिपत्य पार्लमेण्टके हाथमें आ गया और राजाकी शक्ति टूट गयी। राजाको बुरा लगा और वह अपने आधिपत्यके उपाय फिर सोचने लगा। उसने स्काटलैण्ड जाकर वहाँके लोगोंसे सन्धि करली। हैम्पडन भी

स्काटलैंएड गया और राजाका निरीक्षण करता रहा क्योंकि उसे सन्देह था कि कहीं राजा धोखा तो नहीं दे रहा है।

छठाँ अध्याय।

आयलैंएडका विद्रोह।

संवत् १६६८–६६ (१६४१–४२ ई०)

इस समय सम्भव था कि शान्ति हो जाती परन्तु चार्ल्सका समय वस्तुतः दुर्भाग्यका समय था। पिम और हैम्पडन राजाको सन्देहकी दृष्टिसे देखते थे। कई बार राजा गुप्त रूपसे यत्न कर चुका था कि पार्लमेण्ट तितर बितर कर दी जाय, परन्तु उसे सफलता न हुई।

आयलैंएडवाले पहलेसे ही अप्रसन्न थे। (प्रथम) जेम्सके समयमें उनकी भूमि अंग्रेज तथा स्काट लोगोंको दे दी गयी थी। इसके अतिरिक्त उनके धर्ममें भी हस्तक्षेप हो रहा था। संवत् १६६० से १६६७ (१६३३ ई० से १६४० ई०) तक स्ट्रैफर्ड वहांका शासक रहा। इस समयमें आयलैंएडकी अवस्था तो अच्छी हो गयी, परन्तु वहाके लोगोंकी धर्म तथा भूमि सम्बन्धी आपत्तियाँ ज्योंकी त्यों बनी रहीं। जब स्ट्रैफर्डका शिर कटकर गिरा तो आयलैंएड वालोंने अवसर पाकर विद्रोह कर दिया और अंग्रेजोंको या तो मार डाला या देशसे निकाल दिया। विद्रोही लोग कहते थे कि हम राजाकी ओरसे लड रहे हैं। पता नहीं कि यह बात कहाँतक ठीक है, परन्तु चार्ल्स कुछ कुछ कोशिश तो कर रहा था कि आयलैंएडवालोंको पार्लमेण्ट-

कि पार्लमेण्ट तुम्हारा बालतक भी छूने न पावेगी। परन्तु २७ वैशाख १६६८ (१० मई १६४१) को राजाने भी हस्ताक्षर कर ही दिये और गहरी सांस लेकर कहा—"स्ट्रैफर्ड मुझसे अधिक भाग्यवान् है"। पिमने जब सुना कि राजाके हस्ताक्षर हो गये तो वह कहने लगा, यदि राजाने स्ट्रैफर्डको हमारे हाथमें दे दिया तो अब वह हमारी किसी बातसे इनकार न करेगा। स्ट्रैफर्डको जब ज्ञात हुआ कि मुझे प्राणदण्ड मिलेगा ही, तो उसने कहा, "राजाओंपर विश्वास कभी न करे। उनके हाथमें मुक्ति नहीं है।" मृत्युके समय स्ट्रैफर्डने बड़ी वीरता दिखायी। वह सूलीतक इस पेंठके साथ गया मानो विजय प्राप्त करने जाता हो। २६ वैशाख (१२ मई) को उसके प्राण ले लिये गये। ज्यों ही उसका सिर नीचे गिरा, लोग हर्षके मारे उछलने कूदने लगे। गिरजोंमें घण्टियाँ बजायी गयीं और जो सुनता था वही टोपी उछालता था, क्योंकि स्ट्रैफर्डके अभियोगने सिद्ध कर दिया कि जो पुरुष राजाको अनुचित कार्य्योंमें सहायता देगा उसका जीवन सुरक्षित नहीं है।

पार्लमेण्टने न केवल स्ट्रैफर्डको प्राणदण्ड ही दिया किन्तु एक प्रस्ताव भी पास किया कि कमसे कम तीन वर्षोंमें एक बार पार्लमेण्टका निर्वाचन अवश्य हुआ करे और पार्लमेण्ट बिना स्वय अपनी इच्छाके तोड़ी न जाय। इसके अतिरिक्त नक्षत्र-भवन-न्यायालय तथा अन्य न्यायालय, जिनके द्वारा राजाकी ओरसे अन्याय हुआ करता था, तोड़ दिये गये।

इस प्रकार देशका सम्पूर्ण आधिपत्य पार्लमेण्टके हाथमें आ गया और राजाकी शक्ति टूट गयी। राजाको बुरा लगा और वह अपने आधिपत्यके उपाय फिर सोचने लगा। उसने स्काटलैण्ड जाकर वहाँके लोगोंसे सन्धि करली। हैम्पडन भी

स्काटलैंएड गया और राजाका निरीक्षण करता रहा क्योंकि उसे सन्देह था कि कहीं राजा धोखा तो नहीं दे रहा है।

छठाँ अध्याय।

आयलैंएडका विद्रोह।

संवत् १६६८–६६ (१६४१–४२ ई०)

इस समय सम्भव था कि शान्ति हो जाती परन्तु चार्ल्सका समय वस्तुतः दुर्भाग्यका समय था। पिम और हैम्पडन राजाको सन्देहकी दृष्टिसे देखते थे। कई बार राजा गुप्त रूपसे यत्न कर चुका था कि पार्लमेण्ट तितर बितर कर दी जाय, परन्तु उसे सफलता न हुई।

आयलैंएडवाले पहलेसे ही अप्रसन्न थे। (प्रथम) जेम्सके समयमें उनकी भूमि अंग्रेज तथा स्काट लोगोंको दे दी गयी थी। इसके अतिरिक्त उनके धर्ममें भी हस्तक्षेप हो रहा था। संवत् १६६० से १६६७ (१६३३ ई० से १६४० ई०) तक स्ट्रैफर्ड वहांका शासक रहा। इस समयमें आयलैंएडकी अवस्था तो अच्छी हो गयी, परन्तु वहांके लोगोंकी धर्म तथा भूमि सम्बन्धी आपत्तियाँ ज्योंकी त्यों बनी रहीं। जब स्ट्रैफर्डका शिर कटकर गिरा तो आयलैंएड वालोंने अवसर पाकर विद्रोह कर दिया और अंग्रेजोंको या तो मार डाला या देशसे निकाल दिया। विद्रोही लोग कहते थे कि हम राजाकी ओरसे लड रहे हैं। पता नहीं कि यह बात कहाँतक ठीक है, परन्तु चार्ल्स कुछ कुछ कोशिश तो कर रहा था कि आयलैंएडवालोंको पार्लमेण्ट-

से लड़ा दूं। इसपर पार्लमेण्टको राजापर सन्देह हो गया था। चिन्ता यह थी कि राजाको अति बलवान् बनाये बिना किस प्रकार विद्रोह दमन किया जाय। विद्रोहदमनके लिए सेना चाहिये और नियम यह था कि सेना सर्वथा राजाके अधिकारमें रहे। यदि सेना इकट्ठी करके राजाको दे दी जाती और राजा उसके अफसरोंको स्वयं नियत करता तो आयर्लण्ड-दमनके पश्चात् उसी सेनासे वह पार्लमेण्टका भी दमन अवश्य करता।

अतः उन्होंने यह उपाय सोचा कि समस्त देशके विचार राजाके विरुद्ध कर देने चाहिये। इस उपायकी पूर्त्तिके लिए उन्होंने "महान् आक्षेप *" नामक एक प्रस्ताव पार्लमेण्टसे पास कराना चाहा, जिसमें चार्ल्सके राज्यकी बुराइयाँ और पार्लमेण्टकी कार्यावलीकी भलाइयाँ तथा उन सब अधिकारोंका वर्णन था जो अभी और माँगे जा रहे थे। उसमें लिखा हुआ था कि राजाके मन्त्रिगण देशको हानि पहुँचाते हैं अतः इनकी नियुक्ति पार्लमेण्टके ही अधिकारमें रहे। इसके अतिरिक्त "पादरियोंके बहिष्कारके प्रस्ताव" † पर जिसे हाउस आव कामन्सने पास कर दिया था अभी राजाकी स्वीकृति ली जानी थी। यदि राजा इसे स्वीकार कर लेता तो किसी पादरीको हाउस आव लार्ड्सका सभासद होने तथा राजकार्य्यमें हस्तक्षेप करनेका अधिकार न रहता और राजा तथा चर्च दोनोंका अधिष्ठातृत्व नष्ट हो जाता। ये सब बातें 'महान् आक्षेप' नामक प्रस्तावका भाग थीं। यह प्रस्ताव न केवल पार्लमेण्टमें ही प्रविष्ट था किन्तु उसकी एक प्रति राजाकी सेवामें भी

* The Grand Remonstrance दि ग्रैण्ड रिमान्स्ट्रन्स
† Bishop's Exclusion Bill बिशाप्स एक्सक्लूजन बिल

उपस्थित की गयी थी और बहुतसी प्रतियाँ छापकर देशमें बाँट दी गयी थीं।

जिस समय यह प्रस्ताव पार्लमेण्टमें प्रविष्ट हुआ, उस समय दुर्भाग्यसे उसके सभासदोंमें धार्मिक सिद्धान्तोंमें कुछ मतभेद भी होगया था। हेम्पडन और उसके साथी प्योरिटन थे, परन्तु आधेके लगभग सभ्य चर्चके विषयमें अधिक परिवर्त्तनके विरुद्ध थे। प्रस्ताव प्रविष्ट होते ही बडा कोलाहल मचा। लोगोंने तलवारें खींच लीं। शास्त्रार्थके साथ शस्त्रार्थकी भी आशङ्का थी। आधीरातके समय बडी कठिनाईके साथ 'महान् आक्षेप' पास हो गया परन्तु इसके समर्थकोंकी संख्या विरोधियोंसे कुछ ही अधिक थी। क्राम्वेलने चलते समय कहा "यदि 'आक्षेप' पास न होता तो मैं समस्त सम्पत्ति बेचकर सदाके लिए इङ्गलैण्डसे भाग जाता।" वस्तुतः 'आक्षेप' का पास होना जातीय स्वतन्त्रताका एक मुख्य भाग था। प्रस्तावके विरोधियोंने चाहा कि हमारा नाम विरोधियों की सूचीमें लिख लिया जावे। वे समझते थे कि यदि राजा स्वतन्त्र हो गया तो आक्षेपके समर्थकोंको अवश्य दण्ड देगा। इसलिए वे अपने नाम विरोधियोंमें लिखाकर राजाके क्रोधसे बचना चाहते थे। परन्तु विरोधियोंके नाम लिखनेकी प्रणाली न थी। इसपर इतना झगडा हुआ कि सबके सब उठ खडे हुए और सभा-भवनको आकाशमें उठा लिया। सम्भव था कि रक्तकी धारा बहने लगे परन्तु हेम्पडनका चातुर्य काम कर गया।

सातवाँ अध्याय ।

गृह-युद्ध ।

संवत् १६६६—१७०६ (१६४२—१६४९)



हान् आक्षेप पास हो गया । राजाने पहले तो पिमको कोषाधिकारी बनाकर अपनी ओर करना चाहा, परन्तु पिमने इनकार कर दिया । लन्दनकी गलियोंमें राजा और पार्लमेण्टकी ओरके मनुष्योंमें हाथा पाथी होने लगी । अब राजाने सोचा कि हाउस आव लार्ड्सके सभासद लार्ड क्रिम्बोल्टन तथा हाउस आव कामन्सके पाँच सभासदों—हैम्पडन, पिम, हेजिलरिग, हौलीज और स्ट्रोड—पर राजविद्रोहका दोष लगाकर दण्ड देना चाहिये । परन्तु इन लोगोंको पहले ही पता चल गया और वे लन्दन नगरके भीतर भाग गये । राजाने तीन सौ आदमियोंको उनके पकड़नेके लिए भेजा । रानी कहने लगी 'तुम बड़े कायर हो । इन दुष्टोंको कान पकड़ कर निकाल क्यों नहीं देते ?' राजाने मूर्खतासे उसकी बात मान ली और पार्लमेण्टकी ओर चल दिया । द्वारपर सिपाही खड़े करके वह हाउस आव कामन्समें घुस गया और सभापतिकी कुर्सीके पास जाकर कहने लगा । "श्रीयुत, मैं थोड़ी देरके लिए तुम्हारी कुर्सी उधार चाहता हूँ ।" सभाभवनके भिन्न भिन्न स्थानोंसे "अधिकार ! अधिकार" की पुकार मच गयी । राजा बोला "विद्रोहियोंको कुछ अधिकार नहीं । मैं यह देखने आया हूँ कि जिनपर अभियोग चलाया गया है

उनमेंसे कोई यहाँ है या नहीं।" इसपर सब चुप रहे। "क्या पिम है?" इसपर भी किसीने उत्तर न दिया। तब उसने सभापतिसे पूछा "क्या पाँचों सभासद यहाँ हैं?" इसपर सभापतिने विनयपूर्वक कहा, "श्रीमान! मेरे पास सभाकी अनुमतिके विरुद्ध देखनेको आँखें और सुननेको कान ही नहीं हैं।" चार्ल्सने कहा "अस्तु! मेरी तो आँखें हैं! प्रतीत होता है कि सब चिड़ियाँ उड़ गयीं, मुझे आशा है कि जब वे आवें तो तुम उन सबको मेरे पास भेज दोगे।"

यह तो आशा ही व्यर्थ थी। सभाके अन्य सभासद भी उन लोगोंसे जा मिले और नागरिक लोगोंने उन्हींका साथ दिया। जब दूसरे दिन नागरिक लोग कीर्तन करते हुए सम्मानपूर्वक इन सभासदोंको वेस्टमिन्स्टरमें लाये तो चार्ल्स लज्जाके मारे २६ पौष सवत् १६६८ (१० जनवरी १६४२ ई०) को लन्दनसे भाग गया और अपनी मृत्युके दिनसे पूर्व फिर कभी राजधानीमें न आया।

अब तो पार्लमेण्ट और राजाके बीच नियमानुसार युद्ध छिड़ गया। दोनों ओरके लोग लड़ाईके इच्छुक थे, समझौतेकी कोई आशा न थी। चार्ल्स जल्दीसे महारानीको लेकर डोवरकी ओर चला और वहाँसे उसे हालैण्ड भेज दिया। महारानी यह सोचकर मुकुटके रत्नोंको साथ लेगयी कि इन्हें बेचकर युद्धका काम चलाया जायगा। लन्दन और पूर्वी प्रान्त, जहाँ प्योरिटन लोगोंका जमाव था, पार्लमेण्टकी ओर थे। उत्तरी, पश्चिमी तथा वेल्जके निकटस्थ प्रान्त राजाके पक्षमें थे। आक्स्फर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयोंके छात्रों तथा पाठकगणोंने राजाका साथ दिया। पार्लमेण्टका दल सिरमुड़ा (राउण्डहेड) कहलाता था क्योंकि इस दलमें प्रायः साधारण कक्षाके

मनुष्य बहुत थे और इनके बाल बहुत छोटे होते थे। चार्ल्सके साथियोंको कैवेलियर (Cavalier) अर्थात् घुडसवार या भद्रलोग कहते थे। अप्रैलमें राजा हलके बारूदखानेमें गया और वहाँके रक्षक जौन होथम* से कहा कि बारूदखाना हमारे हवाले कर दो। होथम चार्ल्सके पैरोंपर गिर पडा परन्तु बारूदखानेका फाटक न खोला। ६ भाद्र संवत् १६९९ (२२ अगस्त १६४२ ई०) को राजाकी सेना नाटिंघमपर इकट्ठी हुई। उसी दिनसे वास्तविक युद्धका आरंभ समझना चाहिये।

पहली लडाई एजहिलमें ७ कार्तिक संवत् १६९९ (२३ अक्टूबर १६४२) को हुई, जिसमें पहले तो राजाकी जीत हुई परन्तु लडाईके अन्तमें दोनों दल बराबर रहे। उसी संवत्के फाल्गुन (१६४३ ई० की फर्वरी) में रानी चार जहाज लेकर यार्कशायरमें उतरी और राज्यसेना पूर्वी प्रान्तोंमें फैल गयी। ग्रालग्रोव फील्ड † पर वीर हैम्पडन मारा गया। न्यूबरीके प्रथम युद्धमें राजाका सैनिक लार्ड फाकलैण्ड भी खेत रहा। परन्तु इस समयतक जीत राजाकी ही मालूम होती थी। पार्लमेण्टका दल किसी न किसी प्रकार अपना अस्तित्व ही स्थिर रख रहा था। ओलीवर क्राम्वेल जो पार्लमेण्टका बडा वीर और धर्मात्मा नेता था अपने दौर्बल्यको ताड गया था। उसने आरम्भमें ही हैम्पडनको सचेत कर दिया था कि तुम्हारी सेनामें अधिक बुड्ढे, अशक्त और दरिद्र लोग है किन्तु राजाकी सेनामें उच्चकुलके युवक और गुणी योद्धा हैं। क्या तुम समझते हो कि ऐसे निकम्मे मनुष्य जिनमें आत्म-गौरवका कुछ भी भाव नहीं है, अनुभवी पुरुषोंको पराजित कर सकेंगे? क्राम्वेलने उसी दिनसे ऐसे वीर पुरुषोंको इकट्ठा किया जो

* John Hotham　　† Chalgrove Field

धर्मभावके अतिरिक्त साहस और बलसे भी सम्पन्न थे। इसके अतिरिक्त पार्लमेण्टने स्काटलैण्डसे सहायता माँगी। स्काट लोग पहलेसे ही तैयार थे। वे समझते थे कि अंग्रेजोंको हराकर राजा स्काटलैण्डकी ओर धावा मारेगा। १८ आषाढ़ संवत् १७०१ (२ जुलाई १६४४) को मार्स्टनमूरपर स्काट और क्राम्वेलकी सेनाकी राजसेनासे मुठभेड़ हुई और राजाकी बड़ी भारी पराजय हुई। इस प्रकार उत्तरी प्रान्त पार्लमेण्टकी ओर हो गये।

परन्तु राजा भी बहुत कुछ यत्न कर रहा था। जब पार्लमेण्टकी ओर स्काट लोग हो गये तो राजाने आयर्लैण्डवालोंको मिला लिया। श्रावण १७०१ (अगस्त १६४४ ई०) में कार्नवालमें राजा जीत गया और अक्टूबरमें न्यूबरीकी दूसरी लड़ाई हुई जिसमें पार्लमेण्टके दलको ही हानि पहुँची।

पार्लमेण्टने अब अपनेको बलवान् बनानेके लिए नये उपाय सोचे। पादरी लाड संवत् १६९८ (१६४१ ई०) में कारागारमें पड़ा था। पौष संवत् १७०१ (दिसम्बर १६४४ ई०) से उसपर अभियोग चलाया गया और उसी संवत्के माघ मासमें अर्थात् (जनवरी १६४५ ई०) में उसका सिर काट लिया गया।

इस समय पार्लमेण्टमें दो दल थे, एक प्रेसूबिटेरियन और दूसरा इण्डिपेण्डेण्ट अर्थात् स्वतंत्र। दोनों पादरियोंके विरुद्ध थे और प्रार्थनापुस्तकको हटाना चाहते थे। परन्तु भेद यह था कि प्रेसूबिटेरियन लोग समस्त चर्चोंमें समता चाहते थे और स्वतन्त्रदल कहता था कि प्रत्येक पुरुषको, कमसे कम प्रत्येक प्योरिटनको, वह जैसे चाहे वैसे उपासना करनेकी स्वतन्त्रता दी जाय। पार्लमेण्टकी सेनाके बहुतसे अफसर प्रेसूबिटेरियन थे। वे स्वतंत्रदलकी बात माननेकी अपेक्षा राजासे सन्धि करनेको अधिक उत्सुक थे, अतः वे लड़नेमें भी कुछ

न कुछ जी ही चुगते थे। स्वतन्त्रदलका मुखिया क्राम्वेल था। इसने पार्लमेण्टमें एक प्रस्ताव पास किया, जिसे आत्मत्यागका प्रस्ताव* कहते थे। इसका प्रयोजन यह था कि पार्लमेण्टके वे सभासद् जो सेनाके अफसर भी हैं, सेनाके पदोंको त्याग दें। केवल क्राम्वेल एक विशेष प्रस्ताव द्वारा सेनामें रख लिया गया, क्योंकि उसके तुल्य योद्धा मिलना दुर्लभ था।

अब क्राम्वेलने सवत् १७०२ (१६४५ ई०) में सेनाका एक नया सघटन किया जिसे नवीन आदर्श (New Model न्यू माडल) कहते थे। क्राम्वेलकी सेना लोहदेह (Iron Side आयर्न साइड) कहलाती थी। नवीन आदर्शके अनुकूल क्राम्वेलने बीस हजार धार्मिक युवकोंको चुना जिनमें एक मनुष्य भी शपथखोर, मद्यपी अथवा अन्य अवगुणवाला न था। ये लोग भजन गाते हुए लडाईपर चलते थे।

नेस्बीके रणक्षेत्रमें राजसेनासे इन लोगोंकी मुठभेड हुई। क्राम्वेलके 'लोहदेह' दलके सामने कौन जीत सकता था? राजा हार गया परन्तु सबसे अधिक उसकी हानि यह हुई कि उसका एक निजी बक्स शत्रुके हाथ लग गया जिसमें बहुतसे गुप्त कागज थे। इसमें ऐसे पत्र भी थे जिनमें विदेशी राजाओंसे विद्रोही इंग्लैण्डको जीतनेकी प्रार्थना की गयी थी। रोमन कैथोलिकोंसे भी प्रतिज्ञा की गयी थी कि यदि तुम सहायता दो तो तुम्हें धार्मिक स्वतन्त्रता दे दी जायगी। इन पत्रोंने देश को उसके विरुद्ध भडका दिया और राजा वेल्जको भाग गया।

स्काटलैण्डमें राजसेनाने छ लडाइयाँ जीतीं परन्तु सवत् १७०२ (१६४५ ई०) में फिलीफो † के युद्धमें उसकी सेना सर्वथा पराजित हो गयी।

---

* Self denying Ordinance　　† Philiphaugh

अब चार्ल्सके छक्के छूट गये। उसने शस्त्र रख दिये और नीतिसे काम लेना चाहा। उसे प्रेसबिटेरियन लोगोंसे सहायताकी आशा थी, अत. उसने न्यू-आर्क * नामक स्थानमें अपनेको स्काट लोगोंके हवाले कर दिया और पार्लमेण्टसे समझौता करने लगा। परन्तु चार्ल्सकी नीति केवल धोखेबाजीकी थी। वह दोनों पक्षोंको लड़ाकर अपना प्रयोजन सिद्ध करना चाहता था। उसने एक बार लिखा था कि मैं निराश नहीं हूँ, मैं समझता हूँ कि प्रेस्बिटेरियन और स्वतन्त्र दलोंमेंसे एक अवश्य मेरी ओर हो जायगा और दूसरेको कर न देगा। इस प्रकार मैं फिर वास्तविक राजा हो जाऊंगा। इन चालाकियोंको सब समझ गये और यही चार्ल्सके नाशका कारण हुई।

जब पार्लमेण्ट और लोगोंने देखा कि चार्ल्स धोखा देना चाहता है तो माघ संवत् १७०३ (जनवरी १६४७ ई०) में स्काट सैनिकोंने ४ लाख पौण्ड अपना वेतन लेकर राजाको पार्लमेण्टके हवाले कर दिया और अपने देशको चले गये। चार्ल्सके अनुयायी कहा करते हैं कि स्काट लोगोंने अपने राजाको ४ लाख पौण्डके बदले बेच दिया। राजाको प्राप्त करके पार्लमेण्टने समझा कि अब युद्ध समाप्त होना चाहिये। अतः उसने सेनाको बर्खास्त करना चाहा। परन्तु सेना बर्खास्त न हुई क्योंकि उसका वेतन शेष था। इसके पश्चात् सेनाका आधिपत्य आरम्भ होता है।

सेनाने राजाको पकड़ लिया और हैम्पटन कोर्टमें कैद कर दिया परन्तु राजा वाइट टापूको भाग गया। उसका विचार था कि वाइट टापूका शासक उसका मित्र है, परन्तु यह

* Newark

उसको भूल थी। वहाँसे भी उसने भागना चाहा, परन्तु सफलता न हुई और वह सोलेण्ट* नदीके तटपर हर्स्ट कासल† में बन्द कर दिया गया। अब स्काटलैण्डवालोंने ड्यूक आव् हैमिल्टनके आधिपत्यमें राजाकी सहायताके लिए सेना भेजी। परन्तु क्राम्वेलकी सेनाने आषाढ़ संवत् १७०५ (जुलाई १६४८ ई०) में प्रेस्टन स्थानपर उसको तितरबितर कर दिया।

चार्ल्सकी कूटनीतिसे भी अब कुछ काम न चला। सेना अति क्रुद्ध हो गयी और लन्दनकी ओर बढ़ी। २१ मार्गशीर्ष १७०५ (७ दिसम्बर १६४८ ई०) को कर्नल प्राइड वेस्टमिन्स्टर हालमें आया। उसने समस्त हालमें अपनी सेना भर दी, और हाउस आव कामन्सके द्वारपर सभासदोंकी सूची लेकर खड़ा हो गया। केवल वे ही सभासद अन्दर जाने पाये जिनको प्राइडने चाहा। १०० के लगभग सभ्य जो राजासे सन्धि करना चाहते थे निकाल दिये गये। अब चार्ल्सके विरुद्ध काररवाई आरम्भ हुई। स्वतन्त्रदलके सभ्योंने पास किया कि राजापर देशद्रोही होनेका अभियोग चलाया जाय। हाउस आव लार्ड्सने इस बातको स्वीकार न किया, अत हाउस आव् लार्ड्स बन्द कर दिया गया। राजाके अभियोगके लिए विशेष न्यायालय नियत किया गया जिसके १३५ सभासद चुने गये। इनमें क्राम्वेल और उसका दामाद आयर्टन (Ireton) भी था।

६ माघ संवत् १७०५ (१६ जनवरी १६४६) को अभियोग आरम्भ हुआ। ६६ सभासद उपस्थित थे। ब्रैड्शा सभापति था। सभापतिके आज्ञानुसार कैदी लाया गया। राजा चुपचाप कुर्सीपर बैठ गया, परन्तु उसने टोपी नहीं उतारी और

* Solent　† Hurst Castle

घृणाकी दृष्टिसे देखता रहा। किसी सभासद्ने भी उसका सम्मान न किया, न कोई उठा और न किसीने टोपी ही उतारी। न्यायालयके क्लार्कने अपराधपत्र पढ़ा, जिसमें लिखा था कि चार्ल्स देशका शत्रु, घातक और अपनी जातिका वैरी है। चार्ल्स हँस पड़ा और उसने उत्तर देनेसे इनकार किया। उसने यह पूछा कि हाउस आव लार्ड्स कहाँ है? क्योंकि राजापर अभियोग चलानेका अधिकार केवल हाउस आव लार्ड्सको ही है। उसने स्पष्ट कह दिया कि इस न्यायालयकी स्थिति ही नियमविरुद्ध है, क्योंकि जिस पार्लमेण्टने इसे नियत किया है वह पार्लमेण्ट ही नहीं। पूरी पार्लमेण्टमें हाउस आव लार्ड्स, हाउस आव कामन्स और राजा, तीनोंकी स्थिति आवश्यक है। राजाका यह कथन तो सत्य था, परन्तु वह परिवर्त्तनका युग था, अत राजाकी सुनाई न हुई। सात दिन अभियोग चलता रहा। ३२ गवाहोंकी साक्षी हुई। अन्तमें न्यायालयने निश्चय किया कि १७ माघ १७०५ (३० जनवरी १६४६) को १० से ५ बजेके बीचमें इङ्गलैण्डनरेश चार्ल्स स्टुअर्टको शिरश्छेद द्वारा प्राणवधका दण्ड दिया जाय।

१७ माघ (जनवरी) के प्रातःकाल चार्ल्सको सेण्ट जेम्स महलसे व्हाइट हालमें लाये। उस दिन ठढ अधिक थी। टेम्स नदीका जलतक जम गया था। राजा दुहरे कपड़े पहने हुए था तो भी उसे जाड़ा मालूम होता था। वह महलसे १० बजे चला और व्हाइट हालमें तीन घण्टेतक ईश्वरोपासना करता रहा। शिरश्छेद करनेका स्थान लोगोंसे भरा था। चारों ओर सिपाही खड़े थे। गलियों और घरोंकी छतोंपर दर्शकगण खड़े थे। राजाकी चालढाल इस समय भी वीरतायुक्त थी। एक ही चोटमें उसका सिर धड़से अलग हो गया। जल्लादने

जब सिर उठाकर नियमानुसार कहा "यह देशके शत्रुका सिर है" तब उपस्थित जनताके मुखोंसे शोकके शब्द सुनाई देने लगे।

इंग्लैण्डके एक महान् सम्राट्के जीवनका इस प्रकार अन्त हुआ। परन्तु यह नहीं समझना चाहिये कि चार्ल्समें कोई गुण न थे। उसका पारिवारिक जीवन बहुत शुद्ध था। स्त्री और बच्चोंसे उसे स्नेह था। प्रजापर भी वह अत्याचार करना नहीं चाहता था। परन्तु हठ, दुराग्रह और अभिमान तथा अनुचित नीतिने प्रजाको उसके विरुद्ध कर दिया। बालहठ, तिरियाहठ और राजहठ प्राचीन समयसे प्रसिद्ध हैं। परन्तु प्रजाहठ एक चौथा हठ है जिसकी ओर वर्त्तमान राजाओंको विशेष ध्यान देना चाहिये। अन्तमें यही कहना पड़ता है कि चार्ल्सके दुर्भाग्यके दिन थे। उसकी मृत्युपर उसके शत्रुओंने भी आँसू बहाये। क्राम्वेल स्वयं रात्रिको राजाका शव देखने आया और कहने लगा "हा! क्रूर आवश्यकता!" [Cruel necessity]

चार्ल्सने मृत्युके समय जो वीरता दिखायी वह उसके समस्त जीवनमें नहीं पायी जाती। या यों कहिये कि अन्त समयमें उसमें राजसी गुण अधिक आ गया। मृत्युके समय उसके दो लड़के चार्ल्स और जेम्स अपनी माता सहित विदेशमें थे, उसकी लड़की एलीजबिथ और छोटा लड़का हेनरी, ये दो ही उसके समीप थे। एलीजबिथसे अन्तमें उसने यही कहा कि अपनी मातासे कह देना कि मुझे अन्ततक उनका स्नेह रहा। हेनरी उस समय १० वर्षसे भी छोटा था। उसने सुन रखा था कि लोग 'हेनरी' को गद्दी देना चाहते हैं, अतः उसने हेनरीसे कहा "बच्चा, देखो। ये लोग तुम्हारे पिताका शिर काटना चाहते हैं। ये मेरा शिर काटकर शायद तुमको गद्दी दें। परन्तु मेरी बात स्मरण रखो कि

जब तक तुम्हारे बड़े भाई चार्ल्स और जेम्स जीवित रहें तुम गद्दी न लेना, क्योंकि जब ये पा सकेंगे तो तुम्हारे भाइयोंका सिर काट लेंगे और अन्तमें तुम्हारा भी। अत: मेरी शिक्षा है कि तुम इनके हाथसे राजगद्दी न लेना।" हेनरीने उत्तर दिया "कभी नहीं, चाहे ये मेरी बोटी बोटी क्यों न उड़ा दें।"

चार्ल्सके निरङ्कुश और दोषयुक्त राज्यमें भी देशकी वृद्धि बहुत हुई। व्यापार बढ़ने और सुगमतापूर्वक होने लगा। संवत् १६६२ (१६३५ ई०) में इंग्लैण्ड और स्काटलैण्डके लिए एक डाकखाना स्थापित किया गया। संवत् १७०६ (१६४६ ई०) में यह नियम हो गया कि सप्ताहमें एक बार डाक मुख्य नगरोंमें अवश्य पहुँच जाया करे। संवत् १६६६ (१६४२ ई०) में तस्मन नामक एक डचने तस्मानिया टापूकी खोज की जो आस्ट्रेलियाके दक्षिणमें है।

आठवाँ अध्याय।

ऑलीवर क्राम्वेल।

संवत् १७०६ से १७१५ (१६४६ ई० से १६५८ ई०) तक ऑलीवर क्राम्वेल इंग्लैण्डके अद्भुत प्रसिद्ध पुरुषोंमें गिना जाता है। उसका जन्म हण्टिङ्गडनमें संवत् १६५६ (१५९९ ई०) में हुआ था। वह यूनानी और रोमन इतिहासका विद्वान् था। लैटिन भाषाका उसे अच्छा ज्ञान था। संवत् १६८५ (१६२८ ई०) में वह पहले पहल पार्लमेण्टका मेम्बर

हुआ और उस समयसे राजकीय विषयमें उसकी अधिक रुचि हो गयी। परन्तु वह कुछ लज्जाशील था, स्वयं आगे बढ़ना नहीं चाहता था। हां, जब किसी कार्य्यको ग्रहण कर लेता तो उसे करके छोड़ता। धार्मिक विचारसे वह स्वतन्त्र दलका-प्योरिटन था और लोग उसे 'महान् स्वतन्त्र—दि ग्रेट इंडिपेंण्डेण्ट' कहा करते थे। जब राजा और पार्लमेण्टमें लड़ाई शुरू हुई तो उसने पार्लमेण्टका साथ दिया। सवत् १७०० (१६४३ ई०) में वह सेनाका कर्नल होगया, पार्लमेण्टको विजय-प्राप्तिमें सबसे अधिक भाग क्राम्वेलका ही था। उसीने नवीन आदर्श सेना बनायी थी। उसके सिपाही अपनी वीरताके कारण 'लोहदेह' कहलाते थे। क्राम्वेल जिस लड़ाईमें गया उसमें अवश्य विजय हुई। सवत् १७०६ (१६४६ ई०) में चार्ल्सके शिरश्छेदके पश्चात् क्राम्वेल इंग्लैण्डका एक अद्वितीय पुरुष हो गया। इस समय राजा तो कोई था ही नहीं, सेनाका ही सम्पूर्ण आधिपत्य था। अब प्रश्न यह था कि राजसत्ता किस प्रकार रहे, क्योंकि सेनाका आधिपत्य अधमतम आधिपत्य है। सेना तो केवल बाह्य आक्रमणोंसे रक्षा कर सकती है। सेनाका प्रबन्धसे क्या सम्बन्ध।

इस समय दीर्घ पार्लमेण्ट ही चली आती थी। परन्तु वह भी पूरी न थी क्योंकि प्राइडने बहुतसे सभासदोंको निकाल दिया था। हाउस आव लार्ड्स बन्द ही हो चुका था। हाउस आव कामन्सके इन शेष सभासदोंने इस समय ४६ सभासदोंकी 'एक प्रबन्धकर्त्री सभा' (ए काउंसिल आफ स्टेट) स्थापित की। और एक प्रस्ताव पास किया गया कि हाउस आव लार्ड्स अनावश्यक तथा हानिकारक है उसे, तोड़ देना चाहिये और किसीको राजा बनाना देशद्रोह है। राजमुहर

हटा दी गयी। दूसरी मुहर बनायी गयी जिसपर ये शब्द अङ्कित थे "ईश्वरकी कृपासे स्वतंत्रताका प्रथमाब्द १६४८ ई०"* संवत् १७०६ के ज्येष्ठमास (मई० १६४९ ई०) में व्यवस्था दे दी गयी कि इङ्गलैण्ड 'प्रजापालित राज्य' (कामनवेल्थ) हो गया। सेनाका अधिपति फेरफैक्स था और क्राम्वेल सहायक अध्यक्ष था। परन्तु क्राम्वेल पार्लमेण्ट तथा प्रबन्धकर्त्री सभा-का भी सभ्य था अतः उसकी शक्ति बहुत बढ गयी थी।

संवत् १७०६ के ज्येष्ठ (१६४९ ई० के मई) मासमें सेना-में विद्रोह हुआ। बहुतसे लोग चाहते थे कि लोगोंमें यह भेद न रहे, सब समान हो जायँ। क्राम्वेलने इस विद्रोहको शीघ्र मिटा दिया।

परन्तु आयर्लैण्डमें आठ वर्षसे विद्रोह मच रहा था। लन्दनदरी (Londonderry), डबलिन और बेलफास्ट ही केवल पार्लमेण्टकी ओर थे। शेष सब चार्ल्सके लडकेके लिए रक्त बहानेपर कटिबद्ध थे। इनका दमन करना दुस्तर था। क्राम्वेल दस हज़ार सिपाही लेकर आयर्लैण्ड गया और ड्रोगेडा (Drogheda) तथा वैक्सफोर्डमें रक्तकी धारा बहा दी। हजारों कैद करके पश्चिमी द्वीपसमूह (अमेरिका) को भेज दिये गये। राजदलवालोंकी भूमि छीन ली गयी और वे 'कनाट' प्रान्तमें निकाल दिये गये जहाँ वे भूखों मरने लगे। अलस्टर, मन्स्टर तथा लीन्स्टरपर पार्लमेण्टका आधि-पत्य हो गया।

अब स्काटलैण्डकी बारी आयी। संवत् १७०७ (१६५० ई०) में वहाँके राजभक्तोंमें कुछ मतभेद था। माण्टरोज (Montrose) और उसके साथी चार्ल्सके लडके कुमार चार्ल्सको

*The 1st year of freedom, by God's blessing, restored 1648

गद्दीपर बैठाना चाहते थे, परन्तु अर्गिल (Argyll) और उसके अनुयायी जो प्रेस्बिटेरियन थे यह चाहते थे कि चार्ल्सको उस समयतक गद्दी न दी जाय जबतक वह सब शर्तें न मान ले। ज्येष्ठ सवत् १७०७ (मई १६५० ई०) में माण्टरोज मारा गया और चार्ल्सको शर्तें स्वीकार करनी पडीं। ये शर्तें बडी वेढब थीं। उसे नित्य बडी देरतक उपासना करनी पडी। कई दिन उपवास कराया गया और बहुतसे उपदेश सुनने पडे। किसी किसी दिन तो लगातार छ उपदेशोंमें सम्मिलित होना पडा परन्तु सबसे अधिक बात यह थी कि उसको एक पत्रपर हस्ताक्षर करना पडा, जिसमें लिखा था कि मैंने जो कुछ आयर्लेण्डमें किया वह सब अधर्म था। मेरा पिता घातक था और मेरी माता मूर्तिपूजक थी। चार्ल्स कहता है कि इस पत्रपर हस्ताक्षर करके फिर मुझे अपनी माताको मुँह दिखानेमें भी लज्जा आती रही। परन्तु राज्यके लिए यह सब कुछ किया गया और चार्ल्स, द्वितीय चार्ल्सके नामसे, स्काट-नरेश हो गया।

यह देखकर इग्लैंडकी पार्लमेंटको चिन्ता हुई और सवत् १७०७ के श्रावण (जुलाई १६५० ई०) म क्राम्वेल भेजा गया। क्राम्वेलने आश्विन सवत् १७०७ (सितम्बर १६५० ई०) में डम्बर (Dumber) में स्काटलेंडवालोंको हरा दिया, परन्तु इस पराजयसे द्वितीय चार्ल्सकी दशामें कुछ परिवर्त्तन न हुआ। १७ पौष १७०७ (पहली जनवरी १६५१) को स्कोन-में उसका अभिषेकोत्सव भी मनाया गया परन्तु १८ भाद्र १७०८ (३ सितम्बर १६५१) को क्राम्वेलने वोर्सेस्टरमें राजदल-को इतना पददलित किया कि समस्त स्काटलेंड उसके अधीन हो गया और द्वितीय चार्ल्स बाल बाल बचकर फ्रांस भाग

गया। इस प्रकार इंग्लैंड, स्काटलैंड और आयर्लैंड तोनों इंग्लिश-पार्लमेंट तथा इंग्लिश-सेनाके कब्जेमें आ गये।

अब आन्तरिक प्रबन्धोंका प्रश्न आया। यदि पार्लमेंट ही देशपर राज्य करती तो उस पार्लमेंटकी आवश्यकता थी जिसमें समस्त देशके प्रतिनिधि होते। दीर्घ पार्लमेंटमें यह गुण न था क्योंकि उसके बहुतसे सभासद निकाले जा चुके थे। अतः क्राम्वेल तथा सेनाको यह सम्मति हुई कि दीर्घ पार्लमेंट समाप्त कर दी जाय और फिरसे नई पार्लमेंटका निर्वाचन हो। परन्तु वर्त्तमान सभासदोंको यह स्वीकार न था। उनको भय था कि यदि हम पुनर्निर्वाचित न हुए तो हमारी शक्ति घट जायगी। अतः एक प्रस्ताव पास किया गया कि दो वर्षतक इस पार्लमेंटका अन्त न हो और नयी पार्लमेंटमें प्राचीन सदस्य अवश्य स्थान पावें। क्राम्वेलको यह बात बहुत बुरी मालूम हुई और संवत् १७१० के वैशाख (१६५३ ई० के अप्रेल) में वह कुछ सैनिकों सहित सभाभवनमें घुस गया और सभासदोंको उनके दोष दिखला कर सभा भवनसे बाहर निकाल दिया। इस प्रकार दीर्घ पार्लमेंट समाप्त हो गयी।

इसी वर्षके श्रावण (जुलाई) में क्राम्वेलने एक और सभा को जिसका निर्वाचन प्रजाने नहीं किया, किन्तु जिसके सभासदों-को क्राम्वेल तथा अन्य अफसरोंने ही नियुक्त कर लिया था। इसको बेयरबोन्स पार्लमेंट कहते हैं क्योंकि इसका एक सभासद बेयरबोन था। परन्तु इस सभासे कुछ भी न हुआ और संवत् १७१० के पौष (दिसम्बर १६५३ ई०) में समस्त प्रबन्ध क्राम्वेल-के हाथमें छोड़कर सब सभ्योंने स्वयं ही पद-त्याग किया।

अब सेनाके मुख्य मुख्य पदस्थ एकत्र हुए और उन्होंने एक नयी संस्था स्थापित की जिसे 'प्रबन्धक संस्था' (इन्स्ट्रुमेण्ट

आफ गवर्नमेंट Instrument of Government) कहना चाहिये। इसके तीन अङ्ग थे—(१) एक मुखिया जिसे "संरक्षक" (प्रोटेक्टर) कहते थे, (२) ग्रेट ब्रिटेन आयर्लैंडकी निर्वाचित की हुई एक पार्लमेण्ट, (३) प्रबन्धकर्त्री सभा जिसके सभ्योंको चुननेका अधिकार संरक्षक तथा पार्लमेंटको था। सेना और पोतका अध्यक्ष ही संरक्षक बनाया गया और यह निश्चय हुआ कि पार्लमेंट हर तीसरे वर्ष हुआ करे और कर लगाने तथा नियम बनानेका अधिकार उसीको हो।

क्राम्वेल संवत् १७१० के पौष (१६५३ ई० के दिसम्बर) मासमें संरक्षक नियत हुआ। सबसे पहला कार्य उसने वह किया जिससे इङ्गलैण्डका यूरोपभरमें मान हो गया। तीस बरसी युद्धका १७०५ (१६४८ ई०) में ही अन्त हो चुका था। जर्मनी, स्वीडन तथा हालैण्डमें सन्धि हो चुकी थी, परन्तु फ्रांस और स्पेन अभी लड रहे थे। जर्मनी और स्पेनका तो प्राय. नाश ही हो चुका था पर फ्रांसकी शक्ति बढ़ती चली जा रही थी। डच लोग स्पेनके स्वत्वसे मुक्त हो चुके थे और उन्होंने समुद्र-यात्रा तथा व्यापारमें उन्नति कर ली थी। अंग्रेजों और डचोंमें संवत् १७०८ (१६५१) से युद्ध हो रहा था। परन्तु संवत् १७११ के वैशाख (१६५४ ई० के अप्रैल) में अंग्रेज जीत गये और डच लोगोंने क्राम्वेलसे सन्धि कर ली। इस प्रकार इङ्गलैण्डका समुद्रपर आधिपत्य हो गया।

अब क्राम्वेलने मुख्यतः तीन बातोंकी ओर ध्यान देनेका प्रयत्न किया—(१) प्रजापालित राज्य स्थित रहे, (२) प्रोटेस्टेण्ट धर्ममें बाधा न हो, (३) इङ्गलैण्डके व्यापारमें उन्नति हो। द्वितीय उद्देशकी पूर्तिके लिए उसने स्वीडन और हालैण्ड देशोंसे सन्धि कर ली। ये दोनों देश प्रोटेस्टेण्ट धर्मके प्रसिद्ध

अनुयायी थे और उन्होंने क्राम्वेलको इस-धर्मका अगुआ स्वीकार कर लिया। इस प्रकार क्राम्वेलकी धाक समस्त यूरोपमें बैठ गयी।

अब फ्रांस और स्पेन भी उसकी मित्रताके इच्छुक हुए। पहले उसने स्पेनसे कहा कि तुम इंग्लैंण्डके व्यापारियोंको अपने उपनिवेशोंमें स्वतंत्रतासे व्यापार करने दो और वे मत-भेदके कारण सताये न जायँ। चूँकि स्पेनको यह बात स्वीकार न थी अतः उसने स्पेनसे युद्ध छेड़ दिया।

फिर उसने संवत् १७१४ (१६५७ ई०) में फ्रांससे इस शर्तपर सन्धि कर ली कि उसके अधीनस्थ सेवाय-नगरके प्रोटेस्टेण्ट सताये न जायँ। स्पेनकी लड़ाईमें उसकी विजय हुई। संवत् १७१२ (१६५५ ई०) में जमैका टापू उनसे ले लिया गया। आषाढ़ संवत् १७१५ (जून १६५८ ई०) में डूनकर्क भी ले लिया गया। यह प्रान्त फ्लैण्डर्समें है।

परन्तु क्राम्वेलको आन्तरिक प्रबन्धमें कभी सफलता न हुई। प्रबन्ध संस्थाके अनुसार उसने संवत् १७११ के आश्विन मास (सितम्बर १६५४ ई०) में एक पार्लमेंटका निर्वाचन कराया परन्तु उससे इसकी न बनी और चार महीनेमें ही वह तोड़ दी गयी। संवत् १७१३ (१६५६ ई०) में एक और पार्लमेण्ट हुई। क्राम्वेलने इसके भी १०० सभासदोंको निकाल दिया। जो शेष रहे वे सब क्राम्वेलके कहनेमें थे। उन्होंने प्रस्ताव पास किया कि क्राम्वेल राजा बना दिया जाय परन्तु क्राम्वेलके विरोधी बहुत थे अतः उसने राजा होना स्वीकार न किया। फाल्गुन संवत् १७१४ (फरवरी १६५८ ई०) में यह पार्लमेण्ट भी तोड़ दी गयी। सात महीने पीछे क्राम्वेल भी मर गया।

नवाँ अध्याय ।

राजसत्ताका पुनरुत्थान ।



लीवर क्राम्वेलकी मृत्युपर उसका लड़का रिचर्ड क्राम्वेल इग्लैण्डका संरक्षक नियत हुआ। यद्यपि यह भी धर्मात्मा था परन्तु इसमें प्रबन्ध करनेकी योग्यता या शक्ति कुछ भी न थी। इसने संवत् १७१६ (१६५६ ई०) में विना हाउस आव लार्ड्सको एक पार्लमेण्ट निर्वाचित करायी। परन्तु सेनाने उसे और पार्लमेण्ट दोनोंको निकाल बाहर किया। अब सेनाने दीर्घ पार्लमेण्टके उन सभासदोंको बुलाया जो अभी जीवित थे परन्तु उनकी कार्यावली भी सेनाको रुचिकर नहीं हुई। अत वे भी निकाले गये और सेनाके पदाधिकारियोंने स्वय ही राज्य करना शुरू किया। परन्तु प्रजाने कर देनेसे इनकार कर दिया।

इस अन्धकारके समयमें लोगोंको विश्वास होगया कि सेनाका राज्य अनुचित ही नहीं किन्तु असभव भी है। स्काटलैण्डकी सेनाका अध्यक्ष जार्ज मौंक था। उसने लन्दनमें आकर यह शोचनीय अवस्था देखी और एक ऐसी स्वतन्त्र पार्लमेण्टके निर्वाचनकी घोषणा कर दी जो सेनाके अधीन न हो।

दीर्घ पार्लमेण्ट स्वय ही समाप्त हो गयी और संवत् १७१७ (१६६० ई०) में जो नयी पार्लमेण्ट बनी उसने प्रथम चार्ल्सके पुत्र राजकुमार चार्ल्सको जो संवत् १७०७ (१६५० ई०) में कुछ दिनोंके लिए स्काटलैण्डका राजा भी हो गया था, फिर बुला लिया और वह द्वितीय चार्ल्सके नामसे ग्रेट ब्रिटेन तथा

आयर्लैण्डका राजा बनाया गया। इस प्रकार ११ वर्षके पश्चात् इग्लैण्डमें राजत्वका पुनरुत्थान हो गया।

परन्तु चार्ल्स अपने बापके समान धर्मात्मा नहीं था। सदा विषय-भोगमें पड़ा रहा करता था। उसका कथन था कि मनुष्यके लिए सत्याचरण और स्त्रीके लिए सतीत्व केवल ढोंग है। वह फ्रांसमें रह चुका था और वहाँकी विषय विलास मयी सगतिने उसका विचार पलट दिया था। उसकी प्रकृति नीच हो गयी थी। उसने अपने पिताके जीवन तथा उसकी मृत्युसे केवल एक शिक्षा ग्रहण की थी, वह यह कि यदि प्रजा हठ करे तो उसे रोकनेका यत्न न करना चाहिये। वह नित्य सबसे हँस कर बोलता था। जब वह पहले पहल डोवरमें आया और लोगोंने बड़े समारोहसे उसका स्वागत किया तब वह कहने लगा "यह मेरा ही दोष है कि मैं पहले नहीं आया, क्योंकि मुझे यहाँ कोई ऐसा पुरुष नहीं मिलता जो सदा मेरे आगमनको अच्छा न समझता रहा हो।"

राजसत्ताके पुनरुत्थानका सबसे पहला कार्य तो स्वभावत यही था कि गत ग्यारह वर्षकी काररवाई रद्द कर दी जाय। अत सेनाकी तीन पलटनें रखकर शेष बर्खास्त कर दी गयीं। जिस न्यायालयने प्रथम चार्ल्सके शिरश्छेदकी आज्ञा दी थी उसके समस्त सभासदोंको प्राणदण्ड दिया गया। सबसे घृणित बात यह की गयी कि सभापति ब्रैडशा और क्राम्वेलकी कबरोंमेंसे भी उनके शव निकाल कर फाँसी पर चढाये गये। पादरी नियत किये गये और जो पार्लमेण्ट निर्वाचित हुई उसमें सब राजदलके लोग, कैवेलियर्स, थे। ग्यारह वर्षतक प्योरिटन लोगोंकी चलती रही। अब उनको समूल नष्ट करनेकी ठान ली गयी। इग्लिशचर्चकी प्राचीन प्रार्थनाएँ प्रचलित होगयीं

और जिन पुरोहितोंने प्रार्थना पढनेसे इनकार किया वे अपने हलकोंसे निकाल दिये गये। इस समय धार्मिक जगत्में एक और दल खडा हुआ। प्योरिटन लोग इंग्लिश चर्चमें रह कर उसे सुधारना चाहते थे। परन्तु नये दलके लोग इंग्लिश चर्चसे अपना कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहते थे। अत॰ वे डिसेण्टर* या पृथक् दलस्थ कहाते थे। डिसेण्टर लोगोंको किसी भी धर्म मन्दिर या घरमें प्रचार करनेकी आज्ञा न थी। एक नियम पास हो गया कि एक घरके लोगोंके अतिरिक्त पाँचसे अधिक पुरुष प्रार्थनार्थ कहीं एकत्र न हों। डिसेण्टर पुजारी जो किसी नगरके पाँच मीलके भीतर आता वही दण्डनीय होता। जोन बनियन † एक प्रसिद्ध डिसेण्टर था जिसने प्रचार करना न छोडा और इसलिए उसे बारह वर्ष कारागारमें रहना पडा। कारागारमें ही उसने एक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी जिसका नाम पिलग्रिम्ज प्रोग्रेस अर्थात् 'तीर्थयात्रीकी यात्रा' है। यह एक शिक्षायुक्त धार्मिक उपन्यास है। दूसरा विद्वान् प्योरिटन जिसे राजत्वके पुनरुत्थानसे हानि हुई महाकवि मिल्टन था। उसने गद्यमें भी राजाके विरुद्ध कई पुस्तकें लिखीं। अन्तमें वह अन्धा होगया। इसी अन्धेपनकी अवस्थामें उसने अपने 'स्वर्गवियोग' (Paradise Lost पैरेडाइज लॉस्ट) और 'स्वर्गका पुनर्मिलन' (Paradise Regained पैरेडाइज रिगेण्ड) नामक प्रसिद्ध महाकाव्य लिखे।

संवत् १७२१ (१६६४ ई०) में डच लोगोंसे फिर युद्ध छिड गया, क्योंकि अंग्रेजों और डचोंमें व्यापारके लिए झगडा चला आता था। पार्लमेण्टने जो रुपया युद्धके लिए चार्ल्सको दिया, वह उसने विषय-भोगमें उडा दिया। डच लोगोंसे सन्धिके

*Dissenter † John Bunyan

सम्बन्धमें बातचीत होने लगी। चार्ल्स रुपयेका तो भूखा था ही, उसने झट नाविकोंको बर्खास्त कर दिया और रुपया स्वयं खा गया। वे समझे कि अब सन्धि हुई रखी है। परन्तु डच लोगोंने इससे लाभ उठाया। उनके पोत मैडवे [Medway] नदीके मुहानेपर घुस आये। वे तीन अंग्रेजी पोतोंको जलाकर एकको ले गये। थोडे दिनोंतक उन्होंने टेम्स नदीको घेर लिया और लन्दनवालोंका जाना आना रुक गया। उस समय सब लोग क्राम्वेलको याद करने लगे, क्योंकि यदि क्राम्वेल होता तो किसीकी मजाल न थी कि इंग्लैण्डपर इस प्रकार आक्रमण करता। चार्ल्सने सवत् १७२४ (१६६७ ई०) में उनसे ब्रेडामें सन्धि कर ली।

ये सब बातें पार्लमेण्टको बुरी लगीं। अबतक राजाका महामन्त्री क्लैरेण्डन था। सवत् १७२४ (१६६७ ई०) में वह हटा दिया गया और क्लिफर्ड, आर्लङ्गटन, बकिंघम, एशले तथा लाडरडेल ये पॉच मन्त्री बनाये गये। इनके नामोंके प्रथमाक्षर मिलाकर अंग्रेजोंका कैबल [Cabal] शब्द बनता है अतः इसको "कैबल मन्त्रिमण्डल" (केबल मिनिस्ट्री) कहते थे। ये मन्त्रिगण भिन्न भिन्न विचारके थे। क्लिफर्ड कैथोलिक था। आर्लिङ्गटनका कोई विशेष मत न था। एशले और बकिंघम डिसेण्टरोंसे सहानुभूति रखते थे।

पार्लमेण्ट इनके विरुद्ध थी। वह यह नहीं चाहती थी कि कैथोलिक या डिसेण्टर लोग बल पकड़ जायँ। यदि कैथोलिक बल पकड पाते तो फ्रांस नरेश चौदहवॉ लुई उनकी सहायताके लिए सेना भेज देता। चार्ल्सके विचार भी सन्दिग्ध अवस्थामें थे। उसने सवत् १७२५ (१६६८ ई०) में यह दिखलानेके लिए कि मुझे प्रोटेस्टेण्टोंका बहुत ध्यान है डच

और स्वीडनवालोंसे सन्धि कर ली जिसे त्रिगुट सन्धि (ट्रिपल एलायन्स) कहते हैं। इस सन्धिका प्रयोजन था कैथोलिक फ्रांस नरेशकी शक्तिको बढ़नेसे रोकना। परन्तु संवत् १७२७ (१६७० ई०) में उसने फ्रांस नरेशसे डोवरमें एक गुप्त सन्धि की जिसमें अपनेको कैथोलिक धर्मका अनुयायी बताया और फ्रांस नरेशने प्रतिज्ञा की कि यदि चार्ल्सकी प्रजा विद्रोह करे तो सहातार्थ वह सेना भेज देगा।

फ्रांस-नरेश लुई तो चार्ल्सको पहलेसे ही गुप चुप रुपया भेजा करता था और चार्ल्सकी प्रतिज्ञा थी कि मैं कैथोलिक अंग्रेजोंकी सहायता करूँगा। इसका अधिक फल १७३५ (१६७८ ई०) में निकला जब उसने क्षमाकी घोषणा (डिक्लेरेशन आव इन्डलजेन्स) निकाली। इस 'घोषणा' के अनुसार कैथोलिक और डिसेण्टर दोनोंके विरुद्ध पास किये हुए नियम शिथिल कर दिये गये।

पार्लमेण्टको यह बहुत बुरा लगा। उसने राजाको घोषणा लौटानेके लिए मजबूर किया। इसके अतिरिक्त परीक्षा विधान (Test act टेस्ट एक्ट) भी संवत् १७३० (१६७३ ई०) में पास हुआ जिसके अनुसार प्रत्येक राजकर्मचारीको कैथोलिक धर्मके मुख्य सिद्धान्तोंका निषेध करना आवश्यक होगया। इस नियमसे 'कैबल' मन्त्रिमण्डलका अन्त हो गया। ऐशले जो उस समय अर्ल आफ शैफ्टसबरी था बर्खास्त कर दिया गया। शैफ्टसबरी उसी समयसे राजाका परम शत्रु हो गया।

अब डैम्बी (Damby) मन्त्री बना। यह सहिष्णुताका विरोधी और फ्रांस-नरेशका शत्रु था। इसने मन्त्रीपदपर आते ही डच लोगोंसे सन्धि कर ली और प्रोटेस्टेण्ट धर्मको एक और लाभ पहुँचाया। चार्ल्सका छोटा भाई जेम्स कैथोलिक

था। वह अबतक पोतोंका अध्यक्ष था परन्तु "परीक्षा-नियम" (टेस्ट एक्ट) पास होनेके पश्चात् उसे भी पद-त्याग करना पड़ा था। उसकी दोनों लड़कियाँ मेरी और एन प्रोटेस्टेण्ट थीं। डेम्बीकी अनुमतिसे बड़ी लड़कीका विवाह औरेंजके राजकुमार विलियमके साथ हो गया। विलियम द्वितीय चार्ल्सकी बड़ी बहिनका लड़का था, अत: यदि जेम्स और उसकी लड़कियाँ न रहतीं तो उनके पश्चात् राज्यका अधिकारी वही होता। इस विवाहसे जेम्सके पश्चात् ही वह राज्याधिकारी हो गया क्योंकि चार्ल्स और जेम्स दोनों नि:सन्तान थे। विलियम उन सब छोटे छोटे राज्योंका अगुआ गिना जाता था जो फ्रांस नरेशकी वृद्धिको रोकना चाहते थे। अत: यह भी सम्भावना थी कि फ्रांससे युद्ध छेड़ दिया जाय परन्तु दो बातें इसकी बाधक थीं, प्रथम तो चार्ल्स गुप्त रीतिसे फ्रांसका बहुत रुपया खा चुका था और उसे फ्रांसके विरुद्ध होनेका साहस न होता था। दूसरे पार्लमेण्ट डरती थी कि सेना पाकर चार्ल्स उद्दण्डता न करे।

इतनेमें एक और गुल खिल गया। भाद्रपद संवत् १७३५ (अगस्त १६७८) में टाइटस ओटीज (Titus Oates) नामक एक पुरुषने खबर उड़ा दी कि कैथोलिक लोग राजाको मारनेके लिए गुप्त विचार कर रहे हैं। शेफ्ट्सबरीने इस विचारको और पक्का कर दिया। यद्यपि टाइटस झूठा था, परन्तु उसकी झूठ बात ऐसी उड़ी कि समस्त देशमें कोलाहल मच गया। टाइटसके संकेत मात्रपर बहुतोंके गले घोंटे गये। द्वितीय चार्ल्स यद्यपि वस्तुत: कैथोलिक था, तथापि उसमें इतना साहस कहाँ था कि निर्दोष कैथोलिकोंको प्राण दंड देनेके आज्ञापत्रपर हस्ताक्षर न करता। टाइटसने यहाँ

तक बात उड़ायी कि रानी स्वयं अपने पतिको विष देना चाहती है।

अब फ्रांस नरेशने भी देख लिया कि चार्ल्सपर किसी प्रकारका विश्वास करना पर्वतपर कुआँ खोदना है। वह चार्ल्सकी चालाकियोंसे अति क्रुद्ध हो गया। और जब चार्ल्सने अपनी भतीजी मेरी फ्रांसके शत्रुसे व्याह दी तो उसके क्रोधकी सीमा न रही। अब उसने ठान लिया कि चार्ल्सको अपमानित करना चाहिये। अतः उसने उस गुप्त सन्धिको प्रकट कर दिया जो उसमें और चार्ल्समें हुई थी, जिसके अनुकूल चार्ल्सको ६० पौंड मिलने थे। यह सुनकर समस्त देशकी आँखें खुल गयीं और उसके पिता प्रथम चार्ल्सकी चालाकियाँ याद आने लगीं। बेटा बापसे कुछ कम न निकला। अब सबने यह विचार किया कि किसी प्रकार कैथोलिकोंकी प्रबलता रोकनी चाहिये। इस प्रयोजनकी सिद्धिके लिए पार्लमेण्टसे एक नियम पास हुआ कि रोमन कैथोलिक लोग हाउस आव लार्ड्स तथा हाउस आव कामन्सके सभासद न होने पावें। इसके अतिरिक्त शैफ्ट्सबरीने एक प्रस्ताव पास किया जिसे 'बहिष्कार-प्रस्ताव' (एक्सक्लूज़न बिल) कहते हैं। इसके अनुसार चार्ल्सका छोटा भाई जेम्स कैथोलिक होनेके कारण चार्ल्सका उत्तराधिकारी न माना गया और उसकी जगह चार्ल्सके नाजायज पुत्र ड्यूक आव मानमौथको गद्दीपर बैठाया जाना प्रस्तावित हुआ। परन्तु यह प्रस्ताव कई कारणोंसे पास न हो सका। प्रथम तो चार्ल्सने अपने भाईके अधिकारकी पुष्टि की। दूसरे वह मेरीके पति विलियम मानमौथकी अपेक्षा अपने श्वशुरको गद्दी दिलाना अच्छा समझता था। इस समय इङ्गलैण्डके नीतिज्ञोंके दो दल हो गये। एक ह्निग्

और दूसरा टोरी। शैफ्टसबरीके अनुयायी, जो बहिष्कार-प्रस्तावके पक्षमें थे, व्हिग और जेम्सके-पक्षके टोरी कहलाने लगे। कुछ दिनों पश्चात् उदार दलके लोगोंका नाम व्हिग और अनुदार दलके लोगोंका नाम टोरी हो गया। बहिष्कार प्रस्तावके पास न होनेपर व्हिग लोगोंने चार्ल्स और जेम्स दोनोंको 'राई हाउस' (Rye House) में मार डालना चाहा परन्तु षड्यन्त्रका पता चल गया। लार्ड रसिल और एल जर्नन सिडनी जो निर्दोष थे पकडे गये और उनको प्राणदण्ड दिया गया। ड्यूक आव मानमौथ देश छोडकर भाग गया। शैफ्टसबरी हालैंड चला गया और वहीं मर गया।

इस प्रकार व्हिग लोगोंका बल नष्ट हो गया और राजा मनमानी करने लगा। उसने नियमविरुद्ध जेम्सको फिर जल सेनाका अध्यक्ष बना दिया और बिना पार्लमेण्टके राज्य करने लगा।

द्वितीय चार्ल्सके समयमें चार पार्लमेण्टोंका निर्वाचन हुआ। सबसे बडी दीर्घ पार्लमेण्ट थी जिसने चार्ल्सको बुलाया था। यह साढ़े सत्रह वर्षतक रही और लार्ड डम्बीके पदच्युत होनेपर तोड दी गयी। सवत् १७३६, ३७ और ३८ (१६७९, ८० और ८१ ई) में तीन और पार्लमेण्टोंका निर्वाचन हुआ। ये थोडे थोडे दिन रहीं और चूकि इनमें व्हिग् लोगोंकी प्रबलता थी अत: राजा इनको तोड देता था। सवत १७३६ (१६७९ ई०) की पार्लमेण्टमें केवल एक अच्छा प्रस्ताव पास हुआ जिसे 'हैबियस कोर्पस एक्ट' कहते हैं।* इसके अनुसार प्रत्येक व्यक्तिको यह अधिकार प्राप्त हो गया कि वह अपने ऊपर आरोपित किये गये दोषको जान ले और न्यायालय

* Habeas Corpus Act

द्वारा अपने अभियोगके सम्बन्धमें ठीक ठीक न्याय करा ले। यद्यपि सवत् १२७२ (१२१५ ई०) के अधिकारपत्रके अनुसार यह नियम पहले भी पास हो चुका था, फिर भी राजाओंने इसे शिथिल करनेके लिए अनेक उपाय सोच लिये थे और विना अभियोग चलाये ही लोगोंको दड दे दिया करते थे। अब यह बात बन्द हो गयी।

चार वर्ष निरकुश राज्य करनेके पश्चात् सवत् १७४१ के फाल्गुन (१६८५ ई० के फर्वरी) में द्वितीय-चार्ल्सका देहान्त होगया। मृत्युके समय उसने स्वीकार कर लिया कि मैं कैथोलिक धर्मका अनुयायी था। इसी बातसे चार्ल्सके चाल-चलनका पूरा पता लग सकता है अर्थात् चार्ल्सके आन्तरिक और बाह्य आचार कदापि समान न थे। उसमें अपने पिता प्रथम चार्ल्स, अपने पितामह प्रथम जेम्स, अपनी प्रपितामही स्काटरानी मेरीकी चालाकियाँ उपस्थित थीं। परन्तु उन पूर्वजोंके समान उसमें अकड न थी।

द्वितीय चार्ल्स विषय विलासका दास था। इसका प्रभाव उसके दर्बारपर भी खूब पडा था। नाच-रग तो सदा ही हुआ करते थे। फ्रांससे दुःशील स्त्रियाँ नित्य प्रति आया करती थीं और वे सिरपर चढ़ा ली जाती थीं। उनकी सन्तानको ड्यूक आदिकी पदवी दे दी जाती थी। परन्तु इस भोगविलासके युगमें भी देशके प्रवन्धमें कई प्रकारकी उन्नतियाँ हुईं। सवत् १७४१ (१६८४ ई०) में लन्दन नगरकी गलियोंमें नियमानुसार प्रकाश करनेका प्रबन्ध किया गया। लन्दनसे यार्क, चेस्टर, एक्जिटर, ऑक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज आदि नामी प्रसिद्ध स्थानोंके बीच घोडा गाडियाँ चलने लगीं। ये गाडियाँ गर्मीमें ५० मील प्रतिदिनकी चालसे चला करती थीं और

यात्रामें सुविधाएँ होने लगी थीं, परन्तु कभी कभी डाकू लूट भी लेते थे। डाकका ठेका जेम्सके हाथमें था और उसमे भी उन्नति हुई थी । प्रजापालित राज्य (कामनवेल्थ) के समयमें कुछ समाचारपत्र निकलने लगे थे। परन्तु राजसत्ताके पुनरुत्थानके समय संवत् १७१६ [१६६२ ई०] के एक एक्ट द्वारा मुद्रणकी स्वतंत्रता छीन ली गयी और केवल दो पत्रों अर्थात् 'लन्दनगजट' और 'ऑब्जर्वेटर' के छपनेकी आज्ञा दी गयी। विज्ञानकी भी उन्नति हुई। रसायन विद्याकी चर्चा अधिक हो गयी। चार्ल्सके व्हाइट हालमें एक रसायन भवन बन गया। दूरबीनों और वायु-निष्कासक-यन्त्रोंका भी आविष्कार होगया परन्तु यह सब समयका फेर था। इसमें चार्ल्सकी योग्यता तनिक भी कारण न थी।

संवत् १७२२ (जून १६६५ ई०) में बड़ी भारी महामारी (प्लेग) फैली। एक सप्ताहमें दस हजार और छ मासमें १ लाखसे अधिक मनुष्य मर गये। ऐसी आपत्ति थी कि मुर्दे उठानेको आदमी तक न मिलते थे। बीस बीस तीस-तीस लाशें एक साथ बिना अन्त्येष्टि सस्कारके दाब दी जाती थीं। इस अवसरपर डिसेन्टर पुजारियोंने रोगियोंकी बड़ी सेवा की। इसके दूसरे वर्ष लन्दनमें आग लग गयी। समस्त लन्दन जल गया। ७० लाख पौंडकी हानि हुई। परन्तु इसका भी फल अच्छा निकला क्योंकि उससे पहले लन्दनकी गलियाँ तंग और मकान भद्दे थे। प्रकाश और वायुके आनेका अवकाश न था। नये सिरेसे जो लन्दन बना उसमें यह दोष न रहा।

दसवाँ अध्याय ।

द्वितीय जेम्स ।

संवत् १७४२-१७४५ (१६८५-१६८८ ई०)



तीय चार्ल्सके मरते ही उसका छोटा भाई जेम्स, द्वितीय जेम्सके नामसे इंग्लैण्डकी गद्दी पर बैठा । उसने दरबारियों और मन्त्रीगणको निश्चय करा दिया कि यद्यपि मैं कैथोलिक हूँ, तथापि मैं देशके धर्ममें किसी प्रकारकी बाधा न डालूँगा और इंग्लिश-चर्चमें किसी प्रकारका परिवर्त्तन न करूँगा। उसने यह भी प्रतिज्ञा की कि पार्लमेण्टके पास किये हुए नियमोंकी उपेक्षा न की जायगी और जातिकी स्वतन्त्रता भङ्ग न होने पायगी । इन चिकनी-चुपडी बातोंपर लोगोंको विश्वास हो गया और उन्होंने समझा कि जेम्स अपने वचनको पूरा करेगा ।

परन्तु गद्दीपर बैठते ही उसने हाथ पाँव हिलाने शुरू किये। एक तो वह खुल्लमखुल्ला कैथोलिक धर्मके अनुसार उपासना करने लगा, दूसरे फ्रांसनरेशसे, अपने भाईके समान, गुप्त रीतिसे धन लेने लगा। फिर भी उसके राजगद्दीपर बैठनेके बाद जो पार्लमेण्ट बनी वह राजामें भक्ति रखती थी । यही कारण था कि जेम्सने थोडे दिनोंतक राज्य कर लिया, नहीं तो उसी समय गद्दीसे उतार दिया जाता ।

हम गत अध्यायमें लिख चुके हैं कि शैफ्ट्सबरीने जेम्सके विरुद्ध बहिष्कार प्रस्ताव पेश किया था जो जेम्सके भाग्यवश पास न हो सका। परन्तु ड्यूक आव् मानमौथने एक बार

फिर गद्दी लेनेका प्रयत्न किया और जेम्सके गद्दीपर बैठनेके चार मास पश्चात् वह सेना लेकर लाइम-* स्थानमें आ पहुँचा। लोग "मानमौथ! मानमौथ! प्रोटेस्टेएट धर्म! प्रोटेस्टेएट धर्म" कह कह कर उसकी सहायताको दौडे। नगरकी गलियोंमें भीड होगयी, फूल बखेरे जाने लगे, लडकियाँ श्वेत वस्त्र धारण किए हुए अपने बनाये २७ झण्डे उसको समर्पण करनेके लिए लायीं। इस समारोह-युक्त स्वागतसे फूलकर उसने २२ आषाढ (६ जूलाई) को सेज-मूर † नामक स्थानपर राजसेनापर छापा मारा, परन्तु हार गया और रण छोडकर भाग गया। वह कई दिन पीछे एक खाईमें छिपा पाया गया। उसकी जेबमें कुछ मटरके दाने थे जिनके सहारे उसने कई दिन अपना जीवन स्थित रखा था। लोग उसे पकडकर जेम्सके आज्ञानुसार उसके सामने लाये। रेशमकी रस्सीसे उसके हाथ पीछे बधे हुए थे और शरीर बहुत दुर्बल हो रहा था। पहले वह घुटनोंके बल बैठ गया। फिर उसने राजाके चरणोंका स्पर्श किया। परन्तु अन्तमें ३१ आषाढ (१५ जूलाई) को उसका शिर काट डाला गया। उसके साथियोंमेंसे ३४० को प्राणदण्ड दिया गया और ८४१ पकड कर पश्चिमी द्वीपसमूहमें कैद करके भेज दिये गये जहाँ वे कष्टोंके मारे मर गये। मानमौथके साथियोंपर अभियोग चलानेका कार्य्य जेफ्रेज नामके जजके सुपुर्द हुआ, जिसने बडी निर्दयता दिखायी और जिसके न्यायालयको रुधिरका न्यायालय (ब्लडी एसाइजेज) कहते हैं।

स्काटलैण्डमें अर्जिल (Argyll) ने जो प्रेस्बिटेरियनदलका अगुआ था विद्रोह किया परन्तु वह पकडा गया और उसे प्राणदण्ड दिया गया।

* Lyme † Sedgemoor

पार्लमेण्टने इन सब बातोंमें राजाका साथ दिया और उसकी सेनाके लिए रुपया भी बहुत कुछ स्वीकार किया। राजाने समझा कि देश मेरे पक्षमें है और मैं जो चाहूँ सो कर सकता हूँ। यह राजाकी भूल थी। उसने अंग्रेज जातिका स्वभाव ही न समझा था और पिता तथा ज्येष्ठ भ्राताकी आपत्तियोंको भी भुला दिया था। अतः जेम्सको इसका फल भी मिल गया।

जेम्सको समझना चाहिये था कि प्रजा जेम्सकी भक्त तो हो सकती थी परन्तु वह प्रोटेस्टेण्ट धर्म तथा पार्लमेण्टके अधिकारोंको त्यागनेके लिए कदापि तैयार न थी। परन्तु 'प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं' के अनुसार उसने अब प्रजाके विरुद्ध कैथोलिक-धर्म स्थापित करनेका विचार कर लिया। पहले उसने सेना तथा आन्तरिक प्रबन्धके मुख्य मुख्य पद कैथोलिकोंको दे दिये और इस प्रकार उस परीक्षा नियमका खण्डन हो गया जो सवत् १७३० (१६७३ ई०) में पास हुआ था और जिसके अनुसार उसे स्वयं पोतोंकी अध्यक्षतासे पृथक् होना पड़ा था। उसने आक्षेपोंसे बचनेके लिए पार्लमेण्टका निर्वाचन भी न कराया क्योंकि उसने समझा कि न पार्लमेण्ट होगी और न मेरे ऊपर वह आक्षेप करेगी। सवत् १७४३ के आषाढ़ (जून १६८६) मासमें यह प्रश्न उठा कि राजाको परीक्षानियमके विरुद्ध कार्य करनेका अधिकार है या नहीं। वस्तुतः इसका निराकरण करना पार्लमेण्टका काम था परन्तु जेम्सने इस विषयको जजोंके सामने रख दिया। उन्होंने राजाके पक्षमें ही इसका निर्णय किया। इस प्रकार प्रत्येक प्रसिद्ध पदपर कैथोलिक ही कैथोलिक दिखाई पड़ने लगे।

इसके अतिरिक्त राजाने वे न्यायालय भी स्थापित कर दिये, जो सवत् १६९८ (१६४१ ई०) में दीर्घ पार्लमेण्ट द्वारा

तोड़े जा चुके थे। इन न्यायालयोंका प्रयोजन यह था कि जो पादरी राजाके कामोंका विरोध करें उनको दण्ड दिया जाय। सवत् १७४४ (१६८७ ई०) में राजाने अपने भाईके समान 'क्षमा की घोषणा' कर दी अर्थात् जो नियम पार्लमेण्टने कैथोलिक और डिसेण्टरोंके विरुद्ध पास किये थे वे शिथिल कर दिये गये।

इसके पश्चात् विश्वविद्यालयोंकी बारी आयी। आक्सफर्ड विश्वविद्यालयके क्राइस्ट चर्च कालिजकी अध्यक्षता एक कैथोलिकको दे दी गयी और मैगडेलन कालिजके सभासद इसलिए निकाल दिये गये कि उन्होंने कैथोलिक सभापति चुननेसे इनकार कर दिया था। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयके वाइस चांसलर *तथा अन्य पदाधिकारियोंको इसलिए दण्ड दिया गया कि उन्होंने एक कैथोलिकको उपाधि नहीं दी।

जेम्सने निश्चय कर लिया था कि जिस प्रकार हो सके लोगोंको आज्ञा पालन करनेके लिए वाध्य करना चाहिये, चाहे आज्ञा नियमविरुद्ध हो अथवा नियमानुकूल। इस हठने जेम्सको नष्ट कर दिया। इस विषयमें उसका भाई प्रथम चार्ल्स ही जेम्ससे चतुर था क्योंकि उसने कभी प्रजाको अप्रसन्न करनेकी इस प्रकार कोशिश न की थी।

इग्लैंडके दो मुख्य विश्वविद्यालयोंमें धर्म सम्बन्धी हस्तक्षेप करनेके पश्चात् जेम्सने अब अग्रेजी गिरजाघरोंपर धावा किया। सवत् १७४४ के अन्त (१६८८ ई० के आरम्भ) में उसने एक सभाकी घोषणा फिर निकाली और आज्ञा दी कि वह समस्त गिरजोंमें लगातार दो रविवारोंको सुनायी जाय। कैण्टरबरीके लाटपादरी सैनक्राफ्ट (Sancroft) और उसी

* किसी विश्वविद्यालयके मुख्याधिष्ठाताको चासलर और सहायक अधिष्ठाताको वाइसचांसलर कहते हैं।

प्रान्तके छः पादरियोंने प्रार्थनापत्र भेजा कि इस आज्ञापालनसे हम मुक्त कर दिये जायँ। जेम्स इस पत्रको पढ़ कर आग बबूला होगया, और कहने लगा "यह तो सर्वथा विद्रोह है।" लाटपादरी केन (Ken) ने कहा "राजन्, हम आपका सत्कार करते हैं, परन्तु हमें ईश्वरका भय है।"

यह प्रार्थनापत्र तो केवल राजाके पास ही भेजा गया था, किन्तु इसकी प्रतियाँ छाप कर बेची गयी थीं।

लोगोंमें इन प्रतियोंकी इतनी माँग थी और बेचनेवाले इस प्रकार चिल्ला कर बेचते थे कि लोग सोतेसे उठ बैठते और खरीदते थे। इस आन्दोलनको देखकर राजाने इन सातों पादरियोंको कैद करके लन्दनके टावरमें भेज दिया। जब ये लोग टावरको लाये जा रहे थे तब इनसे इतनी सहानुभूति प्रगट की गयी कि नरनारियोंकी पंक्तियाँ इनका आशीर्वाद लेनेके लिए मार्गके दोनों ओर खड़ी हो जाती थीं। इनके पीछे एक सहस्र किश्तियां थीं, जिनमेंसे लोग "पादरियोंकी जय" चिल्ला रहे थे। जिन पहरेदारोंके सरक्षणमें ये पादरी रखे गये उन्होंने स्वयं भी इनकी जय मनायी। इन पादरियोंमें एक ब्रिस्टलका पादरी ट्रीलौनी (Trelawney) था जो कार्नवालका रहनेवाला था। इसलिए कार्नवालके खान खोदनेवाले लोग चिढ़ गये और कहने लगे—

And shall Trelawney die?
And shall Trelawney die?
There's twenty thousand Cornish men
Will know the reason why

"क्या ट्रीलौनी मारा जायगा, क्या ट्रीलौनी मारा जायगा? यदि ऐसा हुआ तो बीस सहस्र कार्नवालवाले भी देख लेंगे"

राजाके मंत्रियोंने सम्मति दी कि क्षमाकी घोषणा वापस ले ली जाय। परन्तु जेम्सने दुराग्रह किया। उसने कहा "कभी नहीं, कभी नहीं, क्षमाने मेरे बापको नष्ट कर दिया।" जेम्स क्या जानता था कि यही क्षमा मेरे नाशका भी कारण बनेगी। अभियोगके दिन ६० रईस लोगोंकी जूरी बैठी। उसने दस बजे रातको व्यवस्था दी कि पादरी लोग निर्दोष हैं। तुरन्त ही "वाह वाह और जय जय" की ध्वनि गूँजने लगी। लन्दनमें उसी रात रोशनी की गयी, घुडसवार हर्षकी सूचना देने अन्य नगरोंको चल पडे। सहस्रोंकी आंखोंमें हर्षके आँसू आगये। जेम्सने स्वय अपने नौकरोंसे पूछा—"लोग क्यों चिल्ला रहे हैं।" उन्होंने उत्तर दिया "कुछ नहीं। पादरी लोग छूट गये इसलिए लोग खुशी मना रहे हैं।" जेम्सने कहा "क्या यह कुछ नहीं?"

ग्यारहवाँ अध्याय।

राज्य-विप्लव।

संवत् १७४५-४६ (१६८८-८९ ई०)



हम दसवें अध्यायमें दिखला चुके हैं कि केवल तीन वर्षके राज्यमें जेम्सने अपने देशके प्राय. सभी व्यक्तियोंको अप्रसन्न कर दिया था। ह्विग् लोगोंका विचार था कि यदि पार्लमेंट और राजामें मतभेद हो तो राजाको दब जाना चाहिये। परन्तु टोरी लोग ईश्वर-प्रदत्त अधिकारके मानने

वाले थे। उनका सिद्धान्त था कि राजाका विरोध किसीको नहीं करना चाहिये। परन्तु जेम्सके आचरणोंने इन राजभक्त टोरियोंको भी शत्रु बना दिया क्योंकि थे तो वे भी प्रोटेस्टेण्ट ही। वे यह तो चाहते न थे कि हमारे धर्ममें हस्तक्षेप हो। अत धर्मरक्षार्थ उन्हें मजबूर होकर राजाका विरोध करना पड़ा।

इसके अतिरिक्त जातीय अधिकारकी जड़पर भी कुल्हाड़ा चल रहा था। राजाने पार्लमेण्टके पास किये हुए 'परीक्षा-नियम' का भङ्ग ही कर डाला। लोग समझते थे कि यदि राजा एक नियम तोड़ सकता है, तो सभी तोड़ सकता है, फिर पार्लमेण्ट कुछ चीज ही न रही। सात पादरियोंके अभियोगने लोगोंको भली प्रकार बता दिया कि यदि प्रार्थनापत्र देना दोष है, तो अंग्रेजोंकी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता कुछ भी नहीं। जजोंसे मनमानी व्यवस्था लेकर जेम्सने सब वकीलोंको अप्रसन्न कर दिया। यहाँ तक कि बहुतसे रोमन कैथोलिक लोग भी उसकी चालाकियाँ देखकर उससे घृणा करने लगे थे।

यह तो हुई देशकी आन्तरिक अवस्था। यूरोपके अन्य देशोंकी अवस्था भी शोचनीय थी। फ्रांसनरेश अपना कब्जा कई देशोंपर बढ़ा चुका था। उसमें वृद्धावस्थामें कट्टरपन अधिक आ गया था। फ्रांसके प्रोटेस्टेण्ट लोग उससे तंग थे। कोई उसका विरोध न कर सकता था। यदि इग्लैण्ड फ्रांसका साथ छोड़ देता तो सम्भव था कि अन्य लोग उसकी बढ़ी हुई शक्ति रोक देते, परन्तु जेम्स तो लूईका मित्र था, वह उससे क्यों बिगाड़ करता? अंग्रेज लोग इन सब बातोंसे तंग आ रहे थे।

परन्तु अंग्रेज लोगोंको अबतक एक आशा थी, वह यह कि जेम्सके पश्चात् उसकी ज्येष्ठ पुत्री मेरी गद्दीपर बैठेगी जो

प्रोटेस्टेण्ट धर्मकी अनुयायिनी थी। केवल इसी आशाके सहारे जेम्सके अत्याचार भी सह लिये जाते, परन्तु सवत् १७४५ के २७ ज्येष्ठ (१६८८ ई० की १० वीं जून) को यह आशा भी टूट गयी। अर्थात दूसरी भार्य्यासे जेम्सका एक पुत्र उत्पन्न हुआ। इसमें सन्देह नहीं कि कैथोलिक मातापिताके होते हुए इस लडकेके कैथोलिक होनेकी ही आशा हो सकती थी। बहुतोंको तो यह भी सन्देह था कि वस्तुत यह किसी औरका लडका है और कैथोलिक लोगोंने चालाकीसे इसे जेम्सका लडका प्रसिद्ध कर दिया है जिससे यह राज्यका अधिकारी हो सके। यह सन्देह अकारण न था। जेम्सने इसके जन्मपर अपनी लडकी एनको भी न बुलाया था, यद्यपि वह उस समय लन्दनमें ही थी।

इन सब बातोंने अंग्रेजोंका ध्यान सर्वथा जेम्सकी ओरसे फेर दिया और १६ आषाढ १७४५ (३० जून १७८८ ई०) को, जिस दिन सात पादरियोंकी अभियोगसे मुक्ति हुई, देशके सात भद्र पुरुषोंने अपने हस्ताक्षरोंसे जेम्सके दामाद औरेंज कुमार विलियमको सदेशा भेजा कि आप इग्लैण्डकी गद्दी लेकर देशको "दासत्व और पोपडमसे" मुक्त कीजिये।

विलियम पहलेसे ही तैयार था, क्योंकि जेम्सके रहते हुए और उसकी फ्रांसनरेश लूईसे मित्रता होते हुए, विलियमका स्वतन्त्रता या प्रोटेस्टेण्ट धर्मकी रक्षा करना असम्भव था। परन्तु इग्लैण्ड आनेके लिए बडे साहसकी आवश्यकता थी। इधर अपना देश ऐसे कुसमयमें छोडना, जब कि लूई आक्रमण की तैयारी कर रहा था, बुद्धिमत्ताके विरुद्ध था, उधर इग्लैण्डमें भी कौन जाने कौन सहायता करे। इस संदिग्ध अवस्थामें विलियमका साहस कार्य्य कर गया। वस्तुत विलियम बडा

साहसी था। उसने २ कार्त्तिक १७४५ (१६ अक्टूबर '१६८८ ई०) को प्रस्थान कर दिया और १६ कार्त्तिक (५ नवम्बर) को होर्वे बन्दरमें आ उतरा।

जेम्सको बडी चिन्ता हुई। उसकी रोमन कैथोलिक सेनाने भी उसका साथ छोड दिया। अत उसने आयर्लैण्डके कैथोलिक लोगोंकी सेना बुलायी। यह जेम्सकी सबसे बडी मूर्खता थी। आयर्लैण्डके सिपाहियोंको देखते ही अंग्रेज लोग जल गये। इतना जोश शायद फ्रांसकी सेनाको देख कर भी न होता। दूसरे, जेम्सने पर्य्याप्त सेना न बुलायी। विलियम अपने श्वशुरसे कई गुना चतुर निकला। वह अपने साथ केवल इतनी सेना लाया कि समय पडनेपर अपनी रक्षा हो सके। वह समझता था कि यदि मैं इग्लैण्डपर आक्रमण करूँगा तो देशहितैषी अंग्रेज मेरे विरुद्ध हो जायँगे, अत' वह अंग्रेज लोगोंको उन्हींको सहायतासे धर्म और स्वतन्त्रताके शत्रुसे मुक्त कराने आया।। विलियमके इस भावका अंग्रेजोंके हृदयोंपर बडा प्रभाव पडा। लोग शनै शनै उसके पक्षमें होते गये। यहाँ तक कि जेम्सकी छोटी लडकी एन भी अपने जीजासे जा मिली। अब तो जेम्सका दिल टूट गया, उसने कहा "हे ईश्वर! अब तो मेरे बच्चोंने भी मुझे छोड दिया।" उसने रानी और अपने हालके हुए बच्चेको फ्रांस भेज दिया और २५ मार्गशीर्ष (११ दिसम्बर) को स्वय भी उसी देशकी ओर चल दिया। जेम्सका भोलापन एक बातसे ही मालूम होता है कि चलते समय उसने राजकीय मुहरको यह सोचकर टेम्समें डाल दिया कि जबतक यह न होगी लोग किसीकी आज्ञाका पालन न करेंगे। जेम्सको भागते समय एक मछुएने पकड लिया और विलियमके हवाले कर दिया। परन्तु विलि-

यमका संकेत पाकर पहरेदारोंसे छूटकर जेम्स फ्रांसनरेशके दरबारमें पहुँच गया। लूईने उसका बडा सम्मान किया।

विलियमने ८ माघ १७४५ [२२ जनवरी १६८६] को लन्दन पहुँच कर पार्लमेण्टके सभासदोंकी सभा की, जिसमें यद्यपि पार्लमेण्टके सभी सभासद थे तो भी नियमानुसार उसे पार्लमेण्ट नहीं कह सकते, क्योंकि पार्लमेण्टमें राजा भी सम्मिलित है और विलियम अभी राजा न था।

अबतक तो सब बातें ठीक हुईं। परन्तु अब एक कठिनाई उपस्थित हुई। कुछ टोरी कहते थे कि यदि जेम्स प्रतिज्ञा करे तो उसीको राजा बनाये रखो। कुछकी सम्मति थी कि जेम्स तो नाममात्र राजा रहे और प्रबन्ध विलियम करे। कुछ कहते थे कि जेम्स भाग गया, अतः उसकी लडकी मेरी उसकी उत्तराधिकारिणी होनेके कारण महारानी होगयी।

परन्तु विलियमको इनमेंसे कोई बात स्वीकार न थी। पहली दो बातें तो असम्भव सी ही थीं। तीसरीके विषयमें विलियम कहता था कि मैं अपनी भार्य्याका मन्त्री होना नहीं चाहता। ह्विग्लोग कहते थे कि इग्लिश जातिको अधिकार है कि एक राजाको गद्दीसे उतार कर दूसरेको बैठा दे। अन्तमें यह निश्चित हुआ कि विलियम और मेरीका संयुक्त राज्य हो, विलियम राजा हो और मेरी रानी।

'अधिकार घोषणा' (डिक्लेरेशन आव राइट) की गयी, जिसके अनुसार द्वितीय जेम्सकी कार्य्यावली अनुचित और नियम विरुद्ध बतायी गयी और जातिके अधिकारोंमें भी आधिक्य हो गया। यह निश्चित हो गया कि प्रार्थनापत्र देना विद्रोह नहीं है, पार्लमेण्टका अधिवेशन जल्दी जल्दी होना चाहिये और कभी कोई कैथोलिक इग्लैण्डकी गद्दीपर न बैठने

पावे। विलियम और मेरीने ये सब बातें स्वीकार कर लीं। इस प्रकार महान् राज्य-विप्लव सरलतासे समाप्त हो गया।

बारहवाँ अध्याय।

स्काटलैण्ड और आयलैंण्ड।

संवत् १७०८–१७४६ (१६५१ से १६८६ ई०) तक



वत् १७०६ (१६४६ ई०) में प्रथम चार्ल्सकी मृत्युके समय स्काटलैण्ड तथा आयर्लैण्ड दोनों देशोंमें गड़बड़ मची हुई थी, जिसका उल्लेख गत अध्यायोंमें किया जा चुका है। क्राम्वेलके समयमें दोनों देश इंग्लैण्डमें मिल गये, इनकी पृथक् पृथक् पार्लमेण्टें टूट गयीं और स्काटलैण्ड तथा आयर्लैण्डके निवासियोंने अपने प्रतिनिधि इंग्लिश पार्लमेण्टमें ही भेजे। उस समय क्राम्वेलकी सेना भी बड़ी प्रबल थी और आयर्लैंड तथा स्काटलैण्डके लोग उसका लोहा मानने लगे थे। क्राम्वेलके डरसे किसीको चूँ करनेका भी साहस नहीं था। इसका एक प्रकारसे बहुत उत्तम प्रभाव पड़ा और आन्तरिक शान्ति स्थापित होते ही व्यापार तथा धनकी वृद्धि हो गयी।

परन्तु क्राम्वेलके राज्यमें आयर्लैण्डको एक प्रकारसे बड़ा धक्का पहुँचा। स्काट लोग प्रोटेस्टेण्ट थे अतः क्राम्वेल उनसे तो बोला नहीं, परन्तु आयर्लैण्डवाले कैथोलिक थे अतः उनका तो क्राम्वेलने नाश ही कर दिया। शैनन नदीके पूर्व समस्त प्रान्तोंसे वे निकाल दिये गये और इस प्रकार तीन चौथाई

टापू वास्तविक निवासियोंसे रिक्त होकर क्राम्वेलके मित्रों तथा सहधर्मियोंके हाथमें आगया। जो बचे उनकी भी दशा खराब थी। उनके पास खानेको भोजन और पहिननेको कपडे न थे और उनका धर्म तो अधर्म ही समझा जाता था।

राजसत्ताके पुनरुत्थानने दोनों देशोंकी दशा पलट दी। प्राचीन जातीय पार्लमेण्टें स्थापित हो गयीं। चार्ल्स और जेम्स कैथोलिक थे, अत: आयर्लैण्डवालोंको धार्मिक स्वतन्त्रता भी रही परन्तु स्काटलैण्डके लोग विधर्मी होनेके कारण अधिक सताये जाते थे और संवत् १७४५ (१६८८ ई०) तक इनकी यही दशा रही।

संवत् १७२२ (१६६५ ई०) में आयर्लैंडकी पार्लमेंटने एक प्रस्ताव पास किया जिसके अनुसार आयर्लैण्डवालोंको कुछ भूमि वापस मिल गयी परन्तु चार्ल्स और जेम्सके समयमें आयर्लैंडवालोंके कला कौशल तथा व्यापारको बडा धक्का पहुँचा। अंग्रेज लोगोंने उन विचारोंको बढने न दिया। इस-लिए वे लोग दरिद्र हो गये और अंग्रेजोंसे घृणा करने लगे।

स्काटलैंडवालोंसे भी अंग्रेज व्यापारियोंने यही व्यवहार किया, परन्तु धार्मिक विषयोंमें तो स्काटलैंडको सबसे अधिक कष्ट हुआ। द्वितीय चार्ल्सने अपने पिताकी मृत्युपर संवत् १७०७ (१६५० ई०) में स्वीकार कर लिया था कि मैं प्रेस्बिटे-रियन धर्मकी रक्षा करूँगा। परन्तु जब संवत् १७१७ (१६६० ई० में वह गद्दीपर बैठा तो अवस्था ही और थी। संवत् १७०७ (१६५० ई०) में राजा स्काट-लोगोंके वशमें था और संवत् १७१७ (१६६० ई०) में स्काटलोग राजाके वशमें आ गये थे। प्रत्येकने अपना अपना दाँव खेला और स्काटलैंडमें पादरी ही पादरी नियत हो गये। वहाँके प्रेस्बिटेरियन लोगोंने अपने

अधिकारोंकी रक्षाके लिए जेम्स शार्प नामक एक पुरोहितको भेजा, परन्तु लन्दन आकर वह लालचवश धर्म छोड़ बैठा और सेण्ट एण्ड्रूजका लाट पादरी नियत कर दिया गया। फिर उन्होंने एक और मनुष्य लॉडरडेलको भेजा। इसकी भी यही गति हुई और वह चार्ल्सकी ओरसे स्काटलैण्डका शासक नियत हुआ। इन दोनोंने मिलकर प्रेस्बिटेरियन लोगोंको बहुत कष्ट दिये। अनेकोंको फाँसी हुई, बहुतोंकी जीविका छीन ली गयी, परन्तु यह सब अत्याचार विना फल दिखाये न रहे। गेंद जब भूमिपर मारी जाती है तो ऊपरको उछलती है। स्काट लोग भी उभरे, और खूब उभरे। यत्र तत्र विद्रोह हुए। सवत् १७२३ (१६६६ ई०) में विद्रोही जन एडिन्बरा-पर चढ़ गये परन्तु उनकी हार हुई। सवत् १७३६ (१६७९ ई०) में इससे भी अधिक विद्रोह हुआ। पादरी शार्प मार डाला गया, परन्तु ड्यूक आव मानमौथने इनको फिर हरा दिया।

इस विद्रोहके पश्चात् स्काट लोग और अधिक सताये गये। जेम्स उनका गवर्नर हुआ और अपनी मनमानी करने लगा। जब जेम्सको राजगद्दी मिली उस समय तो स्काट लोग अंग्रेजोंके समान निराश होगये और परिवर्त्तनकी प्रतीक्षा करने लगे।

जब औरेंजकुमार विलियम आया तो स्काट लोगोंने अंग्रेजोंकी भाँति बड़े समारोहसे उसका स्वागत किया। चैत्र १७४५ (मार्च १६८९ ई०) में प्रसिद्ध पुरुषोंकी सभा एडिन्बरामें हुई, जिसमें पास हुआ कि दुष्कर्मोंके कारण जेम्स राजगद्दीसे च्युत कर दिया जाय, एपिस्कोपैसी अर्थात् लाट पादरियोंकी अध्यक्षता दूर कर दी जाय और मेरी तथा विलियमको गद्दी दी जाय। इङ्गलैण्डके समान स्काटलैण्डमें भी

अधिकार-घोषणा की गयी जिसे मेरी और विलियम दोनोंने स्वीकार किया और वे गद्दीपर बैठा दिये गये।

परन्तु आयलैंण्डकी कैथोलिक प्रजाने जेम्सका साथ न छोड़ा और टापू भरमें विद्रोह मच गया। स्काटलैण्डके उत्तरमें भी कुछ लोग जेम्सके पक्षमें थे। इन झगड़ोंके मिटानेमें बहुत देर लगी।

तेरहवाँ अध्याय।

भारतवर्ष और अमरीकाका संबन्ध।

संवत् १६६०–१७४६ (१६०३–१६८९ ई०)



त्रहवीं शताब्दीमें इंग्लैण्डकी जो आर्थिक दशा रही, उसके समझनेके लिए सबसे पहले अमरीका और भारतवर्षके विषयमें कुछ कहना आवश्यक प्रतीत होता है। पूर्वार्धके अन्तमें हम वर्णन कर चुके हैं कि एलिज़बिथके समयसे इग्लैण्ड अपने पख फैलाने लगा था और दूरस्थ देशोंसे भी उसका सम्बन्ध होता जाता था। परन्तु इंग्लैण्डसे भी पहले यूरोपके तीन देशोंने बहुत प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी। ये तीन देश स्पेन, पुर्तगाल और हालैंण्ड थे।

सवत् १५४९ (१४९२ ई०) में कोलम्बसने अमरीकाका पता लगाया और शनै शनै. स्पेनवालोंने दक्षिणी तथा मध्य अमरीकामें उपनिवेश बसा लिये। उनकी देखादेखी उनके पडोसी पुर्तगालवाले चले और दक्षिणी अमरीकाके ब्रेजिल नामक स्थानपर स्वत्व प्राप्त कर लिया। उस समय अंग्रेज न

अमरीकाको जानते थे और न भारतवर्षको। संवत् १५५४ (१४९७ ई०) में वास्कोडिगामा भारतवर्ष आया और उसने कालीकटके राजा जमोरिनसे व्यापारकी आज्ञा प्राप्त की। संवत् १५७२ (१५१५ ई०) में गोआ उनके कब्जेमें आगया और मसालेके द्वीपोंसे उनका घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया। जब संवत् १६३७ (१५८० ई०) में स्पेननरेश द्वितीय फिलिप, पुर्तगालकी गद्दीपर बैठा तो पूर्वी तथा पश्चिमी व्यापारमें यूरोप भरमें कोई स्पेनके तुल्य न रहा।

परन्तु इस समय हालैण्डके डच लोग भी हाथ पैर निकालने लगे थे। उनकी इच्छा थी कि स्पेनको रोककर हम स्वयं व्यापारके अगुआ हो जायँ। उन्होंने संवत् १६२५ और १६६६ (१५६८ और १६०९ ई०) के बीचमें बहुतसे पोत बनाये और पूर्वीय द्वीपोंमें स्पेन तथा पुर्तगालवालोंपर जा धमके। उन्होंने मसालेके द्वीपोंमें जावा टापूको जीत लिया, फिर वे भारतवर्षमें भी पदार्पण करने लगे।

एलीजबिथके समयमें अंग्रेज लोग भी व्यापारमें वृद्धि कर रहे थे, परन्तु इनका विशेष ध्यान इस ओर उस समय आकर्षित हुआ जब स्पेनसे युद्ध छिड़ा और आर्मडाका बेड़ा तैयार हुआ, क्योंकि उस समय अंग्रेज लोग उन सब स्थानोंपर पहुँचने लगे जहाँ स्पेनवालोंका प्रभाव था। संवत् १६५७ के १५ पौष (१६०० ई० की ३१ दिसम्बर) को इङ्गलिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी स्थापित हुई, जिसने १२ वर्ष पश्चात् सूरतमें एक कार्यालय खोला। संवत् १६९६ (१६३९ ई०) में अंग्रेजोंने मद्रास ले लिया और तीन चार वर्षमें वहाँ जम गये।

इस समय अंग्रेजोंकी डच और पुर्तगीजोंसे अधिक मुठभेड़ हो जाया करती थी और कभी कभी इनको बहुत हानि

उठानी पडती थी। इन्होंने बहुत चाहा कि मसालेके द्वीपोंमें कुछ सम्बन्ध उत्पन्न करें। परन्तु डच लोगोंके सामने इनकी एक न चली। संवत् १७१६ (१६६२ ई०) में द्वितीय चार्ल्स-का पुर्तगीज राजकुमारी कैथराइन आव वर्गाञ्जासे विवाह हुआ और उसके दहेजमें तजौर तथा बम्बई चार्ल्सको प्राप्त हुए। चार्ल्सने बम्बईको व्यर्थ समझ कर १६६८ ई० में १० पौण्डमें ईस्ट इण्डिया कम्पनीको बेच दिया। आज वही बम्बई संसारके प्रसिद्ध नगरोंमेंसे एक है। संवत् १७४३ (१६८६ ई०) में कलकत्ता अंग्रेजोंके हाथ आगया। इस प्रकार संवत् १७४६ (१६८९ ई०) के विप्लवसे पूर्व भारतवर्षके प्रसिद्ध प्रसिद्ध स्थान इन लोगोंको मिल चुके थे।

फ्रांसवाले भी इन सबकी देखादेखी अपना व्यापार बढ़ाने लगे थे और संवत् १७२१ (१६६४ ई०) में फ्रेंच ईस्ट इण्डिया कम्पनी खुल चुकी थी।

उत्तरी अमरीकामें यूरोपकी भिन्न भिन्न जातियोंने अपने उपनिवेश बसाये थे। फ्रांसवालोंने इस काममें सबसे पहले भाग लिया। संवत् १६६० (१६०३ ई०) में वे क्यूबेकमें और तत्पश्चात् मौण्ट्रियलमें बस गये। इसके अतिरिक्त उन्होंने अर्केडिया बसाया और हड्सनके खालपर अधिकार जमा लिया। डच लोगोंने डिलावेरकी खाडी और कनेक्टी कटका मध्य भाग बसा लिया और उसे न्यू नीदर्लैण्डके नामसे पुकारने लगे, परन्तु अंग्रेजोंका जब उत्तरी अमरीकापर धावा हुआ तो वे सबसे आगे निकल गये। उन्होंने संवत् १६६३ (१६०६ ई०) में वर्जीनिया एलीजाबेथके नामपर, संवत् १६९० (१६३३ ई०) में मेरीलैण्ड महारानी हेनरीटा मेरियाके नामपर, संवत् १७२० (१६६३ ई०) में केरोलीना चार्ल्सके नामपर

और सवत् १७६० (१७३३ ई०) में जार्जिया जार्जके नामपर बसायी। डिसेन्टर लोगोंने न्यू इग्लैण्ड तथा अन्य उपनिवेशोंकी नींव डाल दी। सवत् १७२१ (१६६४ ई०) में अग्रेजोंके हाथ डच लोगोंके कई उपनिवेश आगये, जिनको सवत् १७३० (१६७३ ई०) के युद्धमें उन्होंने फिर जीत लिया, परन्तु सवत् १७३१ (१६७४ ई०) में ये फिर अग्रेजोंको मिल गये। सयुक्त देशका प्रसिद्ध नगर न्यूयार्क पहले डच लोगोंके ही हाथ में था और उस समय उसे न्यू एम्स्टर्डम कहते थे। सवत् १७३८ (१६८२ ई०) में विलियम पेन (W Penn) ने पेंसिल्वेनिया बसाया था। सवत् १७४६ (१६८९ ई०) के विप्लवके समय दो लाख अंग्रेज अमरीकामें रहते थे। अमरीकाके उपनिवेशोंमें स्वराज्य था, अर्थात् उनकी राजसभा अलग अलग थी और इंग्लैण्डके मत सम्बन्धी झगडोंका उनसे कुछ सम्बन्ध न था।

चौदहवाँ अध्याय।

व्यापार कलाकौशल तथा साहित्य।

संवत् १६६० से १७४६ (१६०३ से १६८९) तक।



तेरहवें अध्यायसे पता लग सकता है कि इग्लैण्डका व्यापार अब पहलेकी अपेक्षा कितना बढ चुका था। नयी नयी व्यापारी कम्पनियाँ खुल गयी थीं। 'मर्चेंट एडवेंचर्स' नामक कम्पनी फ्लैंडर्स, हालैण्ड तथा उत्तरी जर्मनीसे व्यापार करती थी। लीवाण्ट (Levant) कम्पनी टर्की और

भूमध्यसागरके तटस्थ देशोंसे, रशा कम्पनी रूस तथा फ़ारस से लेकर कास्पियन सागरतक और ईस्टलैंड कंपनी बाल्टिक सागरके निकटस्थ देशोंसे व्यापार करती थी। इन कंपनियोंमें प्रत्येक व्यापारी अलग अलग अपना व्यापार करता था। परन्तु कुछ संयुक्त कंपनियाँ भी थीं जिनका हानि-लाभ सम्मिलित था, जैसे 'गिनी कंपनी' जो पश्चिमी अफ्रीकासे सोनेका व्यापार करती थी। इन कंपनियोंके लिए कई ऐसे कड़े नियम थे जिनका उद्देश देशके कला कौशलकी उन्नति करना था। उस समय इंग्लैंडमें आजकलके समान मुक्तद्वार वाणिज्य (फ्रीट्रेड) न था किन्तु वह संरक्षित व्यापार (संरक्षण) का समय था। और यही उसके लिए उपयोगी भी था। नियम यह है कि जिस प्रकार छोटे पौधेको जल-वायु, तथा पशुओंसे बचानेके लिए दीवारकी आवश्यकता होती है और वही दीवार बड़े पौधेकी वृद्धिमें बाधक होती है, उसी प्रकार जिस देशका कला-कौशल कम उन्नत हो उसके लिए संरक्षणकी आवश्यकता है, परन्तु उन्नतिशील देशके लिए मुक्तद्वार वाणिज्य लाभदायक है। उस समय एक नियम था कि अंग्रेज व्यापारी लोग या तो मालको अंग्रेजी जहाजोंमें ले जायँ या उन देशोंके जहाजोंमें जिनके साथ उनका व्यापारिक सम्बन्ध है। इस प्रकार अंग्रेजोंको अपने पोत बनानेकी आवश्यकता हुई और शीघ्र ही इंग्लैंडके पोत डच पोतोंसे बढ़ गये।

मछुएपनके कामको वृद्धि देनेके लिए नियम पास हुआ कि शुक्रवारको लोग मछली ही खाया करें। ऊनी कलाकौशलको उन्नत करनेके लिए आज्ञा हुई कि प्रत्येक शवके ऊपर ऊनी चादर डालनी चाहिये। तम्बाकूकी कृषिका इंग्लैंडमें निषेध हो गया जिससे अमरीकाके उपनिवेशोंके अंग्रेज लोग उन्नति

कर सकें। पहलेकी अपेक्षा कपडा भी अधिक बुना जाने लगा। परन्तु कपडेकी कलें न थीं। नार्फोक, विल्ट्स, सोमर्सेट और दक्षिणी यार्कशायरके ग्रामोंमें हाथसे कपडा बुना जाता था। फ्लैंडर्ससे बहुतसे लोग फ्रांस नरेशके अत्याचारोंसे तंग आकर इंग्लैण्ड आये और उन्होंने हौनीटन (Honiton) में लेस बनाना और लन्दनमें रेशम बनाना आरम्भ किया।

परन्तु कृषिकी उन्नति न हुई। दरिद्रोंकी दशा अच्छी न थी। मजदूरोंको मजदूरी थोडी मिलती थी, परन्तु चीजोंका भाव बढता जा रहा था। दरिद्रों और धनाढ्योंमें आकाश-पातालका अन्तर था। एक ओर उच्च कक्षाके लोग चमकीले वस्त्र पहनते और महलोंमें रहते थे। दूसरी ओर दरिद्रोंके झोपडोंमें रूखी सूखी रोटी भी न थी।

प्योरिटन लोगोंके समयमें वस्त्रोंमें परिवर्त्तन हुआ, क्योंकि प्योरिटन लोग चमक दमकसे घृणा करते थे, परन्तु राजसत्ताके पुनरुत्थान तथा प्योरिटनोंकी अवनतिने चमक दमकके साथ साथ दुराचारकी भी वृद्धि कर दी। द्वितीय चार्ल्सको लोग छबीला राजा (मेरी मॉनर्क) कहा करते थे।

साहित्यने भी सत्रहवीं शताब्दीमें बहुत कुछ उन्नति की। संवत् १६७३ (१६१६ ई०) तक तो शेक्सपियर ही जीता रहा और उसके वृद्धावस्थाके नाटक बड़े प्रसिद्ध नाटकोंमें गिने जाते हैं। उसके पश्चात् अंग्रेजीका अति उच्च-कक्षाका कवि मिल्टन भी हुआ। अंग्रेजी भाषाको शेक्सपियर और मिल्टन दोनोंका बडा भारी अभिमान है। मिल्टन संवत् १७३१ (१६७४ ई०) में मरा। मिल्टनके पश्चात् ड्राईडनकी बारी आयी जो संवत् १७५७ (१७०० ई०) तक लिखता रहा। इन

कवियोंके अतिरिक्त बेकन, हौब्ज और लॉक (Locke) जैसे दार्शनिक, न्यूटन जैसे विज्ञानवेत्ता, और जेरेमी टेलर (Jeremy Taylor) जैसे धार्मिक विषयोंके पण्डित हुए, जिन्होंने अंग्रेजी साहित्यको उन्नतिके शिखरपर पहुँचा दिया।

द्वितीय खण्ड ।

ब्रिटिश साम्राज्यका आरम्भ ।

संवत् १७४६ से १८७२ (१६८९ से १८१५) तक

पहला अध्याय ।

विलियम और मेरी ।

संवत् १७४६–१७५९ (१६८९–१७०२)



वत् १७४५ (१६८८ ई०) का विप्लव इङ्गलैण्डके इतिहासकी बडी महत्वपूर्ण घटना है। इसके सबसे प्रसिद्ध तीन परिणाम थे। एक तो पार्लमेण्टका आधिपत्य जम गया और राजाकी शक्ति गौण हो गयी। हम प्रथम खण्डमें बता चुके हैं कि संवत् १६६० से १७४५ (१६०३ ई० से १६८८ ई०) तक के लगातार आन्दोलन, आत्मत्याग और वीरताका ही यह फल था कि राजाओंकी निरङ्कुशताका अन्त होगया। दूसरा परिणाम प्रोटेस्टेण्ट धर्मकी विजय थी क्योंकि उस दिनसे किसी कैथोलिकको गद्दीपर बैठने और जातीय धर्ममें हस्तक्षेप करने-

का अधिकार न रहा। परन्तु इन दोनोंसे भी अधिक गम्भीर परिणाम यह था कि इंग्लैंडका राज्य अब ब्रिटिश साम्राज्य हो गया जिसकी तनिक भी आशा विप्लव करनेवालोंको न थी। बात यह है कि विलियमके गद्दीपर बैठते ही इंग्लैंड और अन्य यूरोपीय देशोंका युद्ध छिड गया। यह युद्ध प्रायः सवत् १८७२ (१८१५ ई०) तक रहा और जब इसी संवत् १८७२ (१८१५ ई०) को वाटर्लूकी लडाईके पीछे इंग्लैंडने आँखें खोलीं तो ज्ञात हुआ कि अब इंग्लैंडका राज्य छोटे देशका राज्य नहीं, किन्तु वह ब्रिटिश साम्राज्य है जिसपर सूर्यदेव कभी अस्त नहीं होते।

इंग्लैंडकी पार्लमेण्टने विलियमको तृतीय विलियमके नामसे गद्दी तो दे दी। परन्तु इस गद्दीकी रक्षामें बहुतसी आपत्तियाँ उठानी पडीं। आयर्लैण्ड और स्काटलैंड दोनोंने विरोध किया और फ्रांसनरेश चौदहवें लूईने जेम्सकी मित्रताके कारण यथाशक्ति बाधाएँ डालीं। परन्तु विलियमने भी बचपनसे ही लूईकी शक्तिको तोडनेकी ठान ली थी। विलियम यद्यपि दुर्बल और रोगी था, तथापि उसे आरम्भसे ही शत्रुओंसे घिरे रहनेका अवसर मिला था, अत. आत्मरक्षा उसका स्वभाव सा हो गया था। आपत्तिके समय उसमें विशेष बल आ जाता था। पराजयसे कभी उसका जी न टूटता था। राज्य-प्रबन्धमें उसकी योग्यता बहुत बढी हुई थी। यद्यपि विलियम सात भाषाएँ जानता था, किन्तु बहुत ही मितभाषी था। ऐसे पुरुष बहुधा बड़े कर्मण्य होते हैं, और विलियम भी ऐसा ही था। महारानी मेरी भी (जिसको द्वितीय मेरी कहना चाहिये, क्योंकि प्रथम मेरी, मेरी ट्यूडर, अष्टम हेनरीकी लडकी थी, जिसने सवत् १६१० से १६१५ [१५५३ ई० से

१५५८ ई०] तक राज्य किया) रूपवती, गुणवती, शीलवती तथा बुद्धिमती थी और अपने पतिके कार्य्योंमें बहुत सहायता करती थी। विलियमकी सफलताका अधिकांश उसकी सहधर्मिणीकी योग्यताके ही कारण था।

द्वितीय जेम्सको सबसे अधिक सहायताकी आशा आयर्लैंडसे थी, क्योंकि वहाँके अधिकतर निवासी कैथोलिक थे और हर प्रकारसे जेम्सने आयर्लैंडवालोंका पक्ष लिया था। फौजमें आयरिश लोग भर्ती हुए थे। न्यायाधीश तथा नगरोंके अध्यक्ष पदपर आयरिश नियुक्त किये गये थे। ऊँचे पदोंपरसे अंग्रेज हटाये गये। जेम्स आयर्लैंडको कैथोलिक धर्मके लिए सुरक्षित रखना चाहता था, इसलिए आयर्लैंडमें वहाँके कैथोलिक लोगोंकी प्रधानता कायम करना चाहता था। क्राम्वेलके समयसे आयर्लैंडके मूल निवासियोंपर जो अत्याचार हो रहे थे वे बन्द हो गये, उलटे अंग्रेजोंपर अत्याचार प्रारम्भ हुए। बहुतसे अंग्रेजोंको भागना पड़ा। अतः आयर्लैंड वालोंके लिए जेम्सकी सहायता करना स्वाभाविक था। विलियमके इंग्लैंड पहुँचते ही समस्त आयर्लैंडवालोंने विद्रोह प्रारम्भ कर दिया। प्रोटेस्टेण्ट लोग लन्दनडरी तथा एनिस्किलिन (Enniskillen) में घिर गये। संवत् १७४६ के चैत्र (मार्च १६८६) में लुईकी सेना लेकर जेम्स स्वयं आयर्लैंडमें आया और लन्दनडरीको घेर लिया। लन्दनडरीमें केवल दस दिनका भोजन था। जेम्सको नगर घेरे हुए ६ दिन हो गए, परन्तु प्रोटेस्टेण्ट लोग बड़ी वीरतासे लड़ते रहे। जब भोजन न रहा तो लोगोंने घोड़ों, कुत्तों तथा चुहियोंका मांस खाकर जीवन बचाया। मांसके अभावसे चमड़ोंको चूस चूस कर सन्तोष किया। लोगोंके शरीरमें अस्थिपंजर ही शेष रह गये,

परन्तु उन्होंने हार मानना स्वीकार न किया। १४ श्रावण (३० जुलाई) की रातको पादरी वाकर (Walker) ईश्वर विश्वासपर व्याख्यान दे रहा था और लोगोंको समझा रहा था कि "धैर्य रखो, परमात्मा सहाय करेंगे।" उसके एक घंटे पश्चात् ही इंग्लैंडसे सहायता पहुँच गयी और जेम्सकी सेना नगर छोडकर भाग गयी। दूसरे दिन न्यूटन बटलर (Newton Butler) में जेम्सकी हार हुई।

संवत् १७४७ (जून १६९० ई०) में विलियम स्वयं आयर्लैंड आया और उसने (१ जुलाई १६९० को) बोइन के युद्धमें आयर्लैंएड तथा फ्रांसकी संयुक्त सेनाको पराजित किया। एक साल और झगडा चला। संवत् १७४८ (१६९१ ई०) की गर्मियोंमें औघरिन (Aughrin) की हार तथा कार्तिक संवत् १७४८ (अक्टूबर १६९१) में लिमरिकके पतनके पश्चात् जेम्सकी रही सही शक्ति भी जाती रही और आयर्लैंएड हमेशाके लिए पराधीन हो गया। इसके बाद सौ वर्षतक आयर्लैंएडमें शान्ति रही, पर यह शान्ति निराशाकी शान्ति थी। आयर्लैंएडके निवासी पराधीनताके पाशमें जकड गये और उनकी दशा बडी ही शोचनीय हो गयी।

स्काटलैंएडमें भी जेम्सका अत्याचार कम न था। ज्योंही उसने विलियमके मुकाबिलेके लिए फौज दक्षिण बुलायी, विद्रोह प्रारंभ हो गया। अधिकतर पादरी जो जेम्सके पक्षके थे निकाल दिये गये और लण्डन-स्थित स्काटलैंएडके सरदारोंकी सलाहसे विलियमने एक सभा बुलायी जिसने स्काटलैंएडकी गद्दी विलियम और मेरीको दी तथा राजाने भी प्रजाके अधिकारोंको स्वीकार किया। डण्डीने, जो जेम्सका बडा सहायक था और जिसे जेम्सने खिताब आदि भी दिया था, उसके पक्षमें

आन्दोलन उठाया, किलीक्रैंकीके युद्धमें उसकी विजय हुई परन्तु वह स्वयं लड़ाईमें मारा गया, इसलिए इंग्लैण्डकी पराजय होनेपर भी जेम्सके अनुयायियोंका साहस टूट गया और वे तितर बितर हो गये। विलियमकी ओरसे आज्ञा हुई कि जो विपक्षी १६ पौष १७४८ (३१ दिसम्बर १६९१) तक क्षमा न माँगेंगे, उनको दण्ड दिया जायगा। इसके साथ ही सरदारोंमें १५ हजार पौंड बाँटा गया। सबने तो क्षमा माँग ली परन्तु ग्लैङ्को (Glenco) नामक एक पहाड़ी घाटीके रहनेवाले मैकडोनल्ड वंशके मुखिया मैक आइन (Mc Ian) को देर हो गयी। वह १६ पौष (३१ दिसम्बर) को एक पदाधिकारीके पास क्षमा माँगने गया, परन्तु उस अफसरको क्षमा करनेका अधिकार न था। मैकआइन घबरा गया, वह छ दिन चलकर बड़ी आपत्तियोंसे नियत स्थानपर पहुँचा परन्तु तिथि व्यतीत हो चुकी थी। और मास्टर आव स्टेर (Master of Stair) जो स्काटलैण्डका गवर्नर था, मैकडोनल्ड वंशसे पहलेसे ही वैर रखता था। अतः अवसर पाकर उसने आबालवृद्ध समस्त वंशको मरवा डाला। यह घोर अत्याचार था और इसने विलियमके राज्यमें सदाके लिए कालिमा लगा दी। परन्तु इसमें अधिक दोष स्टेरका था। स्टेरने कुछ सिपाही भेज दिये थे जो मित्र बनकर १५ दिन तक मैकडोनल्ड वंशके साथ रहते रहे और एक रातको अचानक उन्होंने वंशके सब लोगोंको मार डाला। कहते हैं कि कुल ३८ आदमी मारे गये। इनमें एक बारह वर्षका निर्दोष बालक और एक ८० वर्षका बुड्ढा भी था। जब एडिनबरामें इस हत्याका समाचार पहुँचा, तब स्काटलैण्डकी पार्लमेंट बहुत क्रुद्ध हुई और विलियमको मास्टर आव स्टेरको पदच्युत करना पड़ा।

देशके बाहर भी विलियम और फ्रांससे युद्ध छिड रहा था। फ्रांसनरेशकी शक्ति उस समय बहुत बढ़ी हुई थी। उसके पास इङ्गलैण्ड तथा हालैण्ड दोनोंसे अधिक पोत थे। उसकी आय इङ्गलैण्डकी आयसे दुगुनी थी। इस समय इङ्गलैण्डकी सामुद्रिक शक्ति भी कम हो गयी थी। यही कारण था कि लूई जेम्सकी सहायताके लिए पोत भेजनेमें सफल हो जाया करता था। सवत् १७५७ के आषाढ (१६६० ई० के जून) मासमें जब विलियम आयर्लैण्डमें था, उस समय टूरविल (Tourville) नामक फ्रेंच पोताध्यक्षने बीचीहेडपर अंग्रेजों और डचोंके पोतोंको हरा दिया और टेनमौथ (Teignmouth) में आग लगा दी। लूईने इङ्गलैण्डपर भी आक्रमण करनेका विचार किया। विलियमके कुछ दगाबाज मन्त्री लूईसे मिले थे। जेम्सके पक्षपाती भी विप्लव करनेके लिए तैयार थे। इस समय यदि लूई बुद्धिमानीसे काम लेता तो विप्लवकी काया पलट जाती, परन्तु वह चूक गया और सवत् १७४६ के ज्येष्ठ (१६६२ ई० की मई) में पोताध्यक्ष रसिलने फ्रासीसियोंको लाहोग (La Hogue) स्थानके निकट पददलित कर दिया। इस विजयसे इङ्गलैण्डका डर चला गया, समुद्रपर इङ्गलैड हालैड का प्रभुत्व स्थापित हो गया, और विलियमको अपने निजके देशमें लडनेका अवसर प्राप्त होगया। गर्मियोंके दिनोंमें वह इङ्गलैण्डके बाहर युद्धस्थलमें ही रहा करता था और १३ वर्षोंमेंसे उसके राज्यके ११ वर्ष युद्धमें व्यतीत हुए। दो तीन वर्ष तक विलियमको सफलता न हुई। सवत् १७४६ (१६६२ ई०) में वह स्टेनकर्क (Steinkirk) में और सवत् १७५० (१६६३ ई०) में वह लैण्डनमें पराजित हो गया। सवत् १७५१ (१६६४ ई०) में भी उसकी सेना हार गयी। बार बार वह

फ्रांसको रोकनेकी चेष्टा करता पर बराबर असफल होता रहा। किन्तु विलियममें एक गुण था। हार जानेपर वह अपनी सेनाका इस प्रकार प्रबन्ध करता था कि जिससे विजेताको विजयका पूरा लाभ न मिलता था और फिर ताल ठोंककर सामने आ जाता था। अन्तमें धीरे धीरे उसे सफलता मिलने लगी। सवत् १७५२ (१६९५ ई०) में नामूरपर उसका अधिकार होगया—दोनों पक्ष इस समय तक बराबर हो रहे थे और युद्धसे थक गये थे। अन्तमें सवत् १७५४ (१६९७ ई०) में रिस्विक (Ryswick) की सन्धि होगयी। इसके अनुसार लूईने स्ट्रेस्वर्गको छोडकर वे सब प्रान्त स्पेन तथा जर्मनीको लौटा दिये जो उसने युद्धमें जीते थे। यह पहला अवसर था जब लूईने ऐसी सन्धि की जिसमें उसे कोई प्रदेश नहीं मिला। लूईकी शक्तिकी बाढ़ इस समयसे रुक गयी। इग्लैण्डके हाथ कोई प्रदेश नहीं लगा परन्तु इतना ही क्या कम था कि—

[१] लूईने विलियमको इग्लैण्डनरेश स्वीकार कर लिया अर्थात् जेम्सका पक्ष छोड दिया।

[२] लूईकी शक्तिकी बाढ़ रुक गयी।

[३] इग्लैण्डकी सामुद्रिक शक्ति बढ़ गयी।

[४] हालैण्ड लूईके पजेसे बच गया।

विलियमके इग्लैण्ड आनेपर पार्लमेंटकी ओरसे जो अधिकार-घोषणा सवत् १७४६ (१६८९ ई०) में की गयी थी, उसमें मुख्य मुख्य नौ अधिकारोंका वर्णन था। अर्थात्—

[१] राजा पार्लमेंटके किसी नियमको शिथिल नहीं कर सकता।

[२] राजा पार्लमेंटकी स्वीकृतिके विना कर या किसी प्रकारका धन नहीं ले सकता।

[३] शान्तिके समय सेना रखना नियम विरुद्ध है।

[४] कोई कैथोलिक पुरुष या स्त्री, या वह पुरुष या स्त्री जिसका कैथोलिक स्त्री या पुरुषसे विवाह हुआ हो, इंग्लैण्डकी गद्दीपर नहीं बैठ सकता या सकती।

[५] विशेष न्यायालय, नक्षत्र भवन-न्यायालयके समान, नहीं बन सकते।

[६] पार्लमेंटके सभासदोंका निर्वाचन स्वतंत्रतासे होना चाहिये।

[७] पार्लमेंटमें स्वतन्त्रतासे वादविवाद करना नियम-विरुद्ध नहीं है।

[८] प्रत्येक पुरुषको अधिकार है कि राजाकी सेवामें प्रार्थनापत्र भेज सके।

[९] पार्लमेंट जल्दी जल्दी हुआ करे।

अब पार्लमेंटका पूरा अधिकार होगया। इससे पहले पार्लमेंटसे जो रुपया स्वीकृत होता था उसको राजा जैसे चाहता व्यय करता था। परन्तु अब नियम हो गया कि रुपया केवल उन्हीं बातोंमें व्यय हो जिनकी स्वीकृति पार्लमेंटसे ले ली जाया करे। 'आय-व्यय' पर अधिकार करनेके अतिरिक्त पार्लमेंटने मन्त्रीगणपर भी अधिकार जमा लिया। अब किसी मंत्री की शक्ति न थी कि राजाके कहने मात्रसे कोई अनुचित कार्य्य कर सके। क्योंकि यह भी नियम हो गया था कि राजासे क्षमा किया हुआ पुरुष भी पार्लमेंटसे दण्डनीय हो सकता है। पार्लमेंटसे 'कर' प्रत्येक वर्ष पास होने लगे। अत आवश्यकता हुई कि हर वर्ष पार्लमेंट बुलायी जाय। और चूंकि 'कर' हाउस आव कामन्सके ही हाथमें था, अत हाउस आव कामन्सकी शक्ति बढने लगी।

हम बता चुके है कि पार्लमेण्टमें दो दल थे—एक व्हिग्, दूसरा टोरी। व्हिग् लोग पार्लमेण्टके अधिकारके पक्षमें थे और टोरी राजाके। व्यापारी जन तथा धर्मके सम्बन्धमें स्वतंत्र विचार रखनेवाले लोग ह्विग् थे और अन्य टोरी। जिस पार्लमेंटने विलियमको गद्दीपर बैठाया था उसमें व्हिग्दलका बहुमत था। व्हिग् लोग चार्ल्स और जेम्सके समयमें जो कुछ कठिनाइयाँ उन्हें झेलनी पडी थीं उनका बदला लेना चाहते थे और 'टोरी' दलके उन व्यक्तियोंको, जिन्होंने जेम्सको उसकी गैरकानूनी कारवाइयोंमें सहायता दी थी, दण्ड देना चाहते थे। पर विलियम उन्हें क्षमा करना चाहता था और दोनों दलोंको मिला कर काम करना चाहता था। यह झगडा इतना बढा कि विलियमने देश छोड देनेकी धमकी दी और माघ संवत् १७४६ (जनवरी १६६० ई०) में पार्लमेण्ट तोड दी। संवत १७४६ (१६६० ई०) के (चेत्र) मार्चमें जो पार्लमेंट निर्वाचित हुई उसमें टोरियोंका बहुमत था। विलियम व्हिग् और टोरी दोनोंसे मेल रखना चाहता था। अत उसने पहले दोनों दलोंसे मन्त्री चुने। परन्तु उसको अनुभव होगया कि भिन्न भिन्न विचारोंके मन्त्री साथ कार्य करनेमें असमर्थ हैं। दूसरी बात यह भी मालूम हुई कि हाउस आव कामन्सका अधिकार बढनेके कारण उसी दलके मंत्री अधिक कार्य्य कर सकते हैं जिस दलका हाउस आव कामन्समें अधिकार हो। अत सन्दलैंडने जो पहले जेम्सका कट्टर सहायक था, यहाँ तक कि उसने कैथोलिक धर्म स्वीकार कर लिया था, पर जो अब विलियमके पक्षमें होगया, संवत् १७५० (१६६३ ई०) में विलियमको यह सलाह दी कि जिस दलका पार्लमेंटमें बहुमत हो उसीसे मंत्री चुनने चाहिये। विलियमने यह

शिक्षा मान ली और इस समयतक इसीके अनुकूल कार्य्य होता आता है। अर्थात् कैबिनेट [Cabinet] या प्रबन्धकर्तृ-सभाके वही सभासद होते हैं जिनका दल हाउस आव कामन्समें अधिक है। संवत् १७४६ (१६८९ ई०) में पार्लमेण्टमें दो कानून पास हुए। एक 'सहिष्णुताका कानून' (टालरेशन एक्ट) जिसके अनुसार प्रत्येक डिसेण्टरको अर्थात् उन प्रोटेस्टेण्ट लोगोंको जो इंग्लैण्डके चर्चकी सब बातोंको नहीं मानते थे, अपनी इच्छाके अनुकूल उपासनाका अधिकार हो गया। दूसरा 'ग़दर कानून' (म्यूटिनी एक्ट) जिसके अनुसार राजाको यह अधिकार मिल गया कि वह स्थायी फौज रखे और उसके नियमन करने तथा विद्रोह आदि दबानेके लिए फौजी कानूनसे काम ले सके, पर यह कानून प्रतिवर्ष पास कराना होता है जिससे प्रतिवर्ष पार्लमेण्टका बुलाना आवश्यक हो गया। संवत् १७५१ (१६९४ ई०) में 'तीनवर्षीय' नियम पास हुआ कि पार्लमेण्ट तीन वर्षोंमें कमसे कम एक बार अवश्य हुआ करे और कोई पार्लमेण्ट तीन वर्षसे अधिक न रहने पावे। संवत् १७५२ (१६९५ ई०) में छापेखानोंको स्वतन्त्रता दी गयी। जब संवत् १७५१ (१६९४ ई०) में महारानी मेरीका देहान्त हो गया। तब विलियम अकेला ही रह गया। संवत् १७५८ (१७०१ ई०) में 'उत्तराधिकार विधान' पास हुआ जिसके अनुसार निश्चित हुआ कि विलियमके सन्तानरहित होनेके कारण उसके पश्चात् मेरीकी छोटी बहिन एनको राज मिले और एनके पश्चात् उसके सन्तानहीन मरनेपर, हैनोवरके अधिपति (जिसको इलैक्टर कहते हैं) की भार्य्या सोफिया तथा उसकी सन्तानको जो प्रोटेस्टेण्ट धर्मानुयायी हो गद्दी दी जाय। यह सोफिया प्रथम जेम्सकी लड़कीकी लड़की थी। इस

फ्रांसनरेशने अपने पोतेके स्पेननरेश-होनेपर इस बातसे लाभ उठाया। और स्पेनके बन्दरगाहोंमें अब फ्रांसके पोत स्वतंत्रतासे आने जाने लगे। इसके अतिरिक्त उसने स्पेनिश नेदर्लैंएडमें जिसे आजकल वेल्जियम कहते हैं सेना भेजी। अब आवश्यक हो गया कि विलियम नियमानुसार फ्रांसनरेशसे युद्ध छेड दे। परन्तु हाउस आव कामन्सको शान्ति प्रिय थी। रिस्विककी सन्धिके पश्चात् ही उसने विलियमकी इच्छाके विरुद्ध सेनाएँ कम कर दी थीं। यहा तक कि राजाके साथ जो डच संरक्षक रहते थे, वे भी देश छोड देनेको बाध्य किये गये। विलियमको यह बात इतनी बुरी लगी कि वह पदत्याग करनेपर उद्यत होगया, किन्तु फिर कई लोगोंके समझानेपर रुक गया। इस समय एक और घटना हो गयी जिसने विलियमका मनोरथ पूरा कर दिया। द्वितीय जेम्स सवत् १७५८ (१७०१ ई०) में मर गया था। अब सूचना मिली कि जेम्सके लडकेको—जो सवत् १७४५ (१६८८ ई०) में उत्पन्न हुआ था और जिसके कारण उसे राजगद्दी छोडकर भागना पडा था—लूईने बुलाकर तृतीय जेम्सके नामसे इङ्गलैंएड नरेश होनेकी व्यवस्था दे दी और उसकी सहायताके लिए सेना देनेकी प्रतिज्ञा कर ली। इस सूचनाने मानो रूईके ढेरमें आग लगा दी। क्या टोरी, क्या ह्विग्, सभी एकमत होकर लूईके विरुद्ध हो गये। उन्होंने कहा कि किसी विदेशी राजाको क्या अधिकार हमारी राजगद्दीके प्रबन्धमें हस्तक्षेप करे। बहुतसा धन लिए स्वीकृत हुआ परन्तु विलियम ८ फाल्गुन १७०२ ई०) को घोडेसे गिर पडा मार्च) को उसका प्राणान्त हो गया।

सन्धि' हुई, जिसके अनुसार इटली फ्रांसके अधीन और शेष स्पेनका राज्य आस्ट्रिया-नरेशके दूसरे पुत्र आर्चड्यक चार्ल्स को मिलना निश्चित हुआ, परन्तु स्पेननरेश और स्पेन जाति यह नहीं चाहती थी कि स्पेनका साम्राज्य इस प्रकार टुकडे टुकडे हो जाय, अतः स्पेन-नरेशने यह निश्चित किया कि स्पेनका समस्त राज्य लूईके पोते फिलिपको मिले और वह इस आशयका एक वसीयतनामा छोड गया। संवत् १७५७ [१७०० ई० के नवम्बर] में स्पेननरेश द्वितीय चार्ल्सका देहान्त होगया और फिलिप पॉचवें फिलिपके नामसे गद्दीपर बैठा।

विलियमको भय हो गया कि यदि कहीं फ्रांसकी गद्दी भी फिलिपको मिल गयी तो उसकी शक्ति असीम हो जायगी। अत संवत् १७५८ (१७०१ ई०) में फ्रांस तथा स्पेनके विरुद्ध इंग्लैण्ड, आस्ट्रिया और हालैण्डमें एक "महती सन्धि" (ग्रैण्ड एलायन्स) हो गयी। इसका मुख्य उद्देश्य यह था कि लूई स्पेनके राज्यमें हस्तक्षेप न करने पावे, फ्रांस और स्पेन कभी एक राजाके अधीन न रहें और इटली तथा बेलजियम आर्चड्यूक चार्ल्सको मिल जाय।

इस समय इग्लैण्डको युद्ध करनेमें कोई आपत्ति न थी और धन इकट्ठा करना भी कठिन न था। एक तो 'बैङ्क आव इग्लैण्ड' स्थापित होगया था जिससे गवर्मेण्टको रुपया उधार मिल सकता था। दूसरे 'जातीय ऋण' (नैशनल डेट) की प्रणाली जारी हो चुकी थी अर्थात् सरकार आवश्यकताके समय लोगोंसे ऋण ले लेती थी और उसको चुकानेकी कोई तिथि निश्चित न थी। केवल व्याज मिल जाया करता था। चूंकि प्रबन्ध जातीय पार्लमेण्टके ही हाथमें था, अत प्रजाको ऋण देनेमें भी संकोच न था।

फ्रांसनरेशने अपने पोतेके स्पेननरेश होनेपर इस बातसे लाभ उठाया। और स्पेनके बन्दरगाहोंमें अब फ्रांसके पोत स्वतन्त्रतासे आने जाने लगे। इसके अतिरिक्त उसने स्पेनिश नेदर्लैण्डमें जिसे आजकल बेल्जियम कहते हैं सेना भेजी। अब आवश्यक हो गया कि विलियम नियमानुसार फ्रांसनरेशसे युद्ध छेड़ दे। परन्तु हाउस आव कामन्सको शान्ति प्रिय थी। रिस्विककी सन्धिके पश्चात् ही उसने विलियमकी इच्छाके विरुद्ध सेनाएँ कम कर दी थीं। यहा तक कि राजाके साथ जो डच सरक्षक रहते थे, वे भी देश छोड़ देनेको बाध्य किये गये। विलियमको यह बात इतनी बुरी लगी कि वह पदत्याग करनेपर उद्यत होगया, किन्तु फिर कई लोगोंके समझानेपर रुक गया। इस समय एक और घटना हो गयी जिसने विलियमका मनोरथ पूरा कर दिया। द्वितीय जेम्स सवत् १७५८ (१७०१ ई०) में मर गया था। अब सूचना मिली कि जेम्सके लडकेको—जो सवत् १७४५ (१६८८ ई०) में उत्पन्न हुआ था और जिसके कारण उसे राजगद्दी छोडकर भागना पडा था—लूईने बुलाकर तृतीय जेम्सके नामसे इग्लैण्ड नरेश होनेकी व्यवस्था दे दी और उसकी सहायताके लिए सेना देनेकी प्रतिज्ञा कर ली। इस सूचनाने मानो रूईके ढेरमें आग लगा दी। क्या टोरी, क्या व्हिग्, सभी एकमत होकर लूईके विरुद्ध हो गये। उन्होंने कहा कि किसी विदेशी राजाको क्या अधिकार है कि हमारी राजगद्दीके प्रबन्धमें हस्तक्षेप करे। बहुतसा धन पार्लमेण्टसे युद्धके लिए स्वीकृत हुआ परन्तु विलियम ८ फाल्गुन सवत् १७५८ (२० फरवरी १७०२ ई०) को घोड़ेसे गिर पडा और २५ फाल्गुन (८ मार्च) को उसका प्राणान्त हो गया।

दूसरा अध्याय।

महारानी एन।

संवत् १७५९ से १७७१ (१७०२ से १७१४ ई०) तक



तीय विलियमके पश्चात् उसकी साली एन महारानी हुई। इसके गुण और दोष अंग्रेजोंके गुण तथा दोषोंके समान थे, अत: यह प्राय सर्वप्रिय थी। अन्य अंग्रेजोंकी भाँति इसे भी डिसेण्टरोंसे घृणा थी। उनको राजकर्मचारी होनेसे रोकनेके लिए नियम भी पास किये गये थे।

जिस लडाईकी तैयारी तृतीय विलियमने उत्सुकतासे की थी उसका आरम्भ एनके समयमें हुआ। और मार्लबरो (Marlborough) ब्रिटिश, डच, तथा जर्मन सेनाका सयुक्त सेनाध्यक्ष नियत किया गया। मार्लबरो ससारके प्रसिद्ध विजेताओं और सेनाध्यक्षोंमें गिना जाता है। प्रारम्भमें लूईकी स्थिति अच्छी थी। स्पेन और नेदर्लैण्ड उसके अधिकारमें थे। बवेरियाके साथ भी उसकी सन्धि थी जिससे आस्ट्रियापर आक्रमण करना सरल था और इससे इटली और हालैण्ड स्थित मित्रोंकी फौजें अलग अलग हो जाती थीं। हालैण्डवालोंको सर्वदा आक्रमणका भय रहता था, इससे वे अपनी सेना जर्मनीकी तरफ भेजनेसे डरते थे। फ्रांसकी सारी सेना एक व्यक्तिके अधीन थी। इधर मार्लबरोको अपने सब मित्रोंको मिलाये रखना बडा कठिन था। पहले दो वर्ष तो वह यही प्रबन्ध करता रहा कि नेदर्लैण्डके उस भागपर जो डच लोगोंका था, आक्रमण न होने पावे। परन्तु सवत् १७६१

(१७०४ ई०) में एकाएकी उसने राइन नदी पार करके आस्ट्रियन सेनाकी सहायतासे फ्रांसवालोंको डैन्यूब नदीके तीर पर ब्लैन्हिम (Bleinhiem) में पराजित कर दिया। इसका फल यह हुआ कि जर्मनी भरसे फ्रांसवाले भगा दिये गये। मार्लबरोका बडा आदर हुआ। उसको वुडस्टाक् (Woodstock) की रियासत दी गयी और पार्लमेण्टने उसके लिये एक महल बनानेकी स्वीकृति दी, जो रणक्षेत्रके नामपर ब्लेन्हिम हाउस कहलाया। मार्लबरोने सवत् १७६३ (१७०६ ई०) में रैमीलीज (Ramilies) में फ्रांसवालोंको फिर पराजित किया और उनको स्पेनिश नेदर्लेण्डसे निकाल दिया।

अंग्रेज और आस्ट्रियन लोग स्पेनमें लडते रहे, परन्तु इतने सफल न हुए। पोताध्यक्ष सर जार्ज रुक (Sir George Rooke) ने जिब्राल्टर ले लिया। तबसे बराबर अंग्रेजोंका उसपर अधिकार है। परन्तु स्पेनवालोंने फिलिपका ही साथ दिया। उनका कथन था कि फिलिप हमारा आश्रय लेता है, हम उसे ही आर्चड्यूक चार्ल्ससे अच्छा समझते हैं, क्योंकि चार्ल्स विदेशियोंकी सहायतासे हमपर राज्य करना चाहता है।

इस समय स्काटलैण्डमें एक और झगडा उठा। हम ऊपर बतला चुके हैं कि यद्यपि स्काटलैण्ड और इंग्लैण्डका राजा एक ही था तथापि पार्लमेण्ट पृथक् पृथक् थी। स्काटलैण्डवालोंको इंग्लैण्डमें व्यापार करनेकी स्वतन्त्रता न थी और उनके मालपर बहुत कर लिया जाता था। स्काटलैण्डवालोंने इस समय धमकाया कि हम सोफियाका अपनी गद्दी न देंगे और अपना राजा किसी औरको चुनेंगे। यदि ऐसा हो जाता तो बने बनाये साम्राज्यके टुकडे टुकडे हो जाते। इंग्लैण्डके नीतिज्ञोंने स्काटलैण्डवालोंको व्यापारके विषय

में स्वतंत्रता दे दी और सवत् १७६४ (१७०७ ई०) में सयुक्त राजसभाका कानून (यूनियन एक्ट) पास होगया जिसके अनुसार इग्लैण्ड और स्काटलैण्डकी पार्लमेण्टें परस्पर मिलकर एक हो गयीं।

मार्लबरोने सवत् १७६५ (१७०८ ई०) में औडीनार्ड (Oudenarde) में और संवत् १७६६ (१७०९ में) मालप्लैका (Malplaquet) में फ्रांसीसियोंको फिर हराया। यह मार्लबरोकी अन्तिम विजय थी।

मार्लबरोकी बढती हुई शक्तिको बहुतसे लोग देख न सके। मार्लबरो ह्विग् था, उसके कारण ह्विगोंकी प्रबलता होगयी। इन सब बातोंने मार्लबरोको गिरा दिया। महारानी भी मार्लबरोकी स्त्रीसे जो बहुत दिनोंसे उसकी मित्र थी कुपित होगयी। मार्लबरो निकाल दिया गया और हार्ले (Harley) तथा सेण्ट जौन् मन्त्री नियत हुए। सवत् १७६७ (१७१० ई०) में जो पार्लमेण्ट निर्वाचित हुई उसमें टोरियोंका बहुपक्ष था।

टोरियोंने लूईसे सवत् १७७० (१७१३ ई०) में यूट्रैक्ट (Utrecht) स्थानमें सन्धि कर ली जिसके अनुसार अंग्रेजोंको जिब्राल्टर, माइनोर्का, नोवास्कोशिया, और न्यूफौण्डलैण्ड मिल गये और स्पेनके उपनिवेशोंमें व्यापार करनेका अधिकार होगया। फिलिप स्पेनका राजा बना रहा परन्तु स्पेन और फ्रासके राज्य मिलने न पाये। सवत् १७७१ (१७१४ ई०) में एनका देहान्त होगया।

इस युद्धके बाद इग्लैण्डकी नाविक शक्ति बहुत बढ गयी। हालैण्डको अपनी रक्षाके लिए बराबर फ्रासमे युद्ध करना पड़ा था। उसमें इतनी शक्ति न रही कि समुद्रपर वह इग्लैण्डका मुकाबिला कर सके। ला होगकी पराजयके

बाद लूईका ध्यान भी समुद्रकी तरफसे हट गया था। वह अपनी फौजको बढा रहा था। उसकी नाविक शक्ति कम हो गयी थी। अत हालैण्ड और फ्रांस जो इग्लैण्डकी प्रतिस्पर्धा कर सकते थे नाविक शक्तिमें कमजोर हो गये और समुद्रपर इग्लैण्डका प्रभुत्व स्थापित होगया।

तीसरा अध्याय।

प्रथम जार्ज।

संवत् १७७१–१७८४ (१७१४–१७२७ ई०)

गत अध्यायमें वर्णन हो चुका है कि एनके टोरी मन्त्रियोंने यूट्रेक्टमें संवत् १७७० (१७१३ ई०) में फ्रांसनरेशसे सन्धि कर ली। व्हिग् लोग इस सन्धिके विरुद्ध थे। बहुतोंका तो यह विचार था कि इस सन्धिसे उतना लाभ इग्लेंडको नहीं हुआ जितना होना चाहिये था। परन्तु टोरियोंने सन्धि करनेमें इतनी उत्सुकता इसलिए दिखायी थी कि वे द्वितीय जेम्सके लडकेको एनके पश्चात् गद्दी देना चाहते थे। महारानी एन भी अपने सौतेले भाईके पक्षमें थी। सेण्ट जौनने जिसे लार्ड बोलिङ्ब्रोक भी कहते थे, द्वितीय जेम्सके लडकेसे पत्र-व्यवहार करना भी आरम्भ कर दिया था। परन्तु हार्ले, जो ड्यूक आव आक्सफर्ड था, इसके विरुद्ध था। ११ श्रावण १७७१ (२७ जूलाई १७१४) की रातको बहुत देरतक झगडा होता रहा। इसमें महारानी भी थी। यह झगडा इतना बढा कि आक्स-

फर्ड कोषाध्यक्षके पदसे च्युत भी कर दिया गया। यदि सेंएट जौनको कुछ और अवसर मिल जाता तो राजगद्दी फिर स्टुअर्ट वंशमें चली जाती, परन्तु रात्रिके झगडेका उनके कोमल हृदयपर इतना बुरा प्रभाव पडा कि वह बीमार हो गयी। उसका स्वास्थ्य पहले भी अच्छा न था। उसके उदरसे १६ बच्चे हुए थे, जिनमेंसे एक भी न बचा। इस चिन्ताने उसके शरीरको और भी बिगाड दिया था। अतः चार दिनों-में ही महारानीकी मृत्यु हो गयी और सेंएट जौनको अपने उद्देशकी पूर्तिके लिए समय न मिला।

आक्सफर्डके स्थानमें अर्थ सचिवका पद ड्यूक आव श्रूस्बरीको दिया गया था। यह व्हिग् था, अतः इसने उनके मरते ही संवत् १७५८ (१७०१ ई०) के 'उत्तराधिकार विधान' के अनुसार सोफियाके पुत्र जार्जको गद्दीपर बैठा दिया क्योंकि सोफियाका उनके पहले ही देहान्त हो चुका था।

जार्जका पिता अर्नेस्ट अगस्टस (Ernest Augustus) हैनोवरका इलेक्टर था। जर्मनीके वे प्रान्त जिनके शासकोंको जर्मनीके सम्राट्के निर्वाचनका अधिकार होता था इलेक्टोरेट और उनके शासक इलेक्टर कहाते थे। हैनोवर इसी प्रकारका एक एलोक्टोरेट था। जार्जकी माता सोफिया बोहेमियाकी महारानी एलीज़बिथकी छोटी लडकी और प्रथम जेम्सकी दौहित्री थी। जार्जका जन्म संवत् १७१७ (१६६० ई०) में हुआ था, इस प्रकार राज्याभिषेकके समय उसकी अवस्था ५४ वर्षकी थी। जार्ज अंग्रेजी भाषा बिलकुल नहीं जानता था और न लोगोंसे मिलता ही अधिक था। उसने अपनी स्त्रीको ३२ वर्षसे अहल्डन (Ahlden) के किलेमें कैद कर रखा था, अतः अंग्रेज लोग उससे प्रेम नहीं करते थे। उसे भी

इग्लेंडसे अधिक प्रेम न था। उसके ही सजातीय लोग उसके साथ रहा करते थे। अंग्रेज लोग उसे केवल इसलिए ही चाहते थे कि यह प्रोटेस्टेएट था।

जार्जको व्हिगोंने बुलाया था, अत यह उनका ही पक्ष लेता था। उसके समयमें जो पहली पार्लमेंट हुई उसमें व्हिगोंका ही आधिक्य था। उन्होंने टोरी मन्त्रियोंपर अभियोग चलाना चाहा। बोलिङ्ब्रोक और आर्मोण्ड फ्रांस भाग गये, आक्सफर्डको दो वर्षतक लन्दनके टावरमें कैद भुगतनी पडी। १७१४ से १७६१ ई० तक मन्त्रिमडल ह्विगदलके ही हाथमें रहा। ह्विगदलके शासनके समयमें स० १७४५ (१६८८ई०)की क्रांतिका फल स्पष्ट रूपसे प्रकट हुआ। मन्त्रिमडल द्वारा शासन प्रबन्ध यद्यपि विलियम और एनके समयमें प्रारम्भ होगया था पर अब यह पूर्ण रूपसे विकसित हुआ। कानूनके अनुसार शासन-प्रबन्ध अब भी राजाके अधिकारमें था पर यह प्रथा चल पडी कि राजाको उसी दलसे मन्त्री चुनना होता था जिसका बहुमत कामन्स सभामें होता था और राजाको अपनी इच्छाके विरुद्ध भी मन्त्रियोंकी सलाहसे काम करना पड़ता था। इस प्रकार राजाका अधिकार धीरे धीरे कम होगया। जो कानून पार्लमेण्टसे पास हो जाता था उसे राजाको स्वीकार करना पडता था। कोषपर भी कामन्सका ही अधिकार था, इसलिए कामन्स सभाका प्रभाव बढ गया।

सवत् १७७२ (१७१५ ई०) में द्वितीय जेम्सके लडकेने स्काटलैण्डपर आक्रमण किया। उसे फ्रांसवाले तृतीय जेम्स या "ली प्रिटेण्डेएट" (Le Pretendant) अर्थात् अधिकारी कहते थे और इस फ्रेंच शब्दका अनुवाद ह्विग् लोगों-ने अपने उद्देशानुसार प्रिटेण्डर (Pretender) या धोखे-

घाज किया। इग्लैंडके इतिहासमें जेम्सका लडका श्रोल्ड प्रिटेण्डर या वृद्ध अधिकारी और उसका पोता चार्ल्स यग प्रिटेण्डर या युवा अधिकारी, कहलाता है। जो विद्रोह वृद्धाधिकारी तथा युवाधिकारीको गद्दीपर वैठानेके उद्देश्यसे हुए उनको जेकोबाइट विद्रोह कहते हैं। स्काटलेंडमें अर्ल मारने वृद्धाधिकारीको बुलाया था। मार एनके समयमें स्काटलेंडका शासक था और उसने जार्जकी भी खुशामद करनी शुरू की थी, परन्तु जार्जने परवाह न की, इसलिए मार चिढ गया और वृद्धाधिकारीको गद्दीपर वेठानेका यत्न करने लगा। इग्लैंडमें भी नार्थम्बर्लैण्ड तथा कम्बर्लैण्डवालोंने उसका साथ दिया। स्काटलैंडवालोंसे शेरिफमूर (Sheriffmuir) में लडाई हुई, जिसमें किसीकी जीत न हुई, परन्तु प्रेस्टनमें अग्रेज विद्रोहियोंको वडी भारी पराजय सहनी पडी। सवत् १७७३ (१७१६ ई०) में वृद्धाधिकारी फ्रास भाग गया। सवत् १७७३ (१७१६ ई०) में पार्लमेण्टका निर्वाचन भी होना चाहिये था, क्योंकि यह नियम था कि कोई पार्लमेण्ट तीन वर्षसे अधिक न रहे, परन्तु ह्विग् लोगोंको डर था कि यदि आगामी पार्लमेण्टमें जैकोबाइट लोगोंका आधिक्य होगया तो वे विद्रोह करेंगे। अत. उन्होंने एक सप्तवर्षीय विधान (The Septennial Act दि सेप्टेनियल एक्ट्) पास किया जिसका आशय यह था कि पार्लमेण्ट सात वर्षतक रह सकती है।

अन्यदेशीय विषयोंमें जार्जकी विशेष रुचि थी और वह यह भी चाहता था कि अन्य देश जैकोबाइट लोगोंको सहायता न देसकें। इसलिए इंग्लैण्ड, फ्रास तथा हालैण्डसे सवत् १७७४ (१७१७ ई०) की त्रिगुट सधि (ट्रिपिल एलायन्स) हुई। संवत् १७७५ (१७१८ ई०) में जर्मनीके सम्राट् भी

इसमें मिला लिये गये और स्पेनसे युद्ध छिड गया, क्योंकि स्पेनवाले अपने खोये हुए स्वत्वको फिर लेना चाहते थे। स्पेनके मंत्री अल्बेरूनीने वृद्धाधिकारीको सहायता देनेके लिए बहुतसी सेना तथा दस पोत दिये परन्तु तूफानने इनको भी नष्ट कर दिया।

यूट्रक्टकी सन्धिके पश्चात् इंग्लैण्डका व्यापार दक्षिणी अमरीकामें बढने लगा था। इस कामके लिए साउथ सी कम्पनी बनायी गयी थी। इस कम्पनीवालोंने जनताको लाभकी इतनी बडी बड़ी आशाएं बँधायीं कि सौ सौ पौण्डका हिस्सा एक एक हजार पौण्डको बिकने लगा। जिसने जो कुछ धन बचाया था उसे कम्पनीमें लगा दिया। जमीन्दारोंने अपनी जमीन्दारी बेच कर कम्पनीमें रुपया लगाया। बूढी गरीब औरतोंने भी बडे लाभकी आशासे अपनी बचतके रुपये कम्पनीमें लगा दिये। आशा दिलायी गयी थी कि ५० प्रतिशतक लाभ होगा। इसकी देखा देखी अन्य कम्पनियाँ भी खुल गयीं। साउथ सी कम्पनीको तो राज्यसे आज्ञा मिली हुई थी परन्तु औरोंको नहीं। यह देख कर साउथ सी कम्पनीवालोंने उन कम्पनियोंपर अभियोग चला कर उन्हें कुचल डाला, परन्तु उनके साथ ये स्वयं भी पिस गये, क्योंकि साउथ सी कम्पनीका भंडा फूट गया और दिवाला निकल गया। लाखों बिचारे जो स्वर्णवर्षाकी ओर ताक लगाये बैठे थे, भूखों मरने लगे। अब तो जनताका क्रोध राजकर्मचारियों और कम्पनीके सचालकोंपर इतना बढा कि विद्रोह होने लगा। एक व्यक्तिने प्रस्ताव किया कि कम्पनीके सचालकोंको बोरोंमें कसकर टेम्समें फेंक देना चाहिये। परन्तु सर राबर्ट वालपोलने जो इस अशान्तिके समय प्रधान मंत्री

गया। इस प्रकार अन्य देशोंसे रुई आदि वस्तु अधिक आने लगी और इग्लैण्डके निवासियोंको चीजें बनाना सरल हो गया। दूसरा सुधार यह हुआ कि इंग्लैण्डसे बाहर जानेवाले तैयार किये हुए मालपर जो कर लगता था वह बहुत कम कर दिया गया। इससे अंग्रेज लोग अन्य देशोंमें माल सस्ता बेचने लगे और अंग्रेजी कलाकौशलकी उन्नति होने लगी। उत्तरी अमरीकाके उपनिवेशोंको चावल बाहर भेजनेकी आज्ञा इस शर्तपर मिल गयी कि वह माल अंग्रेजी जहाजोंमें ही जाया करे। इस प्रकार उपनिवेशोंका व्यापार बढा और इग्लैंड-के जहाजोंकी दशा भी उन्नत होने लगी।

वालपोल शान्तिप्रिय था। वह जानता था कि युद्धके सम-यमें आन्तरिक उन्नति नहीं हो सकती। तीसरे विलियमके समयसे लगातार युद्ध ही युद्ध चला आता था, अत वालपो-लने यथाशक्ति युद्धकी ओरसे हाथ खींचा। सवत् १७७२ (१७१५ ई०) में चौदहवाँ लुई जो फ्रासका राजा था, मर गया और उसके स्थानपर पन्द्रहवाँ लुई गद्दीपर बैठा। वह अभी बच्चा ही था और उसके सरक्षक इंग्लेंडके मित्र थे, अत पडोसियोंसे झगडा न हुआ। केवल सवत् १७७५ [१७१८ ई०] में स्पेनसे लडाई छिडी थी, परन्तु वह दो वर्षमें ही शांत होगयी। सवत् १७८२ (१७२५ ई०) में स्पेनसे फिर बिगडी, परन्तु वालपोल सर्वदा शान्तिके पक्षमें था अत युद्ध आधे दिलसे हुआ। उधर फ्रांसके शान्तिप्रिय मत्री फ्लूरी तथा वाल पोलने सन्धिके लिए भी प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया और सवत् १७८६ (१७२९ ई०) में सन्धि हो गयी। सवत् १७९० (१७३३ ई०) में फ्रांसनरेश पन्द्रहवें लुई और स्पेननरेश फिलिपने सन्धि कर ली जिसे 'घरू समझौता' (फैमिली

कन्सैक्ट) कहते हैं। इस घरू समझौतेके अनुसार फ्रांसको स्पेनके उपनिवेशोंमें व्यापार करनेके अधिक अधिकार मिल गये और अंग्रेजोंसे वैमनस्य हो गया। उस समय प्रत्येक देश अपने ही उपनिवेशोंसे व्यापार करता था, परन्तु अंग्रेज लोग अपने जहाजोंमें छिपाकर स्पेनके उपनिवेशोंमें माल भेज दिया करते थे। यह नियमविरुद्ध कारवाई बहुत दिनोंसे प्रचलित थी, परन्तु संवत् १७९६ [१७३६ ई०] में स्पेनवालोंने कुछ जहाज पकड लिये ओर अंग्रेजोंके साथ बुरा व्यवहार किया। जेन्किन्स (Jenkins) नामक एक जहाजका कप्तान पार्लमेण्टमें आया। उसने एक रूईकी डिबियामेंसे अपना कटा कान निकाल कर दिखलाया और कहा कि स्पेनवालोंने यह मेरा कान काट लिया है और कहा है कि यदि तुम्हारा राजा मिल जाता तो हम उसकी भी ऐसी ही गति करते। यह सुनते ही देश भर युद्ध करनेपर कटिबद्ध हो गया। वालपोलने बहुत चाहा कि युद्ध न छिड़े परन्तु व्यापारिक मामलोंके कारण लोग पहलेसे ही युद्धपर तुले बैठे थे। वालपोलने त्यागपत्र देनेकी अपेक्षा युद्ध छेडना अच्छा समझा। परन्तु उसमें सफलता न हुई। हाँ, पोताध्यक्ष वर्नन (Vernon) ने पोर्टोबेलो, जो दक्षिणी अमेरिकामें डेरियन डमरूमध्यके ऊपर है, ले लिया और पोताध्यक्ष ऐन्सनने तीन लाख पौण्डके मालका एक स्पेनिश जहाज चिलीके पास लूट लिया।

सफलताका सारा श्रेय पोताध्यक्षको मिला और असफलताका सारा दोष वालपोलके मत्थे पडा। पार्लमेण्टमें भी विरोधीपक्ष प्रबल हो रहा था। विलियम पिट तथा कुछ नवयुवक ह्विग वालपोलकी रिश्वतकी नीतिसे असन्तुष्ट हो रहे थे। टोरी भी उनसे मिल गये। इधर युद्धमें सफलता न

होनेसे वालपोलका प्रभाव जाता रहा। उसके अनुयायी कम हो गये। अन्तमें उसने संवत् १७६६ (१७४२ ई०) में त्याग पत्र दे दिया और अर्ल आव आरफोर्डके नामसे हाउस आव लार्ड्सका सभ्य हो गया।

पाँचवाँ अध्याय।

आस्ट्रियाकी गद्दीका झगड़ा।

संवत् १७६७—१८०५ (१७४०—१७४८)

वालपोलके पतनके दो वर्ष पहलेसे यूरोपमें आस्ट्रियाकी राजगद्दीके लिए झगडा चला आता था। बात यह थी कि आस्ट्रियानरेश छठे चार्ल्सके कोई पुत्र न था। वह चाहता था कि उसके पश्चात् उसका राज्य उसकी पुत्री मेरिया थेरीसा (Maria Theresea) को मिले। इस राज्यमें आस्ट्रिया हंगरी बोहेमिया और दक्षिण नेदर्लैण्डके देश सम्मिलित थे। छठे चार्ल्सने चाहा कि मेरिया थेरीसाके राज्याभिषेकमें किसी प्रकारका झगडा न हो, अतः उसने यूरोपके कई अन्य देशोंसे, जिनमें इंग्लैण्ड भी सम्मिलित था, 'विदेशीय स्वीकृति' * नामक एक सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर करा लिया, जिसके अनुसार राज्य मेरिया थेरीसाको ही मिलना निश्चित हुआ। परन्तु बवेरियाके इलेक्टर चार्ल्सने विरोध किया, क्योंकि उसकी स्त्री, जो छठे चार्ल्सके बडे भाईकी बेटी थी, आस्ट्रियाकी गद्दीकी वास्तविक

---

* Pragmatic Sanction

अधिकारिणी थी। जब सवत् १७६७ (१७४० ई०) में आस्ट्रियाका सम्राट् मर गया तब यूरोपके कई राज्योंने 'विदेशीय स्वीकृति' रूप प्रतिज्ञाका पालन आवश्यक न समझा और आस्ट्रियापर हाथ मारनेका बहाना ढूँढने लगे। प्रशाके राजा द्वितीय फ्रेडरिकने सबसे पहले हाथ बढ़ाया और सवत् १७६८ (१७४१ ई०) में सिलीसिया प्रान्तपर कब्जा कर लिया, क्योंकि कुछ दिनों पहले सिलीसिया प्रशाका ही भाग था।

बवेरियाके ड्यूकने तो पहलेसे ही विरोध किया था। अब फ्रांस तथा स्पेन और उससे मिल गये। फ्रांस चाहता था कि नेदरलैंडका वह भाग जो अबतक आस्ट्रियाके अधीन था फ्रांसके राज्यमें मिल जाय और स्पेनकी आँख इटलीके मिलान और पार्मा नामक प्रान्तोंपर लगी हुई थी।

मेरिया थेरीसाने अंग्रेजोंसे सहायता माँगी। इंग्लैंएड झट तैयार हो गया, क्योंकि इग्लैएडका इसीमें हित था। स्पेनसे तो युद्ध छिडा ही हुआ था और सवत् १८०० (१७४३ ई०) में स्पेन तथा फ्रांस नरेशने फिर समझौता (फैमिली कम्पैक्ट) नामक सन्धि की थी। अंग्रेजोंको यह अभीष्ट न था कि फ्रांस अधिक बलवान् हो जाय। स्पेनका मित्र होनेके कारण फ्रांस इग्लैएडका शत्रु ही था। दूसरी बात यह थी कि द्वितीय जार्जको इग्लैएडके अतिरिक्त अपनी पुरानी सम्पत्ति अर्थात् हैनोवरकी भी चिन्ता थी। अत मेरिया थेरीसाकी सहायताके लिए सेना जर्मनी भेज दी गयी। द्वितीय जार्ज स्वय सेनाधिपति बना और सवत् १८०० के आषाढ (१७४३ ई० जून) मासमें फ्रांसवालोंको डेटिंजन * के युद्धमे पराजित किया।

* Dettingen

इसके पश्चात् इंग्लैण्डके राजा कभी रणक्षेत्रमें नहीं गये। संवत् १८०२ (१७४५ ई०) में फोण्टीनोय * की लडाईमें फ्रांसकी ही जीत हुई। और फ्रांसने नेदरलैण्डके दक्षिणी प्रदेश के दुर्गोंपर अधिकार कर लिया।

इस समय फ्रासवालोंने अवसर पाकर इंग्लैण्डकी गद्दी पर ही कुल्हाडा मारना चाहा और द्वितीय जेम्सके पोते चार्ल्स एडवर्डको सेना देकर इंग्लैण्डके आक्रमणके लिए भेजा। उसका जहाजी बेडा नष्ट होगया। फिर फ्रांसने भी लापरवाही दिखलायी। हम पहले बता चुके हैं कि चार्ल्स एडवर्ड 'युवाधिकारी' (यंग प्रिटेण्डर) के नामसे प्रसिद्ध है। युवाधिकारी संवत् १८०२ के श्रावण (जुलाई १७४५ ई०) में केवल सात आदमियोंके साथ स्काटलैण्ड आया और उसके बर्त्ताव तथा साहसके कारण उत्तरी पहाडी देशोंके लोग उसके पक्षमें हो गये। आश्विन (सितम्बर) मासमें जर्नल कोपसे प्रेस्टन पान्स [Prestonpans] में युद्ध हुआ और 'युवाधिकारी' के साथियोंने दस मिनटमें राजसेनाको भगा दिया। कोप भी भागे हुओंमें से एक था। जब वह भागकर वर्विकमें पहुँचा तो उसके एक मित्रने कहा "शायद तुम्हीं पहले सेनाध्यक्ष हो जो अपनी पराजयकी सूचना स्वय लाये हो।" 'युवाधिकारी' एक सुन्दर और प्रभावशाली युवक था और उसको देखते ही लोग प्राय उसके साथ हो जाते थे। उसे तुरन्त उत्तर देना अच्छा आता था। जिस समय एक स्काटने उससे कहा "अरे, इस तुच्छ सेनासे तुम इंग्लैण्डकी गद्दी लेना चाहते हो, घर भाग जाओ," तो उसने झट उत्तर दिया "श्रीमान्, मैं घर ही आया हूं।" इस प्रकारकी रोचक बातचीतसे उसने

* Fontenoy

स्काट लोगोंके हृदयोंमें घर कर लिया और प्रेस्टनपान्सकी विजयसे उत्साहित होकर इंग्लेण्डकी ओर चल पडा। उस का विचार था कि अंग्रेज लोग मुझे देखते ही मेरे पक्षमें उठ खडे होंगे। परन्तु लङ्कास्टरतक उसे कुछ सफलता न हुई। मान्चेस्टरमें आकर उसने कुछ सेना एकत्र की। १८ मार्गशीर्ष (४ दिसम्बर) को वह दर्बी ❀ पहुँचा। यह शुक्रवारका दिन था। लन्दनवाले घबरा गये। जार्जने देश छोडनेकी तैयारी कर ली और अपने निजी रत्न तथा अमूल्य पदार्थ सुरक्षित स्थानमें पहुँचानेके लिए टेम्समें भेज दिये।

४ दिसम्बर (१८ मार्गशीर्ष) का दिन लन्दनमें 'कृष्ण शुक्र' (ब्लैक फ्राइडे) के नामसे प्रसिद्ध हो गया। बहुत बडी सेना इकट्ठी हो गयी। युवाधिकारीको ज्ञात हुआ कि लन्दन और दर्बीके मध्यमें तीस सहस्र राजसेना पडी हुई है जिसका सामना करना कठिन है। अत वह स्काटलैण्ड लौट गया और वहाँ पृथक् राज्य स्थापित करनेका विचार करने लगा। परन्तु द्वितीय जार्जका छोटा लडका ड्यूक आव कम्बर्लैण्ड यूरोपसे आगया और बहुत बडी सेना लेकर स्काटलेण्डपर चढ गया। सवत् १८०३ (१७४६ ई०) में कलोडन † के मैदानमें घोर युद्ध हुआ। कहते हैं कि मैकडानल्ड वंशके लोग जो युवाधिकारीकी सेनामें थे उससे केवल इस लिए अप्रसन्न हो गये कि उसने अपने दलके बायें पक्षमें उनको रखा। वे कहते थे कि हमारा वंश रावर्टब्रूसके समयमें भी (देखो एड-वर्ड प्रथम) दाहिनी ओर होकर लडा है। इस छोटी सी बातपर उन्होंने जी तोड कर युद्ध न किया और ५७ वर्षकी कोशिश ५७ मिनटमें पानीमें मिल गयी। युवाधिकारीकी

❀ Derby † Culloden

बहुत सी सेना मारी गयी। घायल लोगोंको कम्बर्लैण्डने मरवा डाला। ३२ मनुष्योंने एक झोपडेमें शरण ली परन्तु वह झोपडा जला दिया गया। युवाधिकारीको पकडनेके लिए तीस सहस्र पौण्डके पारितोषिकका विज्ञापन दिया गया। परन्तु स्काट लोग उसके भक्त बने रहे, यहाँ तक कि दरिद्रसे दरिद्र पुरुषने भी उसको न पकडवाया। इसके पश्चात् वह भाग गया। परन्तु फ्रांसीसियोंसे सवत् १८०५ (१७४८ ई०) में फ्रांसमें जो सन्धि एक्स ला शापेल (Aix-la-Chapelle) या एचिन (Aichen) पर हुई उसके अनुसार उसे फ्रांससे भी भाग जाना पडा। संवत् १८४५ (१७८८ ई०) में उसकी मृत्यु हो गयी। उसका एक भाई बचा था, उसका भी सवत् १८६४ (१८०७ ई०) में प्राणान्त हो गया। इस प्रकार द्वितीय जेम्सका नाम संसारसे मिट गया और जैकोबाइट विद्रोहसे इग्लैण्ड सदाके लिए मुक्त हो गया।

जिस समय युवाधिकारी यहाँ अपने भाग्यकी परीक्षा कर रहा था, यूरोपमें भी लडाई हो रही थी। प्रशा-नरेश फ्रेडरिकने सिलीसियाको प्राप्त करनेके लिए मेरिया थेरीसासे सवत् १८०२ (१७४५ ई०) में सन्धि कर ली। बवेरियाका ड्यूक भी मर गया। जो नया ड्यूक हुआ उसकी मेरिया थेरीसासे भी सन्धि हो गयी और थेरीसाका पति आस्ट्रियाका सम्राट् चुन लिया गया।

सामुद्रिक लडाइयोंमें सवत् १८०१ (१७४४ ई०) में तो अंग्रेज पराजित होगये, परन्तु सवत् १८०४ (१७४७ ई०) में पोताध्यक्ष एन्सन और हाक (Hawke) ने फिनिस्टर और उशण्ट अन्तरीपोंपर फ्रांसीसियोंको हरा दिया। इस लडाई का प्रभाव उपनिवेशोंपर भी पडा। अमरीकामें अंग्रेजोंने

सवत् १८०२ (१७४५ ई०) में ब्रेटन अन्तरीप (Cape Breton) पर फ्रास वालोंको हरा दिया और ब्रेटन टापू छीन लिया। परन्तु भारतवर्षमें अग्रेजोंकी हार हुई और मद्रास इनके हाथसे जाता रहा। सवत् १८०५ (१७४८ ई०) में एक्स-ला शापेल या एचिनमें सन्धि हो गयी, जिसके अनुसार

(१) मद्रास अंग्रेजोंको लौटा दिया गया।

(२) ब्रेटन टापू फ्रांसको मिल गया।

(३) सिलीसिया प्रशाके राज्यमें सम्मिलित रहा।

(४) फ्रांसने इग्लैण्डके प्रोटेस्टेण्ट राजाको स्वीकार कर लिया तथा जेम्सके वशजको निकाल दिया।

इस लडाईसे अग्रेजोंके पोतोंमें वृद्धि होगयी परन्तु फ्रांसकी शक्ति कम हो गयी।

छठाँ अध्याय।

विलियम पिट तथा सप्तवर्षीय युद्ध।

संवत् १८०३—१८२० (१७४६ ई०—१७६३ ई०)

वालपोलके पश्चात् इग्लैंडके राज्यप्रबन्धमें मुख्यत भाग लेनेवाला और वालपोलसे भी अधिक प्रसिद्ध विलियम पिट हो गया है, जो कुछ दिनोंके पश्चात् अर्ल आव चेथम (Earl of Chatham) बना दिया गया था। चेथम सवत् १७६५ (१७०८ ई०) में उत्पन्न हुआ था। सवत् १७९२ (१७३५ ई०) में वह पार्लमेण्टका सभ्य बना दिया गया। थोडे ही दिनोंमें उसकी वक्तृता शक्ति बढ गयी और वह ससारके बडे वक्ताओंमेंसे एक

हो गया। उसका स्वभाव स्पष्ट कहनेका था। वह यदि किसीमें कुछ दोष देखता तो उसे बहुत बुरा मालूम होता था। वह कहा करता था कि "मुझे चुप बैठना चाहिये, क्योंकि यदि मैं एक बार खड़ा हो गया तो जो मेरे मनमें है उसे कह डालूँगा।"

उसने सबसे पहले वालपोलके विरुद्ध आवाज उठायी। क्योंकि उस समयके मन्त्रीगण पार्लमेण्टके सभ्योंको रिश्वत देकर अपने अनुकूल सम्मतियाँ प्राप्त किया करते थे। वालपोल कहा करता था कि पिट लडका है। क्या यह भी हो सकता है कि विना रिश्वत लिये पार्लमेण्टके सभ्य राज्य-कर्माधिकारियोंको सहायता देंगे?

संवत् १७९९ (१७४२ ई०) में वालपोलके पश्चात् लार्ड कार्टरिट (Carteret) महामन्त्री हुआ, परन्तु पिटने उसका भी विरोध किया, क्योंकि लोगोंका ख्याल था कार्टरिट इंग्लैण्डकी अपेक्षा हेनोवरपर अधिक ध्यान देता है। सन्देहके लिए कारण भी था। कार्टरिट स्पेनके विरुद्ध लडाईकी ओर बिलकुल ध्यान नहीं देता था। उसका सारा ध्यान जर्मनीकी ही तरफ था। संवत् १८०१ (१७४४ ई०) में हेनरी पेलहम और उसके बडे भाई न्यूकासिलने रिश्वत देकर पार्लमेंटके सभासदोंको अपनी ओर कर लिया और कार्टरिटको निकलवा दिया। सवत् १८०२ (१७४५ ई०) में पेलहमने यह विचार करके कि पिट कहीं हमारा विरोध न करे, द्वितीय जार्जको सम्मति दी कि पिटको केबीनेटमें ले लेना चाहिये। पर जार्ज पिटसे बहुत जलता था अत. उसने विरोध किया और पिटको मन्त्रिमण्डलमें शामिल नहीं होने दिया। इस पर पेलहमने त्यागपत्र दे दिया। जार्जने ग्रेनविलको (कार्टरिट अपनी माताके देहान्त

हो जानेके कारण अर्ल ग्रेनविल हो गया था।) प्रधानमन्त्री बनाया, पर कामन्स सभामें बहुमत न होनेके कारण ४८ घण्टे भी उसका ठहरना कठिन हो गया और उसे इस्तीफा देना पड़ा। पेल्हम प्रधानमन्त्री हुआ। पिट भी मन्त्रिमण्डलमें शामिल हुआ। राजाको स्पष्ट रूपसे मालूम हो गया कि पार्लमेण्टके सामने वह कुछ नहीं कर सकता। पिट पे मास्टर-जनरल या मुख्य कोषाध्यक्ष बना दिया गया। इस पदपर आकर अन्य लोग धनाढ्य हो जाते थे। परन्तु निर्धन होते हुए भी पिटने कौड़ी भर भी रिश्वत न ली और हाउस आव कामन्सके लोग उसपर बड़ी श्रद्धा करने लगे। आठ वर्षतक पिट इसी प्रकार चुप चाप कार्य्य करता रहा। संवत् १८११ (१७५४ ई०) में पेल्हम मर गया और उसका भाई न्यूकासिल महामन्त्री हुआ। न्यूकासिल रिश्वत बहुत लेता देता था और उसको एक साथी और मिल गया था जिसका नाम फॉक्स था। ये दोनों रिश्वतकी ही चिन्तामें लगे रहते थे। उस समय इंग्लैण्डके पदोंकी विलक्षण अवस्था थी। तीन तीन हजार पौंड वार्षिक वेतनके पदोंपर भी अयोग्य लोग नियुक्त थे जो १०० पौंड वार्षिकका एक क्लार्क रखकर काम चला लेते थे। उपनिवेशोंके गवर्नर स्वयं इंग्लैण्डमें ही समय व्यतीत किया करते थे और अपने नौकरोंसे ही शासनका काम लिया करते थे। न्यूकासिल इन पदोंपर योग्य पुरुषोंकी नियुक्ति नहीं करता था, किन्तु केवल ऐसे पुरुषोंकी नियुक्ति करता था जिनके द्वारा पार्लमेण्टके सभ्योंकी अधिक सम्मति उसके अनुकूल हो सके।

जब संवत् १८११ (१७५४ ई०) में न्यूकासिल प्रधानमन्त्री हुआ, तब फ्रांससे युद्ध छिड़नेका भय हो रहा था। उस समय अमरीकामें अटलाण्टिक महासागर तथा एलघिनी पर्वतके

बीचमें अंग्रेजोंके तेरह उपनिवेश थे। एलघिनीके उस पार मिसिसीपी और ओहियो नदियोंका एक बहुत बडा मैदान था जिसमें वहाँके प्राचीन निवासी बसते थे और फ्रांसीसियोंसे व्यापार आदि करते थे। अंग्रेज़ लोग पर्वतको पार करके उस मैदानमें बसना चाहते थे। कनाडा और लूसियानामें फ्रेंच लोग बसे हुए थे और इन दोनों प्रान्तोंके मध्यमें उनके कुछ किले थे, इसलिए फ्रासीसी एलघिनी पर्वतके पश्चिमके सारे प्रदेशको अपना समझते थे। झगडा इसी प्रदेशके सम्बन्धमें था। फ्रांसीसी कहते थे कि यह प्रदेश हमारा है और अंग्रेज उसे स्वयं चाहते थे। वे फ्रांसीसियोंके किलोंके कारण रुकनेवाले नहीं थे। संवत् १८११ (१७५४ ई०) में फ्रांसीसियोंने ओहियो नदीके सिरेपर एक क़िला बनाया और अंग्रेजोंको पर्वत पार करनेसे रोकने लगे। इसलिए अमरीकामें फ्रासीसियों और अंग्रेजोंके बीच युद्ध छिड गया, यद्यपि यूरोपमें ये दोनों जातियाँ शान्त थीं। संवत् १८१२ (१७५५ ई०) में ब्रिटिश राज्यकी ओरसे जनरल ब्रैडाक (Braddock) फ्रांसीसियोंके दमनके लिए भेजा गया, परन्तु वह मारा गया और केवल वर्जीनियाका एक सैनिक जार्ज वाशिङ्गटन कुशलतापूर्वक लौट सका। न्यूकासिल कुछ निश्चय न कर सका कि युद्ध किया जाय या नहीं। अन्तमें निश्चय हुआ कि युद्धकी घोषणा न की जाय पर फ्रांसीसियोंके जहाज लूटे जायँ। जार्जको हैनोवरकी अधिक चिन्ता थी। उसकी रक्षाके लिए उसने जर्मनीके कई राजाओंको रुपया दे कर सन्धि की। पिटने इसका बडा विरोध किया, इसलिये वह निकाल दिया गया। संवत् १८१३ (१७५६ ई०) में इंग्लैण्डकी हालत बडी चिन्ताजनक थी।

फ्रांसका आक्रमण होनेका भय हो रहा था। न्यूकासिलने इग्लैण्डकी रक्षाके लिए हैनोवर तथा हेसे (Hesse) से फौज मँगानेका विचार किया।

संवत् १८१३ (१७५६ ई०) में फ्रांसीसियोंने माइनोर्का टापूके पोर्ट मेहोन (Port Mahon) नामक बन्दरपर आक्रमण किया। जनरल बिङ्ग उसकी रक्षाके लिए भेजा गया। परन्तु बिङ्ग अपनी सेनाको अपर्य्याप्त समझ कर वापस चला आया। अत पार्लमेंटने उसपर अभियोग चलाकर प्राणदण्ड दे दिया। दोष यह लगाया गया था कि उसने फ्राससे रिश्वत ली है।

न्यूकासिलकी अयोग्यताके कारण बडा असंतोष फैला। उसके मातहतोंने पदत्याग कर दिया। वह स्वय भी बिङ्गके मामलेको देखकर घबरा गया और झट अपने पदको त्याग बैठा। न्यूकासिल वस्तुत. बडा कायर था। उसने समझा कि लोग मुझे भी फॉसी दिला देंगे। न्यूकासिलके पश्चात् ड्यूक आव डिवानशायर महामन्त्री हुआ, और पिट उसका सहायक। पर वस्तुत. पिट ही सर्वोपरि था। और डेवनशायर केवल नाम मात्रको प्रधान मन्त्री था।

अब सप्तवर्षीय युद्ध आरम्भ होगया। पिटने धनजन एकत्र करनेके लिए खूब प्रयत्न किया। फ्राससे और अन्य देशोंसे भी लडाई आरम्भ हो गयी थी क्योंकि उसने आस्ट्रिया, रूस तथा जर्मनीके अन्य प्रान्तोंसे सन्धि करके प्रशानरेश फ्रेडरिकके राज्यपर आक्रमण करना शुरू कर दिया था। इस युद्धको 'सप्तवर्षीय युद्ध' कहते हैं, क्योंकि यह संवत् १८१३ से १८२० (१७५६ से १७६३ ई०) तक रहा। इस युद्धमें इग्लैण्डने नाविक युद्धमें प्रधानता स्थापित करने तथा उपनिवेश प्राप्तिकी

तरफ अधिक ध्यान दिया, यद्यपि यूरोपके युद्धमें भी उसे कुछ थोडा बहुत भाग लेना पडा, क्योंकि द्वितीय जार्जने हेनोवरके बचानेके लिए प्रशानरेशसे सन्धि कर ली थी। पर फ्रांसका अधिक ध्यान यूरोपमें अपनी प्रधानता स्थापित करनेकी तरफ था, इसलिए समुद्रकी तरफ उसने ध्यान नहीं दिया। इसी कारण युद्धके अन्तमें भारतवर्ष तथा अमेरिका उसके हाथसे प्राय निकल गये।

भारतवर्षमें डूप्लेके समयसे ही अंग्रेजों और फ्रांसीसियोंमें झगडा चला आता था। धीरे धीरे यह झगडा बहुत बढ गया और यहाँ भी युद्ध आरम्भ होगया। इस प्रकार अब तीनों महाद्वीपों—अमरीका, यूरोप तथा भारतवर्ष—में फ्रांस और इंग्लैण्डमें लडाई होने लगी। इस अवस्थामें केवल पिट ही इंग्लैण्डकी लाज रख सकता था। उसने स्पष्ट कह दिया था कि 'मैं ही देशको बचा सकता हूँ, और कोई नहीं।' उसने सेनाको ठीक करना आरम्भ कर दिया। उसने इंग्लैण्डकी रक्षाके लिए आयी हुई हैनोवरकी सेनाको लौटा दिया। सेनामें योग्य पुरुष भरती किये गये। स्काटलैण्डके उन वीर पुरुषोंकी जिन्होंने युवाधिकारीको सहायता दी थी एक नयी पलटन बनायी गयी। पिटने कह दिया कि राज्य तुमपर भरोसा करता है। तुमको चाहिए कि राजभक्ति दिखलाओ। इस प्रकार चातुर्यसे उसने जार्जके शत्रुओंको भी मित्र बना लिया। उस समय उसका बडा सम्मान था परन्तु पिटकी बात स्वार्थी लोगोंने चलने न दी। कामन्स सभामें उसके अनुयायी बहुत कम थे। पार्लमेण्टवाले तो रिश्वत चाहते थे। जार्ज भी उससे बहुत नाराज था, अत सवत् १८१४ (१७५७ ई०) में पिट कैबिनेटसे निकाल दिया गया।

अब न्यूकासिलकी फिर बारी आयी । परन्तु न्यूकासिलका इतना साहस कहाँ था। वह प्रति दिन पद लेनेकी प्रतिज्ञा करता और प्रति दिन अभियोगके डरसे मुकर जाता। परन्तु इस समय पिटकी कीर्ति देश भरमें फैल गयी। कई नगरोंने सोनेकी डिबियोंमें बन्द करके अभिनन्दन पत्र उसकी सेवामें उपस्थित किये। एक लेखकने लिखा है कि कई सप्ताहोंतक स्वर्णकी डिबियोंकी ही वर्षा होती रही। अत अन्तमें न्यूकासिल और पिट दोनों सयुक्त मत्री हुए—न्यूकासिल रिश्वत आदिके मामलोंके लिए और पिट युद्धके लिए।

पिटके कुछ दिनोंके लिए प्रबन्धसे हट जानेपर इग्लैण्ड-को बहुत हानि उठानी पडी। द्वितीय जार्जका लडका ड्यूक आव कम्बर्लैंण्ड जो सेना लेकर हैनोवरमें भेजा गया था हार गया और एक सन्धिपत्र द्वारा हैनोवर फ्रासीसियोंके लिए छोडकर चला आया। जार्जको बुरा मालूम हुआ और उसने कहा "शोक है कि इस पुत्रने मुझको नष्ट कर दिया और अपने आपको कलकित कर लिया।" फ्रेडरिककी भी बोहेमिया में बडी भारी हार हुई। अमेरिकामें अग्रेजोंने लुईबर्गके दुर्गपर आक्रमण किया पर फ्रेञ्च फौज पहुँच गयी और वे उसे लेनेमें असमर्थ रहे।

पिटने आते ही फिर प्रबन्ध करना आरम्भ कर दिया। इस समयतक प्रशानरेशने फ्रास और आस्ट्रिया दोनोंको दो युद्धोंमें पराजित कर दिया था। फ्रेडरिककी योग्यताका लोगों को परिचय होने लगा था। ब्रिटेनने सोचा, यदि फ्राससे अमेरिकामें युद्ध जारी रखना है तो इग्लैण्डको प्रशासे मित्रता करनी चाहिये और फ्रासको यूरोपमें बझाये रहना चाहिये ताकि वह अमेरिकामें फौज न भेज सके। इसी उद्देश्यसे फ्रेडरिकको ७

तरफ अधिक ध्यान दिया, यद्यपि यूरोपके युद्धमें भी उसे कुछ थोडा बहुत भाग लेना पडा, क्योंकि द्वितीय जार्जने हैनोवरके बचानेके लिए प्रशानरेशसे सन्धि कर ली थी। पर फ्रांसका अधिक ध्यान यूरोपमें अपनी प्रधानता स्थापित करनेकी तरफ था, इसलिए समुद्रकी तरफ उसने ध्यान नहीं दिया। इसी कारण युद्धके अन्तमें भारतवर्ष तथा अमेरिका उसके हाथसे प्राय निकल गये।

भारतवर्षमें डूप्लेके समयसे ही अंग्रेजों और फ्रांसीसियोंमें झगडा चला आता था। धीरे धीरे यह झगडा बहुत बढ़ गया और यहाँ भी युद्ध आरम्भ होगया। इस प्रकार अब तीनों महाद्वीपों—अमरीका, यूरोप तथा भारतवर्ष—में फ्रांस और इग्लैण्डमें लडाई होने लगी। इस अवस्थामें केवल पिट ही इग्लैण्डकी लाज रख सकता था। उसने स्पष्ट कह दिया था कि 'मैं ही देशको बचा सकता हूँ, और कोई नहीं।' उसने सेनाको ठीक करना आरम्भ कर दिया। उसने इग्लैण्डकी रक्षाके लिए आयी हुई हैनोवरकी सेनाको लौटा दिया। सेनामें योग्य पुरुष भरती किये गये। स्काटलैण्डके उन वीर पुरुषोंकी जिन्होंने युवाधिकारीको सहायता दी थी एक नयी पलटन बनायी गयी। पिटने कह दिया कि राज्य तुमपर भरोसा करता है। तुमको चाहिए कि राजभक्ति दिखलाओ। इस प्रकार चातुर्यसे उसने जार्जके शत्रुओंको भी मित्र बना लिया। उस समय उसका बडा सम्मान था परन्तु पिटकी बात स्वार्थी लोगोंने चलने न दी। कामन्स सभामें उसके अनुयायी बहुत कम थे। पार्लमेण्टवाले तो रिश्वत चाहते थे। जार्ज भी उससे बहुत नाराज था, अतः सवत् १८१४ (१७५७ ई०) में पिट कैबिनेटसे निकाल दिया गया।

सातवाँ अध्याय ।

तृतीय जार्जके समयका पूर्वार्द्ध ।

संवत् १८१७—१८४६ [१७६०-१७८६ ई०]



द्वितीय जार्जकी मृत्युके पश्चात् उसके बड़े लड़के फ्रेडरिक प्रिंस आव वेल्जका लड़का तृतीय जार्जके नामसे गद्दीपर बैठा। उसके राज्यके कई वर्ष महामन्त्रियोंके झगड़ेमें व्यतीत हुए। हम बता चुके हैं कि प्रथम जार्जके समयसे ही व्हिगोंका प्राबल्य था, क्योंकि व्हिगोंने ही जार्जको बुलाया था और टोरी लोग जेम्सको बुलाना चाहते थे। परन्तु संवत् १८१७ (१७६० ई०) में अवस्था बदल चुकी थी। 'युवाधिकारी' की पराजयसे अब स्टुअर्ट वंशके पुनरागमनकी सम्भावना न रह गयी थी। टोरी लोग स्वभावानुसार राजभक्त हो चले थे। व्हिगोंमें परस्पर फूट थी और सिवाय पिटके, जिसके वास्तविक व्हिग होनेमें भी सन्देह है, अन्य व्हिग योग्य भी न थे, अत देशकी रुचि व्हिगोंसे फिर चुकी थी।

इस अवस्थासे तृतीय जार्जने लाभ उठाया जार्ज राज्यका समस्त कार्य्य और विशेषकर पदोंको नियुक्ति तथा पारितोषिक आदि अपने हाथमें रखना चाहता था। बहुत दिनोंसे यह काम मन्त्रियोंके ही हाथमें था, राजाके केवल हस्ताक्षर हो जाते थे। तृतीय जार्जने इस उद्देश्यको सिद्धिके लिए हाउस आव कामन्समें अपना पक्ष प्रबल करना आरम्भ कर दिया। यह बात बहुत आसान थी। न्यूकासिल, वालपोल आदि रिश्वत दे

बढाना चाहता था। स्वयं उसका जीवन बहुत ही सरल तथा नैतिक था पर अपने राजनीतिक उद्देश्यकी पूर्तिके लिए रिश्वत देनेमें वह कभी नहीं हिचकता था। उसका कहना था कि यदि कामन्स सभा बिक्रीके लिए है तो मैं ही क्यों न खरीदूँ, न्यूकासिल क्यों खरीदे? वह ह्विग लोगोंसे घृणा करता था और उनकी शक्ति तोडना चाहता था। जार्ज पिटके भी विरुद्ध था और उसको निकाल देना चाहता था।

दुर्भाग्यवश अवसर भी मिल गया। पिटने सुना कि स्पेन फ्रांससे मिलना चाहता है, अत उसने चाहा कि स्पेनसे भी युद्ध छेड दिया जाय। परन्तु कैबीनेटने न माना और पिटने संवत् १८१८ [१७६१ ई०] में त्यागपत्र दे दिया। स्पेनने लडाई छेड दी और वही हुआ जो पिटने कह दिया था, परन्तु लार्ड बूट (Lord Bute) ने, जो पिटके पदपर नियुक्त हुआ था, संवत् १८२० [१७६३ ई०] में सन्धि कर ली। यह सन्धि पेरिसकी सन्धिके नामसे प्रसिद्ध है। इसके अनुसारः—

[१] कनाडा और कुछ पश्चिमी द्वीप अंग्रेजोंके हाथमें रहे।

[२] माइनोर्का और फ्लोरिडा स्पेनवालोंसे इंग्लैण्डको मिल गये।

[३] भारतवर्षमें जो नगर फ्रांसीसियोंसे युद्धमें छिन गये थे उन्हें वापस मिले पर उनका प्रभाव जाता रहा। इस प्रकार भारतवर्ष तथा अमेरिकामें अंग्रेजोंका प्रभाव जम गया।

[४] सिलीसिया प्रान्त प्रशा नरेशके ही कब्जेमें रहा।

इस प्रकार इंग्लैण्ड और जर्मनीकी वर्त्तमान उन्नत अवस्थाका आरम्भ मुख्यत सप्तवर्षीय युद्धसे होता है। जर्मनी तो इससे पहले शक्तिशाली देशोंमें गिना ही नहीं जाता था।

सातवाँ अध्याय ।

तृतीय जार्जके समयका पूर्वार्द्ध ।

संवत् १८१७—१८४६ [१७६०-१७८६ ई०]



द्वितीय जार्जकी मृत्युके पश्चात् उसके बड़े लड़के फ्रेडरिक प्रिंस आव वेल्जका लड़का तृतीय जार्जके नामसे गद्दीपर बैठा। उसके राज्यके कई वर्ष महामन्त्रियोंके झगड़ेमें व्यतीत हुए। हम बता चुके हैं कि प्रथम जार्जके समयसे ही व्हिगोंका प्राबल्य था, क्योंकि व्हिगोंने ही जार्जको बुलाया था और टोरी लोग जेम्सको बुलाना चाहते थे। परन्तु संवत् १८१७ (१७६० ई०) में अवस्था बदल चुकी थी। 'युवाधिकारी' की पराजयसे अब स्टुअर्ट वंशके पुनरागमनकी सम्भावना न रह गयी थी। टोरी लोग स्वभावानुसार राजभक्त हो चले थे। व्हिगोंमें परस्पर फूट थी और सिवाय पिटके, जिसके वास्तविक व्हिग होनेमें भी सन्देह है, अन्य व्हिग योग्य भी न थे, अत देशकी रुचि व्हिगोंसे फिर चुकी थी।

इस अवस्थासे तृतीय जार्जने लाभ उठाया जार्ज राज्यका समस्त कार्य्य और विशेषकर पदोंकी नियुक्ति तथा पारितोषिक आदि अपने हाथमें रखना चाहता था। बहुत दिनोंसे यह काम मन्त्रियोंके ही हाथमें था, राजाके केवल हस्ताक्षर हो जाते थे। तृतीय जार्जने इस उद्देश्यकी सिद्धिके लिए हाउस आव कामन्समें अपना पक्ष प्रबल करना आरम्भ कर दिया। यह बात बहुत आसान थी। न्यूकासिल, वालपोल आदि रिश्वत दे

कर अपने अनुयायी बढ़ा लिया करते थे। इसी कामको राजा भी कर सकता था और जिस प्रकार वे लोग अपने विपक्षीको अपने पक्षवालोंके आधिक्यके कारण कैबीनेटसे निकाल देते थे, उसी प्रकार जार्ज भी अपने विपक्षियोंका दमन करने लगा और राजाके पक्षके लोग 'राजमित्र' (दि किङ्ग फ्रेंड्ज) कहलाने लगे, क्योंकि इनकी सम्मति सदा राजाके अनुकूल होती थी। इस प्रकार जातीय सभा नियमानुसार रहते हुए भी राजा प्रथम चार्ल्सके समान ही स्वतन्त्र हो गया। उसने पिट और न्यूकासिलको तो निकाल ही दिया, साथ ही जिन्होंने उसकी इच्छाके विरुद्ध अपनी सम्मति दी उनको भी दण्ड दिया तथा उनके ऊपर अन्य साधारण अत्याचार किये। इस प्रकार थोड़े ही दिनोंमें लोगोंको मालूम हो गया कि यदि समृद्धि चाहते हो तो राजाकी हां में हाँ मिलाओ।

लार्ड ब्यूट बहुत अयोग्य था। वह बहुत बदनाम हो गया था। स्काच जातिका होनेके कारण लोग उससे घृणा करते थे। राजमाताके साथ उसका अनुचित सम्बन्ध होनेका लोगोंको सन्देह था। लोगोंने खुल्लमखुल्ला उसका अपमान करना प्रारम्भ कर दिया। अन्तमें संवत् १८२० (१७६३ ई०) में उसने पद त्याग दिया और ग्रेनविल महामन्त्री हुआ। इसके मन्त्रित्वमें दो प्रसिद्ध बातें हुईं। एक जौन विल्क्स (John Wilkes) का झगड़ा। दूसरा अमेरिकाके उपनिवेशोंका झगडा।

जौन विल्क्स 'दी नार्थ ब्रिटन' नामक समाचार-पत्रका सम्पादक था। पेरिसकी संवत् १८२० (१७६३ ई०) की सन्धिके पश्चात् जो राज वक्तृता हुई उसमें राजाने इस सन्धिको गौरवशाली तथा लाभदायक कहा था। परन्तु विल्क्सने इसका खण्डन किया और कहा कि मन्त्रियोंने

राजासे झूठ कहलवाया है। अत॰ वारण्ट द्वारा वह पकड़वा लिया गया। वारण्ट सामान्य था अर्थात् उसपर पुरुषविशेषका नाम न था, अत॰ चीफ जस्टिस प्रैट (Pratt) ने उसे छोड़ दिया और व्यवस्था दे दी कि सामान्य वारण्ट नामरहित होनेसे नियम विरुद्ध है, अत॰ अपालनीय है। इसके अतिरिक्त कामन्स सभाका सदस्य होनेके कारण राजद्रोह तथा शान्तिभगके अतिरिक्त और किसी अपराधके लिए उसपर मुकद्दमा नहीं चल सकता। सवत् १८२१ (१७६४ ई०) में विल्क्स हाउस आव कामन्ससे निकाल दिया गया और उसे फ्रास भाग जाना पड़ा। परन्तु इस झगड़ेमें विल्क्स सर्वप्रिय होगया और मन्त्रीगणकी ओरसे लोगोंको अरुचि हो गयी। संवत् १८२२ (१७६५ ई०) में राजा और ग्रेनविलमें झगड़ा होगया। ग्रेनविल पदच्युत कर दिया गया।

अब रौकिंघम महामन्त्री हुआ और उसके पश्चात् ग्राफ्टनके समयमें विलियम पिट फिर कैबीनेटमें आगया। परन्तु अब पिट पहला पिट न था। उसका स्वास्थ्य बिगड़ चुका था। इसके अतिरिक्त अर्ल आव चैथम तथा हाउस आव लार्ड्सका सभ्य हो जानेके कारण उसपर लोगोंकी श्रद्धा भी इतनी नहीं रही थी। अत उसने सवत् १८२५ (१७६८ ई०) में पद त्याग दिया।

चैथम (पिट) के चले जानेके पश्चात् ग्राफ्टनका मन्त्रित्व निर्बल होगया और 'जूनियस' नामक एक अज्ञात व्यक्तिने पत्रोंमें राज्य प्रबन्धका विशेष खण्डन किया। सवत् १८२५ (१७६८ ई०) में विल्क्स देशको लौट आया और पार्लमेण्टका सभ्य चुना गया। पार्लमेण्टने इस निर्वाचनको नियमविरुद्ध बताया। परतु निर्वाचकोंने विल्क्सको ही तीन बार

सदस्य चुना। विल्क्सके ऊपर नार्थब्रिटनके लेखके कारण मुकद्दमा चला और उसे सजा हुई। लोगोंने उसे जेलसे छुड़ानेका प्रयत्न किया। सैनिकोंने गोली चलायी और कई आदमियोंकी मृत्यु हुई। वह बहुत प्रसिद्ध होगया। अन्तमें पार्लमेण्टको भी वही निर्वाचन स्वीकार करना पड़ा। इसी सम्बन्धमें लन्दन आदि नगरोंमें विद्रोह भी हुए और अन्तमें ग्राफ्टनने हारकर पद त्याग दिया।

अब जार्जने लार्ड नार्थ (Lord North) को महामन्त्री बनाया। इस प्रकार सवत् १७७२ (१७१५ ई०) के पश्चात् यह पहला समय था कि ५४ वर्ष पीछे राजा अपने मन्त्री स्वय नियुक्त कर सका।

दूसरा विषय, जिसकी ओर हमने ऊपर सकेत किया है, अमेरिकाके उपनिवेशोंका झगड़ा था। यह झगड़ा ग्रेन विलके समयमें अर्थात् संवत् १८२० (१७६३ ई०) में शुरू हुआ और इतना बढ़ा कि सवत् १८३८ (१७८१ ई०) तक अमेरिकन उपनिवेश स्वतन्त्र हो गये। इसकी कथा इस प्रकार है—

कुछ दिनोंसे अमेरिकाके इङ्गलिश उपनिवेश धन शक्ति तथा जनसंख्यामें बढ रहे थे। इनमें २५ लाखके लगभग पुरुष रहते थे और कोई कोई उपनिवेश तो यूरोपके पश्चिमी राज्योंसे भी बड़े थे। न्यूइङ्गलैण्डको प्योरीटन लोगोंने बसाया था। कैरोलीना, वर्जीनिया और मेरीलेण्ड रोमन कैथोलिक तथा प्रथम चार्ल्सके उन अनुयायियोंके बसाये थे जो देशसे निकाल दिये गये थे। पेन्सुल्वेनिया तथा न्यूयार्कके बसानेवाले क्वेकर (Quaker) और डच लोग थे। क्वेकर ईसाइयोंका एक सम्प्रदाय है जो सब मनुष्योंको तुल्य समझता है। ये सब

लोग आपसमें एक दूसरेको 'तू' कहकर पुकारते हैं । ये उपनिवेश ब्रिटिश राज्यमें सम्मलित थे । इनके गवर्नर राजाकी ओरसे नियत होते थे और प्रत्येक उपनिवेशको पृथक् पृथक् अधिकारपत्र मिला हुआ था ।

कनाडा और फ्लोरिडाकी विजयसे इन उपनिवेशोंको फ्रांस या स्पेनका भय न रहा और ये अपने मातृदेश अर्थात् इंग्लैंडके अधीन रहना नहीं चाहते थे । यदि तृतीय जार्ज उद्दण्डता न करता तो सम्भव था कि बहुत दिनोंतक इंग्लैण्ड तथा इन उपनिवेशोंका सम्बन्ध बना रहता, परन्तु ग्रेट-ब्रिटनकी ओरसे इन उपनिवेशोंको कई कठिनाइयाँ सहनी पड़ती थीं । प्रथम तो इनको सिवाय मातृभूमिके और किसी देशकी वस्तु मोल लेनेका अधिकार न था । अंग्रेजोंकी तरफसे अमेरिकावालोंके उद्योगधन्धोंकी उन्नतिमें रुकावट डाली जाती थी ताकि वे अंग्रेजोंसे प्रतिस्पर्धा न कर सकें । वे इंग्लैण्डको कम चीजें भेजते थे और वहाँसे मँगाते अधिक थे, अत उन्हें सदा इंग्लैण्डका ऋणी रहना पड़ता था । उनको यह अधिकार न था कि अपना तम्बाकू या कहवा सिवाय ग्रेटब्रिटेनके और किसी देशको भी भेज सकें । इन कड़े नियमोंका बहुधा पालन नहीं होता था और लोग छिपे छिपे चोरीसे मालका क्रय-विक्रय किया ही करते थे, परन्तु संवत् १८२० (१७६३ई०) में ग्रेनविलने इन नियमोंका बड़ी सावधानीसे पालन किया और अमेरिकावालोंको इन कठिनाइयोंका अनुभव होने लगा ।

दूसरा प्रश्न सेनाका था । ब्रिटिश पार्लमेण्ट समझती थी कि उपनिवेशोंकी रक्षाके लिए सेनाकी आवश्यकता है और इस सेनाका व्यय अमेरिका निवासियोंको देना पड़ता था । परन्तु वे लोग इसको सर्वथा अनावश्यक समझते थे ।

तीसरा प्रश्न अधिक महत्वका तथा गम्भीर था। उपनिवेशों में बसनेवाले थे तो उन्हीं अंग्रेजोंकी सन्तान, जिन्होंने जौनसे दबाकर महान् अधिकार पत्र लिखा लिया था तथा जिन्होंने चार्ल्सको प्राणदण्ड और जेम्सको देश-निकाला देकर स्वतन्त्रता प्राप्त की थी। उनका कहना था कि हमारे ही प्रतिनिधि हमपर कर लगा सकते हैं। जब ब्रिटिश पार्लमेण्टमें हमारे प्रतिनिधि नहीं बैठते तो ऐसी पार्लमेण्टको हमारे ऊपर कर लगानेका अधिकार ही नहीं है। उन्होंने पहले केवल इतना स्वीकार कर लिया था कि ब्रिटिश पार्लमेण्ट पोतोंके खर्चके लिए अमेरिकासे बाहर जानेवाले तथा बाहरसे अमेरिकामें आनेवाले मालपर चुंगी ले सकती है, परन्तु अन्य कर लगानेके लिए उपनिवेशोंकी निज समितियाँ होनी चाहिये। पार्लमेण्ट कहती थी कि जिस प्रकार अन्य देश अपने उपनिवेशोंमें कर लगाते हैं, उसी प्रकार ब्रिटिश पार्लमेण्टको भी अमेरिकापर कर लगानेका अधिकार है। अतः पार्लमेण्टसे निश्चित हुआ कि सप्तवर्षीय युद्धका कुछ खर्च अमेरिकाके उपनिवेशोंको भी झेलना चाहिये। संवत् १८२२ (१७६५ ई०) में स्टाम्प ऐक्ट पास हुआ जिसके अनुसार अमेरिकावालोंको कई प्रकारके दस्तावेजोंपर टिकट लगाना पड़ा। परन्तु उन्होंने कहा कि हम टिकट नहीं खरीदेंगे। उन्होंने एक ओर आग जलायी और उसमें टिकटें लाकर जला दीं, दूसरी ओर सूली खड़ी की और टिकट बेचनेवालोंसे कहा कि या तो पद त्यागो या तुमको सूली दे दी जायगी। यह विद्रोह इतना बढ़ा कि संवत् १८२३ (१७६६ ई०) में रौकिंघम और पिटके अनुरोधसे स्टाम्प एक्ट रद्द कर दिया गया और उसके स्थानमें अन्य छोटे छोटे कर लगाये गये। अन्तको ये कर भी छोड़ दिये गये

परन्तु पार्लमेण्टने केवल अपना अधिकार जमानेके निमित्त चायपर तीन पेंस प्रति पौण्ड कर लगा दिया। अमेरिका-वालोंके लिए चाय कर देना कठिन न था परन्तु प्रश्न तो अधिकारका था। यदि पार्लमेंट छोटासा भी कर लगा सकती थी तो उसे बड़ा कर लगानेसे कौन रोक सकता था? अतः अमेरिकावालोंने निश्चय कर लिया कि सदाके लिए इस बखेड़ेको दूर कर देना चाहिये। सवत् १८३० (१७७३ ई०) में बोस्टनके बन्दरगाहमें चायसे लदा हुआ एक जहाज खड़ा था, वहाँके चालीस पचास लोग प्राचीन निवासियोंका भेस बनाये जहाजपर चढ़ गये। उन्होंने सबकी सब चाय समुद्रमें फेंक दी। उन्होंने व्रत कर लिया कि जिस चायपर हमको कर देना पड़ता है उसको हम पीना ही छोड़ देंगे। ब्रिटिश पार्लमेंटने इस विद्रोहके कारण बोस्टनका अधिकारपत्र छीन लिया और बन्दरगाह बन्द कर दिया गया। चैथम (पिट) ने बहुत कुछ इसका विरोध किया। वह समझ गया कि बहुत ताननेसे सूत टूट जाता है परन्तु पार्लमेण्टवाले दण्ड देनेपर तुले हुए थे। फिलैडैलफियामें सब उपनिवेशोंके प्रतिनिधियोंकी एक कांग्रेस १७७५ ई० में हुई। यह पहिला अवसर था जब सबके प्रतिनिधि एकत्र हुए थे। पहिले तो इग्लैण्डके साथ समझौतेकी बातचीत हुई पर विरोधकी भी साथ साथ तैयारी हो रही थी। अन्तमें नियमानुसार अमेरिकाके उपनिवेशों और इग्लैंडमें युद्ध छिड़ गया।

पहली लड़ाई सवत् १८३२ (१७७५ ई०) के वैशाख (अप्रेल) में लैकसिङ्गटन (Lexington) में हुई। आषाढ़ (जून) में बङ्करहिल नामक पहाड़पर एक और युद्ध हुआ जिसमें इग्लैंडकी विजय हुई पर अमेरिकावालोंने बड़ी

बहादुरीसे सामना किया। इससे उपनिवेशोंमें बड़ा जोश फैला और वे पूर्वकी अपेक्षा अधिक प्रबलतासे कार्य्य करने लगे। पोतोंका एक बेड़ा तैयार किया गया। न्यू इंग्लैंडका एक नाविक राजकील होरिकन्स पोताध्यक्ष नियत हुआ। झण्डेपर एक वृक्ष और उसके चारों ओर लिपटे हुए सर्पका चिन्ह था और उसपर लिखा हुआ था 'कहीं मुझपर पैर न रख देना' (Dont tread upon me डोण्ट ट्रेड अपॉन मी)। इससे स्पष्ट था कि अमेरिकावाले अपना समस्त बल लगा देना चाहते थे। सच तो यह है कि स्वतन्त्रता देवी सरलतासे प्रसन्न नहीं होती। सेनाका मुख्याध्यक्ष वर्जीनियाका निवासी जार्ज वाशिङ्गटन नियत हुआ जिसने सप्तवर्षीय युद्धमें बड़ी वीरता दिखायी थी।

उपनिवेशोंकी जो महासभा (कांग्रेस) हुई, उसने पहले तो कुछ अधिकार ही माँगे थे, परन्तु २० आषाढ १८३३ (४ जुलाई १७७६ ई०) को बैठकमें स्वतन्त्रताकी घोषणा कर दी गयी।

अब जो युद्ध हुआ उसमें पहले तो ग्रेट ब्रिटनकी ही जीत हुई। इन दोनो देशोंमें भेद भी बहुत था। ग्रेट ब्रिटनमें ८० लाख मनुष्य रहते थे और उपनिवेशोंमें तीस लाख। इन दोनों देशोंकी आर्थिक अवस्थामें पूर्वपश्चिमका भेद था। इसके अतिरिक्त अमेरिकाके तटपर अंग्रेजी जहाज स्वतन्त्रतासे जा सकते थे। परन्तु अमेरिकावाले अपनी स्वतन्त्रताके लिए लड़ रहे थे अतः उनमें उत्साह अधिक था। इंग्लैण्डवालोंकी केवल अनधिकार चेष्टा थी। फिर अमेरिकाका देश इतना बड़ा था कि इसमें प्रवेश करना तो सरल था, परन्तु अधिकार स्थापित करना कठिन था। ग्रेट ब्रिटन और अमेरिकाके मध्यमें अटलाण्टिक जैसा

महासागर था जिसको पार करनेमें देर लगती थी। इसके अतिरिक्त अन्य देशोंने भी अमेरिकावालोंको सहायता की।

लडाईके पहले दो वर्षोंमें ग्रेट ब्रिटनकी विजय हुई। इसकी सेनाने कई लडाइयां जीतीं। संवत् १८३३ (१७७६ई०) में न्यू यार्क और संवत् १८३४ (१७७७ ई०) में फिलैडेलफिया ले लिया गया। वाशिङ्गटनके भी छक्के छूट गये। परन्तु संवत् १८३४ के कार्त्तिक (१७७७ ई० के अक्टूबर) मासमें ब्रिटिश सेनाध्यक्ष वर्गोयन * सराटोगा † के युद्धमें हार गया।

फ्रांसको सप्तवर्षीय युद्धमें बहुत हानि उठानी पडी थी, अतः बदला लेनेके लिए उसने संवत् १८३५ (१७७८ ई०) में अवसर पाकर ग्रेट ब्रिटनसे युद्ध छेड दिया। संवत् १८३६ (१७७९ ई०) में स्पेन और संवत् १८३७ (१७८० ई०) में हालैण्ड भी ग्रेट ब्रिटनके विरुद्ध होगया। इस प्रकार इग्लैण्डके विरुद्ध अमेरिका, फ्रांस, स्पेन तथा हालैण्डका एक बहुत बडा संघटन हो गया परन्तु शायद सबसे प्रबल अमेरिका ही था। इन सबपर विजय पाना इग्लैण्डके लिए असम्भव होगया। कुछ दिनोंके लिए सामुद्रिक आधिपत्यमें भी बाधा पड गयी और प्रतीत होता था कि इग्लैण्ड सदाके लिए पीछे पड जायगा। संवत् १८३८ के कार्तिक (१७८१ ई० के अक्टूबर) मासमें लार्ड कार्नवालिसकी सेना यार्कटोन में घिर गयी और उसको हार माननी पडी।

यह अन्तिम युद्ध था। अब ब्रिटिश पार्लमेण्टको अमेरिकाकी स्वतन्त्रता स्वीकार कर लेनी पडी। आरम्भमें अमेरिकाके संयुक्तदेशमें तेरह उपनिवेश सम्मिलित थे, अब कई और देश मिल गये हैं। इस समय इन देशोंका क्षेत्रफल ३६ लाख वर्ग-मीलसे अधिक और जन-संख्या १० करोडके लगभग है।

* Burgoyne   † Saratoga

कार्नवालिसकी पराजयसे अमेरिकाका झगडा तो समाप्त हो गया परन्तु यूरोपमें युद्ध अभी जारी रहा। संवत् १८३७ (१७८० ई०) में फ्रांस और स्पेनके पोत इंग्लिश चेनलमें प्रविष्ट हो चुके थे और इंग्लैण्डपर आक्रमण करनेकी तैयारियाँ हो रही थीं। माइनोर्का, पश्चिमी द्वीप समूह अंग्रेजोंके हाथसे जा चुके थे और जिब्राल्टरपर धावा था। परन्तु संवत् १८३६ (१७८२ ई०) में रोडनी (Rodney) और इलियटके परिश्रमसे जिब्राल्टर बच गया और पश्चिमी द्वीपसमूहमेंसे कुछ भागकी रक्षा हो सकी। संवत् १८४० के माघ (१७८३ ई० के जनवरी) मासमें वर्सैल्ज * की सन्धि हो गयी जिसके अनुसार (१) ग्रेटब्रिटनने अमरीकाकी स्वतन्त्रता स्वीकार कर ली (२) माइनोर्का और फ्लोरिडा स्पेनको मिले, (३) अफ्रीकाके दो तीन टापू तथा सैनीगाल फ्रांसको दे दिये गये।

इस प्रकार संवत् १८२० (१७६३ ई०) में पेरिसकी सन्धि द्वारा इंग्लैण्डने जो कुछ पाया था, वह संवत् १८४० (१७८३ ई०) की वर्सैल्जकी सन्धिमें खो दिया। यह इंग्लैण्डका सौभाग्य था कि इतनी ही हानि हुई। यदि रोडनी और इलियट न होते तो न जाने क्या हो जाता।

इसी समय आयर्लैण्डमें स्वतंत्र पार्लमेण्ट स्थापित हुई, आयर्लैण्डके प्रोटेस्टेण्ट लोग इंग्लैण्डके साथ सम्बन्ध स्थापित रखना चाहते थे, पर व्यापारमें उनकी बड़ी हानि हो रही थी इसलिए वे स्वतंत्र पार्लमेण्ट चाहते थे। अमेरिका तथा फ्रांसके साथ इंग्लैण्डका युद्ध आरम्भ हो जानेके कारण आयर्लैण्डकी रक्षाके लिए इंग्लैण्डके पास सेना नहीं थी। आयर्लैण्डमें ८० हजार स्वयंसेवक तैयार हुए जिन्होंने अपने देशकी रक्षा की

* Versailles (फ्रांसीसी उच्चारण 'वर्साय')

और उसीके बलपर स्वतंत्र पार्लमेण्टके लिए भी प्रयत्न आरम्भ किया। राकिंगहमको भय हुआ कि अमेरिकाकी तरह आयर्लैण्ड भी स्वतंत्र हो जायगा, इसलिए उन्होंने उसकी इस माँगको स्वीकार कर लिया और संवत् १८३६ (१७८२ ई०) में आयर्लैण्डकी स्वतंत्र पार्लमेण्ट स्थापित हो गयी।

आठ नौ वर्षसे लार्ड नार्थकी चलती थी। नार्थ वही करता था जो राजा चाहता था, अत राजाका निरङ्कुश राज्य था, परन्तु संवत् १८३६ (१७७६ ई०) से विदित होने लगा कि तृतीय जार्जकी कार्य्यप्रणाली ठीक नहीं है। अमेरिकाके स्वतंत्र होनेसे देशके कान और खड़े हो गये। हाउस आव कामन्सके एक सभ्यने संवत् १८३७ (१७८० ई०) में स्पष्ट प्रस्ताव कर दिया कि "राजाकी शक्ति बढ गयी और बढती जा रही है। अत. उसे रोकना चाहिये"। इन सब बातोंपर विचार करके चैत्र संवत् १८३८ (मार्च १७८२ ई०) में नार्थने अपना पद त्याग दिया।

अब लार्ड राकिंघम फिर महामंत्री हुआ और फॉक्स तथा एडमण्ड बर्क कैबिनेटमें आगये। राकिंघम इस समय केवल आठ मास महामंत्री रहा, परन्तु उसने व्यर्थ दफ्तरोंको खारिज करके राज्यका व्यय कम कर दिया और रिश्वत लेने वालोंको भी निकाल दिया। एडमण्ड बर्कने राजाकी शक्तिके परिमित करनेमें बडी सहायता दी।

राकिंघम १७ आषाढ संवत् १८३६ (१ जुलाई १७८२ ई०) को मर गया और शैल्बर्न महामंत्री हुआ, परन्तु फॉक्स और उसके व्हिग् अनुयायी तथा लार्ड नार्थ और उसके टोरी परस्पर मिल गये और शैल्बर्न पद च्युत कर दिया गया। शैल्बर्नके मन्त्रित्वमें सबसे प्रसिद्ध बात वर्सेल्जकी सन्धि थी, अब राजाने संयुक्त मन्त्रित्व (Coalition Ministry) स्था-

पित किया जिसका नाममात्रका नेता पोर्टलैण्ड था। परन्तु यह मन्त्रित्व भी टूट गया और विलियम पिट लार्ड चैथमका छोटा लड़का, जिसका नाम भी विलियम पिट था, महामंत्री हुआ। इस विलियम पिटको छोटा पिट [पिट दि यंगर] और उसके पिताको बड़ा पिट [पिट दि एलडर] कहते हैं। छोटा पिट इग्लैण्डके प्रसिद्ध मन्त्रियोंमेंसे था और शायद यही मंत्री था जिसने केवल २४ वर्षकी आयुमें मन्त्रिपद ग्रहण किया। इसकी वक्तृत्वशक्ति विचित्र थी। इसका पहला व्याख्यान सुनकर किसीने कहा, "मैं समझता हूँ कि पिट शीघ्र बड़ा अपूर्व वक्ता हो जायगा।" फॉक्सने उत्तर दिया, "वह अभी ऐसा है"। पिटपर देश विश्वास करता था। वह बड़ा बुद्धिमान्, राजभक्त तथा सदाचारी था। यही कारण था कि उसने १८ वर्ष तक लगातार मन्त्रिपदपर कार्य्य किया। वह इतना शक्तिशाली था कि उसे 'राजमित्रों' की आवश्यकता ही न पड़ी और वे शनैः शनैः लुप्त होगये। कहते हैं कि पिटके समयमें पार्लमेण्ट जितनी शुद्ध रही उतनी पहले कभी न थी।

भारतवर्षमें संवत् १८२० (१७६३ ई०) के पश्चात् जो परिवर्त्तन हुए उनको भारतवासी भली प्रकार जानते हैं। संवत् १८३१ (१७७४ ई०) में वारन हेस्टिग्ज गवर्नर जनरल नियत हुआ और शनैः शनैः ब्रिटिश राज्य बढ़ता गया। मरहटोंके पहले और मैसूरके दूसरे युद्धसे भारतीय राज्योंकी शक्ति केवल नाममात्रकी रह गयी। इसके पश्चात् हम उस महायुद्धका वर्णन करेंगे जो नैपोलियनके युद्धके नामसे प्रसिद्ध है और जिसमें समस्त यूरोपको प्राय २६ वर्षतक कष्ट भोगने पड़े।

आठवाँ अध्याय ।

फ्रांसीसी विद्रोह और फ्रांससे लडाई ।

संवत् १८४६ से १८५६ (१७८९ ई० से १८०२ ई०) तक ।



लोकोक्ति है कि खरबूजेको देखकर खरबूजा रंग बदलता है। अमेरिकाकी स्वतन्त्रताके विचार फ्रांस देशमें भी प्रचलित होने लगे। फ्रांसने जो सेना अमेरिकाकी सहायताके लिए भेजी थी वह अपने साथ स्वतन्त्र विचार भी लेती आयी। फ्रांसकी प्रजा पहलेसे ही असन्तुष्ट थी। शासन दूषित और पक्षपातयुक्त था। उच्चवंशीय लोगों-पर कर कम था। साधारण प्रजा करसे दबी जाती थी। उच्चवंशीय लोग अपने छोटोंपर अत्याचार भी बहुत करते थे। फ्रांसकी साधारण जनतामें भूख, दरिद्रता तथा अवि-द्याका राज्य था। प्रजाका असन्तोष इतना बढ़ा कि फ्रांस नरेश सोलहवें लुईको सब प्रकारके मनुष्योंकी एक सभा बुलानी पडी जिसे 'जातीयसभा' (नैशनल असेम्बली) कहते थे। इस सभाने बहुतसे दोष दूर कर दिये, कर भी सबपर बराबर बराबर लगाया गया, परन्तु असन्तोषका तूफान जो एक बार उठ खड़ा हुआ, न दबा। विद्रोहपर विद्रोह हुए। भद्र लोग डरके मारे विदेश भाग गये। राजाने भी भागना चाहा, परन्तु सफलता न हुई। संवत् १८४९ (१७९२ ई०) में आस्ट्रिया और प्रशावालोंने राजा तथा भद्र लोगोंकी सहायताका विचार किया। फ्रांसने इन दोनों देशोंसे लडाई छेड दी और इन देशोंकी सेनाने फ्रांसपर

आक्रमण कर दिया। पेरिसवालोंने समझा कि राजा शत्रुओंका सहायक है। इस विचारने समस्त फ्रांसमें आगसी लगा दी। राजाको गद्दीसे उतार कर उसकी महारानी मेरिया एण्टोइनट (Maria Antoinette) तथा राजा दोनोंको फाँसी दे दी गयी और फ्रांसमें प्रजापालित राज्यकी घोषणा हो गयी।

फ्रांसीसी विद्रोहके प्रति इंग्लैण्डवालोंके भिन्न भिन्न विचार थे। कुछ कहते थे कि यह अच्छा हुआ, क्योंकि एक कक्षाके पुरुषोंका दूसरी कक्षाके पुरुषोंको दबाना और उनपर अत्याचार करना अनधिकार चेष्टा है, परन्तु कुछ लोगोंका कथन था कि विद्रोहियोंको इतनी क्रूरता तथा अत्याचार नहीं करना चाहिये था। उन्होंने पिटको सम्मति दी कि आस्ट्रिया तथा प्रशासे मिलकर फ्रांसीसी विद्रोहियोंको दण्ड देना चाहिये। पिटने सोचा कि इस भीतरी झगडेसे फ्रांस कमजोर हो जायगा, इसलिए १७९२ ई० तक वह चुप रहा। उसने फ्रांसके आन्तरिक विषयोंमें हस्तक्षेप करना उचित न समझा, परन्तु अवस्था यही न रही। जब फ्रांसकी सेनाने आस्ट्रियन नेदलैंड अर्थात् वर्तमान बेलजियम ले लिया और डच नेदरलैंडपर आक्रमण किया, तब पिट सशंक हुआ। उसने सोचा कि यदि यही दशा रही तो फ्रांसकी शक्ति बहुत बढ जायगी। अतः उसने राजाको प्राणदण्ड दिये जानेकी सूचना पाते ही संवत् १८५० (१७९३ ई०) में फ्रांससे युद्ध छेड दिया।

राजाकी फाँसीका इंग्लैण्डवालोंपर बडा बुरा प्रभाव पडा। राजभक्त लोग डरने लगे कि प्रथम चार्ल्सका युग फिर न आ जाय। व्यक्ति हो अथवा जाति, सबको अपनी पीडा अधिक और दूसरेकी पीडा साधारण प्रतीत होती है। इस

समय अंग्रेजोंकी अवस्था चार्ल्सके समयकी अवस्थासे बहुत अच्छी थी, वे फ्रांसवालोंके कष्टोंका अनुभव नहीं कर सकते थे। राजाओंके कष्टोंकी अपेक्षा प्रजाके कष्ट न्यून भी प्रतीत होते हैं। यही कारण है कि राजाओंका प्रजाके प्रति अत्याचार साधारण बात समझी जाती है और प्रजाका राजाओंके प्रति आँख उठाना भी विद्रोह तथा महा अपराध गिना जाता है। समय भी विकट ही था। फ्रांस और इंग्लैण्डकी समीपताने इस विकटताको और भी अधिक कर दिया था। अत साधारण सुधार चाहनेवाले लोग भी सन्देहकी दृष्टिसे देखे जाने लगे और स्काटलैण्ड तथा इंग्लैण्डके कई पुरुषोंको कैद तथा कालापानी होगया।

संवत् १८५२ (१७९५ ई०) में थलपर फ्रांसीसियोंने प्रशन लोगोंको हरा दिया और प्रशाने सन्धि कर ली। संवत् १८५३ (१७९६ ई०) और संवत् १८५४ (१७९७ ई०) में कोर्सिकाके एक सैनिक युवक नैपोलियन बोनापार्टने आस्ट्रियावालोंको इटलीसे भगा दिया। परन्तु सामुद्रिक युद्धोंमें अंग्रेज लोगोंकी विजय रही। संवत् १८५१ (१७९४ ई०) में लार्ड होवे (Lord Howe) ने इंग्लिश चेनलके मुहानेपर फ्रांसकी जहाजी सेनाको हरा दिया। इस युद्धको "पहली जूनकी लड़ाई" कहते हैं, क्योंकि यह लड़ाई पहली जून (१८ ज्येष्ठ) को हुई थी। संवत् १८५४ (१७९७ ई०) का वर्ष इंग्लैण्डके लिए बहुत भयावह था। इंग्लैण्डको छोड़कर प्रायः सभी देशोंसे फ्रांसकी सन्धि हो चुकी थी और फ्रांसने स्पेन तथा डच लोगोंकी सहायतासे इंग्लैण्डपर आक्रमण करनेकी तैयारी की, परन्तु पोताध्यक्ष जर्विस * ने स्पेनवालोंको सेण्ट

* Jervis

विन्सैएट अन्तरीपपर और पोताध्यक्ष डकनने डच लोगोंको कैम्परडाउन † के निकट पराजित कर दिया। इस प्रकार कुछ दिनोंके लिए इग्लैएडका भय जाता रहा।

परन्तु नैपोलियनके हृदयमें इग्लैएडकी विजय काँटेके समान खटकती रही। उसने चाहा कि भारतवर्षपर आक्रमण करके अंग्रेजोंकी बढ़ती हुई शक्तिको पूर्वीय देशोंमें नष्ट कर दें। मैसूरमें उस समय टीपू सुलतान राज्य करता था और उसको अंग्रेजोंसे स्वाभाविक वैर था, अत. नैपोलियनने इस कार्य्यके लिए उसीको चुना और लिख भेजा कि तुम अंग्रेजोंको भारतवर्षसे निकाल दो, हम तुम्हारी सहायता करेंगे। ऐसा करनेके लिए उसने संवत् १८५५ (१७६८ ई०) में पूर्वकी ओर प्रस्थान कर दिया और माल्टा टापूपर कब्जा करके मिश्र देशमें अपनी सेना उतारी। परन्तु अंग्रेजी पोताध्यक्ष नेल्सनने अबूकीर खाडीमें उसके पोत सर्वथा नष्ट कर दिये। इस युद्धको 'नील नदीकी लडाई' कहते हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि यद्यपि नैपोलियनने मिश्र देशको जीत लिया, तथापि न तो वह सीरियाको ले सका और न टीपूकी सहायताको अपनी सेना भेज सका। उधर लार्ड वेल्जलीने, सं० १८५६ (१७६६ ई०) में टीपूको हराकर मैसूरकी गद्दी एक हिन्दू राजाको दे दी। इस प्रकार बोनापार्टसे भारतवर्षमें अंग्रेजोंको कोई भय न रहा।

इधर नैपोलियनने सुना कि फ्रांसकी सेना कई स्थानोंपर यूरोपमें हार गयी। यह सुनते ही वह फ्रांस लौट गया और प्रजापालित राज्यकी तत्कालीन सस्थाको तोड़कर प्रथम शासक (फर्स्ट कौन्सल ‡) के नामसे फ्रांसका कुल राज्य

† Camperdown ‡ First Consul.

अपने हाथमें ले लिया। संवत् १८५७ (१८०० ई०) में उसने आस्ट्रियाको मैरेङ्गो (Marengo) के युद्धमें पराजित करके उससे सवत् १८५८ (१८०१ ई०) में लूनीविल * की सन्धि कर ली। अब केवल इंग्लैण्डसे ही युद्ध होता रहा। सवत् १८५८ (१८०१ ई०) में सर राल्फ एबरक्रोम्बी † ने सिकन्दरियाके युद्धमें नेपोलियनकी उस सेनापर जो वह अपने पीछे मिश्रमें छोड़ गया था, बड़ी भारी विजय पायी।

सवत् १८५५ (१७९८ ई०) में जब इंग्लैण्ड बड़ी भारी लड़ाईमें सलग्न था, आयर्लैण्डवालोंने वूल्फ टोनके नेतृत्वमें विद्रोह किया। फ्रासने भी सहायता देनेका वचन दिया पर काफी सहायता समयपर न पहुँच सकी और विद्रोह असफल होगया। वहा कैथोलिकों और प्रोटेस्टेण्टोंमें सदा झगड़ा हुआ करता था और दोनों दल अवसर पाकर एक दूसरेको सताया करते थे। पिट इस समय महामन्त्री था। उसने देखा कि आयर्लैण्डकी तरफसे इंग्लैण्डको बड़ा खतरा है, इंग्लैण्डके दुश्मन उसी रास्तेसे आक्रमण कर सकते हैं, इसलिए आयर्लैण्ड को पूर्णत इंग्लैण्डके साथ मिला देना चाहिये। उसने विचार किया कि आयर्लैण्डकी पार्लमेण्टको तोड़कर वहांके प्रतिनिधियोंको ब्रिटिश पार्लमेण्टमें स्थान दिया जाय। पिटने आइरिश पार्लमेण्टको भग करके सम्मिलित पार्लमेण्ट स्थापित करनेका प्रस्ताव उपस्थित कराया, कैथोलिक लोगोंको आशा दिलायी कि सम्मिलित पार्लमेण्ट द्वारा इस प्रकारका कानून बनाया जायगा जिससे कैथोलिक भी सदस्य बन सकें। पिटने पार्लमेण्टके सदस्योंको रिश्वत देकर राजी किया। एक बार प्रस्ताव रद्द होगया, पर बड़ा प्रयत्न करनेपर

* Luneville † Sir Ralph Abercromby

दूसरी बार पास हो गया और आयर्लैण्डकी पार्लमेण्ट इंग्लैंडके साथ मिल गयी। यद्यपि पिटने वादा किया था कि ऐसे नियम बनाये जायँगे जिनके अनुसार कैथोलिक धर्मवाले भी पार्लमेण्टके सभ्य हो सकेंगे, परन्तु तृतीय जार्ज सहमत न हुआ, अतः पिटने मंत्रीके पदसे त्याग-पत्र दे दिया।

अब एडिंग्टन महामंत्री हुआ। इसने संवत् १८५६ (१८०२ ई०) में आमीन्स (Amiens) में फ्रांससे सन्धि कर ली। दोनों जातियाँ बहुत दिनोंसे लड़ते लड़ते थक गयी थीं, अत. आमीसकी सन्धिसे सभी हर्षित हुए। यात्री लोग जो वर्षोंसे कैदीके समान बैठे हुए थे यात्राके लिए चल पड़े।

नवाँ अध्याय।

फ्रांससे लड़ाई और नेपोलियनका पतन।

संवत् १८५६ से १८७२ (१८०२ ई० से १८१५) तक।



मींसकी सन्धि हो गयी। नेपोलियनका निष्कण्टक राज्य हो गया, परन्तु उसने अपना अधिकार बढ़ाना न छोड़ा। स्विट्ज़र्लैण्डमें कुछ झगड़ा हुआ। उसने झट वहाँ सेना भेजकर अपने अनुकूल नयी राज्य-सभा स्थापित कर ली। इटलीके प्रान्तोंमें संयुक्त प्रजापालित राज्य स्थापित किया गया और बोनापार्ट उसका प्रधान बना। मिश्रके आक्रमणकी उसने

फिर तैयारी की। अंग्रेजोंने माल्टा न छोड़ा, इसपर कुछ झगड़ा हुआ और संवत् १८६० (१८०३ ई०) में इंग्लैंण्ड और नेपोलियनके बीच फिर युद्ध छिड़ गया। अब नेपोलियनने स्पेनकी सहायतासे इंग्लैंडपर आक्रमण करनेका प्रबन्ध किया। परन्तु अंग्रेजी पोत इंग्लिशचैनलकी रक्षा कर रहे थे, अतः उसने एक चाल चली। अपनी सेना तो बोलोन * में इकट्ठी की। उधर अपने पोताध्यक्ष वीलनेव † को अमेरिकाकी ओर इसलिए भेजा कि नेल्सन उसका पीछा करता हुआ जब इंग्लिशचैनलसे दूर चला जाय तब वीलनेव अपने जहाज़ों सहित इंग्लिशचैनलको लौट आवे और इंग्लैंडपर आक्रमण कर दिया जाय।

वस्तुतः ऐसा ही हुआ। नेल्सन धोखेमें आगया परन्तु जब उसने वीलनेवको लौटते देखा तो उसकी चाल ताड़ ली और झट एक तेज जहाज द्वारा गवर्नमेण्टको सूचना दे दी। गवर्नमेण्टने पोताध्यक्ष कैल्डरको भेजा कि वीलनेवसे युद्ध करे। संवत् १८६२ के श्रावण (१८०५ ई० जुलाई) में फिनिस्टर अन्तरीप (स्पेन) के पास लड़ाई हुई। यद्यपि इसमें दोनों दल समान रहे तो भी नेल्सनको लौटनेका समय मिल गया और वीलनेवको कैडिज (Cadiz) लौट जाना पड़ा। नेपोलियन बोलानमें वीलनेवकी प्रतीक्षा कर रहा था, परन्तु जब वीलनेवके जहाज आते न देखे तो वह भाद्र (अगस्त) मासमें वहांसे सेना हटा कर जर्मनीकी ओर चला गया।

जिस समय दुबारा युद्ध छिड़ा था, उस वक्त एडिङ्गटन महामंत्री था, परन्तु देशकी आंखें पिटकी ओर लगी हुई थीं, अतः पिट फिर महामंत्री हो गया। उधर नेपोलियनको 'प्रथम-

* Boulogne　　† Villeneuve

शासक' के पदसे सन्तोष न हुआ और उसने अपने आपको 'फ्रांसका सम्राट्' होनेकी घोषणा कर दी। जब पिट महामन्त्री हुआ तो उसने रूस तथा आस्ट्रियासे फिर सन्धि कर ली। यही कारण था कि नैपोलियनको अपनी सेना बोलोनसे हटानी पड़ी और उसने ३१ आश्विन १८६२ (१७ अक्टूबर १८०५ ई०,) को उल्म (जर्मनी) में आस्ट्रियावालोंको पराजित कर दिया।

वीलनेव फ्रांसीसी और स्पेनके जहाज लिये हुए केडिजसे बाहर निकला तो ट्रैफल्गर अन्तरीपके पास नेल्सनसे मुठभेड़ हुई। नेल्सन इसी ताकमें था। इस घमासान युद्धका परिणाम इङ्गलैण्डके अनुकूल हुआ। फ्रांसवाले बिलकुल भाग गये, उनके केवल ८ जहाज केडिज पहुँच सके, परन्तु इनको भी अंग्रेजोंने जा दबोचा। ट्रैफल्गरका युद्ध ४ कार्त्तिक १८६२ (२१ अक्टूबर १८०५ ई०) को हुआ था। इसके पश्चात् नेपोलियनकी सामुद्रिक शक्ति शून्यसे अधिक न रही। परन्तु इंग्लैण्डका सबसे बड़ा नाविक नेल्सन वहीं मारा गया। लन्दनमें ट्रैफल्गरकी विजयके हर्षमें दीपमालिका मनायी गयी। किन्तु प्रत्येक पुरुष नेल्सनके लिए आंसू बहाता था। नेल्सनकी पाषाण मूर्ति लन्दनके ट्रैफल्गर प्राङ्गण (Trafalgar Square) में बनी हुई है।

ट्रैफल्गरकी पराजयके पश्चात् नैपोलियनने इङ्गलैण्डका व्यापार रोकनेका निश्चय कर लिया। यदि नेपोलियन इस काममें सफल होजाता तो ग्रेटब्रिटनको वस्तुतः उंगलियोंपर नचा सकता था, क्योंकि अंग्रेज लोग व्यापारके ही बलपर लड़ रहे थे। व्यापार रोकनेके लिए उसने स्पेन और पुर्तगालको जीता और इटली तथा जर्मनीका बहुतसा भाग अपने साम्राज्यमें मिला लिया। उल्ममें आस्ट्रियावालोंको हराकर वह उनकी राजधानी वियनाकी ओर बढ़ा और उसपर कब्जा कर

लिया। पौष १८६२ (दिसम्बर १८०५ ई०) में नेपोलियनने आस्ट्रिया और रूसकी संयुक्त सेनापर आस्टर्लिट्ज (Austerlitz) के रणक्षेत्रमें अद्वितीय विजय पायी और शत्रुओंके छक्के छुडा दिये।

आस्टर्लिट्जकी लडाई वस्तुतः बडी भयानक थी। इसका प्रभाव भी बडा भारी हुआ। रूस बिचारा तो सिर नीचा करके पीछे हट गया। आस्ट्रियाने प्रेस्वर्गमें सन्धि कर ली और उसे अपने कई प्रान्त इटली तथा बवेरिया आदिको देने पडे। इससे भी अपमानजनक बात यह हुई कि आस्ट्रियानरेश, जो पहले "पवित्र रोमन साम्राज्यका सम्राट्" कहलाता था, अब इस पदको छोडनेके लिए विवश किया गया। प्रेस्वर्गकी सन्धिके पश्चात् उसकी उपाधि केवल "आस्ट्रियाका सम्राट्" रह गयी। उसे अपनी पुत्री भी नेपोलियनको विवाहमें देनी पडी। इस कार्यके लिए नेपोलियनने अपनी पतिभक्ता पूर्व रानीको तलाक दिया। यद्यपि हार रूस तथा आस्ट्रियाकी हुई थी तथापि इंग्लैण्डका भी इस लडाईसे जी टूट गया। पिटको इतना दुःख हुआ कि १० माघ संवत् १८६२ (२३ जनवरी १८०६ ई०) को उसका प्राणान्त हो गया।

पिट बडा भारी नेता था। वह उच्च पदपर होते हुए भी रिश्वत नहीं लेता था। जातीय सेवा करते हुए उसकी आर्थिक दशा बिगड गयी थी। मृत्युके समय उसपर चालीस हजार पौंडका ऋण था, परन्तु देशसेवाके कारण पार्लमेण्टने इस ऋणसे उसके उत्तराधिकारियोंको मुक्त कर दिया और बड़े आदरके साथ उसका अन्त्येष्टि-संस्कार किया गया।

नेपोलियनकी शक्ति इतनी बढ़ गयी थी कि वह जो चाहता सो कर सकता था। आस्टर्लिट्ज़की लडाईसे जर्मनी

का राज्य टूट ही चुका था, भिन्न भिन्न प्रान्त स्वतन्त्र हो चुके थे। परन्तु यूरोपके कई प्रान्त इससे भी पहले फ्रांसमें मिल चुके थे या उसका अधिकार स्वीकार कर चुके थे। इस समय नेपोलियनके अधीन इतने राज्य थे कि उसने उन्हें अपने सम्बन्धियोंमें बाँटना आरम्भ कर दिया। बटेविया (आजकलका हॉलैण्ड) के प्रजापालित राज्यको तोड़ कर उसने अपने भाई लूईको वहाँका राजा बना दिया। अपने एक और भाई जोजेफके लिए नेपल्सका एक पृथक् राज्य स्थापित किया। उसने अपने एक सौतेले लड़केको इटलीका शासक बना दिया। इसके पश्चात् उसने प्रशापर धावा किया। संवत् १८६३ के कार्त्तिक (अक्तूबर १८०६ ई०) में येना (Jena) में प्रशावाले हार गये।

संवत् १८६४ (१८०७ ई०) में उसने रूसको हराया और उसके साथ टिल्सिटकी सन्धि हो गयी।

हम ऊपर कह चुके हैं कि नेपोलियन इंग्लैण्डका व्यापार नष्ट करना चाहता था। मार्गशीर्ष १८६३ (नवम्बर १८०६ ई०) में उसने "बर्लिनके आदेश" (बर्लिन डिक्री) के अनुसार एक आज्ञा निकाली कि कोई देश ग्रेट ब्रिटनसे व्यापार न करे। इसपर इंग्लैण्डने यह घोषणा कर दी कि इंग्लैण्डके पोत फ्रांस तथा उसके साथी देशोंके बन्दरगाहोंपर जो जहाज पायेंगे उन्हें लूट लेंगे। अब नेपोलियनने मिलानका आदेश (मिलान-डिक्री) निकाला कि इंग्लैण्डका माल जहाँ कहीं पाया जाय जब्त कर लिया जाय या जला दिया जाय। यह ऐसी आज्ञा थी कि यदि लोग इसपर चलते तो इंग्लैण्डका व्यापार बन्द ही हो जाता, परन्तु यूरोपके देशोंमें इंग्लैण्डकी इतनी वस्तुएँ प्रचलित हो चुकी थीं कि उनका एकाएक बन्द कर

देना कठिन था। लोग उनके आश्रित हो चुके थे, उनके विना काम ही न चलता था, अत इंग्लैण्डका माल छिप छिपकर वहाँ पहुँचने लगा। केवल यह भेद हो गया कि चीजोंका मूल्य बढ़ गया और इस प्रकार यूरोपकी प्रजामें नेपोलियनके प्रति असन्तोष फैल गया। प्रत्येक व्यक्ति आवश्यक वस्तुओंके लिए अधिक मूल्य देकर नेपोलियनको कोसता था।

डेन्मार्क और पुर्तगालने मिलानके आदेशका पालन नहीं किया था, अंग्रेजोंको सन्देह हुआ कि नेपोलियन डेन्मार्कपर आक्रमण करके वहांके जहाजोंको अपने अधिकारमें करना चाहता है और इंग्लैण्डके विरुद्ध उनका प्रयोग करना चाहता है। समुद्रपर इंग्लैण्डका व्यवहार बडा ही अन्यायपूर्ण था। उसने युद्धकी घोषणा किये विना ही पोत भेजकर कोपिन्हेगिनके नगरपर गोलाबारी शुरू करदी और डेन्मार्कके पोत सवत् १८६४ आश्विन (सितम्बर १८०७) में अपने अधिकारमें कर लिये।

पुर्तगालमें सेना भेजकर नेपोलियनने सवत् १८६४ के मार्गशीर्ष (नवम्बर १८०७ ई०) में लिस्बन ले लिया। इसके पश्चात् सवत् १८६५ (१८०८) में उसने स्पेननरेशको गद्दीसे उतार कर अपने भाई जोजेफको वहांका राजा बना दिया। इस प्रकार कुल आइबीरियन प्रायद्वीप नेपोलियनका हो गया।

अब फ्रांसीसी लडाईके अन्तर्गत "प्रायद्वीपी लडाई"* आरंभ हुई और अंग्रेजोंने बहुत बडी सेना वेलजलीके आधिपत्यमें पुर्तगालको भेजी। वेलजली मार्किस आव वेलजलीका भाई था जो कि सवत् १८५५ से १८६२ (१७९८ से १८०५ ई०) तक भारतवर्षका गवर्नर-जनरल रहा। इसी वेलजलीने मरहट्टोंकी लडाई जीती थी।

* Peninsular War

इससे पहले इग्लैण्डकी सेनाको स्थलकी लड़ाइयोंमें कुछ भी सफलता नहीं हुई थी। संवत् १८५२ (१७९५ ई०) में जो सेना कीबरनकी खाडीमें फ्रांसके राजभक्तोंकी सहायताके लिए भेजी गयी थी, वह हार ही गयी थी। सवत् १८५६ (१७९९ ई०) में हालैण्डमें एक सेना भेजी गयी थी, उसकी भी यही गति हुई। सवत् १८६३ (१८०६ ई०) में दक्षिणी इटलीमें अंग्रेजोंने मेडा (Maida) स्थानपर विजय पायी, परन्तु उनको शीघ्र ही वहांसे भागना पडा। सवत् १८६४ (१८०७ ई०) में एक सेना कुस्तुन्तुनिया तुर्कोंके दमनके लिए और दूसरी मिश्र देशको भेजी गयी, परन्तु दोनों पराजित हो गयीं। इतनी हारके पश्चात् विजय पाना दुर्लभ था, परन्तु वेल्जलीने बहुत-ही चातुर्य्यसे काम किया और पुर्तगालके दो स्थानों अर्थात् रोरिका * और विमेरो † पर फ्रांसीसियोंको पराजित कर दिया। इसका ऐसा अच्छा प्रभाव पडा कि १४ भाद्रपद सवत् १८६५ (३० अगस्त १८०८ ई०) को सिण्टरा (Sintra) की सन्धिके अनुसार फ्रांसवालोंने पुर्तगाल छोडनेकी प्रतिज्ञा कर ली।

इसी मासमें स्पेनवालोंने जोजेफ़ बोनापार्टके विरुद्ध विद्रोह किया और उसे मैड्रिडसे निकाल दिया। इग्लैण्डसे विद्रोहियोंकी सहायताके लिए सर जौन मूर भेजा गया, परन्तु नेपोलियन स्वयं बहुत बडी सेना सहित स्पेनमें आया और स्पेनवालोंको तितर-बितर कर दिया। ३० माघ सवत् १८६६ (१६ जनवरी १८०९ ई०) को जो लडाई कोरना (Coruna) में हुई उसमें यद्यपि फ्रासवाले पीछे हटा दिये गये, परन्तु मूर मारा गया। सवत् १८६६ (१८०९ ई०) में स्पेनकी

* Rorica † Vimiero

ओर बढा और उसने तलावरा (Talavera) के रणक्षेत्रमें फ्रांसवालोंपर विजय पायी, परन्तु फ्रांसकी उस समय तीन सेनायें स्पेनमें उपस्थित थीं, अत वेल्जली फिर लिस्बनकी ओर हट गया और उसने लिस्बनके आगे सुदृढ दुर्गोंकी तीन पंक्तियां बनायीं। पहाडियोंके ढाल काटकर सीधे कर दिये गये थे। उनके सिरोंपर मजबूत दुर्ग बनाये गये और घाटियाँ बन्द कर दी गयी थीं। दुर्गोंकी तोपें इस प्रकार लगायी गयी थीं कि चारों ओर गोले जा सकते थे। इन दुर्गोंको टोरेस वेडसरकी पंक्तियाँ * कहते थे। उनके निर्माणमें बहुत दिन लग गये थे। संवत् १८६८ (१८११ ई०) में वेल्जली, जो अब वैलिंग्टनका ड्यूक बना दिया गया था, वहांसे निकला और उसने सैलेमेङ्का तथा आर्थजमें फ्रांसवालोंको हराकर ध्यूदाद रोड्रीगो † वैडाजोस तथा सैनसिवाश्चियन नामक नगर ले लिये। २७ चैत्र १८७० (१० वीं अप्रैल १८१४ ई०) को टूलूजके रणक्षेत्रमें फ्रांसवालोंकी बडी भारी हार हुई और अब वैलिङ्गटन नैपोलियनसे लडनेके लिए फ्रांसमें प्रविष्ट हो गया।

आषाढ संवत् १८६६ (जून १८१२ ई०) में रूसके जार और नेपोलियनमें फिर बिगड गयी और नेपोलियन छ लाख सेना लेकर मास्कोपर चढ गया परन्तु मास्कोके नागरिक नगरको जला कर पहले ही भाग गये थे। जब नेपोलियन लौटा तो केवल एक लाख सेना रह गयी, शेष पाँच लाख सेना रूसकी बर्फमें गलकर मर गयी। अब आस्ट्रिया भी अंग्रेजोंसे मिल गया और तीन दिनकी लीप्जिगकी लडाईमें जो संवत् १८७० के ३० आश्विनसे २ कार्त्तिक (१८१३ ई० के १६ अक्तूबर से १६ अक्तूबर) तक रही, नेपोलियन हार गया।

* Lines of Torres Vedras † Ciudad Rodrigo

अंग्रेजों, आस्ट्रियावालों तथा रूसियोंकी संयुक्त सेनाने फ्रांसपर आक्रमण किया। यह सेना १७ चैत्र संवत् १८७० (३१ मार्च १८१४ ई०) को पेरिस पहुँची और १६ ज्येष्ठ संवत् १८७१ (३० मई १८१४ ई०) को पेरिसकी सन्धि हो गयी, जिसके अनुसार

[१] फ्रांसको संवत् १८४९ [१७९२ ई०] के बादके जीते हुए देश लौटाने पड़े।

[२] इंग्लैण्डने लङ्का, आशा अन्तरीप, गयाना, मारीशस और तीन छोटे टापुओंको छोड़कर और सब जीते हुए देश लौटा दिये।

(३) सोलहवें लूईका छोटा भाई अठारहवें लूईके नामसे फ्रांसकी गद्दी पर बैठाया गया।

[४] नेपोलियन एल्बा टापूमें भेज दिया गया और वहाँ वह एल्बाका राजा बना दिया गया।

परन्तु अभी बहुतसे झगडे निश्चित करने थे जिनमें सबसे टेढ़ा पौलैण्ड तथा जर्मनीका प्रश्न था। फ्रांस, आस्ट्रिया तथा इंग्लैण्ड एक ओर थे और रूस तथा प्रशा दूसरी ओर। इसका निश्चय करनेके लिए वियनामें इन देशोंके प्रतिनिधियोंकी एक सभा बैठी हुई थी और भय था कि नया युद्ध न छिड़ जाय परन्तु अकस्मात् १८ फाल्गुन १८७१ (१ मार्च १८१५ ई०) को नेपोलियन एल्बासे भागकर फ्रांस आ पहुँचा। राजा लूईकी ओरसे एक सेना उसके विरुद्ध भेजी गयी, परन्तु नेपोलियन अकेला आगे बढ़ कर बोल उठा "क्या मैं तुम्हारा सम्राट् नहीं ? क्या मैं तुम्हारा जनरल नहीं ? क्या तुम मेरे सिपाही नहीं हो ? तुम चाहो तो मुझे मार डालो"। यह सुनते ही समस्त सेना उसके अधीन हो गयी। इसके अतिरिक्त उसने

तुरन्त बहुत बड़ी सेना इकट्ठी कर ली। नेपोलियन जैसे पुरुष संसारमें कम हुए हैं, उसकी दृष्टि ही विजयके लिए पर्याप्त थी। परन्तु अब नेपोलियनके पतनके दिन आ चुके थे। अंग्रेजोंने वैलिंगटनको और प्रशावालोंने ब्लूचरको उसके विरुद्ध भेजा।

४ आषाढ़ संवत् १८७२ (१८ जून १८१५ ई०) को वाटर्लूके रणक्षेत्रमें बड़ी भारी लड़ाई हुई। फ्रांसवाले बड़ी वीरतासे लड़े और यदि ब्लूचर न आजाता तो विजय भी उन्हींके हाथ रहती। पर ब्लूचरके आ जानेसे वैलिंगटनकी सेनामें जान आगयी और विजयपताका उसीके हाथमें रही। नेपोलियनने अमेरिका भाग जाना चाहा परन्तु भाग न सका। ५मार्गशीर्ष १८७२ (२० नवम्बर १८१५ ई०) में दूसरी सन्धि हुई। नेपोलियन कैद कर सेण्ट हेलीना नामक टापूको भेज दिया गया। वहाँ वह ६ वर्ष पीछे नासूरकी बीमारीसे मर गया। फ्रांसके राज्यकी सीमा वही रही जो संवत् १८४६ (१७८९ ई०) में थी।

यहाँ संक्षेपमें कुछ वृत्तान्त इंग्लैण्डके महामन्त्रियोंका भी देना उचित है। माघ संवत् १८६२ (जनवरी १८०६ ई०) में पिटकी मृत्यु हो गयी। इसके पश्चात् फॉक्स और ग्रेन्विल-का संयुक्त मन्त्रित्व हुआ जो "सर्व बुद्धि-मन्त्रित्व (मिनिस्ट्री ऑव ऑल टैलेण्ट्स) के नामसे प्रसिद्ध है, क्योंकि कैबी-नेटमें सब प्रकारके मनुष्य थे, परन्तु यह मन्त्रित्व ६ माससे अधिक न चला और आश्विन संवत् १८६३ (सितम्बर १८०६ ई०) में फॉक्सकी मृत्युपर समाप्त हो गया। इन छ महीनोंमें सबसे अच्छी बात यह हुई कि दासत्वकी प्रणालीका अन्त हो गया। अब ड्यूक आव पोर्टलैण्ड महामन्त्री हुआ। संवत् १८६७ (१८१० ई०) में तृतीय जार्ज उन्मत्त हो गया और राज्यप्रबन्ध उसके बड़े लड़के जार्ज प्रिंस आव् वेल्जके अधीन

हुआ परन्तु राजकुमारकी शक्ति तथा योग्यता भी अल्प थी, अतः उसने अधिक हस्तक्षेप न किया।

दसवाँ अध्याय।

अठारहवीं शताब्दीमें इंग्लैण्ड तथा स्काटलैण्डकी आन्तरिक अवस्था।

विक्रम की अठारहवीं शताब्दीके अन्त (ईसाकी १८वीं शताब्दीके आरम्भ) से ही इंग्लैण्डमें कलाकौशल सम्बन्धी परिवर्त्तन हो रहा था और जो युद्ध इस देशको अन्य देशोंके साथ लडने पडे, उन सबमें अंग्रेजोंका मुख्य उद्देश्य व्यापार सम्बन्धी स्वतन्त्रता प्राप्त करना ही था। जब इंग्लैण्डके लोगोंको चीजें बनानेमें दक्षता प्राप्त हो गयी तो आवश्यक हुआ कि उनके बेचनेके लिए स्थान ढूंढा जाय। संवत् १७६० (१७०३ ई०) में पुर्तगालके साथ 'मैथुएन सन्धि' (Methuen Treaty) हुई जिससे इंग्लैण्डका माल पुर्तगालमें बिकने लगा और पुर्तगालकी शराबपर इंग्लैण्डकी ओरसे जो कर लगता था, वह उठा दिया गया। संवत् १७७० (१७१३ ई०) वाली यूट्रेक्टकी सन्धिकी सबसे आवश्यक धारा यह थी कि अंग्रेजोंको स्पेनके उपनिवेशोंमें व्यापार करनेकी आज्ञा दी जाय। संवत् १७९६ (१७३९ ई०) में स्पेनसे जो युद्ध हुआ, उसका कारण भी व्यापार अधिकार ही था।

ब्रिटिश गवर्नमेण्ट न केवल प्रजाके मालके विक्रयके लिए ही अन्य देशोंसे लडती थी, किन्तु स्वयं उत्तम वस्तुएं बनाने-

वालोंका उत्साह भी पारितोषिक आदिके द्वारा बढ़ाती थी। इसके अतिरिक्त यह नियम पास कर दिया था कि बाहरसे आनेवाले मालके ऊपर अधिक कर लगाया जाय जिससे इग्लैंएड निवासियोंके मालका आदर हो सके और विदेशी लोग अपने मालको सस्ता न बेंच सकें।

कलाकौशल तथा व्यापारकी वृद्धिका तीसरा कारण नये नये आविष्कार थे। आर्क राइट* ने सवत् १८१७ (१७६० ई०) में और हार्ग्रीव्ज † ने सवत् १८२६ (१७६६ ई०) में सूत कातनेका यंत्र बनाया, जिससे हाथकी अपेक्षा शीघ्र और अधिक सूत काता जाने लगा। जेम्स वाट‡ ने वाष्पयत्र बनाया जिससे अन्य यत्र भी सुगमतासे चलने लगे। यत्रोंके आधिक्य और भापके प्रयोगने कोयलेकी आवश्यकताको बढा दिया और पत्थरके कोयलेकी खानें खोदी जाने लगीं। इन खानोंने सहस्रों मनुष्योंके लिए काम उत्पन्न कर दिया। भाप और कोयलेकी सहायतासे लोहेकी खानें खोदने, लोहा गलाने तथा अनेक प्रकारके यत्रके बनानेमें सुविधा हो गयी।

यत्र और कलाकौशलका परिणाम यह हुआ कि नगरोंकी जन सख्या बढने लगी, नये नये नगर बनने लगे। माचेस्टर आदिका प्राचीन समयमें नाम भी न था, परन्तु अब अनेक नगर स्थापित हो गये थे। समस्त देशकी जन-सख्यामें भी वृद्धि होती जाती थी। सवत् १८०७ (१७५० ई०) में इग्लैएड और वेल्जमें ६० लाख मनुष्य रहते थे, परन्तु सवत् १८५८ (१८०१ ई०) में ६० लाख अर्थात् ड्योढ़े हो गये थे। अत जहाँ इनकी जीविका कलाकौशल और व्यापारसे चलने लगी, वहाँ अन्नकी भी आवश्यकता थी, अत इग्लैएडवाले कृषिसे

* Ark Wright　† Hargreaves　‡ James Watt

भी असावधान न रहे। जो भूमि आजतक विना जुती पडी थी वह भी अठारहवीं शताब्दीमें जोत ली गयी। प्राचीन समयमें भूमिकी शक्ति बढ़ानेके लिए हर तीसरे वर्ष भूमि विना बोये छोड दी जाती थी, परन्तु लार्ड टौनशैण्डने यह उपाय सोचा कि हर तीसरे वर्ष शलजम बो दी जाय, इससे भूमिकी शक्ति भी बढ़ेगी और उत्पत्ति भी अधिक होगी। खाद डालने तथा पानी देनेकी रीतियोंमें भी कई प्रकारके सुधार किये गये।

लीस्टरके वेकवैल नामक कृषकने सोचा कि भेड और अन्य पशुओंको मोटा करना चाहिये, जिससे मांस अधिक मिल सके। अन्तमें वह अपने परिश्रममें सफल हुआ और पहलेकी अपेक्षा पशु दुगने मोटे होने लगे।

अन्न तथा अन्य वस्तुओंको एक स्थानसे दूसरे स्थानतक ले जानेमें बडा कष्ट होता था। ब्रिजवाटरके ड्यूककी कोयलेकी खानें मांचेस्टरसे ७ मीलपर थीं, अतः मांचेस्टरतक कोयला पहुँचानेमें बडी असुविधा थी। बीचमें पहाडियां थीं और सडकें बुरी थीं। अत उसने ब्रिडले नामक अपने एक इञ्जन वालेसे कहा कि किसी प्रकार मांचेस्टरतक नहर निकालनी चाहिये। ब्रिडलेने कभी कोई नहर नहीं बनायी थी, परन्तु उसने नहरें देखी थीं अवश्य, अतः उसने बहुत सोच विचारके पश्चात् नहरका एक चित्र बनाया जिसमें पहाडियोंका काटना और सुरंग निकालना आवश्यक था। एक बडे इञ्जीनियरने यह सुनकर कहा कि "हमने आकाशमें किले बनते सुने हैं, देखे नहीं।" परन्तु सम्वत् १८१८ (१७६२ ई०) में ब्रिजवाटर नहर तैयार हो गयी और उस हास्य करनेवाले इंजीनियरको 'आकाशके किले' देखनेका भी अवसर मिल गया। धनाढ्य लोगोंके उत्साह दिलानेसे साधारण लोग भी

बड़े आविष्कार कर सकते हैं। परन्तु गवर्नमेंण्ट और धनाढ्यों-की सहायताकी आवश्यकता है। ब्रिजवाटर नहरको देखकर अन्य नहरें भी बन गयीं और माल सरल रीतिसे आने जाने लगा।

हम अभी लिख चुके हैं कि आविष्कारोंके लिए सहायता की आवश्यकता है, परन्तु व्यक्तिगत साहस भी चाहिये। इस के लिए हम केवल क्रौम्पटनका एक उदाहरण देंगे। जब क्रौम्पटन बच्चा था तब उसकी माता उससे कुछ सूत प्रतिदिन कतवाया करती थी। कातनेमें हारग्रीव्जके यन्त्रका प्रयोग था, परन्तु धागा जल्दी टूट जाता था और क्रौम्पटनको उसे जोड़नेमें बड़ा कष्ट होता था। उसने चाहा कि यन्त्रमें कुछ ऐसा सुधार करना चाहिये कि यह दोष दूर हो जाय। वह कई वर्ष तक सोचता रहा और जो कुछ रुपया कमाता वह सब उसीमें व्यय कर देता था। अन्तको उसे सफलता हुई और उसने अभीष्ट यंत्र बना लिया। इससे वह चुपचाप अपने घरमें काम किया करता था। पड़ोसियोंने यन्त्रका शब्द सुनकर पहले तो समझा कि इसके कमरेमें भूत आता है, परन्तु जब उन्होंने देखा कि इसका धागा मलमलके योग्य बारीक निकलता है तो खिड़कियोंमेंसे झांक झांक कर ताकने लगे। क्रौम्पटनके पास इतना धन कहाँ था कि अपने यन्त्रको पेटेण्ट करा दे। केवल दो ही मार्ग थे, या तो वह यन्त्रको नष्ट कर दे या अपना भेद दूसरों को बता दे। यन्त्रका नष्ट करना आयु भरकी कमाईका नष्ट करना था, अत लोगोंने चन्दा करके उसे ६७ पौण्ड दिये और उसने यन्त्र बनानेकी विधि सबको बता दी। इस प्रकार एक दरिद्र मनुष्यके आविष्कारसे लोगोंने हजारों रुपये कमा लिये। परन्तु राजाने उसकी सहायता की, अर्थात् पार्लमेण्टने ५००० पौण्डका पारितोषिक उसे दिया।

संवत् १८३३ (१७७६ ई०) में एडम स्मिथने 'वैल्थ आव नेशन्स' अर्थात् 'जातियोंका धन' नामक एक अर्थशास्त्र रचा, जिसमें देशवालोंको धन कमाने और उसकी रक्षा करनेकी विधियां बतलायीं। पिटने इस पुस्तकका बड़ा आदर किया और इसकी सहायतासे बहुतसे सुधार किये। चायके करको दशांश कर दिया। अन्य आवश्यक वस्तुओंपर भी कर घटा दिये गये और चमक दमककी चीजोंपर कर बढ़ा दिया गया। अतः निर्धनोंका भला हुआ और फैशनकी चीजें महगी हो गयीं। कला-कौशल तथा व्यापारकी उन्नतिमें स्काटलैण्डने भी यथेष्ट भाग लिया और वहां धन तथा जन सख्यामें वृद्धि हो गयी।

कला कौशलके अतिरिक्त इस शताब्दीमें इंग्लैण्डमें चित्रकारी और साहित्यकी भी वृद्धि हुई। सर क्रिस्टोफर रेन * ने सेण्ट पालका गिरजा बनवाया और होगार्थ † रेनोल्ड आदिने बड़े अच्छे अच्छे चित्र बनाये।

बर्कले और ह्यूम सदृश दार्शनिक, गिबन सदृश ऐतिहासिक और पोप, गोल्डस्मिथ आदि कवि भी इसी शतकमें हुए।

नवीन नगरोंकी स्थापनाका राजनीतिपर भी प्रभाव पड़ा। पार्लमेण्टकी प्राचीन संस्थाके अनुसार नये नगरोंको प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार न था। प्राचीन मुख्य स्थान अब ऊजड़ हो होगये थे, परन्तु वहाँसे अब भी प्रतिनिधि भेजे जाते थे। इससे असन्तोष फैलता था। पिटने इसमें सुधार करना चाहा परन्तु उसे सफलता न हुई।

---

* Sir Chistopher Wren † Hogarth

ग्यारहवाँ अध्याय।

अठारहवीं शताब्दीमें आयर्लैंण्डकी अवस्था।



कहनेको तो ग्रेट ब्रिटेनके संयुक्त राज्यमें आयर्लैंण्ड भी सम्मिलित है परन्तु आयर्लैंण्डका दुर्भाग्य अनिवार्यसा प्रतीत होता है। कमसे कम राजनीतिक विषयोंमें जहाँ स्काटलैंण्ड और इंग्लैंण्ड वाले मीलों दौड़ते हैं, वहाँ आयर्लैंडका इञ्चों रेंगना भी विद्रोह ही समझा जाता रहा है और यदि कुछ स्वतन्त्रता है भी तो प्रोटेस्टेंट लोगोंको, जो ज़बरन आयर्लैंडवाले बने हुए हैं। आयर्लैंडके प्राचीन निवासी, जो कैथोलिक हैं, किसी स्वतन्त्रताके अधिकारी नहीं, इसका परिचय पाठकगणको पिछले अध्यायोंसे भली प्रकार हो गया होगा, परन्तु आयर्लैंडवाले चूकते नहीं। चींटी पैर रखते ही काटती है, चाहे मर क्यों न जाय। यही इन लोगोंका सिद्धान्त है।

हम देख चुके हैं कि संवत् १७४५ (१६८८ ई०) के राज्यविप्लवके पश्चात् आयर्लैंडवालोंपर कितने अत्याचार हुए। जो कुछ स्वतन्त्रता उनको मिली वह केवल नाममात्रकी थी। संवत् १७७६ (१७१६ ई०) में ब्रिटिश पार्लमेण्टसे यह विधान पास हुआ कि आयर्लैंण्डके शासनके नियम ब्रिटिश पार्लमेंट ही बनाया करे। इस प्रकार आयर्लैंडके निवासियोंको राजनीतिक विषयोंमें कुछ भी अधिकार न रहा। संवत् १७८४ (१७२७ ई०) में आयर्लैंण्डकी पार्लमेण्टसे यह नियम पास हुआ कि कैथोलिक लोग अपनी सम्मति न दे सकें। आयर्लैण्डकी पार्लमेण्ट केवल उन थोड़ेसे प्रोटेस्टेण्टोंकी पार्लमेण्ट थी जो कैथोलिकोंको उंगलीपर नचा सकते थे। वस्तुतः पार्लमेण्ट क्या थी बलवानों

को निर्बलोंपर अत्याचार करनेका अवसर प्राप्त करानेकी मशीन थी। इसके अतिरिक्त पार्लमेण्टकी आयु अपरिमित थी। द्वितीय जार्जके राज्याभिषेकके समय जो पार्लमेण्ट निर्वाचित हुई, वह ३३ वर्षतक बनी रही, अर्थात् एक बार चुने हुए सभ्योंने अपने निकाले जानेका अवसर ही न दिया और मनमाना करते रहे।

परन्तु उन्नतिका वायु कभी कभी पूर्वकी ओरसे बहता हुआ आयर्लैंडकी भूमिको भी आनन्दित कर जाता था। कुछ कुछ कृषि तथा कलाकौशलकी भी उन्नति होने लगी थी। डबलिन, बेल्फास्ट, कार्क और लिमेरिक नगर वृद्धिको प्राप्त होगये थे।

तृतीय जार्जके गद्दीपर बैठनेके कुछ दिनों पश्चात् आयर्लैंड वाले कुछ सचेत हुए। सवत् १८२५ (१७६८ ई०) में वहाँकी पार्लमेण्टने 'अष्टवर्षीय विधान' पास किया जिसके अनुसार पार्लमेण्टकी आयु आठ वर्ष नियत हो गयी।

जब अमेरिकावालोंसे स्वतंत्रताके लिए युद्ध हुआ तो आयर्लैंडवालोंने इग्लैण्डका ही साथ दिया और फ्रांसके आक्रमणसे बचनेके लिए सवत् १८३५ (१७७८ ई०) में स्वयसेवकोंकी सेना इकट्ठी की। परन्तु अमेरिकाकी देखादेखी उन्होंने भी व्यापार सम्बन्धी अधिकार माँगने आरम्भ किये। इस प्रयोजनके लिए एक समिति बनायी गयी जिसका मत था कि जबतक स्वतन्त्र व्यापारका अधिकार हमको न मिलेगा, हम अंग्रेजी मालका बहिष्कार करेंगे। इग्लैण्डवाले कभी इस बातको स्वीकार न करते, परन्तु सवत् १८३७ (१७८० ई०) इनकी आपत्तिका समय था, अत लार्ड नार्थ आयर्लैंडको 'स्वतत्र व्यापारके' अधिकार देनेके लिए विवश

होगये, परन्तु सुधारकी सीमा यहींतक न रही। आयर्लैण्डकी पार्लमेण्टके ग्रेटन * नामक एक सभ्यने अपनी वक्तृता द्वारा 'राजनीतिक समानता'का प्रस्ताव पेश किया और पार्लमेण्टसे यह प्रस्ताव पास भी हो गया। लार्ड राकिंघमको यह अधिकार भी देना ही पडा। कई प्राचीन नियम भी जो आयर्लैण्डवालोंके विरुद्ध थे रद्द कर दिये गये। इस प्रकार सवत् १८३६ (१७८२ ई०) में आयर्लैण्डकी स्वतत्र पार्लमेण्ट स्थापित हो गयी।

परन्तु यह स्वतंत्र पार्लमेण्ट किसकी थी? केवल उन प्रोटेस्टेण्ट जमींदारोंकी, जो कथोलिकोंपर अत्याचार करते और उनको नैतिक अधिकार नहीं देते थे। आयर्लैण्डकी तीन चौथाई जनताको, जो कैथलिक थी, न तो पार्लमेण्टके लिए सदस्य चुननेका अधिकार था और न निर्वाचनमें राय देने का। जो एक चौथाई प्रोटेस्टेण्ट बचते थे, यह सभा उनकी भी प्रतिनिधि नहीं कही जा सकती थी। आयर्लैण्डकी पार्लमेण्टमें ३०० सभ्य थे। उनमेंसे २०० का निर्वाचन केवल १०० जमींन्दारोंके हाथमें था। इसके अतिरिक्त मत्रियोंका उत्तरदायित्व पार्लमेण्टके प्रति न था किन्तु लार्ड लेफ्टिनेण्टके प्रति था, जो अपनी इच्छानुसार कार्य करता था। स्वतत्र प्रोटेस्टेण्ट पार्लमेण्ट स्थापित हो जानेपर उनका अत्याचार और भी बढ गया और केथोलिकोंकी शिकायतें बहुत होने लगीं। पिटने ग्रेटनकी सहायतासे प्रयत्न किया कि कैथोलिक लोगोंको भी प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार मिल जाय, परन्तु प्रोटेस्टेण्टोंने हठ किया और कैथोलिकोंको पार्लमेण्टमें बैठने न दिया।

पिटने यह चाहा कि आयर्लैण्डवालोंको व्यापार सम्बन्धी बहुत कुछ स्वतत्रता इस शर्तपर दे दी जाय कि प्रतिवर्ष आ

* Grattan

यर्लैंएडकी ६५६००० पौएडसे अधिक जो आमदनी हो वह साम्राज्यकी नाविक शक्ति बढानेमें खर्च की जाय। इस आशयका एक प्रस्ताव दोनों देशोंकी पार्लमेएटमें पेश हुआ। अंग्रेज लोगोंका व्यापारिक विषयोंमें बडा हठ होता है, उन्होंने इसका बहुत विरोध किया और इंग्लैएडकी पार्लएटमें यह प्रस्ताव पास न हो सका। एक दूसरा प्रस्ताव इस आशयका पास हुआ कि आयर्लैंएड उन देशोंके साथ व्यापार न करे जहां उसके व्यापार करनेसे ईस्ट इंडिया कम्पनीकी हानि हो, वेस्ट इंडीजका माल आयर्लेएड होकर न आवे और व्यापार सम्बन्धी जो कानून इंग्लैएडकी पार्लमेएट स्वीकार करे वे आयर्लैंएडको भी मान्य हों। आयर्लैंएडमें इस प्रस्तावका बडा विरोध हुआ और पार्लमेएटसे यह प्रस्ताव पास न हो सका। इसके थोडे दिनोंके पश्चात पिटसे रीजेंसीके सम्बन्धमें आइरिश पार्लमेएटसे झगडा हुआ। जार्ज तृतीय पागल हो गया, अत: एक रीजेएटकी आवश्यकता हुई। नियमानुसार युवराजको रीजेएट (राजप्रतिनिधि) होना चाहिये पर पिटसे उससे पटती नहीं थी, अत पिटने कुछ कडी शर्तोंके साथ ब्रिटिश पार्लमेएट द्वारा उसे रीजेएट बनाया, पर आइरिश पार्लमेएटने कोई शर्त न लगायी। सभवत यह झगडा और जोर पकडता पर उसी समय जार्ज अच्छा हो गया और रीजेएटकी जरूरत ही न रही। पिटने देखा कि आयर्लैएडकी पार्लमेएटकी यह स्वतन्त्रता इंग्लैएडके लिए घातक है। उसी समयसे उसने आइरिश पार्लमेएटको इंग्लैएडकी पार्लमेएटके साथ मिलानेका निश्चय कर लिया।

आयर्लैंएडके कैथलिक तथा प्रेस्बिटेरियन प्रोटेस्टेएट उस समयकी व्यवस्थासे सन्तुष्ट न थे, क्योंकि उन्हें कोई अधिकार

नहीं मिला था। उधर फ्रांसमें भी क्रांति हो चुकी थी। उसके प्रभावसे प्रभावित होकर वूल्फ टोन नामक एक प्रेस्विटेरियन नेताने संवत् १८४८ (सन् १७९१) में एक संयुक्त आइरिश दलकी स्थापना की जिसका उद्देश्य यह था कि कैथलिक और प्रोटेस्टेण्ट लोगोंका मेल कराया जाय और प्रत्येक पदपर नियुक्तिका तथा पार्लमेण्टके चुनावका अधिकार सबको हो। पिट इससे घबडाया और उसने सब कुछ सुधार करना चाहा पर सफलता न मिली।

आयर्लैंण्डके किसानोंकी हालत बहुत ही खराब थी। वे बहुत ही गरीब थे। धर्मकर उनको बहुत अखरता था। कैथोलिक होनेके कारण वे अपने पादरियोंको तो धन देते ही थे, इसके अतिरिक्त प्रोटेस्टेण्ट धर्मका सारा व्यय भी उन्हें देना पडता था। जमींदार लोग जमीनकी मालगुजारी भी बहुत अधिक वसूल करते थे। जब पार्लमेण्टसे सुधारकी कोई आशा न रही तो उपद्रव आरम्भ हुए। कैथोलिक किसानोंने प्रोटेस्टेण्ट जमीन्दारोंपर आक्रमण करना शुरू किया। प्रोटेस्टेण्ट लोगोंने भी आरेञ्जमेन नामका एक दल स्थापित किया। सरकार भी इनकी सहायक थी। दोनों तरफसे उपद्रव प्रारम्भ हुए। संयुक्त आयरिश दलने कैथोलिक लोगोंका पक्ष लिया। वूल्फटोन फ्रांस पहुँचा। उसने फ्रांसकी सरकारसे आयर्लैंडपर आक्रमण करके प्रजातन्त्र राज्य स्थापित करनेके लिए प्रार्थना की। इधर गवर्नमेण्टका अत्याचार आयर्लैंडमें बहुत बढ गया। फ्रांसके आक्रमणका भी भय होने लगा। लोग कोडासे पिटवाये जाने लगे। एक अध्यापकके पास फ्रांसीसी भाषामें कुछ लिखा हुआ मिलनेके कारण उसे इतने कोडे लगे कि वह मृतप्राय हो गया। इन अत्याचारोंके कारण अधिक संख्यामें कैथोलिक

लोग संयुक्त आइरिशदलमें सम्मिलित होने लगे और सवत् १८५५ (१७९८ ई०) में उन्होंने विद्रोह आरम्भ कर दिया। प्रोटेस्टेण्ट लोगोंपर आक्रमण होनेके कारण प्रेस्विटेरियन लोग इस दलसे अलग हो गये। यह विद्रोह अधिक समयतक नहीं चला। विन्गर पहाड़ी * पर विद्रोहियोंकी हार हुई और फ्रांसने जो सेना इनकी सहायताको भेजी वह देरमें पहुँची।

अब पिटको इस वातका निश्चय होगया कि बिना संयुक्त पार्लमेण्ट हुए आयर्लैण्डके प्रबन्धमें सुधार होना दुस्तर है और युद्धके समय आयर्लैण्डकी तरफसे इग्लैण्डपर आक्रमण होनेका भय रहेगा, अत: उसने यह तदबीर सोची कि आयर्लैण्डकी पार्लमेण्ट ब्रिटिश पार्लमेण्टमें मिला ली जाय। ब्रिटिश पार्लमेण्ट इससे सहमत थी। इधर कैथोलिक भी यह आशा देकर कि पार्लमेण्टके निर्वाचनमें भाग लेनेका उनको अधिकार दिया जायगा, राजी कर लिये गये, परन्तु प्रोटेस्टेण्ट जमींदारोंने बडा विरोध किया। ऐसे समयमें दो ही उपाय थे, या तो शस्त्रसे काम लिया जाता या रुपया देकर इनको राजी करना पडता। पिटने रुपया देना अच्छा समझा। इस प्रकार संवत् १८५७ (१८०० ई०) में संयुक्त पार्लमेण्ट स्थापित करनेका प्रस्ताव पास हो गया। इसके अनुसार डब्लिनकी पार्लमेण्ट टूट गयी। ब्रिटिश हाउस आव लार्ड्समें ३२ और हाउस आव कामन्समें १०० सभासद आयर्लैण्डके लिये गये। सवत् १८५७ के माघ मास (जनवरी १८०१ ई०) में इस संयुक्त पार्लमेण्टकी प्रथम बैठक हुई। पिटने इस पार्लमेण्ट द्वारा एक कानून इस आशयका पास

* Vingar Hill

कराना चाहा, जिसमें कैथलिक लोग धर्म-करसे मुक्त हो जायँ और वे पार्लमेण्टके सदस्य हो सकें तथा सरकारी नौकरियाँ पा सकें, किन्तु राजा और देशके विरोधके कारण ऐसा न हो सका और रोमन कैथोलिकोंकी शिकायत वैसीकी वैसी बनी रही ।

तृतीय खण्ड ।

व्यापारिक वृद्धि तथा राजनीतिक सुधार ।

पहला अध्याय ।

नैपोलियनके पतनसे नैतिक-सुधार-विधानतक ।

संवत् १८७२—१८८९ (१८१५—१८३२ ई०



नैपोलियनका अन्तिम पतन संवत् १८७२ (१८१५ ई०) में हुआ। इस समयकी इग्लैण्ड-की अवस्था और संवत् १८५० (१७९३ ई०) की इग्लैंडकी अवस्थामें आकाश पातालका भेद प्रतीत होता है। शायद बाईस वर्षोंके अन्तरमें किसी देश और किसी कालमें इतने परिवर्त्तन न हुए होंगे जितने यूरोपमें उन्नीसवीं सदी (ईसवी) के आरम्भमें हुए। क्या आर्थिक, क्या सामाजिक, सभी विषयों और सभी विभागोंमें विलक्षण परिवर्त्तन हो गया। साहित्यकी काया पलट गयी। जातीय भाव कुछसे कुछ हो गये। दैनिक जीवन अधिकांशमें बदल गया।

ईसाको अठारहवीं शताब्दीमें ग्रेटब्रिटनके निवासियोंमें वह उत्साह, यह देशभक्ति और वह उदार भाव प्रतीत नहीं होता, जो फ्रांसीसी विद्रोहके युद्धमें दृष्टिगोचर होता है। विक्रमकी अठारहवीं शताब्दीके प्रारम्भ (सत्रहवीं शताब्दी ई० के अन्त) में जो राजनीतिक दलबन्दियां शुरू हुईं उन्होंने अठारहवीं शताब्दीमें बहुतसे प्रबन्ध सम्बन्धी झमेले उत्पन्न कर दिये, परन्तु महायुद्ध रूपी भट्टीमें पडकर ये दोनों दल एक दूसरेपर विश्वास करना तथा प्रेमपूर्वक कार्य्य चलाना सीख गये। वैमनस्यकी तीक्ष्ण तलवार कुन्द पड गयी। संवत् १८६३ तथा १८६४ (१८०६ तथा १८०७ ई०) में यद्यपि पार्लमेण्टमें टोरी लोगोंका बहुपक्ष था, तथापि व्हिगमन्त्री अपना कार्य्य बिना विरोधके कर सके। इसके पश्चात् जब टोरी कैबीनेट हुई तब व्हिग् लोगोंने तीक्ष्ण आक्षेप करना त्याग दिया। अठारहवें शतककी दलबन्दियाँ, षड्यन्त्र, गुप्त विचार धोखे आदि इस युगमें नहीं पाये जाते। नैतिक जीवन भी इस समयमें बहुत कुछ सुधर गया। रिश्वतें कम हो गयीं और अन्य कई दोष भी दूर हो गये।

सामाजिक जीवनपर भी इसका विशेष प्रभाव पडा। मद्यपान बहुत कम हो गया। जुआ भी जो पहले बहुत होता था, कुछ न्यून हो गया, लोग अनेक अत्याचारोंको घृणाकी दृष्टिसे देखने लगे। इसका सबसे अच्छा प्रमाण जार्ज प्रिंस आव वेल्जके आचरणोंसे मिलता है। राजकुमारके आचरण दोषयुक्त थे। इन दोषोंका बीज अठारहवें शतक ई० में बोया गया था। राजकुमारके ३८ वर्ष उसी शतकमें गिने जाते हैं। वह संवत् १८१९ (१७६२ ई०) में उत्पन्न हुआ था। हम देखते हैं कि अठारहवें शतकमें कोई इन आचरणोंपर ध्यान भी न देता

था, परन्तु ईसाके १६ वें शतकमें प्रजाके विचार इतने बदल गये थे कि प्रिंस ओव वेल्जसे समस्त प्रजाको घृणा हो गयी थी।

युद्धने लोगोंको धार्मिक भी अधिक बना दिया था। वह विषयासक्ति जो विक्रमाब्दके १६ वें शतकके प्रारम्भ (ईसाके १८ वें शतकके अन्त) में पायी जाती थी, इस समय बहुत कम हो गयी थी। वेजले (Wesley) आदि कई धार्मिक सुधारक उत्पन्न हो गये थे जिन्होंने धर्मकी महिमा पुनर्निर्धारित कर दी।

साहित्य भी उच्च हो गया था। बाइरन और शैली आदि कवियोंके अश्लील काव्योंका मान उठकर स्काट आदिका आदर होने लगा था।

मनुष्य सख्या तथा धनमें तो और भी अधिक वृद्धि हो गयी थी। युद्धसे पूर्व ग्रेटब्रिटन और आयर्लैण्डकी जनसख्या एक करोड चालीस लाख थी। परन्तु युद्धके पश्चात् एक करोड नब्बे लाख हो गयी अर्थात् इतने दिनोंमें ५० लाख मनुष्योंकी वृद्धि हुई। यदि युद्धमें सहस्रों मनुष्य न मर जाते तो निस्सन्देह और भी अधिक उन्नति हो जाती।

परन्तु जनसख्यासे भी अधिक आश्चर्यजनक वृद्धि धन तथा व्यापारमें हुई। सवत् १८४६ (१७६२ ई०) में इग्लैण्डसे २ करोड ७० लाख पौण्डका माल बाहर गया और सवत् १८७२ (१८१५ ई०) में ५ करोड ८० लाखका, अर्थात् दूनेसे भी अधिक। सवत् १८४६ (१७६२ ई०) में १ करोड ६० लाख पौण्डका माल अन्य देशोंसे इग्लैण्डमें आया। परन्तु सवत् १८७२ (१८१५ ई०) में ३ करोड २० लाखका आया। इस प्रकार यदि सवत् १८४६ (१७६२ ई०) में इग्लैण्ड अन्य देशोंसे ८० लाख पौण्ड अधिक खींच सका तो सवत् १८७२

(१८१५ ई०) में दो करोड साठ लाख अर्थात तिगुनेसे भी अधिक। जिन मदोंसे १८४६ (१७६२ ई०) में राज्यकर एक करोड नब्बे लाख पौण्ड था, उन्हीं मदोंसे १८७२ (१८१५ ई०) में राज्यकर चौदह करोड ५० लाख हो गया। युद्ध-करकी संख्या इससे अलग है।

आर्थिक उन्नति और व्यापारिक वृद्धिके कारण ही इंग्लैण्ड इस महान् युद्धका व्यय सहन कर सका, नहीं तो नैपोलियनने इंग्लैण्डको कबका पादाक्रान्त कर लिया होता। इसके अतिरिक्त एक और बात थी। यद्यपि इस युद्धमें इंग्लैंडकी बहुत बडी जनता लगी हुई थी, तो भी इंग्लैंडकी भूमिपर एक भी लडाई नहीं हुई और वहाके वणिक्, लोहार तथा जुलाहे शान्तिपूर्वक अपना कार्य्य करते रहे। अन्य देशोंकी दशा इससे भिन्न थी। वहा पग पगपर लडाई होती थी और जीवनके सम्मुख कला-कौशल तथा कृषिकी रक्षाका किसको अवसर मिलता था? फिर अन्य देशोंकी वस्त्र, शस्त्र आदिकी आवश्यकताओंको भी इंग्लैंड ही पूरा करता था। यहांतक कि इंग्लैंडके व्यापारका महान् शत्रु और इंग्लैंड-निर्मित वस्तुओंका यूरोपभरसे निकलवा देनेवाला नैपोलियन भी स० १८७० (१८१३ ई०) में अपनी सेनाके लिए छिपकर यार्कशायरसे कपडा मगानेके लिए बाध्य हो गया था। इस प्रकार युद्धने इंग्लैंडको दरिद्र बनानेके स्थानमें धनिक बना दिया, परन्तु संवत् १८७२ से १८७७ (१८१५ से १८२० ई०) तक पांच वर्ष इंग्लैंडके लिए आपत्तिके वर्ष थे। लोगोंने आशाएँ बाँध रखी थीं कि सन्धि होने और शान्ति स्थापित होनेके पश्चात् देश और भी धनाढ्य हो जायगा, परन्तु परिणाम विपरीत निकला। वस्तुतः होना भी ऐसा ही चाहिये था।

था, परन्तु ईसाके १६ वें शतकमें प्रजाके विचार इतने बदल गये थे कि प्रिंस ओव वेल्जसे समस्त प्रजाको घृणा हो गयी थी।

युद्धने लोगोंको धार्मिक भी अधिक बना दिया था। वह विषयासक्ति जो विक्रमाब्दके १६ वें शतकके प्रारम्भ (ईसाके १८ वें शतकके अन्त) में पायी जाती थी, इस समय बहुत कम हो गयी थी। वेजले (Wesley) आदि कई धार्मिक सुधारक उत्पन्न हो गये थे जिन्होंने धर्मकी महिमा पुनर्निर्धारित कर दी।

साहित्य भी उच्च हो गया था। बाइरन और शैली आदि कवियोंके अश्लील काव्योंका मान उठकर स्काट आदिका आदर होने लगा था।

मनुष्य संख्या तथा धनमें तो और भी अधिक वृद्धि हो गयी थी। युद्धसे पूर्व ग्रेटब्रिटन और आयर्लैण्डकी जनसंख्या एक करोड़ चालीस लाख थी। परन्तु युद्धके पश्चात् एक करोड़ नब्बे लाख हो गयी अर्थात् इतने दिनोंमें ५० लाख मनुष्योंकी वृद्धि हुई। यदि युद्धमें सहस्रों मनुष्य न मर जाते तो निस्सन्देह और भी अधिक उन्नति हो जाती।

परन्तु जनसंख्यासे भी अधिक आश्चर्यजनक वृद्धि धन तथा व्यापारमें हुई। संवत् १८४६ (१७९२ ई०) में इंग्लैण्डसे २ क्रोड़ ७० लाख पौण्डका माल बाहर गया और संवत् १८७२ (१८१५ ई०) में ५ करोड़ ८० लाखका, अर्थात् दूनेसे भी अधिक। संवत् १८४६ (१७९२ ई०) में १ करोड़ ६० लाख पौण्डका माल अन्य देशोंसे इंग्लैण्डमें आया। परन्तु संवत् १८७२ (१८१५ ई०) में ३ करोड़ २० लाखका आया। इस प्रकार यदि संवत् १८४६ (१७९२ ई०) में इंग्लैण्ड अन्य देशोंसे ८० लाख पौण्ड अधिक खींच सका तो संवत् १८७२

(१८१५ ई०) में दो करोड साठ लाख अर्थात तिगुनेसे भी अधिक। जिन मदोंसे १८४६ (१७९२ ई०) में राज्यकर एक करोड नब्बे लाख पौण्ड था, उन्हीं मदोंसे १८७२ (१८१५ ई०) में राज्यकर चौदह करोड ५० लाख हो गया। युद्ध-करकी संख्या इससे अलग है।

आर्थिक उन्नति और व्यापारिक वृद्धिके कारण ही इंग्लैण्ड इस महान् युद्धका व्यय सहन कर सका, नहीं तो नैपोलियनने इंग्लैण्डको करका पादाक्रान्त कर लिया होता। इसके अतिरिक्त एक और बात थी। यद्यपि इस युद्धमें इंग्लैंडकी बहुत बडी जनता लगी हुई थी, तो भी इंग्लैंडकी भूमिपर एक भी लडाई नहीं हुई और वहांके वणिक्, लोहार तथा जुलाहे शान्तिपूर्वक अपना कार्य्य करते रहे। अन्य देशोंकी दशा इससे भिन्न थी। वहा पग पगपर लडाई होती थी और जीवनके सम्मुख कला कौशल तथा कृषिकी रक्षाका किसको अवसर मिलता था? फिर अन्य देशोंकी वस्त्र, शस्त्र आदिकी आवश्यकताओंको भी इंग्लैंड ही पूरा करता था। यहातक कि इंग्लैंडके व्यापारका महान् शत्रु और इंग्लैंड-निर्मित वस्तुओंका यूरोपभरसे निकलवा देनेवाला नैपोलियन भी सं० १८७० (१८१३ ई०) में अपनी सेनाके लिए छिपकर यार्कशायरसे कपडा मगानेके लिए बाध्य हो गया था। इस प्रकार युद्धने इंग्लैंडको दरिद्र बनानेके स्थानमें धनिक बना दिया, परन्तु संवत् १८७२ से १८७७ (१८१५ से १८२० ई०) तक पाच वर्ष इंग्लैंडके लिए आपत्तिके वर्ष थे। लोगोंने आशाएँ बॉध रखी थीं कि सन्धि होने और शान्ति स्थापित होनेके पश्चात् देश और भी धनाढ्य हो जायगा, परन्तु परिणाम विपरीत निकला। वस्तुत होना भी ऐसा ही चाहिये था।

हम पहले कुछ कृषिकी अवस्थाका वर्णन करेंगे। जिस दिनसे युद्ध आरम्भ हुआ, बाहरका अन्न आना बन्द हो गया। सवत् १८६६ (१८१२ ई०) से तो अमेरिकासे भी अन्न न आया, क्योंकि उस देशसे भी युद्ध छिड चुका था। इसके अतिरिक्त टोरी लोग मुक्तद्वार वाणिज्यकी अपेक्षा सरक्षणको अच्छा समझते थे और बाहरके अन्नपर कर भी बहुत था, अतः अन्नका मूल्य तिगुना होगया था और कृपकोंको बहुत लाभ हुआ था। एक क्वार्टर (८ मनके लगभग) गेहूं ६० शिलिङ्गसे लेकर १२० शिलिङ्गमें बिका था और उन्होंने अपने लाभका अनुमान भी इसी भावसे किया था। वे समझते थे कि युद्ध सदा रहेगा और हम मनमाना मूल्य पाते रहेंगे, परन्तु वाटर्लूके युद्धके पश्चात् अन्न बाहरसे आना आरम्भ हुआ और गेहूँका भाव एकदम एक तिहाई घट गया। इससे बहुतसे जमींदारोंका दिवाला निकल गया। इस हानिका मजदूरोंपर भी प्रभाव पडा, क्योंकि किसानोंने सस्ता अन्न पाकर मजदूरी कम कर दी, बहुतसे मजदूर खाली हो गये और जब रोटीका भाव सस्ता हुआ तो पैसे मँहगे हो गए। इंग्लैंडके लोग जब भूखों मरते हैं तो विद्रोह करने लगते हैं, अत' बीसों स्थानोंपर लूट मार हुई विद्रोह हुए और खलिहान जला दिये गये। लोगोंको भय हुआ कि सवत् १८४६ (१७८६ ई०) में फ्रासकी जो दशा हुई थी वहीं दशा कहीं इंग्लैंडकी भी न हो जाय।

यह तो थी ग्रामोंकी दशा। इधर नागरिक लोग भी आपत्तिमें ही थे, क्योंकि युद्ध बन्द होते ही उनका माल बिकना बन्द हो गया। जो लोहा पहले बीस पौण्ड टनके भावसे बिकता था, वह अब ८ पौण्ड टनसे भी सस्ता हो गया।

लोहार हाथपर हाथ धरे बैठे रहे। कोई शस्त्र लेनेवाला न रहा। इग्लैण्डवालोंने समझा कि लडाई बन्द होते ही हमारा माल अन्य देशोंमें बिकने लगेगा, अत. उन्होंने एक साथ बहुत माल बना डाला, परतु यूरोपके देश लडाईमें निर्धन हो चुके थे। उनके शरीरमें, रक्तका एक बूँद भी शेष न था। वे इग्लिश मालको क्या देकर मोल लेते? अत माल एक साथ ही सस्ता हो गया। लाभके स्थानमें बडी भारी हानि उठानी पडी। सैकडोंका दिवाला निकला। सहस्रों बेरोजगार हो गये। इसके अतिरिक्त २५००० सैनिक आवश्यकता न रहनेके कारण सेवासे मुक्त कर दिये गये। नौकरी जाती रहने पर वे अन्य काम करनेके लिए बाध्य हुए। यहाँ वैसे ही कामकी कमी थी। इञ्जनघर खडे हो रहे थे। हाथका काम बन्द हो चुका था। जितना कपडा १०० जुलाहे साल भरमें बनाते थे, उतना एक इञ्जन १० मनुष्योंकी सहायतासे एक मासमें ही उपस्थित कर देता था। अत धनाढ्य पुरुषोंको तो अधिक लाभ होता था, परतु मजदूरोंकी मजदूरी छूट जाती थी। फिर सामाजिक सघटन भी अभी ऐसा न हुआ था कि इस नयी आयी हुई आपत्तिका कुछ प्रतीकार किया जा सकता।

जिन लोगोंके हाथमें राज्यकी बागडोर थी वे इन कठिनाइयोंको निवारण करनेके सर्वथा अयोग्य थे। सवत् १८६७ [१८१० ई०] से तृतीय जार्ज, उन्मत्त, अधा तथा बहिरा हो गया था। जार्ज, प्रिन्स आव वेल्ज, जो उसकी जगह प्रबन्धकर्त्ता नियत हुआ था, जुआरी, व्यभिचारी, क्रूर, निर्दयी, धोखेबाज, तथा कुत्सित था। लोग समझते थे कि वह शीघ्र मर जायगा और उसकी पुत्री राजकुमारी शार्लट गद्दीपर बैठेगी, परतु राजकुमारीका सवत् १८७३ [१८१६ ई०] में

ही प्रसव-वेदनाके कारण देहान्त हो गया। जार्ज प्रिंस आव वेल्ज, १४ वर्ष और जीवित रहा।

उस समय महामंत्री लार्ड लिवरपूल था, जो प्रत्येक प्रकारके नैतिक सुधारोंसे घृणा करता था। उसका होम सेक्रेटरी अर्थात् स्वदेश-मंत्री एडिंग्टन था, जिसके महामंत्रित्वसे संवत् १८५८-६१ (१८०१-४ ई०) में ही लोगोंको अरुचि हो चुकी थी। विदेश-मन्त्री लार्ड कासिलरी * था जिसने पिछले युद्धमें अच्छा कार्य्य किया था, परन्तु इसके विषयमें लोगोंको सन्देह था कि यह निरंकुश राजाओंके पक्षमें है।

लिवरपूल और उसके अनुयायियोंने यथाशक्ति प्रबंधमें सुधार किया। राजाको व्यय बहुत कम कर दिया। सिक्कोंमें भी परिवर्त्तन हुआ। संवत् १८५४ (१८९७ ई०) से गिनी ढालना बन्द था। केवल नोट चलते थे। जब घोर युद्ध हो रहा था, उस समय ५ पौण्डका नोट केवल ३ पौण्ड १८ शिलिङ्गको ही बिकने लगा था। संवत् १८४४ (१७८७ ई०) से चाँदीके सिक्के भी ढले न थे। परन्तु अब गिनीके स्थानमें सौवरेन अर्थात् पौण्डका सोनेका सिक्का ढाला गया जिससे व्यापारमें कुछ सुविधा हो गयी। परन्तु केवल मितव्यय तथा सिक्केके सुधारसे काम नहीं चल सकता था। शान्ति स्थापन करनेके लिए राजनीतिक सुधारकी आवश्यकता थी। फ्रांसकी राज्यक्रान्तिके पहले पिट और फाक्स आदि राजनीतिज्ञोंने सुधारका प्रश्न उठाया था पर क्रान्ति और उसके बाद यूरोपीय युद्ध आरम्भ हो जानेसे इस विषयमें कुछ नहीं हुआ। सब लोगोंका ध्यान युद्धकी तरफ था। यह युद्धके समयमें भी कुछ दार्शनिकों तथा मजदूरोंने राजनीतिक तथा सामाजिक

* Castlereagh

सुधारका आन्दोलन जारी रखा था और इस उद्देश्यसे कुछ गुप्त समितियाँ भी स्थापित की गयी थीं। सरकारकी तरफसे उनके दमनके लिए कई दमन कारी कानून बने थे। पर संवत् १८७२ (१८१५) के बादके मन्त्री सुधारके बड़े विरोधी थे। सुधार आन्दोलनको बढ़ानेके लिए बड़ी बड़ी सभाएँ की जाने लगीं और विद्रोह भी प्रारम्भ हुए। संवत् १८७३ (१८१६ ई०) में लन्दनमें, आषाढ़ संवत् १८७४ (जून १८१७ ई०) में दर्बीमें और आषाढ सं० १८७७ (जून १८२० ई०) में स्काटलैण्डमें विद्रोह हुए। राज्यने भी लातका उत्तर घूसेसे दिया और बारह मनुष्योंको प्राणदण्ड दिया गया। वस्तुतः इतने कठिन दण्डकी आवश्यकता न थी। संवत् १८७६ के ३१ श्रावण (१६ अगस्त १८१६ ई०) को मांचेस्टरमें एक जनसमूहने राज्य प्रबन्धके विरुद्ध आन्दोलन प्रकट करनेके प्रयोजनसे एक जलूस निकाला। यह कोई विशेष अपराध न था और न शान्ति भङ्गकी ही सम्भावना थी, क्योंकि ये लोग शस्त्ररहित थे। परन्तु राज्य-प्रबन्धक प्रभुताके नशेमें थे। उन्होंने तुरन्त घुड़-सवारोंको भेजकर उनपर आक्रमण कर दिया। ६ मनुष्य मारे गये और पचास साठ घायल हो गये। सरकारकी तरफसे इस आन्दोलनको दमन करनेके लिए छ कानून बने जिनके अनुसार लोगोंको सभा, फौजी कवायद, आदि करनेकी मनाही हो गयी। मैजिस्ट्रेट लोगोंको बिना वारट घरोंकी तलाशी लेनेका तथा जल्दी मुकदमोंका फैसला करनेका अधिकार मिल गया और अखबारोंकी स्वतन्त्रता भी छिन गयी।

इस अत्याचारका बदला लेनेके लिए आर्थर थिसिलउड* नामक एक पुरुषने कैटो स्ट्रीटमें १० माघ संवत १८७६ (२३

* Thistlewood

फर्वरी १८२० ई०) को एक प्रीति भोजमें सम्मिलित होनेके अवसरपर समस्त मन्त्रिमण्डलको मार डालनेका प्रबन्ध किया, परन्तु भेद खुल गया और इन सबको फांसी हुई।

अब सवत् १८७७ (१८२० ई०) में तृतीय जार्ज मर गया और उसका लडका चौथे जार्जके नामसे गद्दीपर वैठा। इसके मरते ही विद्रोह भी कम हो गये। इसका कारण चतुर्थ जार्ज का राज्यप्रबन्ध न था, क्योंकि जार्ज इतने योग्य ही कब था? बात यह थी कि पॉच वर्षमें लोगोंने अन्नकी महंगी सहना सीख लिया था और कुछ कुछ माल भी बिकने लगा था। परन्तु नैतिक सुधारकी चाह बहुत उत्कट थी। जैसा पहिले लिखा जा चुका है, पिटने सवत् १८४० (१७८३ ई०) में इसका कुछ प्रयत्न किया था, परन्तु उस समय उसे सफलता न हुई। फ्रासीसी युद्धके समय लोग आन्तरिक सुधारकी अपेक्षा युद्ध सम्बन्धी विचारोंमें ही निमग्न थे। परन्तु अब लोगोंको प्रतीत होता था कि नैतिक सुधार होनेका यह अति उचित समय है। नैतिक सुधारके सबसे मुख्य विषय ये थे—

(१) कैथोलिकोद्धार (कैथलिक इमैन्सिपेशन)
(२) व्यापारिक स्वतन्त्रता।
(३) ब्रिटिश उपनिवेशोंमें दासत्व मिटानेका विचार।
(४) निर्धनोंके सम्बन्धके नियमोंमें परिवर्त्तन।
(५) पार्लमेण्टके प्रतिनिधियोंका निर्वाचन।

चूंकि पहले चार विषयोंमे टोरी मन्त्रीगण किसी प्रकारका सुधार सहन न कर सकते थे, अत इस बातकी आवश्यकता हुई कि दोषकी जडपर ही कुठाराघात किया जाय। अर्थात् पार्लमेण्टके सभ्योंका निर्वाचन ही इस प्रकार हो कि ये देशकी इच्छाओं और आवश्यकताओंपर ध्यान दे सकें।

परन्तु यहां एक और झगडा आ गया। चतुर्थ जार्जकी स्त्री महारानी कैरोलायनका आचरण ठीक न था। वह बहुत दिनोंसे अपने पतिसे पृथक् थी और यूरोपमें अयोग्य पुरुषोंकी संगतिमें रहा करती थी। तृतीय जार्जकी मृत्युपर उसने घोषणा की कि मैं इग्लैण्डमें आकर अपने पतिके साथ राजगद्दीपर बैठूंगी। राजा क्रुद्ध हो गया और उसने अपने मन्त्रियोंको बाध्य किया कि वे पार्लमेण्ट द्वारा उसे तलाक देनेमें सहायता करें। मन्त्रियोंको बुरा तो बहुत मालूम हुआ, क्योंकि चतुर्थ जार्ज स्वयं ही कुछ कम दुराचारी न था, परन्तु उन्होंने राजाकी आज्ञा मान ली। पार्लमेण्टकी ओरसे जॉच की गयी। व्हिग् लोगों तथा लन्दनवालोंने रानीका साथ दिया। जॉचका परिणाम यह निकला कि रानीका अधिक दोष सिद्ध न हुआ। अत ४ मार्गशीर्ष १८७७ (२० नवम्बर १८२० ई०) को तलाकका प्रस्ताव अस्वीकृत हुआ।

अब महामन्त्रीने त्यागपत्र तो न दिया, परन्तु अपने सहायक बदल लिये। सिडिंगटनने पद त्याग किया। कासिलरीने आत्मघात कर लिया और कई टोरी मन्त्री निकल गये। उनके स्थानपर उदार विचारके युवक टोरी आ गये जिनमें कैनिंग, हस्कीसन और सर राबर्ट पील प्रसिद्ध थे। हस्कीसन मुक्तद्वार वाणिज्यका पक्षपाती था। उसने बाहरके कच्चे मालपर चुंगी कम कर दी। अत कच्चा माल, जैसे रुई आदि, बहुत आने लगा और अंग्रेजोंको कपडा आदि बनानेमें सुविधा हो गयी। हस्कीसन बाहरके अन्नपर चुंगी भी उठा देना चाहता था, परन्तु वह सफल न हुआ।

पीलने दण्डके नियमोंमें सुधार किया। पहले भेडोंकी चोरी आदि छोटे छोटे अपराधोंके लिए भी प्राणदण्ड दिया

जाता था, परन्तु अब उसने बहुतसे अपराधोंके लिए प्राणदण्ड हटाकर केवल कारागार ही रखा। यह अच्छा ही हुआ, क्योंकि यदि अपराध और दण्डमें समानता नहीं होती तो अप राध बढ जाते है।

कैनिंग विदेश मंत्री हुआ। उसका कार्य्य बहुत बडा था। संवत् १८७२ (१८१५ ई०) से यूरोपमें निरकुश राजाओंकी धूम थी। फ्रांस विद्रोहसे इन लोगोंको प्रजाके दमनका और भी बहाना मिल गया था। जब इन राजाओंने नेपोलियनके विरुद्ध प्रजाको उकसाया और उससे सहायता माँगी, उस समय इन्होंने प्रजासे कई उदार प्रतिज्ञाएँ की थीं, परन्तु अब वे इन प्रतिज्ञाओंको शीघ्र भूल गये, अत प्रजामें असन्तोष फैल गया। कई स्थानोंपर विद्रोह होने लगे। जर्मनी और स्पेन की प्रजाने प्रजातंत्र राज्य स्थापित करना चाहा। इटली और पोलैण्डवाले चाहते थे कि हमारे देशका राज्य यथापूर्व ही रहे। रूस-नरेश ज़ार, आस्ट्रिया-नरेश फ्रांसिस, और प्रशा-नरेश फ्रेडरिक विलियम तथा फ्रांस, स्पेन और नेपि ल्जके बूर्बनवशीय राजाओंने मिलकर नैतिक सुधारके विरुद्ध एक 'पवित्र मित्रसघ' (होली एलायन्स) स्थापित किया।

कासिलरी कैनिंगके पूर्व विदेश मत्री था। उसने "पवित्र सघ"में सम्मिलित होना स्वीकार न किया। पर इधर प्रजाको सहायता भी न दी। आस्ट्रियाकी सेना इटलीवालोंका और फ्रांसकी सेना स्पेनके उदारदलका दमन करती रही और इग्लैण्ड खड़ा देखता रहा।

जब कैनिंग सवत् १८७६ (१८२२ ई०) में विदेश मत्री हुआ तो उसने अन्य देशोंमें प्रजाके अधिकारोंकी रक्षा करनेमें सहायता दी। स्पेनके उदारदलको बचाना दुष्कर था, क्योंकि

संवत् १८८० (१८२३ ई०) के आरम्भमें ही वह पददलित हो चुका था परन्तु पुर्तगालवाले बच गये। स्पेनके वे उपनिवेश जो अमेरिकामें थे और जिनपर मातृदेशकी ओरसे अत्याचार होता था, स्वतन्त्र कर दिये गये, पर इसका मुख्य कारण यह था कि इंग्लैंडको उन उपनिवेशोंके साथ स्वतन्त्र रूपसे व्यापार करनेकी सुविधा मिल जाय। यूनानी लोगोंने तुर्कोंके सुलतानसे विद्रोह किया था। कैनिंगने इनकी भी सहायता की। बहुतसे अंग्रेज यूनानकी सेनामें भरती हो गये और यूनान स्वतन्त्र हो गया।

संवत् १८८३ के फाल्गुन (१८२७ के फर्वरी) मासमें लिवरपूलका और भाद्र (अगस्त) मासमें कैनिंगका प्राणान्त हो गया। थोड़ेसे परिवर्तनोंके पश्चात् वैलिंगटन महामन्त्री हुआ, परन्तु उसमें नैतिक मस्तिष्क न था। उसकी कीर्ति शस्त्रोंके कारण थी। पार्लमेण्टका सभा-भवन वाटर्लूका रणक्षेत्र न था और न उसके विरोधी नेपोलियन ही थे। लोग कहा करते थे कि वैलिंगटन सभामें भी उसी प्रकार व्यवहार करता था जैसा रणक्षेत्रमें। यद्यपि उसका हृदय शुद्ध और विचार देशभक्तिसे पूरित थे, परन्तु उसकी नीति उदार न थी। वह नैतिक सुधारोंके विरुद्ध था।

सबसे पहले उसने कैनिंगके कार्य्यपर पानी फेर दिया। संवत् १८८४ (१८२७ ई०) की ग्रीष्म ऋतुमें जब कैनिंग जीवित था, एक अंग्रेजी पोत भूमध्यसागरमें भेजा गया था कि वह तुर्क सेनापति इब्राहीम पाशाको यूनानसे सन्धि करनेके लिए बाध्य करे। २७ आश्विन १८८४ (१३ अक्टूबर १८२७ ई०) को लड़ाई हुई, तुर्कों तथा मिश्रका पोत नष्ट कर दिया गया। परन्तु वैलिंगटनने सहायता बन्द कर दी। इसपर रूसने हस्तक्षेप करके यूनानको स्वतन्त्र करा दिया और तुर्कोंका कुछ

भाग स्वयं ले लिया। यदि कैनिंग होता तो इंग्लैण्डको भी कुछ लाभ अवश्य होता।

अब आन्तरिक सुधारोंकी बारी आयी। द्वितीय चार्ल्सके समयमें डिसेण्टर लोगोंके विरुद्ध परीक्षाविधान (टेस्ट एक्ट) आदि कई नियम पास किये गये थे, जिनके अनुसार इन लोगों तथा कैथोलिकोंको राजकीय-पद प्राप्त करनेमें रुकावट डाल दी गयी थी। उन्नीसवीं शताब्दीमें इन नियमोंका पालन नहीं होता था। बहुतसे डिसेण्टर राजकीय पदोंको अलङ्कृत कर रहे थे और आवश्यकता थी कि ये नियम सर्वथा रद्द कर दिये जायँ। जिस समय ह्विगोंकी ओरसे हाउस आव कामन्समें यह प्रस्ताव पेश हुआ, उस समय वेलिंगटनने बड़ा विरोध किया, परन्तु अन्तमें लाचार होकर स्वीकार किया और ये नियम रद्द हो गये।

अब कैथोलिकोद्धारका प्रश्न पेश हुआ। संवत् १८५७ (१८०० ई०) में पिटने प्रतिज्ञा की थी कि आयर्लैण्डके कैथोलिकोंके वही अधिकार होंगे जो प्रोटेस्टेण्टोंके। इसी आशापर उन्होंने संयुक्त पार्लमेण्टके लिए अपनी स्वीकृति दी थी। पिटने यह अधिकार देनेके लिए प्रयत्न भी बहुत किया, परन्तु तृतीय जार्जके हठके कारण यह कार्य्य न हो सका। अब तृतीय जार्ज तो था नहीं। रहा चतुर्थ जार्ज, सो वह किसी धर्मके विरुद्ध न था। वस्तुतः उसका कोई धर्म ही न था।

संवत् १८८० (१८२३ ई०) में ओकानेल (O'Connell) नामक आयर्लैण्डके एक प्रसिद्ध कैथोलिकने 'कैथोलिकसमाज" स्थापित किया और कैथोलिकोद्धारके लिए तीव्र आन्दोलन प्रारम्भ किया। इन लोगोंने कैथोलिक-करके नामसे एक चन्दा लगाया जो राज्यकरसे भी अधिक नियमानुसार इकट्ठा हो

जाता था। ओकानेल प्रभावशाली वक्ता और संघ-विधायक पुरुष था। उसका देशपर बड़ा प्रभाव था, समस्त आयर्लैंएड उसकी पीठपर था और इग्लैंएडके व्हिग् उसकी सहायता करते थे। उसने स्वयं अपनेको पार्लमेण्टका सभ्य निर्वाचित कराया पर उस समय प्रचलित नियमोंके कारण उसको पार्लमेण्टमें बैठनेकी आज्ञा न हुई।

वैलिंगटन कैथोलिकोद्धारके विरुद्ध था परन्तु समस्त व्हिग् और वे टोरी जो कैनिंगके अनुयायी थे, इसके अनुकूल थे। बहुत दिनोंतक झगड़ा होता रहा और वैलिंगटन निरन्तर विरोध करता रहा परन्तु संवत् १८८६ (१८२६ ई०) के आरम्भमें अचानक उसने घोषणा कर दी कि मुझे यह निश्चय हो गया है कि यदि कैथोलिकोद्धार न हुआ तो पारस्परिक युद्ध हो जायगा। अतः मैं युद्धकी अपेक्षा प्रस्तावको स्वीकार करना अच्छा समझता हूँ। अब क्या था, प्रस्ताव पास हो गया और कैथोलिक लोगोंको निम्नलिखित पदोंको छोड़कर और समस्त अधिकार प्राप्त हो गये। वे पद ये हैं—

(१) ब्रिटिश सम्राट्का पद। (किंग)

(२) उसके स्थानापन्न प्रबन्धकर्ताका पद (रीजेण्ट)

(३) लार्ड चान्सलर अर्थात् जजोंके सभापतिका पद।

(४) आयर्लैंएडके वायसरायका पद।

वैलिङ्गटनके टोरी मित्र उससे रुष्ट होगये। उन्होंने कहा कि महामन्त्रीने हमको धोखा दिया। इसके पश्चात् उन्होंने कभी उसको सहायता न दी। आयर्लैंएडमें ओकानेलने कैथोलिको द्धार सम्बन्धी नियम पास करके एक और आन्दोलन आरम्भ किया जिसे रिपील* या होमरूल† या 'स्वराज्य आन्दोलन'

* Repeal   † Home-Rule

कहते हैं। इसका तात्पर्य्य यह था कि आयलैंडकी पार्लमेण्ट अलग होनी चाहिये।

१२ आषाढ़ १८८७ (२६ जून १८३०) को चतुर्थ जार्ज ६८ वर्षका होकर मर गया और उसके स्थानपर उसका छोटा भाई चतुर्थ विलियमके नामसे गद्दीपर बैठा। वह सरल-स्वभाव, अनुभवी वृद्ध पुरुष था और अवैतनिक पोताध्यक्ष भी रह चुका था। यद्यपि उसे कभी कभी कुछ सनकसी आ जाती थी और लोगोंको भय था कि उसके पिता तृतीय जार्जकी उन्मत्तता उसमें भी न आ जाय, परन्तु ऐसा हुआ नहीं। चतुर्थ विलियममें एक गुण बहुत अच्छा था। उसे किसीका पक्षपात न था। टोरी और व्हिग् उसके लिए एक से थे। वह दोनों की सुननेको तैयार था। उसने संवत् १८७५ (१८१८ ई०) में अर्थात् ५३ वर्षकी आयुमें विवाह किया था, उससे दो पुत्रियां हुईं जो बाल्यावस्थामें ही मर गयीं। इसलिए जब संवत् १८६४ (१८३७ ई०) में चतुर्थ विलियमका देहान्त हुआ तब उसके छोटे भाई एडवर्ड ड्यूक आव केण्टकी लड़की अलक्जेण्ड्रीना विक्टोरिया गद्दीपर बैठी।

जिस समय चतुर्थ विलियम राजगद्दीपर बैठा, उस समय यूरोपकी राजनीतिक अवस्था बड़ी डॉवाडोल हो रही थी। पवित्र संघके विरुद्ध प्रजा सिर उठाने लगी थी। पंद्रह वर्षके निरंकुश शासनका यही फल था। निरंकुश शासन, घोर अत्याचारों और शस्त्रोंके निरन्तर प्रयोगसे ही हो सकता है और वह भी विशेषकर निर्जीव देशमें। ऐसे देशमें सम्भव है कि सैकड़ों वर्षतक निरंकुश शासन रह सके, परन्तु यूरोपके देश आत्मगौरवके भावसे पूरित हैं। क्रान्तिका श्रीगणेश पेरिससे हुआ। वहाँकी प्रजाने दशम चार्ल्सको राजगद्दीसे उतार

कर निकाल दिया और उसके स्थानमें लुई फिलिप, ड्यूक आफ आर्लियन्सको राजा बनाया। तत्पश्चात् पोलैण्डवाले जारसे बिगड बैठे। इसी प्रकार बेल्जियम, स्पेन, पुर्तगाल, जर्मनी तथा इटलीमें भी विद्रोह हुए।

इंग्लैण्डमें भी यद्यपि विद्रोह नहीं हुआ पर असन्तोष बहुत था। असन्तोष राजाओंके प्रति नहीं, किन्तु पार्लमेण्टकी निर्वाचन प्रणाली और उसके समर्थकोंके विरुद्ध था।

बात यह है कि पार्लमेंटकी निर्वाचन प्रणालीमें एलीजबिथ-के समयसे कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ था। जिन प्रान्तों तथा नगरोंसे जितने प्रतिनिधि उस समय पार्लमेंटमें भेजना निश्चित हुआ था उन्हीं प्रांतों तथा नगरोंसे उतनी ही सख्या प्रति निधियोंकी अब भी भेजी जाती थी। वस्तुत. यह वर्त्तमान दशाके विरुद्ध था, क्योंकि बहुतसे नगर जो प्राचीन कालमें समृद्ध थे अब बिलकुल ऊजड हो गये थे और बहुतसे उस समयके निर्जन स्थानोंमें अब बडे बडे नगर स्थापित हो चुके थे। ऊजड ग्रामोंसे एकसे लेकर साततक प्रतिनिधि आते थे। ओल्ड सेरम (Old Sarum) नामक नगर अब जनशून्य था। वहाँका जो प्रतिनिधि पार्लमेण्टमें बैठता था, वह केवल अपना ही प्रतिनिधि था। मांचेस्टर, लीड्स, शैफील्ड आदि बडे बडे नगर हो गये थे, परन्तु इनको एक भी प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार न था। बहुतसे निर्वाचनक्षेत्र केवल नाममात्रके या इतने निर्बल थे कि उनकी सम्मति ही कुछ न थी। जिससे रुपया मिलता, उसीके लिए वे सम्मति दे देते थे। पिट आदिने इसकी आवश्यकता पहिलेसे ही अनुभव की थी। जब सवत् १८४२ (१७८५ ई०) में युवा पिटने नैतिक सुधारका प्रस्ताव पेश किया तो चारों ओरसे विरोध हुआ। इसके विशेष

विरोधी जमींदार थे, जो व्यापारिक श्रेणीके पुरुषोंको अधिक अधिकार देना उचित नहीं समझते थे। सवत् १८७३ (१८१६) और सवत् १८७७ (१८२० ई०) के मध्यमें भी यह प्रश्न कई बार उठाया गया, परन्तु उस समय शुस्यडोंके विद्रोहने कुछ सावधानतासे विचार न करने दिया। फिर भी उस समयसे इंग्लैंडकी साधारण जनतामे नैतिक-शिक्षा विशेष हो गयी और अपने अधिकारोंके लिए अधिक आन्दोलन होने लगा।

जिस समय चतुर्थ विलियमके राज्याभिषेकके अवसरपर पहली पार्लमेण्ट हुई, उस समय व्हिग् लोगोंका पक्ष प्रबल था। सब लोगोंको आशा हुई कि राजवक्तृतामें नैतिक सुधारके विषयमें कुछ न कुछ प्रतिज्ञा अवश्य होगी, परंतु जब वक्तृता हो चुकी और नैतिक सुधारका संकेत भी न सुनाई दिया तब निराशा और असन्तोषकी सीमा न रही। समस्त लन्दनवासी इसी विचारमें निमग्न हो गये। यह आग यहाँतक भडकी कि राजा गिल्ड हाल (Gild Hall) के प्रीतिभोजमें भी सम्मिलित न हो सका जैसा कि राज्याभिषेकके पश्चात् हुआ करता है। मन्त्रियोंको भय था कि कहीं लोग आक्रमण न कर बैठें।

इसके थोडे ही दिनों पीछे वैलिङ्गटन और पीलने पद त्याग किया। अर्ल ग्रे प्रधान मन्त्री हुआ और लार्ड रसिल भी कैबी-नेटमें आ गया। लार्ड रसिलने नैतिक-सुधारका प्रस्ताव उप-स्थित किया, परन्तु यह बहुत टेढ़ा प्रश्न था। यह एकसौ चालीस प्रतिनिधियोंके निकालनेका प्रस्ताव था। वे भला कब चाहते थे कि हम निकलें। जिस समय रसिल प्रस्ताव कर रहा था उस समय 'सुनो! सुनो!' के हास्यसूचक शब्द सुनाई पड रहे थे। परिणाम यह हुआ कि प्रस्ताव गिर गया। अब महा-मन्त्रीने पार्लमेण्ट तोड दी। देश भरमें 'नैतिक-सुधार' की ही

प्रतिध्वनि थी। जब पार्लमेंएट फिर निर्वाचित हुई और नैतिक-सुधारका प्रस्ताव किया गया तो हाउस आव कामन्सने बहु-मतसे इसे पास किया, परन्तु हाउस आव लार्ड्सने इसे पास न किया। वहाँ ४१ सम्मतिकी न्यूनतासे प्रस्ताव गिर गया। लार्ड वेलिंगटन भी विरोधियोंमेंसे था। उसका कथन था कि इस समय मध्यश्रेणीके लोग अधिकार पाकर उच्च श्रेणीपर अत्याचार करेंगे और कुछ दिनों पीछे निम्न श्रेणीके लोग मध्यम श्रेणीके लोगोंको भी तङ्ग किया करेंगे।

हाउस आव लार्ड्सके विरोधपर देशमें आँधीसी आ गयी। कई बड़े नगरोंकी जनताने, जिसे सम्मति देनेका अधिकार न था, विद्रोह किया। बहुतसे स्थानोंपर लोगोंने आग लगा दी। नाटिंघमका महल जला दिया गया। ब्रिस्टल दो दिनतक विद्रोहियोंके हाथमें रहा। बर्मिङ्घमके न्यूहाल हिलपर डेढ़ लाख मनुष्य एकत्र हुए और उन्होंने नगे सिर, हाथ उठाकर शपथ खायी कि चाहे प्राण जायँ, चाहे कितनी ही आपत्ति आवे, हम और हमारी सन्तान देश हितसे मुख न मोड़ेंगे। बर्मिंघम समितिने दो लाख मनुष्य लेकर लन्दनपर धावा करनेका निश्चय कर लिया। अब लोगोंको निश्चय हो गया कि सुधार प्रस्तावके पास किये बिना देशमें शान्ति नहीं रह सकती। हाउस आव लार्ड्सके सभ्योंने भी, यदि स्पष्टतया नहीं तो गुप्तरीत्या ही, इसकी आवश्यकता स्वीकार की। वेलिंगटन आदि सुधारके पक्षमें अपनी सम्मति देना नहीं चाहते थे और इसके विरोधमें दे नहीं सकते थे। अत वेलिंगटन और १०० अन्य सभ्य सभा भवन छोड़कर चले गये। इस प्रकार विरोधियोंका पक्ष कम होनेसे नैतिक-सुधारका प्रस्ताव पास हो गया। इसके अनुसार १४३ सभ्योंका स्थान रिक्त हुआ। इनमें

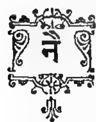
से ६५ तो प्रान्तोंको दिये गये और शेष बडे बडे नगरोंको। सम्मति देनेका अधिकार नगरोंमें उन लोगोंको दिया गया जो दस पौण्ड वार्षिक या अधिकके किरायेके मकानमें रहते थे, और प्रान्तोंमें उनको दिया गया, जिनके पास ५० पौण्ड वार्षिक लगानकी भूमि अथवा मकान थे। स्काटलैण्डके सभ्योंकी संख्या ४५ से ५३ और आयर्लैण्डकी १०० से १०५ हो गयी।

इस समयसे टोरियोंका नाम 'कन्सर्वेटिव' या अनुदार दल और व्हिगोंका नाम 'लिबरल' या उदार दल हो गया। अनुदार दल कहता था कि हम इंग्लैण्डकी प्राचीन संस्थाओं को स्थिर रखना चाहते हैं। उदार दलका कहना था कि हम संसार भरमें नैतिक तथा धार्मिक स्वतन्त्रता स्थापित करना चाहते हैं।

दूसरा अध्याय।

नैतिक सुधार-निश्चयसे क्रीमियन युद्धतक।

संवत् १८८९–१९११ (१८३२–१८५४ ई०)



तिक सुधार-निश्चय अर्थात् रिफार्मबिल २१ ज्येष्ठ १८८९ (४ जून १८३२ ई०) को पास हो गया और फाल्गुन १८८९ (फर्वरी १८३३ ई०) में जो पार्लमेण्ट बैठी, वह नये कानूनके अनुसार थी। यह बहुत बडा नैतिक सुधार था। लोग समझते थे; और किसी अंश तक यह सच भी था, कि यदि कुछ दिनों यह निश्चय पास न होता तो हाउस आव लार्ड्सका आज अस्तित्व भी न होता। इसके विरोधी यह समझते थे कि अब

इंग्लैण्डकी प्राचीन संस्थायें नष्ट हुआ चाहती हैं । कोई कहता था कि अब कुछ आश्चर्य नहीं यदि प्रजापालित राज्य हो जाय । धनाढ्योंने डर कर अपना धन अमेरिका तथा डेन्मार्कमें लगाना आरम्भ कर दिया था ।

परन्तु यह भय अनुचित और कल्पित ही निकला । वस्तुत: लोग सन्तुष्ट हो गये और उन्होंने शान्ति भङ्ग न की । हाँ, यह अवश्य हुआ कि नवीन पार्लमेण्टने कई आवश्यक सुधार किये ।

इनमें सबसे मुख्य और परोपकारयुक्त प्रस्ताव दास-मोचनका था । इस सुधारसे अंग्रेज जातिका यश संसारमें फैल गया और इससे उसकी स्वातन्त्र्य प्रियता प्रकट हुई । संवत् १८४५ (१७८८ ई०) से दास-मोचन तथा दास-व्यापार-निषेधके लिए देशमें प्रश्न उठ रहे थे । संवत् १८६४ (१८०७ ई०) में फॉक्सके परिश्रमसे यह बात निश्चित हो चुकी थी कि अफ्रिकासे दासोंका पश्चिमी द्वीपमें भेजना बन्द कर दिया जाय । जो दास इंग्लैण्डकी भूमिपर पदार्पण करते थे, वे वहाँ आते ही मुक्त कर दिये जाते थे । परन्तु छिपकर दासोंका क्रय विक्रय बन्द न हुआ था । दासोंके स्वामी उनके साथ पशुओंसे भी नीच व्यवहार करते थे । जहाजोंमें बहुतसे दास इस प्रकार भर दिये जाते थे कि उनको साँस लेनेकी भी जगह न रहती थी । यदि भोजन कम हो जाता तो दुर्बल दास, यह समझ कर कि इनका बहुत थोड़ा मूल्य मिलेगा, समुद्रमें फेंक दिये जाते थे । संवत् १८९१ (१८३४ ई०) में दास-मोचनका प्रस्ताव पास हो गया । इंग्लिश उपनिवेशोंके दासोंके स्वामियोंको जिनको अपनी मानुषी सम्पत्तिके जानेका इतना शोक था, दो करोड़ पौंड अर्थात् प्रत्येक स्त्री, पुरुष तथा बालकके बदले साढ़े बाईस पौंड दिये गये । संवत् १८९६ (१८३९ ई०)

से पहले ८ लाख दास मुक्त कर दिये गये। लोगोंको भय था कि कहीं विद्रोह न हो जाय। परन्तु विल्बरफोर्स आदि व्यक्तियोंके परिश्रमसे लोगोंके विचार बदल चुके थे। कहते हैं कि दासों-के स्वामियोंने गिरजाघरोंमें अपने दासोंसे समानताका व्यव-हार किया और बडे आदरसे उनका स्वागत किया।

दास-मोचनका प्रभाव आरम्भमें पश्चिमी द्वीपसमूहों-की आर्थिक दशापर बुरा पडा। मुक्त हुए दास, जिनसे पहले सदैव कोडा मारकर काम लिया जाता था, छूटते ही आलसी हो गये और काम कम होने लगा। इन द्वीपोंकी गन्नोंकी खेती दासमोचनके पश्चात् सात वर्षोंमें एक तिहाई घट गयी। इसके अतिरिक्त, चीन और भारतवर्षसे कुली लोग भेजे जाने लगे परन्तु इतनेमें फ्रास तथा यूरोपके अन्य देशोंमें चुकन्दरकी शक्कर बननी आरम्भ हो गयी, अतएव पश्चिमी द्वीपसमूहके शक्करके व्यापारकी आजतक भी वृद्धि नहीं हो सकी।

ग्रेके मन्त्रित्वका दूसरा प्रसिद्ध काम दीनपालक-नियमों-का सुधार * हुआ। संवत् १८३६ (१७८२ ई०) में निश्चित हुआ कि प्रत्येक 'धार्मिक' प्रान्त † के बेकार मनुष्योंको उनके घरके निकट काम देना चाहिये और यदि इस कामसे उपार्जन किया हुआ धन उनकी जीविकाके लिए पर्य्याप्त न हो तो शेष आवश्यक धन उस प्रान्तके फण्डसे देना चाहिये। संवत् १८५२ (१७६५ ई०) में यह सहायता प्रत्येक निर्धनको उसकी आवश्य-कतानुसार मिलने लगी। था तो यह परोपकारका कार्य्य, पर इसका परिणाम बुरा निकला। लोग काम करनेमें आलस्य करने लगे। कृषक मजदूरोंको कम वेतन देने लगे क्योंकि शेष जीविका धार्मिक प्रान्तसे अवश्य ही मिलती थी और चूंकि

* Reform of the Poor Laws. † Parish

जीविका व्यक्तिगत थी, अत जिसके अधिक बालक होते थे उसे अधिक आय होती थी। इससे बाल विवाह आदि कुरीतियाँ बढने लगीं। इस अनुचित दानके कारण धार्मिक प्रान्तोंका दिवाला निकलने लगा। सवत् १८५२ (१७९५ ई०) में दीन-पालनका व्यय २५ लाख पौण्ड था। सवत् १८७२ (१८१५ ई०) में ५४ लाख और सवत् १८८९ (१८३२ ई०) में ७० लाख हो गया। सवत् १८९१ (१८३४ ई०) में लार्ड ग्रेके परिश्रमसे दीन पालक नियमोंमें सुधार हो गया। यह निश्चित हुआ कि केवल अतिवृद्ध तथा रोगियोंको ही सहायता मिला करे। बेकार लोगोंको काम दिया जाय और उसीके अनुसार वे वेतन पाया करें। इसका यह परिणाम हुआ कि स० १८९३ (१८३६ ई०) में दीनपालनका व्यय केवल ४७ लाख रह गया।

लार्ड ग्रेके मन्त्रित्वमें विदेश-मन्त्री पामर्स्टनके प्रभावसे यूरोपके अन्य देशोंमें भी उदारदलका प्राबल्य हो गया। बेल्जियम जो सवत् १८७२ (१८१५ ई०) से डचके अधीन था, एक पृथक् राज्य कर दिया गया और चतुर्थ जार्जकी मृत-पुत्री शार्लटका पति लीओपोल्ड वहाँका राजा नियत हुआ। स्पेन-नरेश सप्तम फ्रेडरिकने भी उदारदलका पक्ष करके अपने भाई डोन कार्लसके स्थानमें अपनी पुत्री इजाबिलाको अपनी गद्दी दी। पुर्तगालमें भी प्रजाका पक्ष ही सर्वोपरि रहा और उसीके इच्छानुकूल वहाकी गद्दी महारानी मेरियाको मिली।

श्रावण १८९१ (जुलाई १८३४ ई०) में आयर्लैंडके दशांशीय कर (Tithe टाइथ) के सम्बधमें झगडा हुआ और लार्ड ग्रेने पद-त्याग किया। अब मेलबर्न महामन्त्री हुआ। यह मन्त्रित्व सवत् १८९८ (१८४१ ई०) तक रहा जिसकी केवल तीन बातें ही उल्लेखनीय हैं —

पहली बात यह है कि संवत् १८९४ (१८३७ ई०) में चतुर्थ विलियमकी मृत्युपर उसकी भतीजी विक्टोरिया गद्दीपर बैठी जिसके सदाचरण, मृदु स्वभाव तथा उच्च विचारोंने समस्त प्रजाको सन्तुष्ट कर दिया। राज्याभिषेकके समय विक्टोरिया केवल १८ वर्षकी ही थी, परतु उसके कार्य्य अनुभवी पुरुषोंके समान हुआ करते थे। संवत् १८९७ (१८४० ई०) में उसने सैक्सकोबर्ग और गोथाके राजकुमार एल्बर्टसे विवाह किया। इसने अपनी भार्य्याको देशके शासनमें बहुत सहायता दी।

यहाँ एक बात बता देना अत्यावश्यक है। वह यह कि प्रथम जार्जके समयसे हैनोवरका राज्य भी इंग्लैण्ड-नरेशके ही अधीन था, अतः इंग्लैण्डको भी विदेशीय झगडोंमें फँसना पडता था। वहाँके नियमानुसार राज्य किसी स्त्रीको नहीं मिल सकता था, अत संवत् १८९४ (१८३७ ई०) में हैनोवर इंग्लैण्डसे अलग हो गया और तृतीय जार्जका पाँचवाँ लडका अर्नेस्ट ड्यूक आफ कम्बर्लैण्ड वहाँका राजा हुआ।

दूसरी प्रसिद्ध बात आयर्लैंडका दशांशीय-कर है। आयर्लैण्डकी प्रजा कैथोलिक है, परन्तु प्रोटेस्टेण्ट पादरियोंके व्ययके लिए उसको भी दशांशीय कर देना पडता था। ओकानेलने कैथोलिकोद्धारके पश्चात्से ही इसके विरुद्ध आन्दोलन करना आरम्भ कर दिया था। लार्ड ग्रेने संवत् १८९१ (१७३४ ई०) में इस करको हटा देनेका प्रस्ताव किया, परन्तु पार्लमेण्टने उसे सहायता न दी। ओकानेल बराबर अपना प्रस्ताव करता रहा। उसकी नीति यह थी कि जब टोरी लोग व्हिगोंको दबाते तब वह व्हिगोंका साथ देता था, क्योंकि टोरी लोगोंसे आयर्लैंडवालोंको किसी सुधारकी

आशा न हो सकती थी। परन्तु साधारण विषयोंमें ओकानेल और उसके अनुयायी मेलबर्नका विरोध ही करते थे। अन्तमें मेलबर्नने आयर्लैंडकी कैथोलिक प्रजाको दशांशीय कर देनेसे मुक्त कर दिया। जमीन्दार लोग यह कर देते रहे, परन्तु वे लोग प्रोटेस्टेण्ट थे, अत उनका कर देना आवश्यक था।

इनसे भी प्रसिद्ध बात अधिकार आन्दोलनकी थी जिसे 'जनताका अधिकारपत्र' या पीपल्स चार्टर कहते थे। मजदूर लोग समझते थे कि नैतिक सुधार होते ही उनको अच्छा खाना, अच्छे कपडे, और अच्छा मकान मिलने लगेगा और आन्दोलनके समय उन्हें अनेक प्रकारकी आशाएँ देकर उनसे सहायता ली गयी थी परन्तु जब नैतिक सुधार विधान पास हो गया और उनको पहलेका सा ही कष्ट रहा, तो वे निराश हो गये और उन्होंने छ अधिकार माँगने आरभ किये —

[१] २१ वर्ष या इससे अधिक आयुके प्रत्येक पुरुषको निर्वाचनमें सम्मति देनेका अधिकार दिया जाय।

[२] सम्मति कागजके टिकटोंपर छिपा कर दी जाय जिससे किसीको यह न मालूम हो सके कि कौन किसके लिए सम्मति देता है और किसीपर दबाव भी न डाला जा सके।

[३] पार्लमेण्टका निर्वाचन सात वर्षके स्थानमें प्रतिवर्ष हुआ करे।

[४] पार्लमेण्टके सभ्योंको वेतन मिला करे जिससे निर्धन लोग भी सभ्य हो सकें।

[५] प्रत्येक पुरुष चाहे उसके पास नियत जायदाद हो या न हो, पार्लमेण्टका सभ्य हो सके।

[६] निर्वाचनके प्रान्त जनसख्याके अनुसार बराबर बराबर होने चाहिये।

पहली बात यह है कि संवत् १८९४ (१८३७ ई०) में चतुर्थ विलियमकी मृत्युपर उसकी भतीजी विक्टोरिया गद्दीपर बैठी जिसके सदाचरण, मृदु स्वभाव तथा उच्च विचारोंने समस्त प्रजाको सन्तुष्ट कर दिया। राज्याभिषेकके समय विक्टोरिया केवल १८ वर्षकी ही थी, परंतु उसके कार्य्य अनुभवी पुरुषोंके समान हुआ करते थे। संवत् १८९७ (१८४० ई०) में उसने सैक्सकोवर्ग और गोथाके राजकुमार एल्बर्टसे विवाह किया। इसने अपनी भार्य्याको देशके शासनमें बहुत सहायता दी।

यहाँ एक बात बता देना अत्यावश्यक है। वह यह कि प्रथम जार्जके समयसे हैनोवरका राज्य भी इङ्गलैण्ड-नरेशके ही अधीन था, अतः इङ्गलैण्डको भी विदेशीय झगडोंमें फँसना पडता था। वहाँके नियमानुसार राज्य किसी स्त्रीको नहीं मिल सकता था, अत संवत् १८९४ (१८३७ ई०) में हैनोवर इङ्गलैण्डसे अलग हो गया और तृतीय जार्जका पाँचवाँ लडका अर्नेस्ट ड्यूक आफ कम्बर्लैण्ड वहाँका राजा हुआ।

दूसरी प्रसिद्ध बात आयर्लैंडका दशांशीय-कर है। आयर्लैण्डकी प्रजा कैथोलिक है, परन्तु प्रोटेस्टेण्ट पादरियोंके व्ययके लिए उसको भी दशांशीय कर देना पडता था। ओ कानेलने कैथोलिकोद्धारके पश्चात्से ही इसके विरुद्ध आन्दोलन करना आरम्भ कर दिया था। लार्ड ग्रेने संवत् १८९१ (१७३४ ई०) में इस करको हटा देनेका प्रस्ताव किया, परन्तु पार्लमेण्टने उसे सहायता न दी। ओकानेल बराबर अपना प्रस्ताव करता रहा। उसकी नीति यह थी कि जब टोरी लोग ह्विगोंको दबाते तब वह ह्विगोंका साथ देता था, क्योंकि टोरी लोगोंसे आयर्लैंडवालोंको किसी सुधारकी

आशा न हो सकती थी। परन्तु साधारण विषयोंमें ओकानेल और उसके अनुयायी मेल्बर्नका विरोध ही करते थे। अन्तमें मेल्बर्नने आयर्लैंडकी कैथोलिक प्रजाको दशांशीय कर देनेसे मुक्त कर दिया। जमीन्दार लोग यह कर देते रहे, परन्तु वे लोग प्रोटेस्टेण्ट थे, अत उनका कर देना आवश्यक था।

इनसे भी प्रसिद्ध बात अधिकार आन्दोलनकी थी जिसे 'जनताका अधिकारपत्र' या पीपल्स चार्टर कहते थे। मज़दूर लोग समझते थे कि नैतिक-सुधार होते ही उनको अच्छा खाना, अच्छे कपडे, और अच्छा मकान मिलने लगेगा और आन्दोलनके समय उन्हें अनेक प्रकारकी आशाएँ देकर उनसे सहायता ली गयी थी परन्तु जब नैतिक सुधार विधान पास हो गया और उनको पहलेका सा ही कष्ट रहा, तो वे निराश हो गये और उन्होंने छ अधिकार माँगने आरम्भ किये —

[१] २१ वर्ष या इससे अधिक आयुके प्रत्येक पुरुषको निर्वाचनमें सम्मति देनेका अधिकार दिया जाय।

[२] सम्मति कागजके टिकटोंपर छिपा कर दी जाय जिससे किसीको यह न मालूम हो सके कि कौन किसके लिए सम्मति देता है और किसीपर दबाव भी न डाला जा सके।

[३] पार्लमेण्टका निर्वाचन सात वर्षके स्थानमें प्रतिवर्ष हुआ करे।

[४] पार्लमेण्टके सभ्योंको वेतन मिला करे जिससे निर्धन लोग भी सभ्य हो सकें।

[५] प्रत्येक पुरुष चाहे उसके पास नियत जायदाद हो या न हो, पार्लमेण्टका सभ्य हो सके।

[६] निर्वाचनके प्रान्त जनसंख्याके अनुसार बराबर बराबर होने चाहिये।

आन्दोलन करनेवालोंको इस समय तो सफलता न हुई, परन्तु धीरे धीरे तीसरे अधिकारको छोड़कर अन्य सब अधिकार प्राप्त हो गये । अब पार्लमेण्टका निर्वाचन भी प्रति पाँचवें वर्ष होता है ।

संवत् १८६८ भाद्र [अगस्त १८४१ ई०] में मेल्वर्नका मंत्रित्व समाप्त हो गया और सर रावर्ट पीलके टोरी मन्त्रित्वका आरम्भ हुआ । टोरी लोग अपनेको अब कन्सर्वेटिवके नये नामसे पुकारने लगे थे । उनका उद्देश्य प्राचीन टोरियोंकी भाँति आँख मीचकर प्रत्येक परिवर्त्तनका विरोध करना नहीं था । यद्यपि वे अधिकार पत्र या आयर्लैण्ड सम्बन्धी महान् परिवर्त्तनोंका प्रतिरोध करते थे तथापि नैतिक तथा सामाजिक सुधारके छोटे छोटे नियमोंके अनुकूल थे । पीलकी कैबीनेटमें आधिक्य उन्हीं पुरुषोंका था जो संवत् १८८५ [१८२८ ई०] में कैनिंगके साथ कार्य्य कर चुके थे ।

पीलके मन्त्रित्वमें ओकानेलका स्वराज्य सम्बन्धी आन्दोलन निष्फल हो गया था क्योंकि इस समय टोरी लोगोंका पक्ष अधिक हो गया था । ओकानेल कभी शांति भङ्ग करना नहीं चाहता था । उसका आन्दोलन नियमानुसार हुआ करता था । जब उसके अनुयायियोंने देखा कि इतने दिन कोशिश करनेसे कुछ भी फल न हुआ तो निराश होकर वे चुप बैठ गये और जो लोग अधिक उग्र विचारके थे उन्होंने आयर्लैण्डमें स्वतंत्र प्रजातंत्र राज्य स्थापित करनेका आन्दोलन आरम्भ किया ।

पीलने कला कौशलवालोंके लिए कई उत्तम नियम पास किये । संवत् १८९९ [१८४२ ई०] में "खान सम्बन्धी विधान" (माइन्स एक्ट) पास हुआ जिसके अनुसार स्त्रियों तथा

बच्चोंके लिए भूमिके नीचे कार्य्य करनेका निषेध हो गया। सवत् १६०१ [१८४४ ई०] में "कारखानोंका कानून" (फैक्टरी ऐक्ट) पास हुआ जिससे बच्चोंके लिए कारखानोंमें कार्य्य करनेका समय बाँध दिया गया और इनकी स्वास्थ्य विषयक बातोंके निरीक्षणके लिए निरीक्षक नियत हो गये।

दैनिक आवश्यकताकी ७५० वस्तुओं अर्थात् पशु, अण्डे, सन, लकडी आदिपर चुगी टूट गयी और इस प्रकारसे जो आय कम हो गयी उसकी पूर्त्ति आय कर (इन्कम-टैक्स) द्वारा की गयी। पीलने प्रतिज्ञा की कि थोडे दिनोंमें आय कर भी तोड दिया जायगा, परन्तु पीलके उत्तराधिकारियोंने इस-पर कुछ ध्यान नहीं दिया।

भारतवर्षमें मेल्वर्नके समयसे ही अफगान-युद्ध हो रहा था। पीलके समयमें यह शान्तिसे समाप्त हो गया और अंग्रेजों को अधिक हानि न उठानी पडी। इसी समयमें ब्रिटिश सेनाने सिक्खोंपर विजय पायी।

फ्रांसवालोंसे दो झगडे हो गये। एक तो उन्होंने ब्रिटिश राज प्रतिनिधि (पल्वी) को जो टाहिटीमें रहता था काले-पानी भेज दिया था। इंग्लैंडका यह बहुत बडा अपमान था, इसलिए जब फ्रांसवालोंको युद्धकी धमकी दी गयी तो उन्होंने उसे मुक्त कर दिया और प्रतीकारके रूपमें कुछ धन भी अर्पण किया। दूसरे, स्पेनपर अधिकार प्राप्त करनेके उद्देशसे फ्रांस-नरेशने अपने पुत्रका विवाह स्पेनकी रानी इजाबिलासे करना चाहा। जब इंग्लैण्डने विरोध किया तो उसने और चाल चली। अपने पुत्रका विवाह तो इजाबिलाकी बहिनसे कर दिया, जो इजबिलाके पीछे गद्दीपर बैठनेको थी, और इजा-बिलाका विवाह एक दुर्बल पुरुष डौन फ्रांसिस्कोसे करा दिया

जिससे फ्रांसका राजकुमार ही वास्तविक प्रभाव डालता रहे। परन्तु यह चाल पूरी न हुई। संवत् १६०५ [१८४८ ई०] में फ्रांस नरेश स्वयं ही गद्दीसे उतार दिया गया। फिर भला वह अपने पुत्रकी क्या सहायता करता ?

संवत् १६०२ और १६०३ [१८४५ और १८४६ ई०] में आयर्लैंण्डमें आलुओंका अकाल पड़ गया। वहाँके लोग प्रायः इसी भोजनपर जीवन व्यतीत करते थे। गवर्नमेण्टने सहायता की, परन्तु सहायता आरम्भ होनेसे पूर्व ही सहस्रों मनुष्य भूखके मारे मर गये। यह विपत्ति देखकर पीलको निश्चय हो गया कि जबतक बाहरसे आनेवाले अन्नपरसे चुंगी न हटायी जायगी, अन्न सस्ता न होगा और दुर्भिक्षके समय सहस्रों मनुष्य इसी प्रकार मरा करेंगे, अतः उसने संवत् १६०३ [१८४६ ई०] में एक प्रस्ताव पेश किया कि संवत् १६०६ [१८४९ ई०] से अन्नपर बिलकुल चुंगी उठा दी जाय और संवत् १६०३ से १६०६ [१८४६ से १८४९ ई०] अर्थात् तीन वर्षतक थोड़ी चुंगी रहे। ह्विग् लोग तो इसके अनुकूल ही थे। कोब्डन* और ब्राइट† आदि कई महानुभाव इस चुंगीका विरोध कर रहे थे और उन्होंने बहुत दिनोंसे अन्न-कर विरोधिनी सभा (Anti-Corn-law league एण्टी कार्नला लीग) खोल रखी थी। जब कन्सर्वेटिव पार्टीके पीलने भी उन लोगोंका साथ दिया और अन्न-कर उठा देनेका प्रस्ताव किया तो लार्ड जार्ज वैण्टिङ्क और डिजरेलीने पीलपर विश्वासघातका दोष लगाया और उसके विरुद्ध हो गये। उनका कथन था कि अन्न कर उठा देनेसे जमींदारोंको बहुत बड़ी हानि होगी। उनका अन्न सस्ता बिकने लगेगा और उन

* Cobden † Bright

का शीघ्र दिवाला निकल जायगा। ह्विगोंकी सहायतासे २ ज्येष्ठ स० १९०३ (१६ मई १८४६ ई०) को अन्न करका नियम उठ गया परन्तु उस दिनसे कन्सर्वेटिव दलके दो टुकडे हो गये और ३० वर्षतक कोई कन्सर्वेटिव नेता मन्त्रीका पद न पासका। पीलने पद त्याग दिया और रसिल महामन्त्री हुआ। यह वही रसिल था जिसने सवत् १८८९ (१८३२ ई०) में नैतिक सुधारका प्रस्ताव पास कराया था।

सवत् १९०५ [१८४८ ई०] में उपर्युक्त छ अधिकार मॉगनेवालोंका आन्दोलन बढ रहा था। इसके प्रथम दो बार उन लोगोंने उपर्युक्त अधिकारोंको स्वीकार करानेके लिए पार्लमेण्टसे प्रार्थना की थी पर कोई सुनवाई नहीं हुई। किन्तु सवत् १९०४ (१८४७ ई०) की महगी तथा फ्रासकी सवत् १९०५ (१८४८ ई०) की क्रान्तिसे उनमें उत्साह हुआ और उन्होंने कई सहस्र व्यक्तियोंको तैयार करके एक प्रार्थना पत्र पार्लमेण्टके पास ले जाना चाहा। कुछका विचार था कि यदि इस बार भी सफलता न हो तो बल प्रयोग किया जाय। गवर्नमेण्ट घबडायी और वेलिंगटनके नेतृत्वमें दो लाख विशेष कान्स्टेबल तैयार हुए। १० अप्रैलको प्रार्थना पत्र लेकर जानेका विचार था पर उसी दिन वर्षा प्रारम्भ हो गयी, इससे उत्साह जाता रहा। उनका नेता ओकानेर प्रार्थना पत्र लेकर पार्लमेण्टके सम्मुख उपस्थित हुआ। कहा जाता था कि उस पर ५० लाख आदमियोंके हस्ताक्षर थे, पर वास्तवमें केवल २० लाख हस्ताक्षर निकले जिनमें बहुतसे फर्जी थे। अन्तमें आन्दोलन दब गया।

आयर्लेण्डके ओब्रायन (O'Brion) नामक एक नेताने, जो ओकानेलके शान्ति युक्त आन्दोलनको व्यर्थ समझता था,

२००० सेना एकत्र की। परन्तु केवल ५० कान्स्टेबलोंने ही इन सबको श्रावण १६०५ (जुलाई १८४८) में भगा दिया। नेताओंको इस अपराधमें काला पानी हुआ। परन्तु नियत समयसे पहले ही वे छोड दिये गये।

संवत् १६०५ (१८४८ ई०) के ये दो विद्रोह इंग्लैण्डमें तो सरलतया ही समाप्त हो गये, परन्तु यूरोपके लिए यह वर्ष एक विशेष आपत्तिका काल था। फ्रांस और जर्मनीकी प्रजा स्वतंत्र होना चाहती थी। १२ फाल्गुन (२४ फर्वरी) को पेरिसमें विद्रोह हुआ। फ्रांस नरेश लुई फिलिप राज्य छोड कर भाग निकला और मिस्टर स्मिथका नाम रखकर साधारण मनुष्यके वेशमें इग्लैण्ड जा पहुंचा। नेपोलियन बोनापार्टके भतीजे लुई नेपोलियनके आधिपत्यमें वहाँ प्रजापालित राज्य स्थापित हो गया।

पोप एक पथिकके वेशमें रोमसे भाग गया। प्रशा नरेश पार्लमेण्ट स्थापित करनेके लिए वाध्य किया गया। हङ्गरीके लोगोंने आस्ट्रियासे स्वतन्त्र होनेके लिए विद्रोह किया। आस्ट्रियाका सम्राट् और नेपल्सनरेश अपनी प्रजाके हाथसे सुरक्षित रहनेके लिए राजधानीसे भाग गये। सारांश यह है कि समस्त यूरोपमें नैतिक भूकम्प आ गया, राजसिंहासन हिलने और राजमुकुट उछलने लगे। यह प्रतीत होता था कि समस्त ससारमें प्रजापालित राज्य स्थापित हो जायगा। अंग्रेजोंकी सहानुभूति इटली तथा हङ्गरीके लोगोंकी ओर थी परन्तु विदेश मन्त्री पामर्स्टनने युद्ध छेडनेकी अपेक्षा नैतिक हस्तक्षेप ही उत्तम समझा। यद्यपि स० १६०६ (१८४६ ई०) में इटली और हङ्गरीके लोगोंको आस्ट्रिया तथा रूसके शस्त्रोंने दलित कर दिया तथापि १५ वर्षके भीतर इनको स्वतंत्रता प्राप्त हो गयी।

इंग्लैण्डकी आर्थिक स्थिति शनै शनै. उन्नत हो रही थी। संवत् १९०८ (१८५१ ई०) में लन्दन नगरमें अन्तर्जातीय प्रदर्शिनी (इण्टरनैशनल एग्जीबीशन) हुई और आशा थी कि अब यूरोपकी जातियाँ शान्तिसे रहेंगी। परन्तु उसी वर्षके अन्तिम मासमें लुई नेपोलियन निरङ्कुश शासक हो गया और अगले वर्ष उसने तृतीय नेपोलियनके नामसे सम्राट् होनेकी घोषणा कर दी।

लार्ड पामर्स्टनने महामन्त्रीकी आज्ञाके बिना नैपोलियनका सम्राट् होना स्वीकार कर लिया, अत वह पदच्युत कर दिया गया। इसके पश्चात् रसिलको भी पदत्याग करना पडा। संवत् १९०८ (१८५१ ई०) में वैलिंगटनकी भी मृत्यु हो गयी। यह मार्लबरोके पश्चात् सबसे बडा सैनिक था। लोगोंने इसकी मृत्युपर बडा शोक किया और बडे आदर तथा सम्मानके साथ इसका अन्त्येष्टि-संस्कार किया।

तीसरा अध्याय।

क्रीमियन युद्धसे पामर्स्टनकी मृत्युतक।

संवत् १९११-१९२२ (१८५४-१८६५ ई०)



संवत् १९११ (१८५४ ई०) में इंग्लैण्डके दोनों दल दो दो भागोंमें विभक्त हो गये थे। कन्सर्वेटिव लोगोंमें तो अन्न-कर-विरोधके समयसे दो दल हो गये थे। जो मुक्तद्वार वाणिज्यके पक्षपाती तथा पीलके अनुयायी थे, वे पीलाइट (Peelite) कहलाते थे और इनके विरोधी

संरक्षण चाहनेवाले (प्रोटेक्शनिस्ट) कहलाते थे। पामर्स्टनके समयसे लिबरल दलके भी दो भाग हो गये—एक पामर्स्टनके अनुयायी, दूसरे रसिलके। रसिलके पश्चात् लार्ड दर्बी कन्सर्वेटिव प्रधान मंत्री हुआ, परन्तु मन्त्रित्व बहुत जल्द बदल गया। अब जौन रसिल और पामर्स्टनने फिर मिल कर काम करना आरम्भ किया और लार्ड एबर्डीनको प्रधानमंत्री बनाया। इस मन्त्रित्वका एक प्रसिद्ध सभ्य ग्लैडस्टन था जो अर्थ विभागका मंत्री * कहलाता था। इस समयकी मुख्य घटना क्रीमियाका युद्ध है।

जरुसलेमके तीर्थस्थानोंके विषयमें तुर्क और रुसियोंमें बहुत दिनोंसे झगडा चला आता था। रूसनरेश जार ग्रीक चर्चका अधिष्ठाता था, अत वह उन ईसाइयोंकी जो ग्रीक चर्चसे सम्बन्ध रखते थे, रक्षा करना भी अपना कर्त्तव्य समझता था। जरुसलेममें ऐसे ही ईसाई बहुत थे। जारका मुख्य उद्देश्य यह था कि हस्तक्षेप करनेका बहाना पाकर अपने राज्यमें वृद्धि कर सके। एकाएक बिना युद्धकी घोषणा किये हुए जारने अपनी सेना प्रूथ नदी पार करके मोल्डेवियामें भेज दी, इंग्लैण्ड और फ्रांसने तुर्क लोगोंका साथ दिया और उनकी सहायताके लिए पोत तथा सेना भेजी। पोत काले सागर तथा बाल्टिक सागरमें भेजे गये और सेना डैन्यूब नदीपर तथा क्रीमिया प्रायद्वीपमें भेजी गयी। आल्मा नदीके तीरपर बडा भारी संग्राम हुआ। रूसवालोंकी ५० हजार सेना नदीके एक किनारे एक ऊंचे स्थलपर खडी हुई थी। अंग्रेज और फ्रांसीसी ५१ हजारकी संख्यामें नदीके दूसरे किनारेपर थे। लार्ड रैग्लन सेनाध्यक्ष था। गोलोंकी बौछारमें ही इन लोगोंने नदी

* Financial Minister or Chancellor of the Exchequer

पार की और शीघ्र रूसियोंसे जा भिड़े। थोड़ी ही देरमें रूसी भाग गये और उनके आठ हज़ार मनुष्य खेत रहे।

अब संयुक्त सेना सेवास्टोपोल * के किलेके दक्षिणकी ओर जा डटी। बलाक्लावा † का पोतस्थल (बन्दरगाह) यहाँसे छ मील था। यहाँ अंग्रेजोंको बारूद आदि युद्धकी सामग्री उपस्थित थी। रूसियोंने इसपर आक्रमण किया और चूंकि सेना बहुत परिमित थी अतः उसको पीछे हटा दिया। परन्तु किसीकी चूकसे अंग्रेजोंके एक दस्तेने जिसमें केवल ६०० सैनिक थे रूसियोंपर धावा बोल दिया और वे तोपोंके मुँहमें ही घुसे चले गये। इस अपूर्व वीरताके कारण उन्होंने रण जीत लिया। इन छ सौ वीर पुरुषोंमेंसे केवल २०० जीवित बचे।

इसके पश्चात् इङ्करमानकी लड़ाई हुई जिसमें आठ हजार अंग्रेजों ओर छ हजार फ्रांसीसियोंने पचास हजार रूसियोंको हरा दिया। शत्रुके आठ हजार सिपाही मारे गये।

१६ फाल्गुन संवत् १६११ (२ मार्च १८५५) को ज़ार निकोलस मर गया और उसका लड़का द्वितीय अलेक्ज़ैण्डर गद्दी पर बैठा। संयुक्त सेनाएँ ३४६ दिनोंसे सेवास्टोपोलको घेरे हुए पड़ी थीं। अन्तमें २३ भाद्र १६१२ (८ सितम्बर १८५५ ई०) को रूसियोंने अपना समस्त सामान तथा मकान आदि जला कर नगर ख़ाली कर दिया। अभी उत्तरकी ओर रूसी सेना बहुत पड़ी थी। उसके निकालनेके लिए एक और युद्धकी आवश्यकता थी। परन्तु फ्रांस-नरेश नेपोलियन लड़ना नहीं चाहता था, इसलिए चैत्र संवत् १६१२ (मार्च १८५६ ई०) में पेरिसकी सन्धिसे युद्ध समाप्त हो गया। रूसने अपने पोत कालेसागरसे हटानेकी प्रतिज्ञा कर ली और डैन्यूब नदीके

* Sebastopol † Balaklava.

तीरका एक छोटासा भाग दे दिया। तुर्कीके सुल्तानने प्रतिज्ञा की कि हम अपनी ईसाई प्रजासे अच्छा व्यवहार करेंगे। इंग्लैण्डका इस युद्धमें तीन करोड तीन लाख पौण्ड खर्च हुआ और बीस हजार अंग्रेजी सिपाही मारे गये।

क्रीमियाके युद्धका अन्त अंग्रेजोंके लिए बहुत लाभदायक नहीं हुआ परन्तु रूसको सीमाके भीतर रखनेके लिए इसकी आवश्यकता थी। चैत्र संवत् १९१३ (मार्च १८५७ ई०) में फारसके शाह नासिरुद्दीनने रूसके कहनेसे हिरात ले लिया था और अफगानिस्तानपर अधिकार जमाना चाहा था। उसके दमनके लिए ईरानकी खाडीमें एक सेना भेजी गयी जिसने बूशहरके पोतस्थलपर अधिकार कर लिया। शाहने सन्धि कर ली और हिरात छोड दिया।

ज्येष्ठ संवत् १९१४ (मई १८५७ ई०) में भारतवर्षमें अंग्रेजी सरकारके प्रति विद्रोह हुआ जिसे 'सिपाही-विद्रोह' कहते हैं। यह विद्रोह मेरठसे आरम्भ हुआ और धीरे धीरे समस्त उत्तर भारतमें फैल गया। कोशिश यह थी कि अंग्रेजोंको भारतवर्षसे निकाल कर देशी राजाओंका संघटित शासन स्थापित किया जाय, परन्तु भारतके प्रान्तोंमें एकता न होनेसे यह प्रयत्न सफल न हुआ। वर्ष भरतक किसीका जीवन सुरक्षित न था। अन्तको बडी कठिनतासे अंग्रेजी सरकारने भारतीय सेनाओं-की ही सहायतासे कडा दमन किया और शान्ति स्थापित करनेमें सफलता प्राप्त की।

चीनमें संवत् १९१३ (१८५६ ई०) से ही झगडा हो रहा था। कैण्टनके शासकने एक अंग्रेजी जहाज पकड लिया और बडा आग्रह करनेपर भी न छोडा अतः लडाई छिड गयी। संवत् १९१४ (१८५७ ई०) में एक सेना चीनको भेजी गयी

परन्तु भारतीय विद्रोह प्रारम्भ होनेपर दमनके लिए वह वापस बुला ली गयी। संवत् १९१६ (१८५९ ई०) में फिर चीनको सेना भेजी गयी। पेकिन ले लिया गया और चीनके सम्राट्का ग्रीष्मप्रासाद जला दिया गया। कार्त्तिक संवत् १९१७ (अक्टूबर १८६० ई०) में टीनसिंग * की सन्धि हो गयी और चीन-नरेशको ८० लाख रुपया दण्ड देना पड़ा।

तृतीय नेपोलियन (फ्रांसनरेश) को मारनेके उद्देश्यसे माघ १९१४ (जनवरी १८५८ ई०) में किसीने उसपर पेरिस-में बम्ब छोड़ दिया। उसकी जान तो बच गयी परन्तु अन्य दस मनुष्य मारे गये और सौ घायल हुए। पीछे यह ज्ञात हुआ कि औरसिनी † नामक एक इटालियनने यह बम्ब लन्दनमें बनाया था। फ्रांस-नरेश बड़ा क्रुद्ध हुआ। उसने पामर्स्टनको लिखा कि इंग्लैण्ड इसका उत्तरदाता है। फ्रांसके कुछ पदाधिकारियोंने सम्राट्को अभिनन्दनपत्र देते हुए यह भी कहा कि यदि आप हमको आज्ञा दें तो हम उस द्रोहस्थानको नष्ट कर डालें जहाँ ऐसे घातक यन्त्र रचे गये हैं। अंग्रेजोंने समझा कि नेपोलियन भारतीय विद्रोहका लाभ उठाना चाहता है, अत. उनको बहुत क्रोध आया और वे फ्रांसका सामना करने-को उद्यत हो गये। पामर्स्टनके विचार भिन्न ही थे। वह चाहता था कि लन्दनको अराजकताका केन्द्र होनेसे बचाना चाहिये, अत उसने पार्लमेण्टमें एक प्रस्ताव पेश किया कि राजनीतिक हत्या करनेके लिए षड्यन्त्र रचनेवालोंको जीवन पर्य्यन्त कालापानी होना चाहिये, चाहे वह हत्या किसी अन्य ही देश-में क्यों न की जानेवाली हो। परन्तु अंग्रेज लोग उस समय फ्रांसीसियोंसे इतने क्रुद्ध हो रहे थे कि पामर्स्टनके दलके

* Tiensing　　† Orsini

लोग भी उसके विरुद्ध हो गये और प्रस्ताव पास न हुआ। इन्होंने कहा कि पामर्स्टन फ्रांसकी हां में हां मिलाना चाहता है। पामर्स्टनने अपना पक्ष निर्बल पाकर, फाल्गुन संवत् १६१४ (१६ फर्वरी १८५८ ई०) को पद-त्याग किया।

अब लार्ड दर्बी और डिजरेलीका संयुक्त कंसर्वेटिव मन्त्रित्व हुआ। इन्होंने भी एक नैतिक सुधार-प्रस्ताव पेश किया कि जिनके पास १० पौण्डके मूल्यका घर हो उनको सम्मतिका अधिकार मिलना चाहिये, और उन लोगों को भी जो किसी विश्वविद्यालयके स्नातक, वकील या पुरोहित हों या जिनका ६० पौण्ड (लगभग ६०० रुपया) बङ्कमें जमा हो, परन्तु यह प्रस्ताव गिर गया और मन्त्रित्वकी भी समाप्ति हो गयी। इसी मन्त्रित्वमें दो मुख्य कार्य्य और हुए—(१) भारतीय विद्रोहसे ज्ञात होता था कि ईस्ट इण्डिया कम्पनीका शासन दोष-युक्त है, इसलिए कम्पनी तोड दी गयी (२) गवर्मेण्टकी ओरसे कम्पनीके सभ्योंको रुपया दे दिया गया और भारतवर्षका शासन पार्लमेण्टके हाथमें आ गया। फ्रांसकी धमकी सुनकर अंग्रेजोंने स्वयंसेवकोंकी सेना स्थापित की। साल भरमें एक लाख अस्सी हजार ऐसे लोगोंने नाम लिखाया जो अपना ही व्यय करके सेना सम्बन्धी शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे और जो समय पडनेपर देशकी सेवा करनेके लिए उद्यत थे। आरम्भमें तो लोग इसके लाभोंपर सन्देह करते थे परन्तु इस समय इङ्गलैण्डमें स्वयंसेवकोंकी बहुत बडी और उपयोगी सेना उपस्थित है।

दर्बी डिजरेलीका मन्त्रित्व सालभर ही रहा। संवत् १६१६ (१८५६ ई०) में पामर्स्टन और उसके साथी फिर कैबीनेटमें आ गये। इस समय सार्डीनियाके राजा विक्टर इमैनुअलने इटलीको आस्ट्रियाके पंजेसे छुडानेके लिए युद्ध किया। फ्रांसने

इसमें सहायता दी। आस्ट्रियावाले मैगेएटा * तथा सौलफेरीनो † के युद्धमें पराजित हुए और लाम्वर्डीसे निकाल दिये गये। माडेना, टस्कनी आदि मध्य इटलीके शासक जो आस्ट्रियन वशके थे निकाल दिये गये और इन प्रान्तोंपर सार्डीनियाका अधिकार होगया। फ्रास नरेशने धोखा देकर आस्ट्रियासे सन्धि कर ली, जिसके अनुसार लाम्बार्डीका प्रान्त विक्टर इमैनुअलको मिला, और यह निश्चित हुआ कि पार्मा आदिके शासकोंका राज्य उनको वापस मिले और सब इटैलियन राज्योंका एक सघ स्थापित किया जाय, पोप जिसके सभापति बनाये जायँ। पर प्रजाने यह प्रबन्ध स्वीकार नहीं किया। वस्तुत फ्रांस नरेश यह नहीं चाहता था कि इटली सयुक्त होकर यूरोपके बड़े राज्योंमें गिना जाय। हॉ, इटलीवाले अपने लाभको समझते थे। जब उन्होंने देखा कि फ्रास-नरेश धोखा देकर अलग जा बैठा, तो उन्होंने स्वय हाथ पैर मारे और मध्य इटलीके समस्त राज्य सार्डीनियाके साथ मिल गये। इस प्रकार उत्तरी इटलीका एक राज्य स्थापित हुआ। नेपोलियनने फिर विक्टर इमैनुएलके साथ सन्धि की जिसके अनुसार उसने मध्य इटलीको सार्डीनियाके साथ मिलनेमें सहायता दी। सार्डीनियाने नेपोलियनको सवाय और नीसका प्रान्त दे दिया। इग्लैण्डके मन्त्री रसिलने भी इटलीवालोंको स्वतन्त्र होनेमें सहायता दी।

गैरीबाल्डीने नेपल्स और सिसिलीपर १००० स्वयसेवकोंको लेकर आक्रमण किया। वहॉकी प्रजाकी सहायतासे नेपल्सके राजाको निकाल कर इन प्रान्तोंको भी इटलीके सुपुर्द कर दिया और संयुक्त इटलीका एक राज्य स्थापित हो गया। विक्टर इमै-

* Magenta † Solferino

तुअल इटली-नरेश हुआ। केवल रोम और वेनिस अलग रहे, क्योंकि रोमको फ्रांसवालोंने और वेनिसको आस्ट्रियावालोंने दवा लिया था। इटलीकी स्वतन्त्रतामें सबसे बडा हाथ देश हितैषी गेरीवाल्डीका है जिसकी वीरता और स्वार्थत्यागने देश-को दासत्वसे मुक्त कर दिया। वस्तुत. ऐसे लोग मनुष्यमात्र-के सम्मानार्ह हैं जिनके योगसे उनकी मातृभूमि विदेशियोंके पददलनसे छूट जाती है। गेरीवाल्डी इसी प्रकारके मनुष्योंमेंसे था और स्वतन्त्रताप्रिय इग्लैण्डने उसका बडा सम्मान किया। जब सवत् १६१६ (१८६२ ई०) में गेरीवाल्डी ग्रेट ब्रिटेनमें आया तो बडे समारोहसे उसका स्वागत किया गया।

सवत् १६१६ और २० (१८६२ और १८६३ ई०) में पोलैण्ड-ने रूसके पजेसे छुटकारा पानेके लिए विद्रोह किया। लार्ड जौन रसिलने पोलेंडके पक्षमें कुछ हस्तक्षेप भी किया परन्तु रूसने कुछ न सुनी और पोलंड मुक्त न हो सका। इसी प्रकार प्रशा और आस्ट्रियाने डेन्मार्कको दवा कर श्लैस्विग* तथा हॉलस्टाइन † प्रान्त, जिनमें जर्मन जातिके लोग रहते हैं, उससे छीन लिये। इसके अतिरिक्त कुछ डेन्मार्कका भाग भी ले लिया। इंग्लैण्डने बहुत यत्न किया कि डेन्मार्क बच जाय, परन्तु कुछ न हो सका।

सवत् १६१८ के ज्येष्ठ मास (मई १८६१ ई०) में सयुक्त देश अमेरिकाकी उत्तरी और दक्षिणी रियासतोंके बीच युद्ध छिड गया। उत्तरी रियासतें संरक्षित व्यापार तथा दास-मोचनके पक्षमें थीं, क्योंकि इनकी जीविका अधिकतर कला-कौशल तथा व्यापारपर आश्रित थी। दक्षिणी रियासतें कृषि करती थीं, अत उनको कुलियोंकी आवश्यकता रहती

* Schleswig † Holstein

थी। इसलिए स्वतन्त्र व्यापार और दास दोनों ही उनको प्रिय थे। माघ संवत् १९१७ (जनवरी १८६१ ई०) में अब्राहम लिंकन (Abraham Lincoln) संयुक्त देशका प्रधान हुआ। लिंकन दास-मोचनके अनुकूल था। उत्तरी दलका प्राबल्य देख कर दक्षिणकी ११ रियासतोंने अपने पृथक् होनेकी घोषणा कर दी। पदाधिकारियोंने चाहा कि हम शस्त्रके बलसे इन्हें पृथक् न होने दें, अतः युद्ध छिड़ गया।

इंग्लैंडमें चावल, तमाखू तथा कपास दक्षिणी रियासतसे ही आया करती थी। भारतवर्ष और मिश्रकी कपास आना उस समयतक आरम्भ न हुआ था। जब दक्षिणी रियासतें घिर गयीं तो इंग्लैंडमें कपास आना बन्द हो गया और लङ्काशायरके जुलाहे भूखों मरने लगे। उनके समस्त कारखाने बन्द हो गये। छः लाख पौण्ड राज्यसे और २० लाख पौण्ड चन्देसे इकट्ठा करके लङ्काशायरवालोंको सहायता दी गयी। इस समय इंग्लैंडमें अमेरिकाकी इन रियासतोंके विषयमें भिन्न भिन्न मत थे। कोई कहता था कि उत्तरी रियासतोंको सहायता देनी चाहिए, क्योंकि वे दास-मोचनके पक्षपाती हैं। कोई कहता था कि प्रत्येक रियासतको पृथक् होनेका अधिकार है, अतः उत्तरी रियासतोंको शस्त्रके बलसे दक्षिणी रियासतोंको दबानेका अधिकार नहीं है। दक्षिणी रियासतोंके साथ पामर्स्टनकी सहानुभूति थी, परन्तु इंग्लैंड उदासीन ही रहा। उदासीन देशोंको यह अधिकार नहीं है कि वे जहाज बनाकर युद्ध करनेवालोंको भेज सकें। परन्तु संवत् १९१९-२० (१८६२-६३ ई०) में अल्बामा नामक जहाज लिवर्पूल पोतस्थलसे दक्षिणी रियासतोंके पास पहुँच गया और उसने दो वर्षतक उत्तरी रियासतोंके नाकमें दम कर दिया। इस अनुचित

कार्यके लिए इग्लैंडको वहुत दण्ड देना पडा। मेप मास (अप्रैल १८६५ ई०) में लडाई समाप्त हो गयी और दक्षिणी रियासतें अलग न हो सकीं। कार्त्तिक संवत् १६२२ (अक्तूवर १८६५ ई०) में पामर्स्टनकी मृत्यु हो गयी। इसके पश्चात् इग्लैंडका एक नया युग शुरू होता है जिसमें वाह्य नीतिकी अपेक्षा आन्तरिक नीतिका भाग अधिक है।

चौथा अध्याय ।

ग्लैडस्टन और डिजरेली ।

संवत् १६२२-१६४२ (१८६५–१८८५ ई०)

हम किसी अध्यायमें लिख चुके हैं कि प्रथम जार्जके समयसे राजाओंका हाथ शासनमें नाममात्रको ही रहा है। वस्तुत. जो कुछ कार्यावली आन्तरिक तथा वाह्य, ब्रिटिश गवर्नमेंटमें दिखाई पडती है वह महामंत्रियोंकी है। ज्यों ज्यों समय वढ़ता गया, ये महा मन्त्री भी अधिकतर प्रजाके अधीन होते गये। अर्थात् जब जब प्रजासे चुने हुए प्रतिनिधियोंको अधिक सख्या इनके पक्षमें रही, तब तब ये अपने प्रस्तावोंको पास करा सके। ज्यों ही इनका पक्ष गिरा, त्यों ही इनको पदसे हट जाना पडा और इनका स्थान उन पुरुषोंको मिल गया जिनके दलका पार्लमेंटमें बहुपक्ष था।

पामर्स्टनकी मृत्युके पश्चात् वीस वर्षतक ब्रिटिश राज्यकी वागडोर वारी वारीसे ग्लैडस्टन और डिजरेली, प्राय. इन्हीं दो पुरुषोंके हाथमें रही। संवत् १६२२ (१८६५ ई०) में

पामर्स्टनके पश्चात् लार्ड रसिल प्रधानमंत्री हुआ, परन्तु हाउस आव कामन्स ग्लैडस्टनके ही हाथमें था। यह सात वर्षसे अर्थ-विभागका मंत्री था। इस समय इंग्लैण्डमें मुक्तद्वार वाणिज्यका बडा जोर था। अन्न आदि परसे चुंगी उठा दी गयी थी। संवत् १६१७ (१८६० ई०) में फ्रांसके साथ एक व्यापारिक संधि हुई थी जिसके अनुसार चुंगी कम कर दी गयी थी। इस कारण गवर्नमेण्टकी आय कम हो गयी थी। ग्लैडस्टनके सामने यह प्रश्न था कि आर्थिक दशा किस प्रकार सुधारी जाय। इस समय रुईकी आमद अमेरिकासे बन्द हो जानेके कारण लङ्काशायरकी आर्थिक स्थिति भी बडी शोचनीय हो रही थी। ग्लैडस्टनने बडे उत्साहसे इस प्रश्नको अपने हाथमें लिया और थोडे ही दिनोंमें मुक्तद्वार वाणिज्यके आधारपर आय-व्यय निर्धारित किया। उसने सैकडों चीजोंपरसे चुंगी उठा दी और कर अधिकतर शराब तथा आयपर लगाया। संवत् १६१० (१८५३ ई०) में ४६६ चीजोंपर चुंगी लगती थी। परन्तु ग्लैडस्टनके चातुर्यसे संवत् १६१७ (१८६० ई०) में केवल ४८ चीजोंपर ही चुंगी रह गयी। इस प्रकार जब गरीब लोगोंको सस्ती चाय पीनेको या सस्ता समाचारपत्र पढ़नेको मिलता तो वे भी ग्लैडस्टनको धन्यवाद देते थे।

ग्लैडस्टनने राजनीतिक सुधारका प्रश्न भी उठाया। संवत् १८८६ (१८३२ ई०) के सुधारसे उदारदल अथवा भद्र लोग सन्तुष्ट हो गये थे। वे मजदूरों और गरीबोंको कोई अधिकार नहीं देना चाहते थे। उनका कहना था कि यह अन्तिम सुधार था। किन्तु मजदूरोंकी दशा बडी शोचनीय थी। उन्हें काम अधिक करना पडता था। मजदूरी कम मिलती थी। उन्होंने सोचा कि बिना राजनीतिक अधिकार प्राप्त किये हमारी

आर्थिक स्थिति सुधर नहीं सकती। इसी उद्देश्यसे संवत् १६०५ (१८४८ ई०) का चार्टिस्ट आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था, पर वह असफल हो गया। पूजीपति किसी प्रकारका सुधार करनेको तैयार नही थे। लार्ड पामर्स्टन विशेष कर सुधारका विरोधी था, परन्तु जब उसके मरनेके बाद ग्लैडस्टनके हाथमें अधिकार आया, तब उसने मजदूरोंको अपने पक्षमें करनेके उद्देश्यसे मार्गशीर्ष सवत् १६२२ (नवम्बर १८६५ ई०) में राजनीतिक-सुधारका प्रस्ताव पेश किया जिसके अनुसार ७ पौण्ड मकानका कर देनेवालेको नगरमें और १४ पौण्ड कर देनेवालेको प्रान्तोंमें सम्मति देनेका अधिकार हो जाता और २० लाख निर्वाचन करनेवालोंकी जगह २४ लाख सम्मति देनेवाले हो जाते। परन्तु यह प्रस्ताव पास न हो सका और आषाढ सवत् १६२३ (जून १८६६ ई०) में रसिलने पद त्याग दिया।

अब लार्ड दर्बी कन्सर्वेटिव प्रधानमन्त्री हुआ। इस मन्त्रित्वका सबसे प्रसिद्ध पुरुष डिजरेली था। मन्त्रिवर्गको अब ज्ञात हुआ कि यद्यपि हाउस आव कामन्सको नैतिक सुधारकी कुछ परवाह नहीं है तथापि नागरिक कलाकौशल वाले वर्त्तमान अवस्थासे सतुष्ट नही हैं। इसी असन्तोषको प्रकट करनेके लिए हाइड पार्क (लन्दन) में एक सभा होती थी। राज्यकी ओरसे इसका निषेध किया गया। परन्तु लोगों ने न माना, पार्ककी सीमा तोड डाली और वे सभा किना किये न रहे। डिजरेली कन्सर्वेटिव था, परन्तु उसने अपनी पार्टीका उद्देश सर्वथा बदल दिया था। अबतक कन्सर्वेटिव लोग समस्त सुधारोंका विरोध किया करते थे। परन्तु डिजरेलीने कहा कि राजा तथा चर्चके भक्त रहते हुए साधारण आवश्यक

सुधार अवश्य होने चाहिये। अत उसने सवत् १६२४ (१८६७ ई०) में एक नैतिक सुधारका प्रस्ताव पेश किया, पर कुछ मत्रियोंने नाराज होकर त्यागपत्र दे दिया और वह प्रस्ताव पास न हो सका। पर डिजरेली यह नहीं चाहता था कि सुधारका प्रस्ताव ग्लैडस्टनके समयमें पास हो और इसका सारा श्रेय उसको दिया जाय, अत. उसने अपने प्रस्तावमें सशोधन होने दिया जिससे उसका प्रस्ताव ग्लैडस्टनके प्रस्तावसे भी अच्छा हो गया। इस प्रकार सवत् १६२४ (१८६७ ई०) में जो कानून बना उसके अनुसार नगरमें उन सब लोगोंको जो निजके मकानमें अलग रहते हों या जो १० पौंड सालाना किरायेके मकानमें रहते हों, और प्रान्तोंमें १२ पौंड सालाना मालगुजारी देनेवाले गैरदखलकार तथा ५ पौंड सालाना मालगुजारी देनेवाले काश्तकारोंको भी सम्मति देनेका अधिकार हो गया। इस प्रस्तावसे ग्रामोंमें खेतोंपर काम करनेवाले मजदूरोंको छोड कर प्राय. सभीको सम्मति देनेका अधिकार मिल गया। डिजरेलीको आशा थी कि उसके दलका प्रभाव बढ़ जायगा पर नये कानूनके अनुसार जो पार्लमेण्टका निर्वाचन हुआ, उसमें उदार दलका बहुमत रहा।

सवत् १६२५ (१८६८ ई०) में ग्लैडस्टन प्रधानमत्री हुआ। उसने कैबीनेटमें आते ही आयर्लैण्डवालोंकी आपत्तियोंको दूर करनेका प्रयत्न किया। उसका कथन था कि आयर्लैण्डके विद्रोहोंका मूल कारण शासनका दूषित होना है। अत. उसने सवत् १६२६ (१८६६ ई०) में यह कानून पास कराया कि आयर्लैण्डके चर्चका गवर्नमेण्टसे कुछ सम्बन्ध न रहे, क्योंकि यद्यपि यह संस्था आयर्लैण्डके चर्चके नामसे प्रसिद्ध थी तथापि आयर्लैण्डकी जनसख्याका केवल पॉचवॉं भाग ही इसमे

आर्थिक स्थिति सुधर नहीं सकती। इसी उद्देश्यसे संवत् १९०५ (१८४८ ई०) का चार्टिस्ट आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था, पर वह असफल हो गया। पूजीपति किसी प्रकारका सुधार करनेको तैयार नहीं थे। लार्ड पामर्स्टन विशेष कर सुधारका विरोधी था, परन्तु जब उसके मरनेके बाद ग्लैडस्टनके हाथमें अधिकार आया, तब उसने मजदूरोंको अपने पक्षमें करनेके उद्देश्यसे मार्गशीर्ष संवत् १९२२ (नवम्बर १८६५ ई०) में राजनीतिक-सुधारका प्रस्ताव पेश किया जिसके अनुसार ७ पौण्ड मकानका कर देनेवालेको नगरमें और १४ पौण्ड कर देनेवालेको प्रान्तोंमें सम्मति देनेका अधिकार हो जाता और २० लाख निर्वाचन करनेवालोंकी जगह २४ लाख सम्मति देनेवाले हो जाते। परन्तु यह प्रस्ताव पास न हो सका और आषाढ संवत् १९२३ (जून १८६६ ई०) में रसिलने पद त्याग दिया।

अब लार्ड दर्बी कन्सर्वेटिव प्रधानमन्त्री हुआ। इस मन्त्रित्वका सबसे प्रसिद्ध पुरुष डिजरेली था। मन्त्रिवर्गको अब ज्ञात हुआ कि यद्यपि हाउस आव कामन्सको नैतिक सुधारकी कुछ परवाह नहीं है तथापि नागरिक कलाकौशल वाले वर्त्तमान अवस्थासे सतुष्ट नही हैं। इसी असन्तोषको प्रकट करनेके लिए हाइड पार्क (लन्दन) में एक सभा होती थी। राज्यकी ओरसे इसका निषेध किया गया। परन्तु लोगों-ने न माना, पार्ककी सीमा तोड डाली और वे सभा बिना किये न रहे। डिजरेली कन्सर्वेटिव था, परन्तु उसने अपनी पार्टीका उद्देश सर्वथा बदल दिया था। अबतक कन्सर्वेटिव लोग समस्त सुधारोंका विरोध किया करते थे। परन्तु डिजरेलीने कहा कि राजा तथा चर्चके भक्त रहते हुए साधारण आवश्यक

तब वहाँ तुर्कीका बडा विरोध हुआ। पर रूसके विरोधके कारण डिजरेलीकी सहानुभूति तुर्कोंके साथ थी। वह नहीं चाहता था कि तुर्की कमजोर हो और रूसको बढ़नेका मौका मिले। ग्लैडस्टन जो सवत् १९३१ (१८७४ ई०) के बाद राजनीतिक क्षेत्रसे अलग होकर एकान्तवास कर रहा था, इस समाचारको पाते ही फिर क्षेत्रमें आया। उसने डिजरेलीके विरुद्ध तीव्र आन्दोलन प्रारम्भ किया। रूसने तुर्कीके मामलेमें हस्तक्षेप करना चाहा तथा और राज्योंने इस झगडेको रोकना चाहा। कुस्तुन्तुनियोंमें सब राज्योंकी एक सभा हुई। यद्यपि उनमें आपसमें बडा मतभेद था पर एकमत होकर तुर्कीके सामने कुछ शर्तें पेश की गयीं। तुर्की उनके आपसके झगडेको समझता था और डिजरेलीकी सहानुभूति उसके साथ थी, अत उसने शर्तोंको स्वीकार नहीं किया और रूसके साथ युद्ध छिड गया। ग्लैडस्टनके आन्दोलनके कारण इंग्लैण्डमें जनता तुर्कीके विरुद्ध हो रही थी, अत. डिजरेलीको तुर्कोंकी सहायता करनेका साहस नहीं हुआ। तुर्कोंकी बुरी तरह हार हुई और अन्तमें रूसके साथ स्टीफेनोकी सन्धि हुई। इस सन्धिके अनुसार बलगेरिया, रुमीलिया, तथा मैसीडोनियाके प्रान्तोंको मिलाकर बलगेरियाका एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया गया। सर्विया, रुमानिया आदि पूर्णतः स्वतन्त्र कर दिये गये।

इस सन्धिसे बालकन प्रायद्वीपमें रूसका प्रभाव बहुत बढ जाता, अत इंग्लैण्डने इसका बडा विरोध किया। आस्ट्रिया भी नहीं चाहता था कि रूसका प्रभाव उधर बढे। उसने भी इंग्लैण्डका साथ दिया। लार्ड बेकन्सफील्डने आक्षेप किया कि सेण्ट स्टीफेनोकी सन्धि बिना समस्त यूरोपीय राज्योंकी स्वीकृतिके माननीय नहीं हो सकती और साथ ही

संवत् १९२६ (१८६९ ई०) में स्वेज नहर खुली थी, भारत, चीन, आस्ट्रेलिया आदि पूर्वके देशोंका व्यापार इसी मार्गसे होकर जाता था। इंग्लैण्ड इस समय व्यापारादिमें बहुत बढा चढा था, इसलिए इस मार्गसे इग्लैण्डका लगभग तीन चौथाई व्यापार होता था। स्वेज कम्पनीके ४ लाख हिस्सोंमेंसे लगभग १ लाख ७६ हजार ६ सौ दो हिस्से मिश्रदेशके शासक इस्माइल पाशाके थे। उन्हें हमेशा रुपयोंकी जरूरत रहा करती, अत: वे अपने हिस्सोंको बेचना चाहते थे। उन्होंने इस विषयमें फ्रांससे बातचीत प्रारम्भ कर दी थी। टाइम्स पत्रके सवाददाता द्वारा डिजरेलीको इसकी सूचना मिली। उसने तुरन्त तार द्वारा सौदा करना प्रारम्भ कर दिया और ४० लाख पौंडमें सब हिस्सोंको खरीद लिया। इस प्रकार स्वेज नहरपर इग्लैण्डका प्रभाव अधिक होगया।

इसके एक वर्ष बाद उसने पार्लमेण्ट द्वारा एक कानून पास कराया जिसके अनुसार महारानी विक्टोरियाको कैसेरे हिन्दकी पदवी मिली। इस प्रकार इंग्लैंडमें साम्राज्यवादके भावका जोर बढ़ा। इसी नीतिके अनुसार उसने रूसका भी विरोध प्रारम्भ किया। इग्लैंड हमेशा इस बातका विरोधी था कि रूसका प्रभाव कुस्तुन्तुनियाँ और पूर्वी भूमध्य सागरकी तरफ बढे और जबसे स्वेज नहरमें इग्लैंडका प्रभाव बढा था तबसे यह विरोध अधिक तीव्र हो गया था। इसी समय बालकन प्रायद्वीपमें एक झगडा प्रारम्भ हुआ। तुर्कोंके कुशासनसे तङ्ग होकर बॉजनियाँ हार्टसेगोविना तथा बलगेरियाके कुछ भागमें प्रजाने विद्रोह प्रारम्भ किया। तुर्कोंने बडी निर्दयतासे उसका दमन किया। बलगेरियामें गाँवके गाँव जला दिये गये। जब यह समाचार दूसरे देशोंमें फैला

तब वहाँ तुर्कीका बड़ा विरोध हुआ। पर रूसके विरोधके कारण डिजरेलीकी सहानुभूति तुर्कोंके साथ थी। वह नहीं चाहता था कि तुर्की कमजोर हो और रूसको बढ़नेका मौका मिले। ग्लैडस्टन जो सवत् १९३१ (१८७४ ई०) के बाद राजनीतिक क्षेत्रसे अलग होकर एकान्तवास कर रहा था, इस समाचारको पाते ही फिर क्षेत्रमें आया। उसने डिज़रेलीके विरुद्ध तीव्र आन्दोलन प्रारम्भ किया। रूसने तुर्कीके मामलेमें हस्तक्षेप करना चाहा तथा और राज्योंने इस झगडेको रोकना चाहा। कुस्तुन्तुनियाँमें सब राज्योंकी एक सभा हुई। यद्यपि उनमें आपसमें बड़ा मतभेद था पर एकमत होकर तुर्कीके सामने कुछ शर्तें पेश की गयीं। तुर्की उनके आपसके झगडेको समझता था और डिजरेलीकी सहानुभूति उसके साथ थी, अत. उसने शर्तोंको स्वीकार नहीं किया और रूसके साथ युद्ध छिड गया। ग्लैडस्टनके आन्दोलनके कारण इग्लैण्डमें जनता तुर्कीके विरुद्ध हो रही थी, अत. डिजरेलीको तुर्कीकी सहायता करनेका साहस नहीं हुआ। तुर्कोंकी बुरी तरह हार हुई और अन्तमें रूसके साथ स्टीफेनोकी सन्धि हुई। इस सन्धिके अनुसार बलगेरिया, रुमीलिया, तथा मैसीडोनियाके प्रान्तोंको मिलाकर बलगेरियाका एक स्वतंत्र राज्य स्थापित किया गया। सर्बिया, रुमानिया आदि पूर्णत· स्वतत्र कर दिये गये।

इस सन्धिसे बालकन प्रायद्वीपमें रूसका प्रभाव बहुत बढ़ जाता, अत. इग्लैण्डने इसका बड़ा विरोध किया। आस्ट्रिया भी नहीं चाहता था कि रूसका प्रभाव उधर बढ़े। उसने भी इंग्लैण्डका साथ दिया। लार्ड बेकन्सफील्डने आक्षेप किया कि सेण्ट स्टीफेनोकी सन्धि बिना समस्त यूरोपीय राज्योंकी स्वीकृतिके माननीय नहीं हो सकती और साथ ही

उसने युद्धकी भी तैयारी कर दी। इस समयतक रूसका प्रभाव अधिक बढते देख कर इंग्लैण्डकी जनता उसके विरुद्ध हो गयी थी और डिजरेलीकी नीतिका समर्थन कर रही थी। ज़ार डर गया और कांग्रेसमें सम्मिलित होनेके लिए राजी होगया। आषाढ संवत् १९३५ (जून १८७८ ई०) में सात बडे राज्योंके प्रतिनिधि बर्लिनमें एकत्र हुए और एक सन्धि हुई जिसके अनुसार निश्चित हुआ कि बेसारेबियाका प्रान्त तथा एशिया माइनरका कुछ प्रान्त रूसको मिले, रूमानियाको बेसारेबियाके बदले डोब्रुजाका प्रान्त दिया जाय, और बॉज निया हर्टसेगोविना आस्ट्रियाको, थिसली यूनानको तथा साइप्रेसका टापू इंग्लैण्डको मिले। रूसने यह भी प्रतिज्ञा की कि तुर्कीके सुलतानके एशियाई प्रान्त सुरक्षित रहेंगे।

रूमानिया और सर्विया पूर्ण स्वतन्त्र हो गये, मौंटीनीग्रो को कुछ और प्रान्त मिले तथा बलगेरिया तुर्कीके अधीन एक अलग राज्य बना दिया गया। पूर्वी रूमेलिया नामक एक प्रान्तके विषयमें निश्चित हुआ कि उसपर तुर्कीके सुलतानकी ओरसे एक ईसाई शासक शासन किया करे।

बर्लिन कांग्रेसके समयमें डिजरेलीका प्रभाव बहुत बढ गया था, पर कई कारणोंसे संवत् १९३५ (१८७८ ई०) के बाद उसके दलका प्रभाव कम होने लगा। इसी समय अफगान-युद्ध हुआ जिसमें अंग्रेजोंका बडा नुकसान हुआ। दक्षिण अफ्रिकाके ज़ुलू युद्धके प्रारम्भमें एक ब्रिटिश सेना कत्ल हो गयी। इधर इंग्लैण्डमें दुर्भिक्ष पडा और उद्योग-धन्धोंकी भी बुरी हालत हो रही थी, इसलिए डिजरेली बदनाम हो गया और संवत् १९३७ (१८८० ई०) के निर्वाचनमें उसके दलकी हार हुई। ग्लैडस्टन फिर प्रधान मन्त्री हुआ।

ग्लैडस्टनके प्रधान मन्त्रित्वमें इंग्लैण्डकी बाह्यनीतिमें एकदम परिवर्तन हो गया। उसका ध्यान पहिलेकी तरह आन्तरिक स्थितिकी तरफ ही अधिक रहा। उसके मंत्रित्वमें तीन मुख्य प्रश्न उपस्थित हुए (१) पार्लमेण्टका सुधार (२) मिश्रकी समस्या (३) आयर्लैण्डका स्वराज्य।

सवत् १८८६ तथा १६१७ (१८३२ और १८६० ई०) में जो सुधार हुए थे, उनके अनुसार मध्यम श्रेणीके लोगोंको तथा शहरोंमें निजको मकान रखनेवाले सभी लोगोंको मत देनेका अधिकार मिल गया था, पर ग्रामोंके मजदूरोंको ये अधिकार नहीं मिले थे, अत उनमें असन्तोष था। सवत् १६४१ (१८८४ ई०) में ग्लैडस्टनने एक कानून पास कराया जिसके अनुसार उन लोगोंको भी मत देनेका अधिकार प्राप्त हो गया। कामन्स सभाके सदस्योंकी सख्या ६५२ से बढकर ६७० हो गयो और यह निश्चित हो गया कि १५ हजारसे ५० हजारकी जनसंख्यापर एक, ५० हजारसे १६५ हजार तक दो, १,६५ हजारपर ३ और इससे अधिकपर प्रति ५० हजारपर एक सदस्य कामन्स सभाके लिए निर्वाचित हों।

मिश्रकी तरफ इंग्लैण्डका ध्यान उस समयसे विशेष रूपसे आकर्षित हुआ था जबसे डिजरेलीने स्वेज कम्पनीके हिस्सोंको खरीदा था। मिश्रकी आन्तरिक स्थिति दिनपर दिन खराब होती जा रही थी, ऋण दिनपर दिन बढता जा रहा था। ब्रिटिश तथा फ्रेञ्च पूँजीपतियोंको ऋणपर व्याज मिलनेमें भी सन्देह हो रहा था। आर्थिक स्थितिकी जाँच करनेके लिए एक कमीशन बैठाया गया, जिसकी रिपोर्टसे ज्ञात हुआ कि पश्चिमी सभ्यताको विना सोचे विचारे अपने देशमें जारी करके मिश्रके शासकने खर्च बहुत बढा दिया है, राजकर्मचारी भी मूर्ख,

बेईमान और फजूलखर्च हैं, अतः संवत् १९३३ (१८७६ ई०) में मिश्रकी आर्थिक स्थितिको अपने काबूमें रखनेके लिए फ्रांस और इङ्गलैण्डका एक सयुक्त कमीशन स्थापित हुआ पर इससे भी काम न चला और अन्तमें संवत् १९३६ (१८७९ ई०) में इन राष्ट्रोंने तुर्कीके सुलतानके द्वारा इसमाइलको गद्दीसे उतरवा कर उसके पुत्र तौफीकपाशाको गद्दीपर बैठाया।

मिश्रवालोंने देखा कि इस प्रकार उनके देशमें विदेशियोंका प्रभाव बढ़ता जा रहा है, अतः असन्तोष बढने लगा, विशेष कर मिश्री फौजमें असन्तोष अधिक था। संवत् १९३८ (१८८१ ई०) में अरबीपाशाके नेतृत्वमें विद्रोह प्रारम्भ हुआ। उन्होंने अलेक्जेण्ड्रियापर आक्रमण किया और ५० यूरोपियनों को मार डाला। इङ्गलैण्डने फ्रांसकी सहायतासे विद्रोहको दबाना चाहा, पर फ्रांसने सहायता नहीं दी, अतः इङ्गलैण्डने अकेले सेना भेजकर विद्रोहका दमन किया। ब्रिटिश सेनाका अधिकार मिश्र देशपर हो गया। अरबीपाशा कैद करके लङ्का भेज दिया गया। यह भय था कि यदि फौज हटा ली जायगी तो अशान्ति उत्पन्न हो जायगी, अतः ब्रिटिश सरकारने निश्चय किया कि जबतक मिश्रमें स्थायी शान्ति स्थापित नहीं हो जाती तबतक अंग्रेजी फौज मिश्रमें रहेगी। मिश्रके दुर्भाग्यसे अबतक स्थायी शान्ति स्थापित होनेका अवसर नहीं आया। इसी समयमें मिश्रके दक्षिण सूदान प्रदेशमें एक मेहदी नामके व्यक्तिके नेतृत्वमें विद्रोह प्रारम्भ हुआ। जनरल गार्डन उसके दमन करनेके लिए भेजा गया पर खार्तूनमें वह चारों तरफसे घिर गया और मारा गया। ग्लैडस्टनने उसकी रक्षाके लिए सेना भेजनेमें बड़ी सुस्ती की, इसलिए उसकी बड़ी बदनामी हुई और इसी समयमें आयर्लैंडके स्वराजके सम्ब-

न्धमें उसके दलमें मतभेद हो जानेके कारण उसे त्यागपत्र देना पडा।

आयर्लैण्डका प्रश्न बहुत पुराना था। इग्लैण्डके अन्याय और अत्याचारसे पीडित होकर आयर्लैण्डने कई बार विद्रोह किया पर इग्लैण्डकी प्रबल शक्तिके सामने बराबर उसे हार खानी पडी। जब सं० १९२४ (१८६७ ई०) के फीनियन विद्रोह-का भी दमन हो गया और विद्रोहियोंके नेता फांसी अथवा कालेपानीकी सजा पा गये, तब ग्लैडस्टन पहली बार प्रधान मन्त्री हुआ था। उसने समझ लिया कि जबतक आयर्लैण्डकी प्रजाकी दशा नहीं सुधरेगी, तब तक इसी प्रकार विद्रोह होते रहेंगे। इसी विचारसे उसने भूमि सम्बन्धी कुछ सुधार किये थे और आइरिश चर्चको राज्यसे पृथक कर दिया था। पर इतनेसे आयर्लैण्डके कष्टोंका समाधान नहीं हो सका। संवत् १९२७ (१८७० ई०) में आइजक बटके नेतृत्वमें एक स्वराज आन्दोलन प्रारम्भ हुआ जो दिनपर दिन बढने लगा। पार्नेलके नेतृत्वमें एक राष्ट्रीय दल स्थापित हुआ जिसने पार्लमेण्टमें बाधाकी नीति प्रारम्भ की और हर एक कार्यमें रुकावट डाली, यहाँ तक कि पार्लमेण्टकी बैठकें रात रात भर होती थीं। एक बार तो ४१ घण्टे तक लगातार पार्लमेण्टकी बैठक होती रही। पार्नेलने एक भूमि-संघ भी स्थापित किया जिसका उद्देश्य यह था कि भूमिपर आइरिश किसानोंका स्वत्व होना चाहिये। इस संघके आन्दोलनसे अंग्रेज जमींदारोंपर आक्रमण प्रारम्भ हुए और कई स्थानोंपर मारपीट हो गयी।

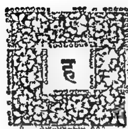
संवत् १९३७ (१८८०ई०) में ग्लैडस्टन फिर प्रधान मन्त्री हुआ, उसने स्थितिको सुधारनेके लिए संवत् १९३८

(१८८१ ई०) में एक कानून पास कराया जिससे किसानोंको अपने काश्तकी जमीनको वेचनेका अधिकार प्राप्त हो गया तथा वे जमीनसे बेदखल नहीं किये जा सकते थे। साथ ही उचित लगान निर्धारित करनेके लिए एक। अदालत नियुक्त कर दी गयी। पर पार्नेल और उसका दल सन्तुष्ट नहीं हुआ और कर न देने तथा पार्लमेण्टमें बाधाकी नीति जारी रही। गवर्नमेण्टने दमन आरम्भ किया। पार्नेल आदि जेल भेज दिये गये पर बादको छोड दिये गये। बाधाकी नीति रोकनेके लिए कानून पास हुआ। इसी समय आयर्लैण्डके लार्ड लेफ-टिनेण्ट तथा उनके मन्त्रीकी हत्या हो गयी और दमन जोरों-से प्रारम्भ हुआ। संवत् १९४२ (१८८५ ई०) में अनुदारदल तथा आइरिश राष्ट्रीय दलने ग्लैडस्टनके दलको हरा दिया और उसे त्यागपत्र देना पड़ा।

अब लार्ड साल्जबरी प्रधान मन्त्री हुआ, पर एक वर्षके बाद पुनर्निर्वाचन हुआ जिसमें आइरिश राष्ट्रीय दलकी सहायतासे ग्लैडस्टन प्रधान मन्त्री हुआ। उन्हें प्रसन्न करनेके लिए उसने आयर्लैण्डके स्वराज्यका प्रस्ताव पार्लमेण्टमें पेश किया पर उसके दलके कुछ सदस्य जोजेफ चेम्बरलेनके उपनेतृत्वमें अलग होकर अनुदार दलसे मिल गये और यह दल संयुक्त दल कहलाया। ग्लैडस्टनकी हार हुई और उसे त्यागपत्र देना पड़ा। फिर लार्ड साल्जबरी प्रधान मन्त्री हुआ। डिजरेलीका, जो संवत् १९३३, (१८७६ ई०) में लार्ड बेकन्सफील्ड हो गया था, संवत् १९३७ (१८८० ई०) में ही देहान्त हो गया था।

पाँचवाँ अध्याय ।

विक्टोरियाका अन्तिम जीवन ।



हम पहले कह चुके हैं कि ग्लैडस्टनके आयर्लैंड वालोंका पक्ष लेनेसे बहुतसे लिबरल लोग इतने क्रुद्ध हुए कि वे कन्सर्वेटिवोंसे जा मिले। इनका नेता जोजेफ चेम्बरलेन था। जिस दलमें कन्सर्वेटिव तथा लिबरल दोनों सम्मिलित थे उसका नाम यूनियनिस्ट अर्थात् संयुक्त दल पड़ गया। ग्लैडस्टनके अनुयायी होमरूलर या ग्लैडस्टोनियन कहलाने लगे। संयुक्त दलने लार्ड साल्जबरी-को प्रधान मन्त्री बनाया।

इस समय मुख्य प्रश्न आयर्लैंडका था। साल्जबरीने पहले ही कहा था कि आयर्लैंडमें दमनकी नीतिका प्रयोग होना चाहिये। आयर्लैंडमें कठिनाइयाँ भी बढ़ गयी थीं। फसल खराब हो गयी थी। किसान लगान नहीं अदा कर सकते थे। उन्होंने एक राष्ट्रीयसंघ स्थापित किया जिसमें निश्चय किया कि वे स्वयं जितनी लगान उचित समझें, आपसमें निश्चय करके, दें। जमीन्दारोंने इसे स्वीकार नहीं किया। किसानोंने लगान देना बन्द कर दिया। गवर्नमेण्टकी तरफसे दमन प्रारम्भ हुआ। बहुतसे लोग कैद किये गये। राष्ट्रीय संघ गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया। पर दमनके साथ साथ गवर्न-मेंटने एक कानून पास कराया जिससे जमीन सम्बन्धी व्यवस्था कुछ सुधर जाय। इस कानूनके अनुसार निश्चय हुआ कि जमीन्दारोंसे जमीन खरीद ली जाय और किसानोंको दे दी

जाय। वे उनका मूल्य ५० वर्षकी किस्तमें दे दें। इस कानूनसे बहुतसे किसानोंने फायदा उठाया। इसी मन्त्रित्व कालमें एक शिक्षा सम्बन्धी कानून बना, जिससे प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य कर दी गयी। दूसरा कानून प्रान्तोंकी व्यवस्थाके सम्बन्धमें बना, जिसके अनुसार प्रांतोंका प्रबन्ध नगरोंकी तरह चुने हुए बोर्डोंके सुपुर्द कर दिया गया।

आयर्लैंण्डकी दमन नीतिके कारण मन्त्रिमण्डल बदनाम हो गया था और संवत् १९४९ (१८९२ ई०) के निर्वाचनमें उनकी हार हुई। ग्लैडस्टन फिर प्रधान मन्त्री हुआ। इस बार आयर्लैंण्डके राष्ट्रीयदलके सदस्योंको मिला कर उदार दलका बहुमत था। आयर्लैंण्डके स्वराज्यका प्रस्ताव ग्लैडस्टनने फिर पेश किया। कामन्स सभासे तो वह पास हो गया, पर सरदार सभा (हाउस आफ लार्डस्) ने उसे रद्द कर दिया। ग्लैडस्टनने वृद्धावस्थाके कारण संवत् १९५१ (१८९४ ई०) में त्यागपत्र दे दिया। उसीके दलका लार्ड रोजबरी प्रधान मन्त्री हुआ।

संवत् १९५५ (१८९८ ई०) में ग्लैडस्टनका देहान्त होगया। यद्यपि वह आयर्लैंडवालोंको स्वराज्य देनेमें सफल न हुआ तथापि वह अपने समयका महान् पुरुष, उदारहृदय तथा बहुत बडा वक्ता था। उसकी महत्ताका सबसे बडा प्रमाण यह है कि वह दूसरोंको स्वतंत्र करना चाहता था और अपने देशके लोगोंको भी इसी बातकी शिक्षा देता था।

आषाढ १९५२ (जून १८९५ ई०) में रोजबरीके दलकी हार हुई और उसे त्यागपत्र देना पडा। लार्ड सालजबरी फिर प्रधान मन्त्री हुआ। इस बार कामन्स सभामें अनुदार दलका बहुत बड़ा बहुमत था। संवत् १९६२ (१९०५ ई०) तक यह मन्त्रिमण्डल कायम रहा। इसी समयमें जर्मनीका

व्यापार वृद्धिके कारण अंग्रेज व्यापारियोंके दिलमें द्वेषभाव आने लगा था, पर अंग्रेज सरकारके साथ जर्मनीका सम्बन्ध अच्छा रहा। परन्तु जब जर्मनीने अपने व्यापारकी रक्षाके लिए लड़ाईके जहाज बनाना प्रारम्भ किया, तब इंग्लैण्ड सशंक हुआ।

महारानी विक्टोरियाके जीवनके अन्तिम वर्ष बाह्य तथा उपनिवेश सम्बन्धी भगडोंमें व्यतीत हुए। हम सूदानके भगडे और गौर्डनकी मृत्युका वर्णन कर चुके हैं, उस घटनासे तेरह वर्ष पश्चात् लार्ड किचनर (जो कुछ दिनों पीछे भारतवर्षका मुख्य सेनाध्यक्ष हुआ) गौर्डनका बदला लेनेके लिए सूदान भेजा गया। वहाँ उसने सूदानपर अधिकार कर लिया। उस दिनसे अबतक सूदान अंग्रेजोंके अधीन है।

दूसरा भगडा बोअर युद्ध था। बोअर लोग डच जातिके वे कृषक हैं जो २०० वर्षसे आशा अन्तरीप (केप आफ गुड-होप) के निकट बसे हुए थे। जब नेपोलियनसे युद्ध हुआ, उस समय वे डच उपनिवेश अंग्रेजोंके हाथ आ गये और इनका 'केप कालोनी' (अन्तरीप उपनिवेश) नाम पड गया। परन्तु पुराने बोअरोंको अंग्रेजोंका संसर्ग प्रिय न लगा। नित्य प्रति भगडे होने लगे। बहुतसे बोअर लोगोंने केप कालोनी छोड कर दो और उपनिवेश बसाये, अर्थात् ट्रान्सवाल और औरेंज-रिवर फ्रीस्टेट। इसपर भी भगडा समाप्त न हुआ। जब बोअरोंकी भूमिमें हीरे और सुवर्णकी खानें मिलीं और ब्रिटिश लोग उनको खोदनेको जाने लगे तो विग्रह और भी बढ गया और संवत् १९५६ (१८९९ ई०) में बडा भारी युद्ध शुरू हो गया। बोअर लोग बडी वीरतासे लडे। अंग्रेजोंको कई बार पराजित होना पडा, परन्तु जब बहुतसी सेना इधर उधरसे अफ्रीकामें पहुंचायी गयी तो अंग्रेजोंकी विजय हो गयी।

जाय। वे उनका मूल्य ५० वर्षकी किस्तमें दे दें। इस कानूनसे बहुतसे किसानोंने फायदा उठाया। इसी मन्त्रित्व कालमें एक शिक्षा सम्बन्धी कानून बना, जिससे प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य कर दी गयी। दूसरा कानून प्रान्तोंकी व्यवस्थाके सम्बन्धमें बना, जिसके अनुसार प्रांतोंका प्रवन्ध नगरोंकी तरह चुने हुए बोर्डोंके सुपुर्द कर दिया गया।

आयर्लैंडकी दमन नीतिके कारण मन्त्रिमण्डल बदनाम हो गया था और संवत् १९४९ (१८९२ ई०) के निर्वाचनमें उनकी हार हुई। ग्लैडस्टन फिर प्रधान मन्त्री हुआ। इस बार आयर्लैंडके राष्ट्रीयदलके सदस्योंको मिला कर उदार दलका बहुमत था। आयर्लैंडके स्वराज्यका प्रस्ताव ग्लैडस्टनने फिर पेश किया। कामन्स सभासे तो वह पास हो गया, पर सरदार सभा (हाउस आफ लार्डस) ने उसे रद्द कर दिया। ग्लैडस्टनने वृद्धावस्थाके कारण संवत् १९५१ (१८९४ ई०) में त्यागपत्र दे दिया। उसीके दलका लार्ड रोजबरी प्रधान मन्त्री हुआ।

संवत् १९५५ (१८९८ ई०) में ग्लैडस्टनका देहान्त होगया। यद्यपि वह आयर्लैंडवालोंको स्वराज्य देनेमें सफल न हुआ तथापि वह अपने समयका महान् पुरुष, उदारहृदय तथा बहुत बडा वक्ता था। उसकी महत्ताका सबसे बडा प्रमाण यह है कि वह दूसरोंको स्वतंत्र करना चाहता था और अपने देशके लोगोंको भी इसी बातकी शिक्षा देता था।

आषाढ १९५२ (जून १८९५ ई०) में रोजबरीके दलकी हार हुई और उसे त्यागपत्र देना पडा। लार्ड साल्जबरी फिर प्रधान मन्त्री हुआ। इस बार कामन्स सभामें अनुदार दलका बहुत बडा बहुमत था। संवत् १९६२ (१९०५ ई०) तक यह मंत्रिमण्डल कायम रहा। इसी समयमें जर्मनीका

व्यापार-वृद्धिके कारण अंग्रेज व्यापारियोंके दिलमें द्वेषभाव आने लगा था, पर अंग्रेज सरकारके साथ जर्मनीका सम्बन्ध अच्छा रहा। परन्तु जब जर्मनीने अपने व्यापारकी रक्षाके लिए लडाईके जहाज बनाना प्रारम्भ किया, तब इंग्लैण्ड सशंक हुआ।

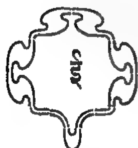
महारानी विक्टोरियाके जीवनके अन्तिम वर्ष बाह्य तथा उपनिवेश सम्बन्धी झगडोंमें व्यतीत हुए। हम सूदानके झगडे और गौर्डनकी मृत्युका वर्णन कर चुके हैं, उस घटनासे तेरह वर्ष पश्चात् लार्ड किचनर (जो कुछ दिनों पीछे भारतवर्षका मुख्य सेनाध्यक्ष हुआ) गोर्डनका बदला लेनेके लिए सूदान भेजा गया। वहाँ उसने सूदानपर अधिकार कर लिया। उस दिनसे अबतक सूदान अंग्रेजोंके अधीन है।

दूसरा झगडा बोअर युद्ध था। बोअर लोग डच जातिके वे कृषक हैं जो २०० वर्षसे आशा अन्तरीप (केप आफ गुड-होप) के निकट बसे हुए थे। जब नेपोलियनसे युद्ध हुआ, उस समय वे डच उपनिवेश अंग्रेजोंके हाथ आ गये और इनका 'केप कालोनी' (अन्तरीप उपनिवेश) नाम पड गया। परन्तु पुराने बोअरोंको अंग्रेजोंका संसर्ग प्रिय न लगा। नित्य-प्रति झगडे होने लगे। बहुतसे बोअर लोगोंने केप कालोनी छोड कर दो और उपनिवेश बसाये, अर्थात् ट्रान्सवाल और औरेंज-रिवर फ्रीस्टेट। इसपर भी झगडा समाप्त न हुआ। जब बोअरोंकी भूमिमें हीरे और स्वर्णकी खानें मिलीं, और ब्रिटिश लोग उनको खोदनेको जाने लगे तो विग्रह और भी बढ गया और संवत् १९५६ (१८९९ ई०) में बडा भारी युद्ध शुरू हो गया। बोअर लोग बडी वीरतासे लडे। अंग्रेजोंको कई बार पराजित होना पडा, परन्तु जब बहुतसी सेना इधर उधरसे अफ्रीकामें पहुँचायी गयी तो अंग्रेजोंकी विजय हो गयी।

अभी लड़ाई हो ही रही थी कि महारानी विक्टोरियाका संवत् १९५८ के माघ मास (जनवरी १९०१ ई०) में देहान्त हो गया।

छठवाँ अध्याय।

उन्नीसवीं शताब्दीमें ग्रेट ब्रिटनकी अवस्था।



सकी उन्नीसवीं शताब्दीके ग्रेट ब्रिटनपर सामान्य दृष्टि डालनेके लिए इस कालको दो भागोंमें विभक्त करना अत्यावश्यक है। पहला १८०१ से १८५२ ई० (संवत् १८५८ से १९०९ तक) और दूसरा उसके पश्चात्। उन्नीसवीं शताब्दीका ग्रेट ब्रिटन एक अद्भुत और प्राचीन कालकी अपेक्षा सर्वथा भिन्न देश है। परन्तु जो परिवर्त्तन हमको इस शताब्दीमें दिखाई पड़ते हैं, उन सबका आरम्भ प्राय: इस शतकके पूर्वार्द्धमें ही हो चुका था।

इससे पूर्व इंग्लैण्ड केवल कृषि-प्रधान देश था, परन्तु इस शतकमें यह सर्वथा कला-प्रधान तथा व्यापारिक देश हो गया। नैपोलियनके युद्धके समय इस देशके नागरिक लोग ग्रामीण लोगोंकी अपेक्षा केवल २० प्रतिशत थे, परन्तु संवत् १९०९ (१८५२ ई०) में ४० प्रतिशतक लोग नगरोंमें रहने और कला-कौशलमें भाग लेनेवाले हो गये। इस समय इस प्रकारकी जनताकी संख्या आधोसे भी अधिक होगयी है। अन्नकर-विरोधियोंकी सफलता ही इस बातका स्पष्ट प्रमाण है कि राज्य-प्रबन्धमें भी कृषकोंका प्रभाव नाममात्रको

ही रह गया था । सप्तम एडवर्डके समयके हाउस आव लार्ड्स के झगड़े और इसकी अप्रधानता तथा वर्तमान मजदूरदल या लेवर-पार्टीका अस्तित्व भी इस बातकी पुष्टि करता है ।

ग्रेट ब्रिटन और आयर्लैण्डकी जनसंख्या सं० १८५८ (१८०१ ई०) में १ करोड ५० लाख ७ हजार थी । संवत् १९०८ (१८५१ ई०) में २ करोड ३७ लाख ३ हजार अर्थात् दुगुनीके लगभग हो गयी । सं० १९५८ (१९०१ ई०) में चार करोड १४ लाख मनुष्य इन टापुओंमें रहते थे, अर्थात् १०० वर्षमें अंग्रेजोंकी मनुष्य संख्या तिगुनी हो गयी । यदि इसकी तुलना अन्य शताब्दियोंसे की जाय तो यह भेद और भी अधिक प्रतीत होता है । अति प्राचीन कालमें इसमें दो लाखके लगभग मनुष्य रहते थे । १७ वीं शताब्दी ईसवीके अन्ततक यह संख्या ५० लाख हो गयी और अब ४॥ करोडसे अधिक है । परन्तु इसमें उन अंग्रेजोंकी संख्या सम्मिलित नहीं है जो कनाडा, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया आदि देशोंमें जा बसे हैं । अकेले लन्दन नगरमें इस समय इतने मनुष्य रहते हैं जितने १७ वें शतकके अन्तमें समस्त राज्यमें रहते थे ।

उन्नीसवीं सदी ईसवीके आरम्भमें भापकी शक्तिका पता लग चुका था और उसका साधारण कलाओंमें भी प्रयोग होता था, परन्तु इस शतकके मध्यमें रेलवे इंजन बनने लगे और अन्ततक रेल गाडियोंमें और भी अधिक सुधार हो गया । इस समयतो आकाश-यानोंका भी आविष्कार हो गया है और यद्यपि साधारण आवागमनमें ये प्रयुक्त नहीं होते परन्तु पिछले यूरोपीय युद्धमें इनसे बहुत काम लिया गया था ।

सूचनाके साधन भी उन्नीसवीं शताब्दीमें बहुत उन्नत हो गये । आरम्भमें एक पत्र भेजनेमें बडी कठिनाई पडती थी ।

पहले ग्रेटब्रिटनमें भैंसे लडाना, मुर्गे लडाना आदि भयानक कार्य्य बहुत होते थे। यदि दो मनुष्योंमें मत भेद हो जाता तो इसका निश्चय परस्पर युद्ध द्वारा किया जाता था। भारतवर्षके पहले गवर्नर-जनरल वारन हेस्टिंग्ज और फ्रांसिसकी लडाई प्रसिद्ध ही है। परन्तु अब यह प्रणाली सर्वथा ही लुप्त हो गयी है। पशुओंपर दया भी बढ़ती जाती हैं। जिन पशुओंका मांस खाया जाता है, अब उनके मारनेमें उतनी क्रूरता नही की जाती जितनी पहले की जाया करती थी। कुछ लोग मांस खाना भी त्यागते जाते हैं। एक "ह्यूमैनीटेरियन सुसायटी" या दयाप्रचारिणी समिति भी स्थापित हो गयी है जो चमडेके स्थानमें वनस्पति आदिके सुन्दर जूते, काठियाँ आदि सामान तैयार करती है।

धार्मिक बातोंमें भी इस शताब्दीमें बडा परिवर्त्तन हुआ। वैज्ञानिक उन्नतिने पहले पहल धार्मिक लोगोंको भडका दिया। प्राचीन ईसाइयोंका विचार था कि नवीन वैज्ञानिक आविष्कार करना शैतानका काम है। जिस समय डाक्टर जेनरने चेचकके टीकेका आविष्कार किया, ईसाई उसके महाविरोधी हो गये। यही हाल अन्य आविष्कारोंके साथ हुआ, परन्तु उन्नीसवीं शताब्दीमें विज्ञानको ही विजय प्राप्त हुई और ईसाई पादरियों को चिन्ता हुई कि ईसाई धर्मकी जडपर कुल्हाडा चल रहा है। अब उन्होंने निश्चय कर लिया कि यदि हम विज्ञानको पराजित नहीं कर सकते तो कमसे कम उसके मित्र बन जाना ही नीति है। ह्वेटले न्यूमन, आदिने नवीन और उदार विचार जनताके आगे रखे। फ्लिएट आदिने नास्तिकताके विरुद्ध पुस्तकें लिखीं और ईसाई धर्मको विज्ञानके अनुकूल सिद्ध करनेकी चेष्टा की।

राजनीतिक परिवर्त्तन तो सभी परिवर्त्तनोंसे विचित्र है। राजनीतिक-सुधार उन्नीसवें शतकमें तीन बार हुए। एक वह समय था कि ट्यूडरवंशियोंके समय कोई मनुष्य राज्यप्रबन्धकी ओर उंगली तक नहीं उठा सकता था। बात कहते ही जिह्वा काट ली जाती थी। शिर उठा नहीं कि गर्दनसे अलग कर दिया गया। कौनसी आँख प्रबन्धकर्त्ताओंके विरुद्ध उठी और फोड नहीं दी गयी? कौनसा मस्तिष्क था जिसने स्वतन्त्रतासे विचार किया और स्वस्थ बना रहा? परन्तु इसी निरंकुशताके इच्छुक प्रथम चार्ल्स और द्वितीय जेम्सको अपने हठके दण्डमें शिर तथा मुकुटका त्याग करना पडा और उन्हींके बुद्धिमान् उत्तराधिकारी आज प्रजाको संतुष्ट कर स्वयं अपनेको सन्तुष्ट समझते हैं। ईसाकी उन्नीसवीं शताब्दीकी समाप्ति-पर राज्यका भार केवल सम्राट्के ही दो कन्धोंपर नहीं रह गया किंतु चार पाँच करोड मस्तिष्कोंको देशके सभी विषयों पर विचार करनेका अधिकार हो गया और उस भारको आठ दस करोड कंधे उठानेके लिए उद्यत हो गये। इस समय प्रत्येक अंग्रेज सोचने, कहने और करनेके लिए स्वतन्त्र है।

ग्रेट ब्रिटनकी आर्थिक दशाकी तुलना आजकल बहुत कम देशोंसे हो सकती है। जिन स्थानोंपर दो सहस्र वर्ष पहले कुछ मछुओंके झोंपडे थे, उन्हीं स्थानोंपर आजकल गगनको स्पर्श करनेवाले प्रासाद खडे हुए हैं। जिन स्थानोंपर कीचड और दलदलके मारे निकलना कठिन था, वहां वाष्पयान और विद्युत् यानोंकी सुलभ तथा सुखद सडकें दिखाई पडती हैं। 'बैंक आव इंग्लैण्ड' के लन्दन नगरस्थ तहखानोंको देखनेसे जान पडता है मानो समस्त संसारको त्याग कर लक्ष्मीजी यहीं वास करती हैं। प्रत्येक पुरुषके आय-व्ययका हिसाब लगाना मुश्किल

इतना बडा था और बोअर लोगोंकी युद्ध-विधि इतनी उत्तम थी कि समस्त देशपर अधिकार करनेमें बडी देर लगी। पर अन्तमें लार्ड किचनरने उनको बिलकुल हरा दिया। सवत् १९५९ (१९०२ ई०) में उन्होंने सप्तम एडवर्डको अपना सम्राट् स्वीकार कर लिया। परन्तु इससे बोअरोंकी आपत्तिका अंत न हुआ। युद्धके कारण व्यापार नष्ट हो चुका था, और जीविका प्राप्त करना बडा कठिन था। फिर, इतने दिनोंसे पर स्पर वैमनस्य रखनेवाले बोअर और अंग्रेज शान्तिसे नहीं रह सकते थे। शनै. शनै. परिवर्त्तन होता गया और ॥ वर्षमें बोअ रोंको स्वराज्य मिल गया। संवत् १९६६ (१९०९ ई०) में एक कानून बना जिसके अनुसार दक्षिण अफ्रिकाके चार उपनिवेश मिला कर उनकी एक गवर्नमेण्ट बना दी गयी।

सवत् १९५२ (१८९५ ई०) से अनुदार दलका मन्त्रित्व चला आ रहा था पर विशेषत. सवत् १९५७ (१९०० ई०) के बाद यह दल बदनाम होने लगा। संवत् १९५९ (१९०२ ई०) में शिक्षा सम्बन्धी एक कानून बना जिसके अनुसार पाठ शालाओंके व्ययके लिए लोगोंको कर देना पडता था। इस कानूनका बडा विरोध हुआ। दूसरे, बोअर युद्धमें भी प्रारम्भमें पराजय होनेके कारण गवर्नमेण्ट बदनाम हो गयी थी। इस समय श्रमजीवियोंका जोर बढ रहा था। संवत् १९४१ (१८८४ ई०) के नये कानूनके अनुसार श्रमजीवी मतदाता ओंकी सख्या बढ गयी थी। जब उन लोगोंने देखा कि उनकी दशा सुधारनेके लिए कोई उपाय नहीं किया जाता तो उन्होंने भी अपनी तरफसे पार्लमेण्टके सदस्य भेजनेका निश्चय किया और इस प्रकार एक तीसरा दल अर्थात् श्रम जीवि दल (मजदूर दल) स्थापित हुआ।

अपनी बदनामी बढ़ते देखकर गवर्नमेंएटने मजदूरोंके सम्बन्धमें कुछ प्रस्ताव पेश किये पर वे पर्याप्त नहीं थे। मजदूर उनसे सन्तुष्ट नहीं हुए। अन्तमें संवत् १९६२ (१९०५ ई०) में अनुदार दलकी हार हुई और उदार दलके नेता वेनरमैन प्रधान मंत्री हुए। इस समय मजदूर दल तथा आयर्लैंएडका राष्ट्रीय दल भी इनके समर्थक थे। संवत् १९६३ (१९०६ ई०) के निर्वाचनमें इन लोगोंकी बड़ी भारी विजय हुई। नई कामन्स सभामें ३७८ सदस्य उदारदलके, ५३ मजदूर अथवा श्रमजीवि-दलके, ८९ आयर्लैंएडके राष्ट्रीय दलके तथा १३१ संयुक्त दलके और २५ उनके और समर्थक थे। पर उदारदलके सामने एक कठिनाई यह थी कि कामन्स सभामें उनका बहुमत होते हुए भी वे स्वतंत्र रूपसे कोई कार्य नहीं कर सकते थे, क्योंकि इंग्लैंएडके कानूनके अनुसार जबतक कोई प्रस्ताव कामन्स तथा लार्ड्स सभा दोनोंसे पास न हो जाय तब तक वह कानून नहीं बन सकता था और लार्ड्स सभामें स्वभावतः अनुदार दलके सदस्य अधिक थे, इसलिए नई गवर्नमेंएटको प्रारम्भसे ही कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा।

अन्ताराष्ट्रिय परिस्थितिमें भी इंग्लैंएड और जर्मनीका वैमनस्य बढ़ रहा था। जैसा हम पहले कह चुके हैं, जबसे जर्मनीने लड़ाऊ जहाज अधिक संख्यामें बनाना प्रारम्भ किया और ऐसा मालूम हुआ कि थोड़े ही दिनोंमें समुद्रपर भी वह इंग्लैंएडका मुकाबिला करनेके योग्य हो जायगा, तबसे इंग्लैंएड बहुत भयभीत होने लगा। उसने विदेशी राष्ट्रोंसे सन्धियाँ तथा मित्रता स्थापित करनेका प्रयत्न आरम्भ किया। रूस और फ्रांससे इंग्लैंएडको बहुत पुरानी दुश्मनी थी, पर जर्मनीके द्वेषके कारण इन दोनों राष्ट्रोंसे मेल कर लेनेमें ही इंग्लैंएडने

अपना हित समझा। इस समय जर्मनी, आस्ट्रिया और इटलीका एक संघ स्थापित हुआ था और इन तीनोंने युद्धमें एक दूसरेको सहायता करनेका वचन दिया था। इसी प्रकार फ्रांस और रूसमे भी संवत् १९४८ (१८९१ ई०) मे एक सन्धि हो गयी थी जिसके अनुसार इन दोनोंने युद्धके समय एक दूसरेकी सहायता करनेका वचन दिया।

संवत् १९६१ (१९०४ ई०) तक इंग्लैण्ड इन गुटोंसे अलग रहा पर जर्मनीसे बढ़ते हुए वैमनस्य तथा प्रतिस्पर्धाके कारण संवत् १९६१ (१९०४ ई०) में फ्रांसके साथ तथा संवत् १९६४ (१९०७ ई०) में रूसके साथ समझौता हो गया। यद्यपि इस समझौतेके अनुसार युद्धके समय एक दूसरेकी सहायता करनेकी कोई बातचीत नहीं थी, पर दिनपर दिन घनिष्ठता बढ़ती गयी और अन्तमें महायुद्धके समय तीनों राष्ट्रोंने एक दूसरेकी सहायता की। इस प्रकार हम देखते हैं कि यूरोपके बड़े बड़े राज्योंके दो गुट्ट कायम हो गये थे और इनमें आपसमें फौज बढ़ाने तथा हथियार और लड़ाईके सामान एकत्र करनेके लिए खूब स्पर्धा चल रही थी। इसलिए इंग्लेण्डको भी इस कार्यके लिए बहुत रुपया खर्च करना पड़ता था। युद्धकी तैयारियाँ हो रही थीं पर यह निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता था कि युद्ध कब होगा।

संवत् १९६३ (१९०६ ई०) में जो उदारदलकी गवर्नमेण्ट स्थापित हुई थी, उसके सामने मुख्य प्रश्न यह था कि मज-दूरोंकी दशा किस प्रकार सुधरे। वे प्रजाका आर्थिक तथा सामाजिक सुधार चाहते थे। उन्होंने इस उद्देश्यसे कई बार कानून बनाना चाहा। प्रस्ताव कामन्स सभासे पास हो जाता किन्तु, लार्डस सभा उसे रद्द कर देती थी। संवत १९५६

(१६०२ ई०) के शिक्षा विधानकी त्रुटियोंको, जिसके कारण जनतामें बडा असन्तोष था, दूर करनेका प्रयत्न किया गया। पर लार्ड्स सभाने उसे रद्द कर दिया। शराबकी बिक्री कम करनेका भी प्रयत्न हुआ, पर बडे बडे जमीन्दारोंकी आमदनीमें कमी होगी, इसलिए लार्ड्स सभाने इसे भी रद्द कर दिया। इसी प्रकार और भी कई कानून कामन्स सभासे पास हुए और लार्ड्स सभाने उन्हें रद्द कर दिया। अत लार्ड्स सभाकी तरफसे असन्तोष बढ़ रहा था। किन्तु सवत् १६६३-६६ (१६०६-६ ई०) के बीच कुछ प्रजाहितके कानून बन भी, क्योंकि लार्ड्स सभाको भी डर था कि यदि सभी प्रस्तावोंको रद्द कर देंगे तो विरोध अधिक बढ़ जायगा। इसीसे उन लोगोंने कुछ कानून बनने दिये।

सवत् १६६३ (१६०६ ई०) में एक कानून बना जिसके अनुसार निश्चित हुआ कि यदि कारखानेमें काम करते हुए चोट आदिके कारण किसी मजदूरकी मृत्यु हो जाय अथवा वह काम करनेके अयोग्य हो जाय तो उसे सहायता मिल सके। इसी प्रकार १६०८ ई० में 'वृद्धावस्था पेंशन कानून' बना जिसके अनुसार उन सब बुड्ढोंको जिनकी आमदनी ३१ पौण्ड १० शि० प्रति वर्षसे कम हो सरकारकी तरफसे निर्धारित पेंशन मिलना ते हुआ। एक कानून और पास हुआ जिसके अनुसार मजदूरोंको अपनी शिकायतें दूर करनेके लिए शान्तिसे धरना देने तथा दूसरे मजदूरोंको समझानेका अधिकार मिला। इसी प्रकार प्रजाहितके और भी कुछ कानून पास हुए पर इन कानूनोंके अतिरिक्त और कितने ही उपयोगी प्रस्ताव थे जिन्हें लार्ड्स सभाने रद्द कर दिया, इसलिए लार्ड्स सभा और कामन्स सभाका विरोध बहुत बढ़ गया।

संवत् १६६६ (१६०६ ई०) में इस विरोधने बडा ही उग्र रूप धारण किया।

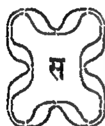
उदार दलके नेताओंने इस बातकी प्रतिज्ञा की थी कि वे प्रजाकी आर्थिक और सामाजिक दशा सुधारनेका प्रयत्न करेंगे। इसी विचारसे उन्होंने बहुतसे कानून पार्लमेण्टसे बनवाने चाहे थे जिनमेंसे कुछ तो पास हुए और कुछ लार्ड्स सभा द्वारा रद्द कर दिये गये। इन कानूनोंको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिए बहुत धनकी आवश्यकता थी और धन एकत्र करनेके लिए दो मार्ग थे। या तो व्यापारपर आयातनिर्यात चुंगी लगायी जाय अथवा प्रजापर कर लगाया जाय। उदारदल मुक्तद्वार वाणिज्यका पक्षपाती होनेके कारण चुंगीके विरुद्ध था। इसलिए संवत् १६६६ (१६०६ ई०) में अर्थ-विभागके मंत्री लायड जार्जने आय-व्ययका चिट्ठा पेश करते हुए (१) आयकर और मृत्युकरमें वृद्धि की (२) शराबकी दूकानोंपर अधिक कर लगाया (३) तम्बाकू, मोटर, शराब और गैसोलिनपर कर बढाया (४) तथा भूमिपर कर लगाया। लार्ड्स सभाने इसका बडा विरोध किया क्योंकि नये करोंका अधिकतर भाग धनिक लोगोंपर पडता था। लार्ड्स सभाने बजटको पास नहीं किया और इस आशयका एक प्रस्ताव पास किया कि जबतक इस विषयमें मत-दाताओंकी राय न ले ली जाय, हम बजटको पास नहीं करेंगे। कामन्स सभामें बडी उत्तेजना फैली। पार्लमेण्ट भंग हो गयी पर नये निर्वाचनमें उदारदलका ही बहुमत रहा, इसलिए लार्ड्स सभाको लाचार होकर बजट पास करना पडा। पर इससे एक नयी स्थिति पैदा हो गयी। प्रधानमंत्री ऐस्क्विथ महाशयने पार्लमेण्ट भंग करते समय घोषणा की कि हम लार्ड्स सभा-

के विरोधको सहन नहीं कर सकते, अब इसका अधिकार कम करना चाहिये। नयी पार्लमेण्टमें इस आशयका एक मसविदा पेश हुआ, पर इसी समय सप्तम एडवर्डकी मृत्यु हो जानेके कारण झगडा रुक गया। दोनो सभाओंमें समझौतेकी बातचीत प्रारम्भ हुई। लार्ड्स सभाने अपने सुधारके लिए कई मसविदे पेश किये पर उदारदलने उन्हें स्वीकार नहीं किया।

आठवाँ अध्याय।

पंचम जार्ज।

संवत् १९६८ (१९११ से) आगे।



सप्तम एडवर्डकी मृत्युके पश्चात् उनके एक मात्र पुत्र युवराज जार्ज, पचम जार्जके नामसे २३ ज्येष्ठ स० १९६७ (६ मई १९१०) को इग्लैण्डकी गद्दीपर बैठे। उनके ज्येष्ठ भाई राजकुमार एलबर्टका सवत् १९४९ (१८९२ ई०) में ही देहान्त हो चुका था।

सम्राट् जार्ज अपने युवराज होनेके समयमें ही प्रसिद्ध और प्रजाप्रिय हो चुके थे। उन्होंने उपनिवेशोंमें यात्रा भी की। वे अपने पिताके राज्य प्रबन्धमें सहायता भी करते थे। उनके राज्यका सबसे पहला मुख्य कार्य्य यह था कि राज-शपथके शब्दोंमें कुछ परिवर्त्तन किया जाय। तृतीय विलियमके समय-से राजाको अभिषेकके समय शपथ खानी पडती थी, जिसके कुछ शब्द रोमन कैथोलिक लोगोंके लिए अपमानजनक थे। बीसवीं शताब्दी सत्रहवीं शताब्दीसे सर्वथा भिन्न है। इसमें

धार्मिक स्वतंत्रतापर बल दिया जाता है। इसलिए १४ आषाढ संवत् १९६७ (२८ जून १९१०) को आस्किथने पार्लमेण्टमें एक बिल पेश किया कि वे अपमानजनक शब्द निकाल दिये जायँ। १३ श्रावण संवत् १९६७ (२९ जुलाई १९१०) को वह बिल पास हो गया और अब शपथके केवल ये शब्द रह गये।*

" मैं ईश्वरको साक्षी करके धर्म और सत्यतासे घोषणा करता हूँ कि मैं सच्चा प्रोटेस्टेण्ट हूँ और नियमके सच्चे भावोंका विचार करके मैं यथाशक्ति ऐसे नियमोंका पालन तथा निर्धारण करूँगा जिनसे मेरे देशकी गद्दीका उत्तराधिकारी प्रोटेस्टेण्ट ही हो।"

सप्तम एडवर्डके वृत्तान्तमें लिखा जा चुका है कि हाउस आव कामन्स और हाउस आव लार्ड्समें स्वत्वोंके लिए झगडा हो गया था और यदि एडवर्डकी मृत्युके कारण समस्त जनता एकमात्र शोकमें निमग्न न हो जाती तो अवश्य ही आन्तरिक युद्ध हो जाता।

संवत् १९६८ (१९११ ई०) में जो निर्वाचन हुआ, उसमें भी उदार दलका ही बहुमत रहा और लार्ड्स सभाके अधिकारको कम करनेका प्रस्ताव पेश हुआ। कामन्स सभामें अनुदारदलके सदस्योंने बडा विरोध किया। नवजवान सदस्योंने बडा शोर-गुल मचाया। इग्लैंडके इतिहासमें पहली बार प्रधान मन्त्रीका

* " I do solemnly & sincerely, in the presence of God, profess, testify, and declare that I am a Faithful Protestant, and that I will, according to the true intent of the enactments to secure the Protestant succession to the Throne of my realm, uphold and maintain such enactments to the best of my power ",

कामन्स सभामें अपमान किया गया। पर प्रस्ताव कामन्स सभासे पास हो गया और लार्ड्स सभाने उसे रद्द कर दिया। प्रधान मन्त्रीने निश्चय किया कि राजासे कहकर इतने नये लार्ड बनाये जाय जिससे अपने पक्षका बहुमत हो जाय। राजासे इसकी स्वीकृति पा जानेपर उन्होंने विरोधी दलके नेताको इस आशयका पत्र लिखा कि यदि आप अब भी न मानेंगे तो नये लार्ड बनाये जायगे। अनुदार दलके नेताओंने यह सोचा कि ऐसा होनेसे सर्वदाके लिए अपना पक्ष कमजोर हो जायगा, अत लाचार होकर उन्हें झुकना पडा और कानून लार्ड्स सभासे भी पास हो गया। इस प्रकार जो नया कानून बना उसके अनुसार निश्चय हुआ कि बजट तथा कर सम्बन्धी कानून यदि कामन्स सभासे पास होकर लार्ड्स सभामें भेजा जाय और एक मासके भीतर वहाँसे पास न हो जाय तो राजा की स्वीकृति मिल जानेपर वह कानून बन जायगा। और कानूनोंके सम्बन्धमें निश्चय हुआ कि यदि कोई कानून तीन बार लगातार कामन्स सभासे पास होता जाय और लार्ड्स सभा उसे रद्द करती जाय तो वह भी राजाकी स्वीकृति हो जानेपर कानून बन जायगा। इस प्रकार इस नये कानूनके अनुसार लार्ड्स सभाका अधिकार कम हो गया।

अब गवर्नमेण्टके सामने आयर्लैंडका प्रश्न था। ग्लैडस्टनके समयसे उदार दलने आयर्लैंडके प्रश्नको अपनाया था और विशेष कर संवत् १९६३ (१९०६ ई०) के बाद राष्ट्रीय दल बराबर उदार दलका समर्थक था, पर संवत् १९६८ (१९११ ई०) तक उदार दलके नेताओंने आयर्लैंडके सम्बन्धमें कुछ नहीं किया। इसका कारण यह था कि एक तो उन्हें इंग्लैंडकी भीतरी हालत सुधारनेसे ही अवकाश नहीं था, दूसरे उनका बहुमत इतना

अधिक था कि विना आयर्लैंडके सदस्योंकी सहायताके काम चल सकता था, अतः उनकी नाराजगीका कोई भय नहीं था। तीसरे, यह डर था कि आयर्लैंडके स्वराजके सम्बन्धका कानून कामन्स सभासे यदि पास भी हो जायगा तो लार्ड्स सभा उसे रद्द कर देगी। इसलिए संवत् १६६८ (१६११ ई०) तक वे चुप रहे, पर जब नये कानूनके अनुसार लार्ड्स सभाका अधिकार कम हो गया और कामन्स सभामें उनका इतना बहुमत भी न रहा कि आयर्लैंडके सदस्योंकी सहायताके विना काम चल सके, तब संवत् १६६६ (१६१२ ई०) में प्रधान मन्त्रीने आयर्लैंडके स्वराज सम्बन्धी कानूनका मसविदा पेश किया।

आयर्लैण्डमें दो दल थे। अधिक संख्या कैथोलिक लोगोंकी थी। उत्तरमें प्रोटेस्टेण्ट लोगोंकी बस्ती थी। व्यापार आदि, धन और जमीन इन्हीं लोगोंके हाथमें थी। ये प्रोटेस्टेण्ट जेम्स प्रथम और विलियम आदि राजाओंके समयमें इंग्लैण्ड और स्काटलैण्डसे जा कर वहां बसे थे। आयर्लैण्डमें कैथोलिक लोगोंपर बड़े अत्याचार हुए थे। जब अल्स्टर प्रान्तके प्रोटेस्टेण्ट लोगोंने देखा कि आयर्लैण्डको स्वराज मिलना प्राय निश्चितसा है तो उन लोगोंने बड़ा तीव्र विरोध किया। उनको भय था कि आयरिश पार्लमेण्टमें अधिक संख्या कैथोलिक लोगोंकी होगी, अत. वे लोग प्रोटेस्टेण्ट लोगोंपर वैसा ही अत्याचार करेंगे जैसा उन्होंने पहिले कैथोलिक लोगोंके ऊपर किया था। इस कारण विरोध बहुत बढ़ा, यहाँ तक कि सर एडवर्ड कार्सनके नेतृत्वमें खुल्लमखुल्ला विद्रोहकी तैयारी होने लगी। स्वयंसेवक तैयार होने लगे। हथियार भी एकत्र किये गये। दक्षिणके कैथोलिक लोगोंने भी इनकी देखादेखी हथियार एकत्र करना और अपना संघटन करना प्रारम्भ किया। इधर कामन्स सभामें

बड़ा विरोध हुआ । फिर भी अन्तमें नये कानूनके अनुसार आइरिश स्वराज सम्बन्धी कानून बन गया, पर इस समय ऐसा मालूम होता था कि आयर्लैण्डमें गृह युद्ध प्रारम्भ हो जायगा । गवर्नमेण्टने हर दलके नेताओंकी सभा करके समझौता करना चाहा, पर कोई समझौता नहीं हो सका । इसी समय महायुद्ध प्रारम्भ हो गया और यह कानून कार्य रूपमें परिणत न हो सका ।

नवाँ अध्याय ।

ब्रिटिश साम्राज्यके उपनिवेश तथा अधीन राज्य ।



ग्लैण्डका सबसे प्राचीन उपनिवेश अमेरिका है जिसके बसानेका हाल हम भिन्न भिन्न स्थानोंपर लिख चुके हैं। अमेरिकाकी रियासतोंमेंसे कुछ तो संवत् १८३६ (१७८२ ई०) में स्वतन्त्र हो गयीं और उनका नाम संयुक्त राज्य हो गया । परन्तु उत्तरमें कनाडा अबतक ब्रिटिश साम्राज्यका भाग है। कनाडा के दो भाग हैं—पूर्वी कनाडा और पश्चिमी कनाडा। पश्चिमकी ओर अंग्रेज रहते थे और पूर्वकी ओर फ्रांसीसी। सप्तवर्षीय युद्धमें इन्हीं दो जातियोंमें युद्ध हुआ था। इसके पश्चात् फ्रांसीसी कनाडा भी ब्रिटिश सम्राट्के अधीन हो गया था। संवत् १८९४ (१८३७ ई०) में उन प्रान्तोंने जिनमें फ्रांसीसी भाषा बोली जाती थी विद्रोह किया, क्योंकि उनपर ब्रिटिश शासक अत्याचार करते थे। विद्रोह-दमनके

ई०) के मध्यमें औरेंज फ्री स्टेट तथा ट्रान्सवाल, ये दो प्रजापालित राज्य स्थापित किये। शनै शनै. अफ्रिकन लोगोंसे लडते लडते अंग्रेजोंका आधिपत्य भी बढ़ता गया। सवत् १६२४ और १६२६ (१८६७ और १८७२ ई०) के बीचमें जब किम्बर्ली नामक स्थानमें हीरेकी खान मिल गयी तो यह प्रान्त भी, जो औरेंज फ्री स्टेटके पश्चिममें है, अंग्रेजोंका हो गया। इसी प्रान्तका नाम केप कालोनी है। ट्रान्सवालके बोअर और निकटस्थ प्राचीन निवासियोंमें लडाई झगडे होने लगे। सवत् १६३४ (१८७७ ई०) में लार्ड बेकन्सफील्ड (डिजरेली) के मन्त्रित्वमें ट्रान्सवालको अग्रेजोंने अपने अधीन कर लिया। अब अग्रेजोंका निकटके रहनेवाले जूलुओंसे युद्ध छिड गया जिसमें अग्रेजोंकी तद्देशीय सेना और १००० वहांके लोग जो अग्रेजोंके सहायक थे, मारे गये। इसपर इग्लैण्डसे १०००० सेना भेजी गयी जिसने सवत् १६३६ (१८७६ ई०) में जूलुओंपर विजय पायी। थोडे दिनों पीछे ट्रान्सवालके बोअरोंने विद्रोह किया और अग्रेजोंको नेटालमें लेंग्सनेक (LaingsNeck) और माजूबाहिल (MajubaHill) पर हरा दिया। ग्लैडस्टनने सवत् १६३८ (१८८१ ई०) में इनसे सन्धि कर ली और बोअर स्वतन्त्र हो गये। सवत् १६५६ (१८६६ ई०) से सवत् १६५८ (१६०१) तक फिर बोअर युद्ध हुआ जिसके अन्तमें बोअरोंके प्रजापालित राज्य ले लिये गये। इस समय बोअरों तथा अंग्रेज़ोंको समान स्वराज्य प्राप्त है। भारतवर्षके भी बहुतसे लोग इन देशोंमें रहते हैं जिनपर वहाँकी यूरोपियन जातियाँ अनेक अत्याचार करती हैं। भारतवर्षके प्रसिद्ध नेता मोहनदास कर्मचन्द गान्धीके प्रयत्नसे बहुत कुछ असुविधाएँ तो दूर हो गयीं। परन्तु दक्षिण अफ्रिकाकी

सरकारने एशियावालोंके विरुद्ध एक कानून पास कराया जिसपर बडा आन्दोलन हुआ। भारत सरकारने भी बहुत प्रयत्न किया। एक डेपुटेशन भी भेजा गया। अन्तमें समझौता हुआ। यह कानून रुक गया। अब माननीय श्रीनिवास शास्त्री भारत सरकारके दूत होकर वहाँपर रहते हैं और भारतीयोंकी देख भाल करते हैं।

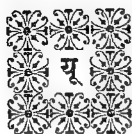
ब्रिटिश अधीन देशोंमे एशियाके छोटे छोटे कई स्थानोंके अतिरिक्त सबसे मुख्य भारतवर्ष है जो एक महाद्वीपके समान है। विक्टोरिया महारानी इसको अपने राज्यमुकुटका सबसे बहुमूल्य रत्न कहा करती थीं। अंग्रेज लोग यहाँ व्यापारके लिए सवत् १६५७ (१६०० ई०) से आने लगे थे और सवत् १८१४ (१७५७ ई०) की प्लासीकी लडाईसे इनके पैर भारतवर्षमें जमने लगे। सवत् १८३१ (१७७४ ई०) मे इनके अधीन भारतवर्षका इतना भाग हो गया कि एक गवर्नर-जनरल रखनेकी आवश्यकता हुई। सवत् १८६२ (१८०५ ई०) में मरहठोंकी शक्ति टूट गयी और बहुतसा उत्तरी भाग अंग्रेजोंको मिल गया। सवत् १९१३ (१८५६ ई०) तक सिक्खोंका पजाब और नवाबका अवध भी ब्रिटिश राज्यमें मिल चुका था। उन्नीसवें शतकके अन्ततक हिमालयसे लेकर कन्याकुमारीतक और चितरालसे लेकर ब्रह्मदेशतक सभी देश अंग्रेजोंके आधिपत्यमें हो गया।

इस शताब्दीमे भारतवर्षमे भी ब्रिटिश राज्यकी सहायतासे वैज्ञानिक, सामाजिक, तथा धार्मिक उन्नति हुई है। राजनीतिक सुधारके लिए निरन्तर आन्दोलन हो रहा है। सवत् १९४२ (१८८५ ई०) में नेशनल कांग्रेस नामकी एक जातीय महासभा स्थापित हुई, जिसके द्वारा स्वराज-प्राप्तिके लिए प्रयत्न हो रहा

है। युद्धके समय ब्रिटिश सरकारकी ओरसे घोषणा भी की गयी थी कि राजनीतिक सुधार होना चाहिये। संवत् १६७६ (१६१६ ई०) में कुछ थोडासा सुधार हुआ, परन्तु इतनेसे भारतवासी सन्तुष्ट नहीं हैं। युद्धके समाप्त होते ही भारत-सरकारने देशके प्रतिनिधियोंके अत्यन्त विरोध करनेपर भी राउलट कानून पास कर दिया। जिससे महात्मा गांधीके नेतृत्वमें सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ। पञ्जाबमें बडा दमन हुआ। अमृतसरमें गोली चली और जलियानवाला बागमें कई सौ मनुष्य मारे गये। भारतीयोंके हृदयमें बडी चोट पहुँची। उधर युद्ध समाप्त होते ही तुर्की भी छिन्न भिन्न कर दिया गया। इससे मुसलमान भी नाराज हो गये। आश्विन १६७७ (सितम्बर १६२० ई०) में कलकत्तेकी स्पेशल कांग्रेसने असहयोगका प्रस्ताव पास किया और यह आन्दोलन बडे धूमधामसे देशव्यापी हो गया। हजारों आदमी जेल गये पर इसके नेता महात्मा गांधीके जेल जाने पर आन्दोलन शिथिल पड गया। नरम दलके नेता इस आन्दोलनसे अलग थे और उन्होंने सरकारका समर्थन किया। संवत् १६८० (१६२३ ई०) में स्वराजदल नामकी पार्टी स्थापित हुई। अब असहयोगी भी कौंसिलमें पहुँचे और सरकारका विरोध आरम्भ किया। इसी समय हिन्दू मुसलमानोंमें झगडे प्रारम्भ हुए, जगह जगहपर मारपीट होने लगी, और राजनीतिक स्थिति बडी शोचनीय हो गयी। संवत् १६८४ में ब्रिटिश सरकारने सुधारके सम्बन्धमें जाँच करनेके लिए एक कमीशन बैठाया, जिसमें एक भी भारतीय सदस्य नहीं रखा गया। इसीसे सब भारतवासियोंने उसका विरोध किया।

दसवाँ अध्याय ।

महायुद्ध ।



रोपमें बहुत दिनोंसे युद्धकी तैयारियां हो रही थीं, यद्यपि किसी न किसी कारणसे युद्ध रुक जाता था। हम देख चुके हैं कि सप्तम एडवर्डने किस प्रकार देशदेशमें पर्यटन करके युद्धकी सम्भावनाको कम कर दिया था, परन्तु यूरोपकी उन्नतिशील जातियोंके भीतर डाहकी अग्नि बहुत दिनोंसे भभक रही थी और उनकी मैत्री केवल दिखावटी थी। प्रत्येक जाति अन्य जातिको पददलित करना चाहती थी। यही कारण था कि एक दूसरेकी देखादेखी पोत और सेनामें वृद्धि की जा रही थी। उनको भय था कि न जाने किस दिन इनका प्रयोग करना पड़े। यूरोपमें इस समय छः उन्नत देश थे—फ्रांस, जर्मनी, इङ्गलैण्ड, आस्ट्रिया, इटली तथा रूस। जर्मनीकी शक्ति संवत् १९२७ (१८७० ई०) से बढ़ रही थी। उसने फ्रांससे अल्सेस और लोरेन प्रांत जीत लिये थे। उसका व्यापार भी बहुत कुछ बढ़ चला था। जर्मनीकी सेनामें भी काफी वृद्धि हो गयी थी। उसके उपनिवेश भी अंग्रेजोंके समान तो नहीं, किंतु थोड़े बहुत हो ही चले थे। अफ्रीकाका एक भाग जर्मन-अफ्रीका कहलाता था। हम देख चुके हैं कि अंग्रेजोंकी व्यापारिक तथा औपनिवेशिक शक्ति बहुत ही प्रबल थी। इसलिए अन्य यूरोपियन जातियाँ भी मन ही मन इनसे डरतीं और अवसर प्राप्त होनेपर इनको नीचा दिखाना चाहती थीं।

परन्तु लडाई आरम्भ हो तो कैसे? अकस्मात् १४ आषाढ १६७१ (२८ जून १६१४) को बॉजनियाकी राजधानी सिराजीवोमे आस्ट्रियाके युवराज फ्रांसिस फर्डीनेण्ड अपनी पत्नी सहित सेनाका निरीक्षण करनेके प्रयोजनसे आये। वे मोटर गाड़ीमें बैठे जा रहे थे कि उनके ऊपर एक काली वस्तु आ पडी। जब उन्होंने उसे उठा कर फेंका तो मालूम हुआ कि वह बमका गोला था। उसके फट जानेसे कई लोग घायल हो गये जिनमें युवराजके सरक्षक भी थे। जब युवराज सम्मानपत्र स्वीकार करनेके लिए टौनहालमे पहुंचे तो उन्होंने मेयर अर्थात् नगराधीशसे कहा,—"मैं यहाँ तुम्हारा नगर देखने आया हूँ और मेरा स्वागत बमके गोलोंसे हो रहा है। तुम्हारे सम्मानपत्रोंका क्या फल है?" सम्मानपत्र लेनेके पश्चात् युवराजने चाहा कि अस्पतालमें घायल पुरुषोंको देखने जायें। युवराज्ञी सहित सबने समझाया कि यह ठीक नहीं है, परन्तु युवराजने एक न सुनी और जब ११ बजेके समय वे अस्पताल जा रहे थे, तब सर्वियाके एक युवकने बन्दूककी तीन गोलियाँ चलायीं जिससे युवराज और युवराज्ञी दोनोंकी मृत्यु हो गयी।

उपर्युक्त बमका गोला सर्वियाकी राजधानीमे तैयार हुआ था और वहांपर कुछ विद्रोही भी रहते थे। आस्ट्रियाके दक्षिण प्रान्तोंमें स्लैव जातिके लोग बसते थे। सर्विया उन प्रान्तोंको मिला कर अपना राज्य बढाना चाहता था, इसलिये बराबर षडयन्त्र करता था। आस्ट्रिया भी सर्वियाको अपने राज्यमें मिलाकर समुद्रकी तरफ बढ़ना चाहता था अत दोनों राज्योंमें वैमनस्य था, परन्तु इसमें भी सन्देह नहीं कि आस्ट्रियाकी राजधानी विएनामें युवराजके शत्रु मौजूद थे और यह

षड्यन्त्र भी वहीं रचा गया था। आस्ट्रियाके राजाने, जो पहलेसे ही सर्वियाको हड़पना चाहता था, इस अवसरको उपयुक्त समझा और ७ श्रावण सवत् १९७१ [२३ जुलाई १९१४] को सर्वियाकी गवर्नमेण्टको युवराजकी मृत्युका बदला चुकाने तथा भविष्यमें वैसा न होनेका निश्चय दिलानेके सम्बन्धमें लिखा। जो खरीता भेजा गया था उसकी शर्तें बड़ी कठिन थीं। इसके साथ ही, जर्मनीके राजदूतोंने जो फ्रांस, इंग्लैण्ड तथा रूसकी राजधानियोंमें नियुक्त थे, स्पष्ट कह दिया था कि यह प्रश्न आस्ट्रिया और सर्वियाके बीचका है, इसमें अन्य राज्योंको हस्तक्षेप करना उचित नहीं।

सर्वियाने रूसकी सहायता माँगी, क्योंकि सर्वियावाले रूसके सजातीय हैं। सर्वियाने रूसके परामर्शसे आस्ट्रियाकी कुछ शर्तें तो मान लीं, किन्तु कुछके माननेसे इनकार किया। अंग्रेजोंने कोशिश की कि जर्मनी, फ्रांस और इटलीसे कह सुनकर लन्दनमें एक सभा की जाय और उसमें सर्वियाका झगड़ा तय कर दिया जाय। फ्रांस और इटली तो राजी हो गये, परन्तु जर्मनी राजी न हुआ। १३ श्रावण (२९ जुलाई) को आस्ट्रियाने सर्वियाकी राजधानी बेलग्रेडपर आक्रमण कर दिया और लड़ाई छिड़ गयी। फिर भी लड़ाईको रोकनेका प्रयत्न हुआ पर आस्ट्रिया राजी नहीं हुआ। उधर रूस भी लड़ाईके लिए तैयार होने लगा और आस्ट्रिया जर्मनीकी सरहदपर फौज तैयार करने लगा। अब जर्मनीने आस्ट्रिया-पर दबाव डाला कि वह समझौता कर ले, उधर रूससे कहा कि फौजकी तैयारी बन्द की जाय। आस्ट्रिया राजी हुआ और उसने रूससे बातचीत आरम्भ की। रूसके जारने फौजकी

और यूनानमें यह सन्धि हो गयी थी कि यदि बल्गेरियाने चढाई की तो यूनानवाले सर्वियाके सहायक होंगे। यूनानके राजा कान्स्टैंएटाइन जर्मनीके पक्षमें थे। उनकी शादी एक जर्मन शाहजादीसे हुई थी। प्रधान मन्त्री वेनेज़ुलाके बहुत जोर देनेपर भी वे मित्रराष्ट्रोंकी तरफसे लड़नेको तैयार नहीं हुए और सर्विया अकेला बल्गेरिया, जर्मनी तथा आस्ट्रिया जैसे संयुक्त शत्रुओंका सामना न कर सका। एक सप्ताहके घोर युद्धके पश्चात् सर्वियाकी आधीके लगभग बची खुची सेना अल्बेनिया पहुँच सकी। उनका राजा इस विपत्तिमें भी उनके साथ था और कहा करता था कि "यदि और कुछ नहीं तो मैं कमसे कम तुम्हारी विपत्तिमें ही साथ दूँगा।" उसका कथन था कि मुझे ईश्वरमें उतना ही विश्वास है जितना अपने देशकी स्वतन्त्रतामें और मैं मृत्युसे पहले अवश्य देशकी विजयकी बात सुन लूँगा। इस समय इङ्गलैण्ड, फ्रांस तथा इटलीकी सहायता पहुँच गयी। सर्वियासे भागे हुए लोग फ्रांस, इटली, इङ्गलैण्ड तथा अन्य स्थानोंमें पहुँचा दिये गये। मित्रराष्ट्रोंने जबर्दस्ती सम्राट् कांस्टेएटाइनको गद्दीसे उतरवा दिया। बल्गेरियाकी पराजय हुई और युद्धके अन्ततक सर्वियाका पुनरुद्धार हो गया।

(२) रूस

हम ऊपर कह चुके हैं कि १६ श्रावण संवत् १९७६ (१ अगस्त १९१४) को रूस और आस्ट्रियामें युद्ध छिड़ा और जब जर्मनीवाले बेलजियमको नष्ट कर रहे थे, तब रूसने चढाई करके दो बार जर्मनीकी सेनाको परास्त कर दिया। प्रशा वाले भागकर बर्लिन आ गये। परन्तु जर्मन सेनापति हिएडनबर्ग*ने

* Hindenburg

टैनिनवर्ग† के तंग दलदलमें रूसी सेनाको घेर लिया और रूसके अस्सी हजार सिपाही कैद हो गये। इसी प्रकार हिण्डनवर्गने रूसी प्रान्त पोलैण्डकी राजधानी वार्साको रूसियोंसे छीन लिया, परन्तु पूर्वकी ओर रूसी सेनाने कई वार आस्ट्रियावालोंको हरा दिया और प्रजिमिल‡का किला लेनेमें तो रूसने आस्ट्रियाके एक लाख बीस हजार सिपाहियोंको कैद कर लिया।

इस प्रकार साधारण घटनाओंके अवलोकनसे देख पडता है कि वार्साके हाथसे निकल जानेपर भी रूसी लोग निराश नहीं हुए। उन्होंने सवत् १६७३ [१६१६ ई०] में आस्ट्रियाका पूर्वी प्रान्त सर्वथा ले लिया था और रूमानियावालोंने भी रूसकी विजय होती देख आस्ट्रियापर चढाई कर दी थी, पर बादको रूसकी फिर हार शुरू हुई। रूसकी फौजमें वडा असन्तोष था। यहाँ अभी तक एकाधिपत्य था। जार सम्राट् जो चाहते सो करते थे, प्रजाकी वात सुनी नहीं जाती थी। पर अब विधानात्मक राज्य कायम करनेके लिए आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। रूसमें चैत्र १६७३ (मार्च १६१७ ई०) में क्रान्ति हो गयी, जार गद्दीसे उतार दिये गये और यहाँ प्रजातन्त्र राज्य स्थापित हुआ। विद्रोहियोंने जार और उसकी महारानीको प्राणदण्ड दे दिया। इस प्रकार एक वडे भारी सम्राट्का जीवनान्त हो गया।

मार्गशीर्ष सवत् १६७४ (नवम्बर १६१७ ई०) में फिर दूसरी क्रान्ति हुई जिससे रूसमें मजदूरों और किसानोंका राज्य स्थापित हुआ। धनिक वर्गने उनका वडा विरोध किया। जर्मनीके बोलशेविक लोगोंने सन्धि कर ली पर रूसमें गृहयुद्ध

† Tannenburg ‡ Przemysl

प्रारम्भ हो गया। मित्र राष्ट्रोंने भी बोलशेविक लोगोंके विरुद्ध सहायता की, पर अंतमें सबकी हार हुई और बोलशेविक गवर्नमेण्ट कायम रही। उसने शासन-प्रबंधमें बहुत परिवर्त्तन किया। अब धीरे धीरे रूसकी हालत सुधर रही है, पहिले सब देशोंने रूसका बहिष्कार किया, पर बादको धीरे धीरे व्यापारिक सबध स्थापित हुआ। इग्लैंडने भी व्यापारिक सबध स्थापित कर लिया था। पर सवत् १९८३ (१९२६ ई०) में वह सबध फिर टूट गया। मार्गशीर्ष १९८४ (नवम्बर १९२७ ई०) में बोलशेविक सरकारका दसवां वार्षिकोत्सव मनाया गया है।

(३) तुर्की

ऊपर बताया जा चुका है कि जर्मनीवालोंकी दृष्टि भारत वर्ष तथा अन्य पूर्वी देशोंपर थी। इसकी पूर्तिके लिए तुर्कीको हाथमें लेना अनिवार्य्य था। अत जर्मन लोग पहलेसे तुर्कीमें अपना प्रभाव जमाते जा रहे थे। रुपया तथा अस्त्रशस्त्रोंसे वे यदा कदा उसकी सहायता करते रहते थे और यद्यपि तुर्कीका सुल्तान इस समय लडाईमें सम्मिलित होना नहीं चाहता था तो भी अन्वर-बे और तलअत-बे की सहायतासे जर्मन लोगों ने तुर्कीकी सेना द्वारा उडेसा और मिश्रपर चढाई करा ही दी और १५ कार्तिक संवत् १९७१ [१ नवम्बर १९१४] को इग्लैंडके राजदूतने तुर्कीकी राजधानी कुस्तुन्तुनियासे कूच कर दिया।

तुर्कीको युद्धमें शामिल करनेमें जर्मनोंके कई प्रयोजन थे। प्रथम तो वे समझते थे कि यदि अंग्रेज लोग पूर्वको ओर तुर्कीसे युद्ध करनेमें संलग्न होंगे तो पश्चिममें उनका बल घट जायगा। दूसरे, स्वेजकी नहर तथा मिश्र देश जर्मनीवालोंसे

मिल जायगा। तीसरे, तुर्कोंका अनुकरण करके समस्त मुसलमान जनता अंग्रेजोंके विरुद्ध हो जायगी। चौथे, काकेशस प्रान्तमें जड़ जम जानेसे जर्मनीको पूर्वकी ओर पग बढ़ानेमें सुविधा होगी।

चौथा प्रयोजन जर्मनीका सिद्ध न हो सका, क्योंकि तुर्की-सेनाको रूसवालोंने सिराकमिश * और अर्दहन† के युद्धमें हरा दिया और संवत् १९७३ (१९१६) में अर्जरम, ट्रूबीजन्द तथा टार्कश अर्मीनियापर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् रूसी विद्रोह होते हुए भी तुर्क लोग उभरनेके योग्य न हुए।

भारतवर्षसे बहुत सी सेना एकत्र होकर अंग्रेजी सेनापतियोंके आधिपत्यमें ईराक (मेसोपोतामिया) पहुँची और वहाँ कई लड़ाइयोंके पश्चात् बगदाद तथा अन्य नगर ले लिये। तुर्की और जर्मनीकी सेना स्वेज नहर तथा मिश्रको लेनेका बहुत यत्न करती रही परन्तु अन्तको विफल हुई। शायद सबसे बड़ी जीत जो अंग्रेजोंको हुई वह जनरल एलन्बीका जरूसलममें प्रवेश था। जरूसलम ईसाई, यहूदी तथा मुसलमानोंका बहुत प्राचीन कालसे तीर्थस्थान रहा है और उसे लेनेके लिए ९०० वर्ष हुए बहुत युद्ध भी होते रहे, परन्तु संवत् १९७४ (१९१७ ई०) में अंग्रेजी सेना फिलिस्तीनके भिन्न भिन्न भागोंको जीतती हुई जरूसलम पहुँच गयी और जो काम वीर रिचर्ड बारहवीं शताब्दीमें न कर सका, वह सुगमतासे एलन्बीने स० १९७३ (१९१७ ई०) में कर दिखाया। एलन्बीने नगरमें पैदल प्रवेश किया और दाऊदकी मीनारके नीचे खड़े होकर यह घोषणा की कि प्रत्येक धर्म मन्दिर सुरक्षित रखा जायगा।

* Serakamish　　† Ardahan

तुर्क लोगोंने बडी ही वीरतासे युद्ध किया, परन्तु अन्तमें शाम, फिलिस्तीन तथा ईराकके हाथसे निकल जानेसे उनके छक्के छूट गये और उनको मैदानसे हटना पडा।

(४) अमेरिका

तीन वर्षके लगभग यूरोपमें युद्ध होता रहा और अमेरिका तमाशा देखता रहा। अमेरिकाका विचार था कि जहाँतक हो सके यूरोपीय युद्धमें हस्तक्षेप न करना चाहिये। एक महाद्वीपको दूसरे महाद्वीपके आन्तरिक झगडोंमें फसनेकी आवश्यकता ही क्या है। उनके जहाज हर जगह जा सकते थे। अंग्रेज और फ्रांसीसी बारूद और अन्य युद्धकी सामग्री अमेरिकासे लाते थे। जर्मनीको यह बात बुरी लगी और उसने घोषणा कर दी कि यदि किसी देशके जहाज इङ्गलैंडके तटपर दिखाई पडेंगे तो वे डुबा दिये जायेंगे। अब तो अमेरिकाके भी कान खडे हुए और वहाँके राष्ट्रपति विलसनने सवत् १९७५ (अप्रैल १९१७ ई०) में जर्मनीसे युद्ध छेड दिया। परन्तु जर्मनी जानता था कि अमेरिकाकी सेना तैयार नहीं है और यूरोप आनेमें उसे देर लगेगी, अत. जर्मनीने कोशिश की कि अमेरिकावालोंके आनेसे पूर्व ही फ्रांसको हरा देना चाहिये। संवत् १९७४ के चैत्र (मार्च १९१८) मासमें उन्होंने बडा भारी युद्ध किया और अंग्रेजों तथा फ्रांसीसियोंको हराते हुए पेरिसके बहुत करीब तक पहुँच गये। एक बार युद्धके आरम्भमें भी (सितम्बर १९१४ में) यहां तक पहुँचे थे। फ्रांस बडे खतरेमें पड गया। मित्र राष्ट्रोंकी हालत बडी चिन्ताजनक हो रही थी। जी तोड प्रयत्न आरम्भ हुआ और अन्तमें जर्मन सेनाकी बाढ रुक गयी। वे मार्नके युद्धमें हार गये और धीरे धीरे पीछे हटने लगे। अमेरिकासे भी बहुत बडी

सेना आ पहुँची और सेण्ट मिहील (St Mihiel) के स्थानपर जर्मनीवालोंकी सर्वथा हार हुई। ४ कार्त्तिक १६७५ (२१ अक्टूबर १६१८) को अमेरिकाके नगरोंमें विजयपर हर्ष मनाया गया।

अब जर्मन लोगोंको केवल एक आशा थी। यदि वे म्यूज नदी (Meuse) के पार पहुँच जाते तो कुछ दिनों लड़ाई चलती रहती, परन्तु फ्रांसीसी और अंग्रेजी सेनाने शीघ्रतासे उनका पीछा किया। अब जर्मन लोगोंने सन्धिके लिए प्रार्थना की। इसपर अंग्रेजों और फ्रांसीसियोंकी ओरसे सन्धिकी बड़ी बड़ी शर्तें रखी गयीं। जर्मन लोग हार चुके थे। अब उनका वश ही क्या था। उनको इन शर्तोंकी स्वीकृतिके लिए ७२ घण्टे दिये गये थे। लाचार होकर जर्मनीने इन शर्तोंको मान लिया और २५ कार्त्तिक १६७५ (११ नवम्बर १६१८ ई०) को क्षणिक सन्धि हो गयी। ये शर्तें संख्यामें ३५ थीं, इनमेंसे कुछ नीचे दी जाती हैं—

(१) जर्मनीने फ्रांसके जो दो प्रान्त अल्सेस और लोरेन ५० वर्ष पहले जीत लिये थे, वे फ्रांसको वापिस दिये जायँ।

(२) जर्मनी अपनी ५००० भारी तोपें और ३०००० मशीनगनें शत्रुओंको दे दे।

(३) जर्मन सेना राइन नदीसे पूर्वकी ओर हट जाय और मित्रदल अर्थात् अंग्रेज, फ्रांसीसी इत्यादि राइनके तटस्थ दुर्गोंको अपने कब्जेमें कर लें।

(४) जर्मनीवालोंसे ५००० रेलके इंजन और एक लाख पचास हजार रेलकी गाड़ियाँ छीन ली जायँ।

(५) २००० हवाई जहाज जर्मनीसे ले लिये जायँ।

(६) ७४ युद्धके जहाज जर्मनीसे लिये जायँ और अन्य जहाज तोड़ दिये जायँ।

(७) जर्मनी युद्धके अपने सब कैदियोंको छोड़ दे।

(८) जर्मनी रूस, रूमानिया और तुर्कीसे अपनी सेनाएँ हटा ले।

यह भी निश्चय हुआ था कि सन्धिकी शर्तें तैयार करनेके लिए एक सर्व राष्ट्र-सम्मेलन होगा। राष्ट्रपति विलसनने युद्धका उद्देश्य बतलाते हुए कांग्रेसमें यह घोषणा की थी कि शत्रुओंके साथ न्यायोचित सन्धि की जायगी, जर्मनीने इसी आशासे सन्धिके लिए प्रार्थना की। चार वर्षकी घिरावटसे जर्मनीमें खाद्य पदार्थकी कमी हो गयी थी अतः वहां क्रान्ति प्रारम्भ हो गयी। कैसरने गद्दी छोड़ दी और जर्मनीमें प्रजातन्त्र राज्य स्थापित हो गया। सन्धिपत्र तैयार करनेके लिए वर्सेल्जमें सम्मेलन प्रारम्भ हुआ।

ग्यारहवाँ अध्याय।

यूरोपीय महायुद्धसे वर्तमान समयतक

हम पहिले एक अध्यायमें वर्णन कर चुके हैं कि जब संवत् १९७१ (१९१४ ई०) में आयर्लैंडके प्रश्नके सम्बन्धमें पार्लमेण्टमें झगड़ा हो रहा था और आयर्लैंडमें गृह-युद्ध होनेकी तैयारी हो रही थी, उसी समय महायुद्ध प्रारम्भ हो गया और १९ श्रावण १९७१ (४ अगस्त १९१४ ई०) को इंग्लैण्डने भी जर्मनीके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। युद्धके आरम्भ होते ही आपसके सब झगड़े बन्द हो गये। आयर्लैंडके राष्ट्रीय दलके नेता रेडमण्डने कहा कि आयर्लैंड इंग्लैण्डके साथ है। अनुदार दलके नेताओंने

भी सब विरोध भुला दिया और सारा इंग्लैण्ड एकमत होकर युद्धमें सम्मिलित हो गया। कुछ थोडेसे शान्तिवादी युद्धके विरुद्ध थे परन्तु उनका प्रभाव अधिक नहीं था।

संवत् १९६७ (१९१० ई०) में सप्तम एडवर्डकी मृत्युके बाद पञ्चम जार्ज गद्दीपर बैठे थे। उनके शासनकालके प्रारम्भमें जिस पार्लमेण्टका निर्वाचन हुआ था वही पार्लमेण्ट अब तक चली आ रही थी। युद्धके प्रारम्भिक कालमें सब दल एक हो गये थे और सरकारका कोई विरोध नहीं था, पर जब युद्धमें सफलता नहीं हो रही थी और पश्चिमी रणक्षेत्रमें अंग्रेजोंका आक्रमण असफल हो गया, तब लोगोंकी शिकायत होने लगी कि प्रबन्ध ठीक नहीं है। विशेषकर हथियार और लड़ाईके सामान आदिकी कमी हो रही थी। मन्त्रिमण्डलमें कुछ मन्त्रियोंका प्रस्ताव था कि पश्चिमी रणक्षेत्रमें सफलता मिलना सम्भव नहीं है, अत यदि डार्डनलीजकी तरफसे तुर्कीपर आक्रमण किया जाय तो पश्चिममें जर्मन लोगोंका जोर कम हो जायगा। पर इसका विरोध हुआ। प्रधान मन्त्री ऐस्क्वियने देखा कि इस प्रकार काम न चलेगा। हर एक दलके प्रधान व्यक्तियोंको मन्त्रिमण्डलमें सम्मिलित करके संयुक्त मन्त्रिमण्डल बनाना चाहिये, तभी युद्धमें सफलता हो सकती है। इसके अनुसार पार्लमेण्ट तो पुरानी ही रही, पर संयुक्त मन्त्रिमण्डल स्थापित हुआ। लोगोंको अधिक संख्यामें सेनामें भर्ती करानेके लिए प्रयत्न होने लगा, पर जब इससे काम न चला तो गवर्नमेण्टने एक कानून बनाना चाहा जिससे सब लोगोंको जबर्दस्ती सेनामें भर्ती होना पड़े। कुछ लोगोंने इसका विरोध किया पर संवत् १९७२ (१९१६ ई०) के प्रारम्भमें यह कानून पास हो गया और सेनाकी संख्या

बढने लगी। फिर भी मित्र राष्ट्रोंको सफलता नहीं मिल रही थी। इसी समय रोमानियापर जर्मनी आदिका अधिकार हो गया। इंग्लैण्डके युद्धमन्त्री लार्ड किचनर जहाजके साथ जर्मनों द्वारा समुद्रमें डुबा दिये गये। इंग्लैण्डमें बडी निराशा छा गयी। लायड जार्जने प्रस्ताव किया कि युद्धका सञ्चालन करनेके लिए एक युद्ध-समिति स्थापित की जाय। प्रधान-मन्त्रीके स्वीकार न करनेसे उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। प्रधान मन्त्रीने भी त्यागपत्र दे दिया। अनुदारदलके नेता बोनरलाको प्रधान मन्त्री बनानेके लिए बादशाहने लिखा पर वे मन्त्रिमण्डल बनानेमें असमर्थ हुए, अत लायड जार्ज प्रधान मन्त्री बनाये गये। सब दलके लोगोंने उनका समर्थन किया। मन्त्रिमण्डलमें, बीच बीचमें, बडी जल्दी जल्दी परिवर्त्तन होते रहे। युद्धके अन्ततक यही मन्त्रिमण्डल कायम रहा।

पार्लमेण्टका चुनाव सवत् १९६८ (१९११ ई०) में हुआ था और इसी पार्लमेण्टने कानून बनाया था कि चुनाव हर पाचवें वर्ष हो, पर युद्धकालमें चुनाव होना कठिन था, इसलिए युद्धके अन्ततक यही पार्लमेण्ट बनी रही। जब २५ कार्तिक १९७५ (११ नवम्बर १९१८ ई०) को युद्ध समाप्त हुआ, तब नये निर्वाचनकी तैयारी होने लगी। साम्यवादी दल संयुक्त मंत्रिमण्डल से अलग हो गया। कुछ उदारदलके लोग विशेषत॰ ऐस्क्विथके अनुयायी विरोधी थे पर नये निर्वाचनमें सयुक्त मन्त्रिमण्डलकी ही विजय रही और लायड जार्ज प्रधान मंत्री बने रहे।

इस समयकी विशेष घटना पेरिसका सन्धि सम्मेलन था। सबकी आँखें उसी ओर लगी थीं। सबको सम्मेलनसे बडी बडी आशाएँ थीं। पर सम्मेलनमें जर्मनीके साथ बडी निर्दयता की गयी। शर्तें ऐसी रखी गयीं जिनका पालन होना

असम्भव था। इधर रूसके बोलशेविकदलसे युद्ध जारी था। आयर्लैण्डमें एक बार संवत् १९७३ (१९१६ ई०) में विद्रोह हुआ था पर वह दबा दिया गया था। युद्ध समाप्त होनेपर स्वराजकी माग फिर पेश हुई। आयर्लैण्ड निवासी आत्मनिर्णय के सिद्धान्तके अनुसार शान्ति सम्मेलनमें सम्मिलित होना चाहते थे। वहांपर उग्रदलके नेताओंका अर्थात् शिनफिन दलका जोर बढ गया था। उधर एडवर्ड कार्सनका दल होमरूल कानूनको भी रद्द कराना चाहता था। शिनफिन दलने डी वैलेराको राष्ट्रपति बना कर अपनी स्वतन्त्र सरकार स्थापित की और इंग्लैण्डका आयर्लैण्डसे युद्ध छिड गया। दोनों तरफसे बडे बडे अत्याचार हुए। ब्रिटिश गवर्नमेण्ट आयर्लैंडको अधिक अधिकार देनेके लिए तैयार नहीं थी। इंग्लैण्डमें बेकारीका प्रश्न भी बडा जटिल हो रहा था। इधर भारतवर्ष तथा मिश्रमें भी असन्तोष बढ गया था।

अब संयुक्त मन्त्रिमण्डल धीरे धीरे कमजोर होने लगा। अनुदारदल तथा लायड जार्जके दलमें विरोध बढ़ने लगा। ग्रीस और तुर्कीका युद्ध आरम्भ हो गया था जिसमें इंग्लैण्ड ग्रीसका समर्थन कर रहा था। इससे फ्रांसका विरोध बढ गया था। इस कारण भी मंत्रिमण्डलमें वैमनस्य हो रहा था। तुर्कीके विरुद्ध युद्धकी सम्भावना मालूम हो रही थी और उपनिवेशोंसे सहायता करनेके लिए प्रार्थना की गयी थी, पर फ्रांसने इंग्लैण्डके इस भावका विरोध किया। अन्तमें तुर्कीके साथ लूसानकी सन्धि हो गयी, पर इस घटनासे अनुदारदल संयुक्त मन्त्रिमण्डलके बिलकुल विरुद्ध हो गया और उसने अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। नये निर्वाचनमें अनुदारदलकी जीत हुई और बोनर, ला प्रधान मन्त्री हुए। संवत्

१९७५ (१९१८ ई०) में ही एक कानून बन गया था जिससे स्त्रियोंको भी मत देनेका अधिकार मिल गया था। अतः मतदाताओंकी संख्या बहुत बढ गयी थी।

इंग्लैंड आयर्लैंडका युद्ध सवत् १९७६ (१९१९ ई०) से ही जारी था। संवत् १९७६ (१९१९ ई०) के निर्वाचनके बाद आयर्लैंडके अधिकतर सदस्योंने इंग्लैंडकी पार्लमेंटमें भाग नहीं लिया और अपनी एक स्वतन्त्र डेल एरान सभा स्थापित की। उन्होंने आयर्लैंडको एक स्वतन्त्र प्रजातन्त्र घोषित कर दिया। इंग्लैण्डसे युद्ध जारी रहा पर अन्तमें सुलहकी बातचीत शुरू हुई और पौष सवत् १९७८ (दिसम्बर १९२१ ई०) में 'आइरिश फ्री स्टेट' की स्थापना हो गयी, जिसके अनुसार दक्षिण आयर्लैंडकी एक अलग पार्लमेण्ट कायम हुई और आन्तरिक शासनका अधिकार उसे प्राप्त हो गया। डी वैलेराने इसका विरोध किया, पर डेल एराननें इंग्लैण्डकी सन्धिको स्वीकार कर लिया। कुछ दिनोंतक आयर्लैंडके दोनों दलोंमें विग्रह चलता रहा। पर अन्तमें डी वैलेराके दलकी हार हुई, पर इसी बीचमें ग्रिफिल और कॉलिन्सकी हत्या हो गयी और कासग्रेव राष्ट्रपति बनाये गये। डी वेलेरा अपने अनुयायियोंके साथ राजनीतिसे अलग हो गये।

बोनरलाकी प्रथम पार्लमेण्टमें दक्षिण आयर्लैंडके सदस्य अलग हो गये। इस प्रकार अब केवल ६१५ सदस्य रह गये। आइरिश फ्री स्टेट सम्बन्धी विधान पार्लमेण्टने भी स्वीकृत कर लिया। प्रधान मन्त्रीने फ्रांसके साथ मित्रता कायम रखनेकी घोषणा की। ज्येष्ठ १९८० (मई १९२३ ई०) में बोनरलाका देहान्त हो गया और उनके पश्चात् बाल्डविन प्रधान मन्त्री हुए, पर नये निर्वाचनमें साम्यवादी दल भी अधिक संख्यामें

पहुँच गया। थोड़े दिनोंतक बाल्डविनका मन्त्रिमण्डल रहा। फिर उदार दलके लोग साम्यवादी दलके साथ मिल गये और उन्होंने बाल्डविनके प्रति अविश्वासका प्रस्ताव पास किया।

रैमसे मैकडानल्ड, जो साम्यवादी दलके नेता थे, प्रधान मन्त्री हुए। इस प्रकार इंग्लैण्डके इतिहासमें पहिली बार साम्यवादी दल शासनारूढ़ हुआ। पर पार्लमेण्टमें इतनी संख्या न थी और इन्हें लिबरल लोगोंकी सहायतापर निर्भर रहना पड़ता था। जब १९२४ ई० के अन्तमें लिबरल साम्यवादी दलसे अलग हो गये तो उनकी हार हो गयी और अनुदार दल फिर शासनारूढ हुआ। बाल्डविन पुन प्रधान मन्त्री हुए। रूसके साथ एक व्यापारिक सन्धि हो गयी थी पर नये मन्त्रिमण्डलने रूससे सम्बन्ध विच्छेद कर लिया।

इधर जर्मनी और फ्रासमें हर्जानेके सम्बन्धमें वैमनस्य बढ गया था। फ्रासने जर्मनीके रूर प्रान्तपर अधिकार कर लिया था। जर्मनीने सत्याग्रह प्रारम्भ किया था जो बादको असफल हुआ। बाल्डविन गवर्नमेण्टने लोकार्नोकी सन्धि की, जिससे जर्मनी राष्ट्रसघ में सम्मिलित हुआ और इंग्लैण्ड, फ्रास, जर्मनी, बेलजियम, इटलीने यह प्रतिज्ञा की कि जर्मनी और फ्रासके बीच तथा जर्मनी और बेलजियमके बीचके सरहद्की रक्षा की जायगी।

बारहवाँ अध्याय।

इंग्लैण्डकी शासन-पद्धति।



स अध्यायमें हम कुछ इंग्लैण्डकी शासन-प्रणालीका वर्णन करना चाहते हैं जिससे सर्व साधारणको ज्ञात हो जाय कि पश्चिमके एक उच्चतम देशमे राजकार्य किस प्रकार चलता है। पार्लमेण्ट अर्थात् राजसभाका बहुत कुछ हाल तो इस इतिहासमें भिन्न भिन्न स्थानोंपर आ चुका है और पाठकगण जान गये होंगे कि तृतीय हेनरीके समयसे लेकर आजतक अंग्रेजोंने राजाके स्वेच्छाचारी कार्य्योंको मर्यादामे रखनेके लिए तथा प्रजाको अधिकार दिलानेके लिए कैसे कैसे उद्योग किये, परन्तु इंग्लैण्डवाले अमेरिका अथवा फ्रांस जैसा राज्य नहीं चाहते। वे एक ऐसा राजा रखना चाहते हैं जो कहनेके लिए तो समस्त अधिकार रखता हो परन्तु वस्तुत प्रजाके कार्य्यमे हस्तक्षेप न करता हो। अंग्रेजीकी एक लोकोक्ति है कि "राक्षसके समान शक्ति रखना तो अच्छा है, परन्तु उस शक्तिको राक्षसके समान उपयोगमें लाना बुरा है।" अतएव इंग्लैण्डमें राजा है अवश्य और उसे सब अधिकार भी हैं अर्थात् यदि राजा चाहे तो समस्त सेना-के हथियार रखवा ले और उसे तोड दे, सब अपराधियोंके अपराध क्षमा कर दे, किसी देशसे लडाई करे किसीसे सन्धि, जिसे चाहे उसे लार्ड बना दे इत्यादि, परन्तु इंग्लैण्ड-की प्रजाकी भी इतनी शक्ति है कि सम्राट्का साहस ही नहीं हो सकता कि वह प्रजाकी इच्छाके विना कुछ कर सके।

इस इतिहासके पढनेवाले जानते हैं कि प्रजाने प्रथम चार्ल्सको प्राणदण्ड दिया और द्वितीय जेम्सको देशसे निकाल दिया। ये कोई छोटी बातें नहीं हैं। परन्तु राजाकी उपस्थिति केवल अलंकार रूप नहीं है। इसके भी बहुत लाभ हैं। देशमें राजभक्ति होनेसे राज्य प्रबन्धमें बहुत सी सुविधाएँ हो जाती हैं। राजा राज्यका एक स्थायी अङ्ग है। शेष सब अंग परिवर्तनशील हैं। राजा समस्त राज्यप्रणालीका केन्द्र है। इसीलिए इङ्गलैण्डने क्राम्वेलके समयके पश्चात् कभी राजाका पद हटानेकी कोशिश नहीं की। इङ्गलैण्डका शासन तीन संस्थाओं पर आश्रित है—(१) राजा, (२) हाउस आव कामन्स अर्थात् लोक-सभा, (३) हाउस आव लार्ड्स अर्थात् अमीर सभा।

राजाका पद पैतृक है, अर्थात् राजाका बडा लडका राजा होता है। परन्तु उसको प्रोटेस्टेण्ट धर्मका अनुयायी होना चाहिये। हाउस आव लार्ड्समें वे लोग हैं जिनको राजा लार्डकी पदवी देता है। इनको 'पियर' भी कहते हैं। आजकल इनके लगभग ७४० सदस्य हैं जिनमेंसे मत देनेवालोंकी संख्या ७२० है। सदस्योंकी संख्या घटती बढती रहती है।

इङ्गलैण्ड तथा वेल्जके पियर		६५०
स्काटलैण्डके	„	१६
आयर्लैण्डके	„	२८
आर्चबिशप अर्थात् लाट पादरी		२
बिशप अर्थात् पादरी		२४
		७२०

हाउस आव कामन्समें देशके प्रतिनिधि रहते हैं। लार्ड, न्यायाधीश, इङ्गलिश चर्चके पादरी, स्काटिश चर्चके मिनिस्टर, रोमन कैथोलिक पादरी, राज-कर्मचारी, या ऐसे लोगोंको छोड

कर जिनकी उम्र २१ वर्षसे कम है, जिनको राज-दण्ड मिला है या जो पागल हैं या जिनका दिवाला निकल चुका है, अन्य सभी लोग प्राय प्रतिनिधि चुने जा सकते हैं। इनको लगभग छः हजार रुपये वार्षिक वृत्ति भी मिलती है। तीस वर्षसे अधिक अवस्थावाली स्त्रियोको भी प्रतिनिधि चुने जानेका अधिकार प्राप्त है। प्रतिनिधियोंकी सख्या घटती बढ़ती रहती है। आजकल ६१५ प्रतिनिधि हैं। इनमें उत्तरी आयर्लैण्डके १३ प्रतिनिधि भी शामिल हैं ॐ।

ॐ सवत् १९७९ (१९२२ ई०) के आयरिश फ्री स्टेट कान्स्टिट्यूशन एक्ट [आयरिश स्वतन्त्रराज्यके व्यवस्थाविधान] के अनुसार दक्षिण आयर्लैण्डमें एक पृथक् पार्लमेण्टकी स्थापना की गयी है। इसके तीन अंश हैं—(१) राजा (२) प्रतिनिधि सभा [चेम्बर आव डिपुटीज, डेल एरान] (३) उच्च सभा [सिनेट]। प्रतिनिधि सभामें १५३ और उच्च सभामें ६० सदस्य हैं। २१ वर्षसे कम उम्रवाला व्यक्ति प्रतिनिधि सभाका और ३५ वर्षसे कम उम्रवाला उच्च सभाका सदस्य नहीं हो सकता। साथ ही, कोई एक व्यक्ति दोनो सभाओंका सदस्य नहीं बन सकता। प्रतिनिधि सभाकी अवधि, यदि वह बीचमें भग न कर दी जाय तो, साधारणत चार वर्ष रखी गयी है। कार्यसमिति (मन्त्रिमण्डल) में कमसे कम पाँच और अधिकसे अधिक सात मत्री रहते हैं। बजट या कर सम्बन्धी प्रस्ताव स्वीकृत करनेका अधिकार प्रतिनिधि सभाको ही है, उच्च सभा केवल सिफारिश कर सकती है। अन्य प्रस्तावोंके लिए दोनों सभाओंकी स्वीकृति आवश्यक है, किन्तु यदि किसी कानूनका प्रस्ताव उच्च सभामें भेजे जानेके बाद २७० दिनके भीतर, या जो अवधि निश्चित की गयी हो उसके भीतर, भी उक्त सभा द्वारा स्वीकृत न किया जाय, तो उक्त कानून दोनों सभाओं द्वारा स्वीकृत समझ लिया जायगा।

सवत् १९७९ [१९२२ ई०] के आयरिश फ्रीस्टेट विधान द्वारा सशोधित आयर्लैंड शासनविधान [१९२० ई०, सवत् १९७७] के अनुसार

ये प्रतिनिधि पाँच वर्षके लिए चुने जाते हैं। परन्तु राजा को अधिकार है कि यदि किसी विषयमें प्रजाकी सम्मति जानना चाहे और प्रतिनिधि सभाकी सम्मति सन्दिग्ध हो तो जब चाहे तब प्रतिनिधि सभाको बरखास्त कर दे और प्रजासे नवीन प्रतिनिधि चुननेके लिए अनुरोध करे।

जो नियम या कानून पास करना होता है वह पहले प्रतिनिधि सभामें प्रविष्ट होता है। वहाँसे स्वीकृत होकर अमीर सभामें जाता है। यदि किसी नियमको प्रतिनिधि सभा लगातार तीन बार स्वीकार कर लेती है तो अमीर सभाके अस्वीकार करनेपर भी, राजाकी स्वीकृति हो जानेपर, वह पास हो जाता है। बजट या करसम्बन्धी प्रस्ताव प्रतिनिधि-सभामें स्वीकृत होकर अमीरसभामें भेजा जाता है। वहाँ एक मासके भीतर यदि वह पास न होवे तो राजाकी स्वीकृति मिल जाने पर कानून बन जाता है।

अमीर सभा और प्रतिनिधि सभामें बहुधा झगड़े रहा करते हैं। अमीरसभाको एक प्रकारसे अवधके ताल्लुकेदारोंकी सभाके तुल्य समझना चाहिये जिसके सदस्य बड़े बड़े भूसम्पत्तिके स्वामी लार्ड लोग हैं। इनमें और साधारण प्रजामें मतभेद

उत्तर आयर्लैण्डकी भी अपनी अलग पार्लमेण्ट है। इसमें भी एक उच्च सभा और एक कामन्स सभा सम्मिलित है। उच्च सभामें २६ सदस्य तथा कामन्स सभामें ५२ सदस्य रहते हैं। इस पार्लमेण्टको उत्तर आयर्लैण्डके सम्बन्धमें कानून बनानेका अधिकार प्राप्त है, किन्तु [युद्ध, सन्धि सैना, वाह्यव्यापार, मुद्रा, पोस्ट आफिस, इत्यादि] कुछ बातोंके सम्बन्धमें निर्णय करनेका अधिकार ब्रिटिश पार्लमेण्टको ही है। कामन्स सभाकी मियाद पाँच वर्ष है। उत्तर आयर्लैण्डको ब्रिटिश पार्लमेण्टके लिए १३ सदस्य निर्वाचित करनेका अधिकार अब भी प्राप्त है।

शासनके प्रत्येक कार्य्यपर राजभक्त रहते हुए भी आक्षेप किया जा सकता है। यह एक अच्छी बात है और शासनको उच्छृंखल होनेसे रोकती है।

हमने ऊपर प्रिवी कौंसिल अर्थात् गुप्तसभाका उल्लेख किया है। इस सभाके नामसे भारतवर्षके ग्रामीण पुरुष भी परिचित हैं क्योंकि हाईकोर्टके निश्चयोंका प्रतिरोध (अपील) प्रिवी कौन्सिलमें ही हो सकता है। यह वस्तुत. एक बहुत बड़ी सभा है जिसमें राजपरिवारके सभ्य, कैण्टरबरीका लाट-पादरी, लन्दनका पादरी, लार्ड चांसलर, मुख्य सेनापति, समस्त मन्त्रीगण आदि होते हैं। यह सभा राजमहलमें होती है। नये राजाकी घोषणा यही करती है और यदि राजाको प्रतिनिधि-सभा बर्खास्त करनी पड़ती है तो उसका घोषणापत्र भी इसी सभा द्वारा तैयार होता है। इसकी कई उपसमितियाँ हैं। इसमें एक न्याय-उपसमिति है जिसमें भारतवर्षकी अपीलें सुनी जाती हैं। इसी प्रकार शिक्षा-उपसमिति, कृषि-उपसमिति भी है।

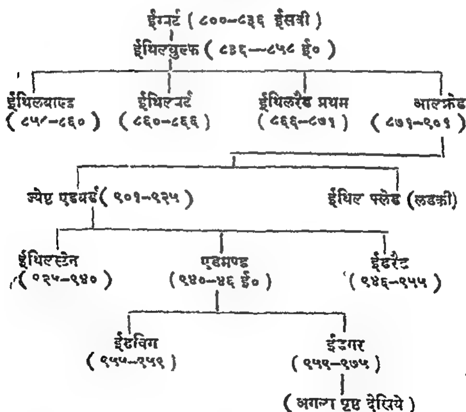
इस प्रकार इग्लैण्डके शासनका रहस्य यह है कि कोई कर्मचारी स्वतंत्र नहीं है। समस्त संस्थाएँ एक दूसरीसे इस प्रकार संयुक्त हैं कि एकके विना दूसरीका कार्य्य नहीं चलता और एक दूसरीको मर्य्यादासे बाहर नहीं जाने देती। राजा, अमीरसभा, प्रतिनिधिसभा तथा मन्त्रिसभा एक बड़ी शृङ्खलाकी कड़ियाँ हैं जो एक दूसरेके सहारे ठहरी हुई हैं और जिनमें से किसीको मुख्य या गौण नहीं कह सकते। यही कारण है कि कई सौ वर्षोंसे इंग्लैण्डका शासन भली प्रकार चल रहा है।

परिशिष्ट

इंग्लैण्डके भिन्न भिन्न राजवंशोंकी वंशावलियाँ

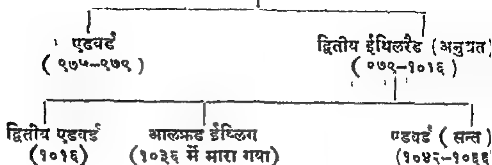
बहुतसी ऐतिहासिक घटनाओंको समझनेके लिये वंशावलियोंकी आवश्यकता है। अत हम यहाँ उनका उल्लेख करते हैं। वास्तविक सूत्र-बद्ध राज्यका पता (८०० ई०) से चलता है, अत उसी समयसे आरम्भ किया जाता है, जो सन् दिये गये हैं वे राज्य कालके सूचक हैं। (अंकोंमें ५७ जोडनेसे संवत् प्राप्त हो जायगा)

(१) ईग्बर्टवंश।



(अगला पृष्ठ देखिये)

ईडगर (पिछला पृ० देखिये)



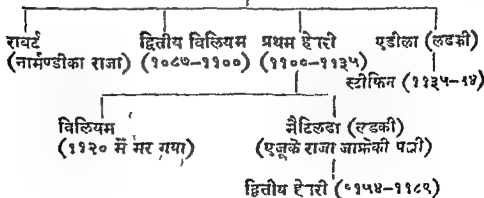
(२) कैन्यूटका वंश।

कैन्यूट (१०१६–१०३५ ई०)



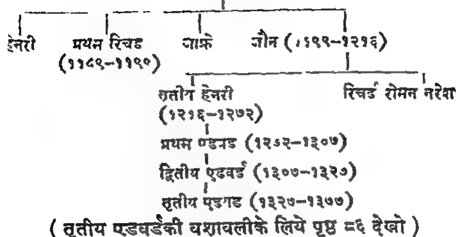
(३) नार्मन वंश।

विजयी विलियम
(१०६६–१०८७ ई०)



(४) एंजू वंश ।

द्वितीय हेनरी
(११५४–८९)

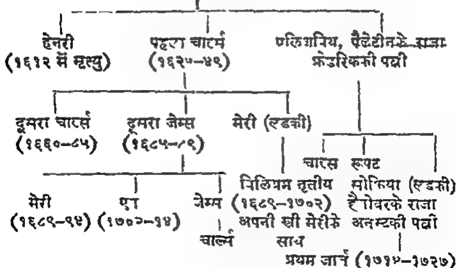


(तृतीय एडवर्डकी वंशावलीके लिये पृष्ठ ८६ देखो)

---

(६) स्टूअर्ट वंश ।

प्रथम जेम्स (१६०३–२५ ई०



अनुक्रमणिका।

छ

ज

व